❀ श्री गणेशाय नमः ❀

रमल - दिवाकर

लेखक-

राजज्योतिषी पं० बचान प्रसाद त्रिपाठी

रमल सम्राट् तान्त्रिक शिरोमणि

कममण्डा, सीतापुर।

प्रकाशक-

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी।

फोन नं० ६४६५० मूल्य १२) रुपया

रमल दिवाकर

[जिसमें रमल-शास्त्र का दूसरा भाग भी सम्मिलित है]

लेखक

राजज्योतिषी पं० बचानप्रसाद त्रिपाठी

रमल-सम्राट्, तान्त्रिक शिरोमणि

स्थान, पोस्ट—कसमण्डा, सीतापुर (उ० प्र०)

प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर,

राजादरवाजा—कचौड़ीगली, वाराणसी—१

 { मूल्य ८)

प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर,

राजादरवाजा-कचौड़ीगली, वाराणसी-१

सन् १९७१ ई०

मुद्रक

के० कृ० पावगी,

हितचिन्तक प्रेस,

रामघाट, वाराणसी- १

समर्पण

सेवा में

गुरुदेव भगवान् श्री १००८ स्वामीजी

श्री नारदानन्दजी

सरस्वती महाराज के कर कमलों में !

मेरे मन के अन्धकार में तुमने ज्ञान-प्रदीप जलाया।
नवल चेतना से पुलकित है मेरा अन्तर मेरी काया॥
सुधा सिक्त रखती है जीवन को प्रभु ! तव करुणा की धारा।
मुक्त प्राण कर दिये खोलकर दृढ़तर यह जड़ता की कारा॥
देव ! आपकी पुण्य-प्रेरणा ही यह कृति बन कर है आई।
क्षमा करें है वस्तु आपकी ही, जो मैंने भेंट चढ़ाई॥
रमलशास्त्र के वर्ण-वर्ण में खुली आपकी वाणी।
रमल दिवाकर में दीपित है ज्योति आपकी ही कल्याणी॥

विनीत,

रमलाचार्य्य

"संक्षिप्त परिचय"

मेरी जन्मभूमि ग्राम "महोतेपुर" तहसील सिधौली प्रान्त जिला सीतापुर है। करीब ३० वर्ष से परमोदार स्वर्गीय राजाबहादुर श्री सूर्यबख्श-सिंहजी कसमण्डा राज्य, अवध, जिला सीतापुर में निवास करते हैं। आपके परमोदार विद्यानुरागी बुद्धिमान् पुत्र श्रीमान् युवराज दिवाकरप्रकाशसिंह जी की विशेष कृपा से ही यहाँ उनके आश्रय में रहने का सौभाग्य हुआ। हमारी रचित "चिन्ताहरण जंत्री", जो इस समय सारे भारतवर्ष में विख्यात है और जिसे जनता ने अत्यन्त रुचि और आदरपूर्वक अपनाया है, के संरक्षक आप ही थे। आप ही की असीम कृपा द्वारा इसका उद्‌घाटन हुआ था। दिवाकर (सूर्य) से जैसे समस्त भूमण्डल प्रकाशित होता है ऐसे ही दिवा-कर (युवराज) संरक्षित 'जंत्री' रूप ज्ञान-प्रकाश से प्रायः सारा भूमंडल भी आलोकित हो रहा है।

यह रमलविद्या हमारे पूर्वजों के समय से हमारे वंश में चली आ रही है। मुझको बाल्यकाल से ही इस विद्या के सीखने का चाव था। निरन्तर जिस काम में जी-जान से लगे रहें उसमें किसी न किसी समय सफलता प्राप्त होती ही है—इसी अभ्यास से आज यह अपूर्व ग्रन्थ आप महानुभावों के सम्मुख प्रस्तुत है। अस्तु,

अब हम अपने इष्टदेव महावीर हनूमान्‌जी तथा गुरुदेव भगवान् श्री १०८ श्री स्वामी नारदानन्दजी सरस्वती महाराज ब्रह्मचर्य्य आश्रम नैमिषारण्य (नीमसार) को साष्टांग प्रणाम करते हैं, जिनकी आत्मशक्ति का आशीर्वाद 'दिवाकर' की तरह हमारे हृदय-मन्दिर को प्रकाशित करता रहता है। इसी प्रकाश में इस अपूर्व ग्रंथ को लिखना आरम्भ किया है। इसी कारण इसका नाम "रमल दिवाकर" रक्खा गया है ॐशम्! सत्यं शिवं सुन्दरम् ॥

—बचानप्रसाद त्रिपाठी

श्री हरि:

प्रस्तावना

ज्योतिष का रहस्य

हमारी इन्द्रियों से दृश्यमान इस स्थूल जगत् के परे एक सूक्ष्म जगत् है, जिसका संचालन देवता करते हैं। इस स्थूल जगत् में जो कुछ भी घटना होती है या होनेवाली है, वह सूक्ष्म जगत् में पहले ही हो चुकी रहती है और उसी का प्रतिबिम्ब यहाँ दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति से प्रभावित प्रायः सभी मतों ने किसी-न-किसी रूप में इस सूक्ष्म संसार की सत्ता को स्वीकार किया है। गीता के ग्यारहवें अध्याय में विराट् स्वरूप दिखाकर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी सूक्ष्म जगत् का बोध कराया है और यह स्पष्ट किया है कि जिन आत्मीय जनों को तुम मारना नहीं चाहते हो, वे सभी उस सूक्ष्म जगत् में तुम्हारे हाथों मारे जा चुके हैं। जो घटना वहाँ घट चुकी है वह यहाँ अवश्य ही प्रतिफलित होगी।

वह सूक्ष्य जगत इन चर्मचक्षुओं से देखा नहीं जा सकता। जिन्हें भगवत्कृपा और अपने तपोबल से दिव्यदृष्टि मिल चुकी है, वे ही उसे और उसमें होनेवाली घटनाओं का निरीक्षण कर सकते हैं। हमारे ऋषि-महर्षि त्रिकालज्ञ कहलाते थे, क्यों ? केवल इसीलिये कि अपनी दुःसाध्य तपश्चर्या द्वारा उन्हें वह दृष्टि प्राप्त हो चुकी थी, जिससे वे सूक्ष्म जगत् को प्रत्यक्ष कर उसमें घटित हुई उन घटनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे, जो इस जगत् में घटनेवाली हैं। अतः उनके वचन अमोघ होते थे। ज्योतिषशास्त्र की उत्पत्ति का यही रहस्य है। जिन परिस्थितियों में जो घटनाएँ वहाँ हुई, उन्हें जानकर वैसी ही परिस्थितियों में यहाँ भी वैसी ही घटनाएँ होने का निर्देश ऋषियों ने किया, जो अक्षरशः सत्य होता था। इस विशिष्ट ज्ञान का ज्यों-ज्यों ह्रास होता गया, त्यों-त्यों फल झूठे होने लगे और लोगों का ज्योतिष पर से विश्वास उठने लगा। वास्तव में

ज्योतिषशास्त्र मिथ्या कभी नहीं होता। ज्योतिषी की अल्पज्ञता और फलजिज्ञासु व्यक्ति की श्रद्धा-न्यूनता से उसे मिथ्यात्व का आरोप सहना पड़ता है।

रमल का प्रादुर्भाव

ज्योतिष के विभिन्न प्रकारों में रमल भी एक है।

'रमलदिवाकर' के प्रारम्भ में ही ग्रन्थकार ने रमल की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि महासती के वियोग से व्याकुल हुए भगवान् के सामने महाभैरव ने चार बिन्दु बना दिये और उनसे उसी में अपनी इच्छित प्रिया को खोजने के लिये कहा। विशेष विधान से उन्होंने उसे सिद्ध करके, सप्तम लोक में अपनी प्रियतमा को देखा। तभी से इस रेखा और बिन्दु-शास्त्र का प्रचलन हुआ। 'रमलसिकता' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि एक बार एक व्यक्ति अरब के रेगिस्तान में चल रहा था। बहुत चल चुकने पर वह अत्यन्त थक गया। उसे चारों ओर बालू ही बालू दिखाई दिया। वह अपने गन्तव्य स्थान का मार्ग ही भूल गया और बड़ा चिन्तित हुआ। तब साक्षात् शक्ति ने आकर उसके सामने चार रेखा और चार बिन्दु बना दिये। उसे ऐसी विधि बताई कि वह गन्तव्य स्थान का मार्ग जान गया। वहीं से इस शास्त्र की उत्पत्ति हुई।

क्या यह विदेशी विद्या है ?

रमल दिवाकर में ग्रन्थकर्त्ता ने अनेक स्थानों पर कहा है कि रमल का आविष्कार अरब में हुआ और मुसलमानों के आक्रमण के बाद उन्हीं के साथ यह विद्या भारत में आई। यह कहाँ तक प्रामाणिक है, इसे तो पुरातत्त्व और इतिहास के अनुसंधित्सु खोजें; किन्तु भगवान् मनु के—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस कथन पर आस्था रखनेवाला, इन पंक्तियों का लेखक यह मानने को तैयार नहीं कि संसार की सर्वतः प्राचीन साहित्य-निधि वेद-वेदाङ्गों की निर्माण-स्थली इस भारत में कोई विद्या बाहर से भी आ सकती है। यह दूसरी बात है

कि 'पृथ्वी में दूसरी वस्तुओं को अपनी ओर खींचने की शक्ति है' इस सिद्धान्त को प्रसिद्ध ज्योतिष मर्मज्ञ श्रीभास्कराचार्य ने छठी शताब्दी में ही प्रतिपादित कर दिया था, किन्तु संसार आज १७वीं शती के सर आइज़क न्यूटन को इस गुरुत्वाकर्षक शक्ति का आविष्कारक कहता है। वेतार के तार का आविष्कार सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक श्रीजगदीशचन्द्र वोस ने किया; पर दुनिया उसका आविष्कारक श्री मार्कोनी को समझती है। ऐसे एक नहीं सैकड़ों उदाहरण हैं, जिनमें भारतीय सिद्धांतों को चुराकर उन पर अपना रंग चढ़ाकर भारतीयों को मूर्ख बनाने की चेष्टा की गई है। इसी प्रकार रेखा-विन्दुमय, ज्योतिष के ही एक अङ्ग इस रमल का भी भारत में ही सर्वप्रथम प्रादुर्भाव हुआ। यह ध्यान देने की बात है कि जब महासती के विरह से व्याकुल शंकर को महाभैरव द्वारा इसका सर्वप्रधम बोध हुआ और उन्हीं से इसका विस्तार हुआ तो भला, जिन यवनों की दृष्टि में शंकर अथवा भैरव का अस्तित्व ही नहीं है उनके द्वारा सर्वप्रथम इसका आविष्कार कैसे होगा ?

यह हो सकता है कि बहुत काल तक भारत में विकसित हुई यह विद्या दूर-दूर तक फैल गई और काल प्रभाव से यहाँ इसका महत्त्व कम हो गया। जब देश में मुसलमानों का राज्य हुआ तो इसे राज्याश्रय प्राप्त हो गया, क्योंकि भारतीयों की तरह मुसलमान ज्योतिषविद्या के अन्य सूक्ष्म तत्त्वों को जानते नहीं थे। अतः उनके समय में इसका प्रचार अधिक हुआ।

रमल का वैशिष्ट्य

रमल एक प्रकार से प्रश्नविद्या है। ज्योतिष के अन्य विधानों से प्रश्न का उत्तर देने में कई प्रकार से भूल होने की संभावना रहती है। जिन्हें ज्योतिष का बहुमुखी ज्ञान है, वे तो ऐसी भूलें नहीं कर सकते, किन्तु ज्योतिष का ककहरा भी जिन्होंने नहीं पढ़ा है वे भी जब ज्योतिषी बन बैठते हैं और कुण्डली बनाने या विचार करने लगते हैं, तब तो अनर्थ हो जाता है। क्योंकि कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें साधारण ज्योतिषी समझ ही नहीं सकता। दो-चार फलित की पुस्तकें रटकर फल कहनेवाले ज्योतिष को ही बदनाम करते हैं। ग्रहों की गति में निरन्तर भेद होता रहता है। किसी राशि में सूर्य संक्रमण से २३ दिन पूर्व ही सायन गणना से

उस राशि पर सूर्य चला जाता है, किन्तु पञ्चांगों में संक्रान्ति तक सूर्य उसी राशि में दिखाया जाता है। अब साधारण ज्योतिषी इसे क्या समझें; वह तो उसी के अनुसार फल कहेगा। बृहत्संहिता में लिखा है कि पूर्वकाल में आश्लेषा में सूर्य होने पर दक्षिणायन और धनिष्ठा में सूर्य होने पर उत्तरायण होता था। सूर्य-सिद्धांत में कहा गया है—'यह वही शास्त्र है जिसे पूर्वकाल में भगवान् भास्कर ने कहा था, केवल युगादि के कालजन्य भेद से ग्रह गति स्थिति में अन्तर पड़ता है' आदि। अब इस अन्तर को ये सामान्य ज्योतिषिम्मन्य क्या समझें। परिणामस्वरूप फल ठीक नहीं मिलता और लोग ज्योतिष पर आपेक्ष करने लगते हैं।

रमल शास्त्र विशुद्ध मनोवैज्ञानिक शास्त्र है। इसका सीधा सम्बन्ध प्रश्नकर्त्ता की भावना से रहता है। भारतीय संस्कृति में भावना का कितना महत्त्व है, यह इसी से अनुमान किया जा सकता है कि हमारे शास्त्र 'भावप्रधानो हरिः' कहकर ईश्वर को भी भावनामय ही मानते हैं; सम्पूर्ण पूर्वमीमांसाशास्त्र का एकमात्र आधार भावना ही है। रमल का 'पाशक' प्रश्नकर्त्ता की भावना का ही प्रतिविम्व होता है। वह जैसे प्रश्न की भावना लेकर आता है और उस प्रश्न का जो परिणाम होने वाला है, ठीक उसी प्रकार के रेखा-विन्दु पाशक में प्रदर्शित होते हैं और कुशल रमलज्ञ प्रस्तार बनाकर अपनी विशिष्ट कल्पना एवं तर्कना के आधार पर उचित फलादेश कहता है। इसमें ग्रहों की गति, स्थान के अक्षांश-देशान्तरों की सारिणी आदि विभिन्न पद्धतियों के किसी भेद की कोई गुञ्जाइश नहीं। आवश्यकता केवल इतनी ही है कि रमलज्ञ, इष्टदेव का पूर्ण साधक और कल्पना का धनी हो तथा प्रश्नकर्त्ता शुद्ध जिज्ञासु होकर प्रश्न करे; फिर किसी प्रकार की भूल सम्भव नहीं।

'रमल दिवाकर' और उसके रचयिता

उर्दू में तो इस विषय का भण्डार ही है, संस्कृत में भी कई ग्रन्थ पाये जाते हैं; किन्तु जनभाषा हिन्दी में इस विषय के ग्रंथों का शोचनीय अभाव है। जो हैं भी उनमें विषय को इस प्रकार स्पष्ट नहीं किया गया है जिससे सर्वसाधारण लाभ उठा सकें। तान्त्रिकशिरोमणि, रमलाचार्य, रमलसम्राट् श्री पं० बचान-

प्रसादजी त्रिपाठी ने इस ग्रन्थ का प्रणयन कर हिन्दीभाषी जिज्ञासु जनता का महान् उपकार किया है। पुस्तक में क्या है ? और इससे कितना अधिक लाभ हो सकता है, यह तो पुस्तक का सम्यक् अध्ययन करने पर ही जाना जा सकता है। जहाँ तक हमारा विचार है ऐसा कोई उपयोगी विषय नहीं जिस पर इसमें विचार न किया गया हो। रमलशास्त्र के सामान्य विवेचन से लेकर सूक्ष्म-से-सूक्ष्म तह तक पैठने की चेष्टा प्रत्येक प्रश्न में ग्रन्थकार ने की है। गुप्तोद्घाटन के द्वारा वस्तुतः रमल के प्रत्येक रहस्य का उद्घाटन इसमें कर दिया गया है। प्रारम्भ में रमल के प्रादुर्भाव से लेकर पंक्तिनिर्माण, पाशकसाधन, प्रस्तार बनाना आदि सामान्य विषयों का विस्तृत विवरण देकर प्रथम से द्वादश-पर्यन्त सभी गृहों के विभिन्न प्रश्नों का उदाहरणपूर्वक वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। अन्त में मूकप्रश्न की सरल विधियाँ भी दी गई हैं: इस प्रकार पुस्तक सर्वाङ्गपूर्ण हो गई है।

ग्रन्थकर्ता रमलाचार्यजी के विषय में कुछ कहना तो सूर्य को दीपक दिखाने की तरह है। यों तो रमलशास्त्र एवं चमत्कारिक तन्त्र-मन्त्रों की सिद्धि आपकी परम्परागत सम्पत्ति है; किन्तु आप में उस को वैज्ञानिक स्वरूप देने एवं अपनी अद्भुत कल्पनाशक्ति द्वारा उसे अवसर के अनुकूल बना लेने की विलक्षण क्षमता है। आप इस विषय के समुद्र हैं। उलटे-सीधे, आड़े-वेड़े कैसा ही चतुर बंचक हो आपके चंगुल से निकल नहीं सकता। आपकी विद्वत्ता एवं योग्यता का जाज्वल्यमान प्रमाण "चिन्ताहरण जन्त्री" है, जो प्रतिवर्ष कुछ-न-कुछ नवीनता लिये निकलती है और जनता को इतनी रुचिकर हुई है कि देखते-देखते उसके संस्करण समाप्त हो जाते हैं। इस ७० वर्ष की अवस्था में भी आपमें बच्चों की-सी स्फूर्ति एवं युवकों का-सा उत्साह है। परोपकार की भावना एवं सरल-हृदयता आपके स्वाभाविक गुण हैं। इस विषय में आपके ग्रन्थ यद्यपि पहले प्रकाशित हो चुके हैं; किन्तु ज्यों-ज्यों समय बढ़ता जाता है, ज्ञान और अनुभव मनुष्य की बुद्धि को परिष्कृत करते जाते हैं। उस परिष्कृत बुद्धि से जो सामग्री परिसृत होती है वह भी निश्चित ही उत्कृष्टतर होती है। इसी नियम से यह 'रमल-दिवाकर' वस्तुतः दिवाकर की भाँति ही रमलशास्त्र की वास्तविकता का प्रदर्शन करता है। भगवान् भूतभावन श्रीविश्वेश्वर से विनम्र प्रार्थना है कि वे पंडितजी

को दीर्घायु करें; क्योंकि अभी आपसे जगत् का बहुत उपकार होना अभीष्ट है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशक श्री बाबू जगजीवनदासजी भी प्रचुर धन्यवाद के पात्र हैं, जिनका शास्त्रनिष्ठा एवं ज्योतिषप्रेम से ऐसे ग्रन्थरत्न जनता के सामने आते हैं। हमारी शुभकामनाएँ इनके साथ हैं। भगवान् इनकी कामनापूर्ति में सहायक हों, यही उत्कृष्ट अभिलाषा है।

प्रस्तुत पुस्तक को यथाशक्ति सभी प्रकार सुन्दर बनाने की चेष्टा की गई है; फिर भी मानव से त्रुटियों का होना स्वाभाविक है; इसी कारण इसमें यदि कोई ग़लतियाँ हों तो उनके लिये विद्वज्जन क्षमा करें।

शम्

ब्रह्माघाट, काशी
निर्जला एकादशी, २०१४

जनार्दनशास्त्री पाण्डेय
साहित्याचार्य

विषय-सूची

ॐ

श्रीगणाधिपतये नम:

रमल-दिवाकर

एक बार खेल-खेल में महाशक्ति के अन्तर्ध्यान हो जाने पर श्रीसदाशिव शक्ति के वियोग से व्याकुल होने लगे। सहस्रों वर्षों तक ढूँढ़ने पर भी जब शक्ति कहीं न दिखाई पड़ी, तो शक्ति के मानस-पुत्र श्रीमहाभैरव सदाशिव के समक्ष प्रकट हुए और पृथ्वी पर चार अंगुलियों से चार विन्दु (⁞) बना दिये। इससे सदाशिव कुछ भी न समझ पाये। तब फिर महाभैरव ने उन्हीं पहले विन्दुओं के समीप (⁞ ⁞) चार विन्दु और बना दिये और कहा कि इन्हीं में अपनी इच्छा को ढूँढ़ो। इस प्रकार भगवान् सदाशिव ने उन्हीं विन्दुओं से सातवें आकाश में स्थित भगवती तारा सुन्दरी के रूप में अपनी इच्छित-शक्ति को देख पाया।

भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के अङ्गों में सामुद्रिक, शकुन और प्रश्न प्रमुख हैं। इनकी प्रमुखता का कारण तात्कालिक फल-ज्ञान है। सामुद्रिक-शास्त्र के द्वारा, नेत्रों के समक्ष पड़ते ही मनुष्य, पशु-पक्षी तथा वनस्पति आदि का सारा इतिहास प्रत्यक्ष हो जाता है। इसी प्रकार शकुन तथा प्रश्न-शास्त्र भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक प्रश्न-शास्त्र की है।

यह निर्विवाद सिद्धान्त है कि पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन्हीं पञ्च महाभूतों से यह संसार बना है और इन्हीं से,स्थिर रहता है तथा इन्हीं का परम प्रकृति में लीन हो जाना प्रलय है।

मनुष्य के भी आपादमस्तक समस्त शरीर में येही पाँचों तत्त्व व्याप्त हैं। इनमें पृथ्वी स्थूल है; उससे कम स्थूल जल, उससे कम अग्नि, उससे कम वायु और

जो बिलकुल स्थूल नहीं है यानी केवल सूक्ष्म तत्त्व आकाश है। आकाश सबसे सूक्ष्म होने के ही कारण सर्वव्यापक है। आकाश में ही ये सब व्याप्त हैं।

प्रश्न-शास्त्र में आकाश महातत्त्व को मन कहा जाता है। जो वस्तु प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देती या जो अपने अधिकार में नहीं है उसे प्राप्त करने की बलवती इच्छा तो मनुष्य के मन में होती ही है। इसलिए मनुष्य की इच्छा शक्ति ही मन है और मन ही आकाश है। आकाश में सभी कुछ व्याप्त है। मनुष्य का अदृष्ट अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, इन तत्त्वों में-से किसके बन्धन में और कहाँ पड़ा है, इसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही प्रश्नशास्त्र का अवतरण हुआ है।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में अदृष्ट-ज्ञान की जितनी भी प्रणालियाँ हैं वे सभी खगोल-विद्या पर निर्भर हैं अर्थात्, ग्रह, नक्षत्र, राशि तथा तारिकाओं पर उनका विचार निर्भर है।

प्रस्तुत पुस्तक रमलशास्त्र की है। यह शास्त्र भूमण्डल के अनेक देशों में पर्याप्त प्रचलित हो चुका है। भारत में इसका प्रवेश मुसलिम काल से हुआ है। यवनाचार्य के अनेक सिद्धान्त भारतीय ज्योतिष के आवश्यक अङ्गों की पूर्ति करते हैं। रमलशास्त्र का भी जो साहित्य संस्कृत भाषा में मिलता है, वह स्पष्ट रीति से कहता है कि यह विद्या अरब फारस इत्यादि देशों से भारतीयों ने प्राप्त की है।

इसके मूल आधार अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी ये चार तत्त्व हैं। आकाश तत्त्व को इस शास्त्र में प्रश्नकर्ता की इच्छा-शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। इन तत्त्वों का मूल स्वरूप चतुर्विन्दुक (⁞) है। यह परस्पर समान जातीय विन्दुओं से जब गुणित हो जाते हैं तो रेखा ≡ रूप में हो जाते हैं। इनकी संख्या सोलह है। ज्योतिष के क्रम से ही ये ग्रहों के स्वरूप हैं तथा राशीश हैं। प्रत्येक ग्रह के दो स्वरूप इसमें स्वीकार किये गये हैं।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु



राहु तथा केतु दोनों ग्रह और दोनों के स्वरूप, गुण, स्वभावादि कार्यों में समान हैं तथा किस ग्रह का कौन स्वरूप है इस पर विभिन्न मत हैं। फलापेक्षी परिणाम में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

ये सोलह स्वरूप स्वभावानुसार चार प्रकार से विभक्त किये जाते हैं—अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी तत्त्व के क्रम से इनके भेद किये गये हैं।

अग्नि तत्व				वायु तत्व				जल तत्त्व				पृथ्वी तत्त्व			
·–––	·–·–	··––	···–	–··–	–·––	–···	··–·	····	––·–	––··	·–··	–––·	·––·	–·–·	––––

प्रश्न शास्त्र में इन सोलह स्वरूपों के लिखने के क्रम हैं। इनको पंक्ति कहा जाता है।

शकुन पंक्ति

इस देश में सामान्य रीति से रूपात्मक (शक्लिया) फलादेश के उपयोग में यही पंक्ति निश्चित है। भूमध्यरेखा के उत्तरी भाग में रहनेवालों के समस्त भूत, भविष्य वर्तमान फलादेश इसी शकुन पंक्ति से प्रकट होते हैं। इसमें जो स्वरूप जिस घर में स्थित है, वह प्रस्तार में यदि उसी घर में पड़ जाय तो स्वक्षेत्री, महाबलवान् माना गया है। इसका स्वरूप तथा रमल-रहस्यकार की लिखी हुई संज्ञाएँ ये हैं :—

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८
नाम	वाग्मी	तीक्ष्णांशु	पात	सौम्य	दैत्यगुरु	मन्दग	सौरि	लोहित
रूप	·–––	–·–·	·–·–	––––	··–·	·––·	–––·	–·––
गृह	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
नाम	विधु	उष्णगु	सूरि	वक्र	आर	कवि	बोधन	शीतांशु
रूप	––·–	··––	––··	···–	·–··	–···	–··–	····

प्रत्येक रूप के यवनोक्त नाम भारतीय नामों के आगे कोष्ठ में दिये जा रहे हैं:-

१ वाग्मी (लहियान) वृ.	९ बिधु (वयाज्ञ)
२ तीक्ष्णांशु (कब्जुल दाखिल)	१० उष्णुग (नसरतुल खारिज)
३ पात (कब्जुल खारिज)	११ सूरि (नसरतुल दाखिल)
४ सौम्य (जमात)	१२ वक्र (अतवेखारिज)
५ दैत्यगुरु (फरह)	१३ आर (नक़ी)
६ मन्दग (उक़ला)	१४ कवि (अतवेदाखिल)
७ सौरी (अकीस)	१५ बोधन (इजतमा)
८ लोहित (हुमरा)	१६ शीतांशु (तरीक़)

रमल प्रश्न भाग के फलादेश का विचार करने के लिये रूप-विचार तथा विन्दु-गति ये दो प्राणालियाँ होती हैं। इस पुस्तक में सामान्य रीति से प्रथम रूप-विचार लिखकर बाद में विशेष रूप में विन्दु-गति पर प्रकाश डाला जायगा।

रूप-विचार में पाशक की आवश्यकता है। प्रस्तार बनाने की अन्य भी अनेक विधियाँ शास्त्र में बतायी गई हैं; परन्तु सर्वश्रेष्ठ तथा सुगम पाशक द्वारा ही होता है। अतः जब सूर्य्य मेष राशि के १०वें अंश पर हो, तब सोना, चाँदी, लोहा, शीशा, ताम्र, पारा एक-एक रत्ती तथा सात तोला एक रत्ती पीतल एक में गलाकर बराबर भार और आकार के चौपहलू आठ टुकड़े बनाकर चार-चार टुकड़े एक-एक कील में गुँथ देने चाहिये। इसके बाद नीचे लिखे मन्त्र का सवा लाख पुरश्चरण करके तथा साढ़े बारह हजार आहुति हवन करके पाशक को सिद्ध करना चाहिये।

"मन्त्र"

"ॐ नमो भगवति देवि कूष्माण्डिनि सर्वकार्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि एहि त्वर त्वर वरं देहि लिहि मातङ्गिनि लिहि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा।"

एक पाशक में चार गुटिका तथा एक गुटिका में चार पहल होंगे। इसी प्रकार दो पाशकों का एक जोड़ा प्रयोग में लाया जाता है। गुटिका के पहले पहल

पर |-.| एक रेखा तथा बिन्दु का चिह्न बनाया जाता है। दूसरे पहल पर |:| दो बिन्दु का चिह्न तथा तीसरे पहल पर |.-| एक बिन्दु एक रेखा का चिह्न, एवं चौथे पहल पर |=| दो रेखा का चिह्न बनाया जाता है।

इस प्रकार इस पाशक को सिद्ध करना चाहिये। सप्त धातुओं का योग सात ग्रहों तथा मातङ्गिनी भगवती के अधिष्ठान से यह पाशक देवमूर्ति के समान बन जाता है। पूरा पाशक मातङ्गिनी का स्वरूप एवं पहली गुटिका प्रश्नकर्ता का भाग्य तथा शेष गुटिकाएँ ग्रहों के स्वरूप हैं। प्रतिदिन पाशक का पूजन तथा मंत्र-जप भी करना चाहिये। पाशक को, प्रश्न करने के पूर्व १६ बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करना चाहिये। सूर्योदय से १२ बजे दिन तक ही पाशक पातन शास्त्रों में कहा गया है। अतः इसी समय में प्रश्न विचारना चाहिये। प्रश्न विचारने में अत्यन्त ध्यान देने योग्य है कि पवित्र भूमि पर ही पाशक गिराया जाय। छत पर, चलते हुए, दुर्दिन में, रात्रि में, अशुद्ध स्थान में, बिना मन्त्र का अनुष्ठान किये हुए या बिना पाशक अभिमन्त्रित किये हुए विचार किया हुआ प्रश्न या बनाया हुआ प्रस्तार व्यर्थं होता है। यदि आवश्यकता पड़ जाय और पाशक पातन के लिए योग्य स्थान तथा काल न हो तो शास्त्रकारों ने अन्य भी तीन प्रकार प्रस्तार बनाने के लिए बताये हैं; परन्तु इन प्रस्तारों का पुष्टीकरण पाशक द्वारा उचित समय तथा स्थान पर कर लेना चाहिये।

प्रथम रीति

श्वास रोककर एक सूर्य ☀ बना लें। इसकी किरणों को गिनें, सोलह से अधिक हों तो १६ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे शकुन पंक्ति से उसी संख्या का रूप (शक्ल) पहले ले लें। उससे सातवाँ दूसरा, उससे सातवाँ तीसरा और फिर उससे सातवाँ चौथा रूप (शक्ल) लेकर मातृपंक्ति बना लें।

उदाहरण—यदि प्रश्नकर्ता ने सूर्य बनाया, किरणें गिनी गयीं, तो २३ निकलीं। २३ को १६ से भाग दिया गया, ७ शेष रहे। अतः आप पृष्ठ ३ पर शकुन पंक्ति देखें, ऊपर गृह लिखित हैं।

	(४)	(३)	(२)	(१)
शकुन पंक्ति से सौरि ≡̣ रूप प्राप्त हुआ। सौरि रूप से प्रारम्भ कर सात तक गिना	≡̣	÷̲	÷	≡̣

तो सातवाँ रूप (शक्ल) आर ÷ प्राप्त हुआ। आर रूप से प्रारम्भ कर सात तक गिना तब १६ गृह तक चार संख्या हुई फिर पाँचवीं संख्या प्रथम गृह से आरम्भ होकर सातवीं संख्या तीसरे गृह पर पूण हुई। तीसरा गृह पात रूप ÷̲ है। पातरूप को प्रथम मानकर गिनने पर सातवाँ विधु रूप ≡̣ ठहरा। लीजिये, आपकी प्रथम प्रकार से मातृपंक्ति तैयार हो गई।

द्वितीय रीति

पृच्छक से १०० के नीचे चार संख्याएँ पूछ लें। सोलह से अधिक को १६ से भाग देकर जो शेष निकले, उस संख्या को शकुनि-पंक्ति में देखकर उन्हीं संख्याओं के रूपों से मातृपंक्ति बना लें।

प्रस्तार की चार पंक्तियाँ

पाशक से तथा तीन अन्य प्रकार से बने हुए प्रस्तार में चार पंक्तियाँ होती हैं। पहली पंक्ति मातृपंक्ति कही जाती है। इसमें प्रथम द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ गृह होते हैं। दूसरी पंक्ति दुहितृ पंक्ति है। मातृपंक्ति के प्रत्येक रूप के क्रम से "अग्नि तत्त्व" (प्रथम विन्दु या रेखा) को लेकर ५वाँ गृह बनता है। इसी प्रकार वायु तत्त्व से छठें, जल तत्त्व से सातवें तथा पृथ्वी तत्त्व से आठवें गृह का रूप बन जाता है।

प्रथम तथा द्वितीय रूप के गुणनफल से नवाँ (≡̣ × ÷) = ÷̲ तथा तृतीय, चतुर्थ रूप के गुणनफल से दसवाँ (÷̲ + ≡̣) = ≡̇ रूप सिद्ध होता है। गुणन

(८)	(७)	(६)	(५)	(४)	(३)	(२)	(१)	तत्त्व
≐	⁝̄	≡	⁝̲	≡̣	÷̲	÷	≡̣	अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी

(१२)	(११)	(१०)	(९)
÷	⁝̲	≡̇	÷̲

(१४)	(१३)
÷	≡̣

१५	१६
⁝	⁝̲

क्रम यह है कि रेखा तथा रेखा का गुणनफल रेखा एवं (—×—=—) विन्दु तथा विन्दु का गुणनफल रेखा होगा। रेखा तथा (·×· =—) विन्दु का गुणनफल विन्दु एवं विन्दु तथा रेखा का (—× ·=·) गुणनफल विन्दु होता है। पञ्चम तथा षष्ठ रूपों का गुणन- (·×—=·) फल एकादश गृह (⁝ × ☰ = ⁝) होता है। सप्तम और अष्टम का गुणनफल द्वादश गृह (⁝ × ⁝ = ⁝) होता है। नवम तथा दशम रूपों का गुणनफल (⁝ × ☰ = ☰) त्रयोदशरूप, तथा एकादश और द्वादश का गुणन-फल चतुर्दश रूप (⁝ × ⁝ = ⁝) होता है। त्रयोदश और चतुर्दश का गुणनफल पञ्चदश रूप (☰ × ⁝ = ⁝) होता है। एवं प्रथम तथा पञ्चदश का गुणनफल षोडश रूप (☰ × ⁝ = ⁝) होता है। नवम, दशम, एकादश, द्वादश रूपों को दौहितृ पंक्ति तथा शेष चार रूपों को साक्षि पंक्ति कहते हैं। त्रयोदश रूप प्रथम प्रश्न भाव का साक्षी, चतुर्दश रूप-प्रश्नकर्ता तथा कार्यसिद्धि के धर्माधर्म का साक्षी, पञ्चदश रूप प्रस्तार का साक्षो एवं षोडश रूप नि:श्चत फलादेश का साक्षी माना गया है।

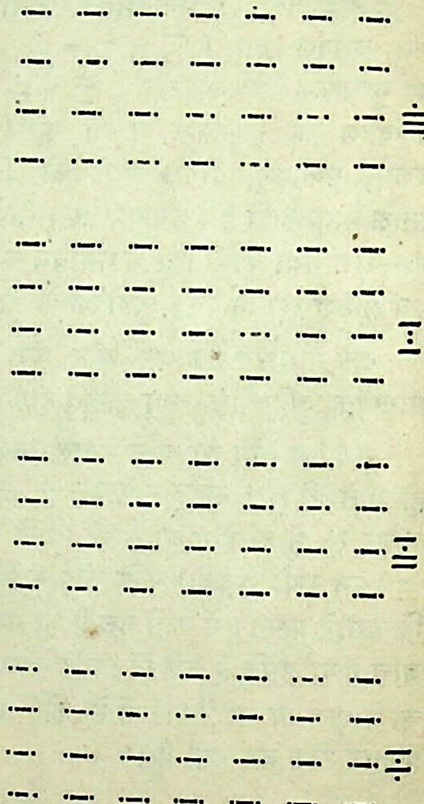
एक से बारह तक घर और घर के रूप प्रश्नस्थल होते हैं। प्रश्नस्थल मातृपंक्ति, दुहितृपंक्ति तथा दौहितृ पंक्ति में ही समाप्त हो जाते हैं।

अब इस बात का खास खयाल रक्खें कि खाना १५ में सदैव यह रूप (शक्लें) ही आते हैं (⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ ☰) इनके अतिरिक्त अन्य रूप (शक्लें) खाना १५ में कतई न आ सकेंगे। यदि संयोगवश (⁝ ☰ ⁝ ⁝ ⁝ ☰ ☰ ☰) इन रूपों (शक्लों) में से कोई रूप खाना १५ में आ जावे तो समझ लीजिये कि हमारे प्रस्तार में कहीं गलती हो गयी है। फिर आदि से शून्य तथा पाई की जाँच गुणा आदि से कर लें। जब खाना १५ में दो शून्य तथा दो पाई अथवा चारों शून्य या चारों पाई में से कोई रूप आ जावे तो समझ लीजिये हमारा प्रस्तार ठीक बन गया है।

प्रस्तार बनाने की तीसरी विधि

यदि आपके पास पाँसा नहीं है, तब इस प्रकार से प्रस्तार या जायचा बनावें-

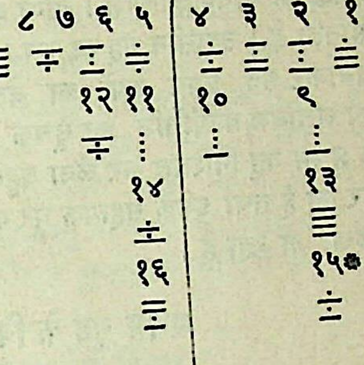
जो प्रश्न करना हो अर्थात् जिस प्रश्न का उत्तर आपको मालूम करना हो अपने इष्टदेव का ध्यान धर कर एक ही श्वास में बिना गिने विन्दुओं की चार पंक्तियाँ बनायें। परन्तु इस बात का ध्यान रक्खें कि विन्दु १२ से कम न हों और २० से अधिक न हों। फिर इन विन्दुओं को दो-दो विन्दु एक में करते जावें। यदि पूरे बंट जावें तो पाई (—) रक्खें। यदि एक बचे तो शून्य (०) रक्खें, इसी प्रकार विन्दु से चारों पंक्तियों का एक रूप (शक्ल) बन जायगा।



उदाहरणार्थं—इस प्रकार विन्दु-रक्खें और उन बिन्दुओं को दो दो में मिलाते जायँ और अन्त में जो शून्य या पाई मिली क्रम से इस प्रकार रखकर चार रूप (शक्लें) जिन्हें गुमदान कहते हैं बनायें।

पुनः १, २, ३, ४, रूपों के प्रथम विन्दु से रूप ⫶ बनाया जिसको खाना ५ में रक्खा, इसी प्रकार दूसरी पक्ति के चारों खाना के पाई बिन्दु लेकर ⫶ रूप बनाया। इसको खाना ६ में रक्खा। इसी प्रकार खाना ७ में रूप ⫶ रक्खा इसी प्रकार चौथी पंक्ति में चारों पाई मौजूद हैं अतः रूप ☰ खाना ८ में रक्खा। इस प्रकार जायचा के ५, ६, ७, ८ रूप बन गये। अब ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ तक के रूप गुणा से बना लिये। खाना १, २ के गुणा से ९वाँ, ३, ४ के गुणा से १०वाँ और ५, ६ से ११ वाँ तथा ७, ८ से १२ वाँ रूप बना लिया। गुणा करने की विधि पहले लिख चुके हैं कि जब शून्य के

सामने शून्य होगा अथवा पाई के सामने पाई होगी तब हासिल पाई होगी। अथवा जब शून्य के सामने पाई या पाई के सामने शून्य होगा, तब इस प्रकार (·÷) (·÷) हासिल शून्य होगा। अब १ और २ के गुणा से रूप ⋮ और ३, ४ से भी रूप ⋮ क्रम से खाना एवं १० में और ५, ६ से रूप ⋮ खाना ११ में फिर ७, ८ से ÷ १२ वें खाना का रूप बन गया। और ९, १० से खाना १३ का रूप ≡ और ११×१२ से रूप ÷ खाना १४ में रक्खा और १३, १४ को गुणा से खाना १५ का रूप बना फिर १५ तथा १ से खाना १६ का रूप बनाया।



विशेष

कुछ आचार्यों का मत है कि प्रश्नस्थल जिस पंक्ति में हो उसे मातृपंक्ति कहते हैं और उसके आगे दूसरी पंक्ति को दुहितृ पंक्ति, तीसरी को दौहितृपंक्ति मान लिया जाता है। इस क्रम से १३. १४, १५ रूप इन्हीं तीनों के साक्षी तथा १६वाँ रूप फलादेश का साक्षी होता है।

प्रस्तार की चारों पंक्तियों का प्रत्येक घर 'अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी' इस क्रम से होता है। १, ५, ९, १३ अग्नि-गृह हैं, इनमें अग्नि तत्त्व के रूप सदा बली होते हैं। २, ६, १०, १४ वायु-गृह हैं, इनमें वायु रूप बली होते हैं। ३, ७, ११, १५ जल-गृह हैं, इनमें जलरूप बली होते हैं। ४. ८, १२, १६ पृथ्वी-गृह हैं। इनमें पृथ्वीरूप बली होते हैं। यह प्रथम बल हुआ तथा इसे स्थान-बल भी कहते हैं। शकुन पंक्ति के क्रम से रूप का बल उच्च का होता है। प्रस्तार में उच्च बली तथा गेह बली रूप विशेष फल प्रकट करनेवाले

---

* देखो खाना १५ में रूप ⋮ आ गया, अतः प्रस्तार ठीक है।

होते हैं। अग्नि, वायु की तथा जल, पृथ्वी की मैत्री है। अतः मित्रक्षेत्री रूप उच्च बली तथा गेह बली की अपेक्षा कम बलवाला होता है। अग्नि और जल की तथा पृथ्वी और वायु की शत्रुता है। शत्रुक्षेत्री रूप निर्बल तथा कार्य-सिद्धि का बाधक होता है। अग्नि और पृथ्वी की तथा जल और वायु की उदासीनता है। उदासीन गेह का रूप साधारण माना जाता है। इस प्रकार प्रस्तार बनाकर सर्व प्रथम रूपों का बलाबल विचार करना चाहिये। प्रश्नगेही का बलाबल कार्यसिद्धि का सूचक है। प्रश्न करने के लिए पाशक पातन के प्रथम यह निश्चित कर लेना बहुत आवश्यक होता है कि प्रस्तुत प्रश्न किस घर का है तथा इसके सहायक घर कौन-कौन से हैं। अतः गृह-विचार विस्तार से लिखा जा रहा है।

प्रथम गृह के विचारणीय प्रश्न-विषय

सामान्य—प्रश्न और विचार का सम्बन्ध गृह और रूप इन दो भागों में विभक्त होता है। प्रश्न गेह में ही होता है। भूत भविष्य, वर्तमान काल में प्रश्न के विषय में स्थित वस्तु या कार्य की परिस्थिति, साध्यासाध्य, सहायक, काल इत्यादि रूप से प्रकट होते हैं। प्रश्न सदैव उसी गृह में रहता है, भाग्यानुसार रूप बदलते रहते हैं। अतः पाशक-पातन काल में गृह-विचार अत्यन्त आवश्यक है तथा बहुत सावधानीपूर्वक निश्चय कर लेना चाहिये कि जो प्रश्न निकाला जा रहा है वह किस गृह से सम्बन्धित है।

विशेष—प्रश्नकर्ता के या किसी भी प्रश्न-विषय के शरीर की दशा (यदि वह शरीरधारी हो तो) कैसी है। शरीर के अवयव, हस्त, पाद, मुखादि किस दशा में है। सुख-दुःख, पद आदि बल, सेना, पुरुषार्थ, राजा की नौकरी, राजनैतिक कार्य, अपने प्रतिपक्षी की तुलना में अपनी स्थिति, किसी रोग की शान्ति, वाक्-शक्ति, कण्ठ-स्वर (संगीत के लिये), मूर्खता, बुद्धिमत्ता, प्रसन्नता अप्रसन्नता, चिन्ता, उद्वेग, आशा, किसी नवीन कार्य का आरम्भ और परिणाम, सन्तानोत्पत्ति, सन्तान की परिस्थिति आदि प्रत्येक प्रकार के प्रश्न का निष्कर्षभूत सिद्धान्त प्रथम गृह के विचारणीय विषय है।

प्रथम गृह प्रश्नकर्ता का स्वरूप तथा भाग्य माना जाता है। अतः प्रत्येक प्रकार के प्रश्न का शुभाशुभ जनित प्रभाव आधा उस पर निर्भर है।

द्वितीय गृह के विचारणीय विषय

द्रव्य, कोश, जीवन का सहारा, भोजन, आय-व्यय, मित्रता रखनेवाला, सहायता देनेवाला, साक्षी, दान लेना, ऋण देना, धनी होना, दरिद्र होना, प्रवासी का आगमन, वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ-हानि, उदारता, कृपणता, कन्या या पुत्र के व्यापार में हानि-लाभ, धरोहर, किसी ने अपनी मृत्यु के समय जो दे दिया हो—या देने को कहा हो उसके मिलने या न मिलने का विचार, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँची वस्तु या व्यक्ति की दशा, परदेश में स्थित सन्तान को शिक्षा देनेवाले तथा निरीक्षण करनेवाले व्यक्तियों का विचार यह दूसरे गृह के विचारणीय विषय हैं।

तृतीय गृह के विचारणीय विषय

भ्राता, भगिनी, वंश-कुटुम्ब, धात्री, स्नेहपूर्वक दया करनेवाले, गृह-परिवर्तन, अंगस्फुरण, पद—अवस्था का परिवर्तन, समीप-यात्रा, साधारण विद्या (कताई, बुनाई, सिलाई इत्यादि), संयम और संयमी, स्वधर्म, स्वेष्टदेवोपासना, नष्ट वस्तु, देवालय, छात्रालय और स्वप्न-फल का विचार तृतीय गृह से किया जाता है।

चतुर्थ गृह के विचारणीय विषय

पिता, अपनी मर्यादा, अपने घर और अपने परिवार में अपना पद, रूई ऊन, रेशम, जूट इत्यादि की बनी सामग्री, वस्त्रादि, शय्या, आसन इत्यादि, भू-सीमा, सुख-समृद्धि, खेत, वृक्ष, वृक्षारोपण, जलाशय या जलाशय के जल सम्बन्धी, किसी शूद्र अथवा मृतक का स्थान, भूमि में स्थापित वस्तु, किसी गुप्त किये गये कार्य के परिणाम तथा यश का विचार चतुर्थ गृह के विषय हैं।

पञ्चम गृह के विचारणीय विषय

विद्या-प्राप्ति (अध्ययन), सन्तान सम्बन्धी प्रत्येक प्रश्न का, प्रेमी करनेवाले पुरुष या स्त्री का, आश्चर्यपूर्ण किसी वस्तु या कार्य का, किसी भ

नयी वस्तु का, दूत का, समाचार का, नीति-निर्णायक का, प्रवासी का, प्रवासी के पत्र का, नवीन वधू का, गृह में होनेवाले मंगल का, प्रसन्नता के कारणा का, धारण किये जानेवाले वस्त्रादि का. राजा के दिये हुये वस्त्रादि का, नशा या जहर के खाने का विचार पञ्चम गृह से किया जाता है।

षष्ठ गृह के विचारणीय विषय

दास-दासी, सेवक, नीच जाति के व्यक्ति का, शोक के कारण का, शिक्षा देने का, रोगी का, रोग का, औषधि का, वैद्य का, गर्भवती का गर्भ का, वरावरी का, प्रत्येक प्रकार के कुकर्म (वध, अग्निदाहादि करने) का, अगम्यागमन का, किसी की निन्दा करने का, कारागार में वन्द व्यक्तियों का, कठोर वस्तु (लोहा पाषाणादि) का, पुरुष से त्यक्त नारी तथा नारी से तिरस्कृत पुरुष का, जो व्यक्ति गुप्त रीति से कहीं छिपा हो उसका, उच्चाटन-मारण, वशीकरणादि प्रयोगों का, किसी गुप्त भेद के प्रकट होने या न होने का, पिता की स्थानान्तर-प्राप्ति का, भ्राता-भगिनी है या नहीं इसका, छोटे चतुष्पद (अजा-गर्दभादि) का, अश्व का और भूतादि बाधा का विचार षष्ठ गृह से होता है।

सप्तम गृह के विचारणीय विषय

विवाह, स्त्रियों की परिस्थिति और विवाह के मध्यस्थ व्यक्ति का, प्रवास का, शत्रु-सैन्य का, जिस व्यक्ति के प्रति मन में सन्देह हो उसका, हठ करने का, किसी भी व्यक्ति से विवाद करने का, साक्षी व्यक्ति का, मध्यस्थ व्यक्ति का, पितामह का, माता का, अपने घर में रहनेवाले व्यक्तियों का, भागे हुए व्यक्ति का, चोर का, धरोहर खर्च कर डालनेवाले या मार लेनेवाले का, चोर के स्वरूप का, प्रवासी के समाचार का, गिरवीं गाँठ का, ऋण लेनेवाले का सप्तम गृह से विचार किया जाता है तथा प्रथम गृह के किये हुए समस्त विचारों के सिद्धान्त का निष्कर्ष भी इस गृह से स्पष्ट किया जाता है।

अष्टम गृह के विचारणीय विषय

साधारण भय का, मार्ग के भय का, मृत्यु का, घातक व्यक्ति का, विष से व्याकुल का, जल में डूबनेवाले का प्रवासी के द्रव्य का, चुराई गयी वस्तु का,

किस की मृत्यु किस प्रकार हुई है या किस प्रकार होगी इसका, मृतक व्यक्ति की सम्पत्ति के भाग का, ऋण वापस मिलने न मिलने का, स्त्री-द्रव्य का, लावारिस की सम्पत्ति का, चोर से चुराई वस्तु की स्थिति का, भूमि में अज्ञात गड़ी वस्तु का, जिस व्यक्ति से स्नेह हो उसके घर का पता लगाने का, पिता के स्नेही व्यक्ति का, दुर्भाग्य का, खोई वस्तु या नष्ट होती हुई वस्तु का, बढ़ते हुए उपद्रव का, शत्रु से सन्धि करने का, शरीर नष्ट करनेवाली औषधि का विचार इस गृह से होता है।

नवम गृह के विचारणीय विषय

प्रवासी का, मार्ग में स्थित दूर या समीप का, प्रवास से लौटे हुए के कुशल-क्षेम का, अपने धर्म का, साधने योग्य या पढ़ने योग्य विद्या का, धरोहर रखने का, स्वप्न-फल का, दूर के कुटुम्बियों (साली-साढू इत्यादि) का, स्नेही का, दैवी आदेश का, इष्टदेव की प्रसन्नता का कलह करनेवाले अन्यायी के साथ कलह करने का विचार नवम गृह से होता है।

दशम गृह के विचारणीय विषय

राज्य, राज्यपद राज्यपदाधिकारी, अपने प्रभाव से मिलानेवाली वस्तु, सम्मान, प्रतिष्ठा, उच्चपद, किसी महापुरुष से सम्बन्धित कोई भी कार्य, अपना जातीय कर्म, गुरु, गुरु से सम्बन्धित वस्तु या कार्य, श्वसुर, चचेरे भाई, स्त्री का गौरव, स्त्री को या स्त्री के द्वारा मिलने वाला पद या वस्तु का विचार दशम गृह से किया जाता है।

एकादश गृह के विचारणीय विषय

आशा, भाग्योदय, मित्र, अति उच्च पद, नजर-भेंट तथा प्रत्येक प्रकार की अपनी योग्यता से सम्बन्धित उन्नति का विचार एकादश गृह से किया जाता है।

द्वादश गृह के विचारणीय विषय

दुष्टों का, दुष्टता का, निषिद्ध वचन (गाली-गलौज, शिकायत करना, भ्रष्ट प्रचार करना), निषिद्ध कर्म, क्रूर कर्म (मार-पीट, घर फूंकना, गांव फूंकना, औरत

भगाना, विष देना), प्रत्येक प्रकार का भयपूर्ण कार्य, आतंकपूर्ण कार्य, बन्धन
(जेल) दुर्भाग्य, किसी भी पद, मर्यादा, प्रतिष्ठा, नौकरी, व्यापार या वस्तु या
आशा का सर्वनाश, दुःख, शत्रुता, कलह का परिणाम, पशुओं का क्रय-विक्रय
तथा गुण-दोष इन सबका विचार द्वादश गृह से किया जाता है।

रूपों के गुण-वर्णादि

⁞ ब्राह्मण है, गौर वर्ण है, धर्म में आशक्त-पण्डित, मीठा बोलनेवाला,
मीठा भोजन करनेवाला है। छोटी ग्रीवावाला, श्याम नेत्रवाला, लम्बा डील,
एक दाँत नीचे का टूटा, सिर पर जख्म या निशान जलने का होगा या बीच
सिर में बाल न हो या गंजा सिर हो।

⁞ श्रेष्ठ क्षत्रिय, गेहूँ सरीखे वर्णवाला, मीठा बोलनेवाला, श्याम नेत्र-
वाला, शिल्प विद्या में निपुण, चतुर तथा मध्य डील (कद) वाला, बड़ा सिर,
लम्बी गरदन, भौहें मिली हुई, पेट बड़ा जिसमें बल पड़े हों, हाजिरजवाब हो।

⁞ म्लेच्छ हो, अन्याय में तत्पर, फोड़ा-फुन्सी के घावों से घिरा शरीर-
वाला. बिलाई सरीखे नेत्रोंवाला, दीर्घ शब्द करनेवाला, काला तथा पीला वर्ण,
बड़े दाँत, चुगुलखोर, कड़ुआ पदार्थ प्रिय माननेवाला, निन्दित स्थान में बसने
वाला, मुँह पर चेचक के दाग, पाँव मोटे, दाँत छोटे, छाती पर बाल हों।

⁞ गेहूँ जैसा रंगवाला, शूद्र जाति, चित्रकारी करनेवाला तथा गुणवान् भी
हो; बड़ी नाक, चौड़ा मस्तक, बदन में फोड़े-फुन्सी के चिह्न, दाढ़ी बड़ी, चेहरा
कुछ साँवला मिला पक्का रंग, काले नेत्र, बड़े मुखवाला हो।

⁞ दीर्घ शरीरवाला, लिखने में निपुण, लेखक, हँसमुख, कटी हुई भृकुटी-
वाला, काले और सूक्ष्म नेत्रवाला, मीठा भोजन करनेवाला, मझिली डील,
स्वरूपवान्, बिना दाढ़ी के हो, पतली नाक, गोल चेहरे पर चिह्न या तिल हो और
कान के नीचे दाग जख्म या फोड़ा हो।

⁞ काले वर्णवाला, दीर्घ तथा लम्बा मुख, नीच जातिवाला, मोटी तथा
ऊँची नाक, ठँगना डील, छोटा सिर, चौड़ा मुँह, छोटे दाँत, बड़ा पेट, लम्बी
दाढ़ी, छोटे पैर, लम्बी पिंडुली, चेहरे के बाईं ओर या सिर पर निशान, लहसुन
दाहिनी आँख अथवा दाहिने पैर में दोष हो।

कृष्ण वर्ण, खेती करनेवाला, काले नेत्रोंवाला, कुवेषवाला, गृह-कार्य में कुशल, गोल चेहरा, मोटे होंठ, सिर बड़ा, दाँत बड़े-बड़े, आधे नीचे के लम्बे और आधे बड़े यह स्त्री का हुलिया है। पुरुष काला रंग, लम्बा डोल, आँखों तथा दाँतों में कोई ऐब हो।

यह चत्री है, सूर-वीर, शास्त्रों का ज्ञाता, जीर्णोद्धार करने में निपुण, चोरी करनेवाला, लम्बा डील, दाढ़ी में चिह्न लहसुन अथवा तिल या गढ़ा हो, मुख पर दाग चेचक का, लड़ाका प्रकृति का होवे।

गौर वर्ण ब्राह्मण है—सुखी, देवता का पुजारी, रूपवान् हो, शरीर भरा हुआ सुडौल मझिली डीलवाला, भौंहें मिली हुई, छोटा मुख बड़ी-बड़ी स्याह आँखें, लम्बे बाल, चौड़ी छाती, दाँत खुले हुए, दाहिनी छाती पर तिल हो, पेट पर चिह्न जख्म आदि का और बगल में तिल हो।

उत्तम क्षत्रिय, राजकर्म में रत, धर्मयुत, दीर्घ देहवाला, गौरवर्ण, सुन्दर नेत्रवाला, जल के समीप स्थान, खड़ी नाक, छोटा सिर, छोटी दाढ़ी, चौड़ी छाती, आवाज ऊँची बोलनेवाला, बारीक उँगलियाँ, पीछे दाँत, गोल मुख पर चिह्न तिल आदि का हो।

गोरे वर्ण का ब्राह्मण तपस्वी है। लम्बा डील, गोल मुख, तिल चिह्न से युक्त, बड़े नेत्रवाला, यदि यह रूप गृह ७ में हो तो पुरुष, अन्य घरों में स्त्री संज्ञक हैं। बड़ी नाक, बड़ा सिर, बड़े पैर और पैर में निशान चोट या जले का हो।

म्लेच्छ वर्ण, घावों के चिह्नों से चिह्नित, दुबला शरीर, काला स्वरूप, दरिद्र भाववाला, मुँह से बदबू आती होवे, लम्बी डील, बड़ा पैर, छोटा सिर, पतली गर्दन, नीचे का दाँत टूटा या कीड़ा खाया हुआ।

गोरा वर्ण, क्षत्रिय, दुबला, पीले नेत्रोंवाला, मझिली डील, कोताह गर्दन, छोटा मुँह, बड़ी नाक, होंठ बड़े-बड़े, दाँत छिदरें, नीचे का दाँत कुछ टूटा, मांसाहारी, निर्भीक होवे।

गेहुँआ रंग, लम्बा शरीर, दुबला-पतला, शूर-वीर, सुन्दर मुख, कटी हुई भृकुटिवाला, बड़ी जाँघ, काले नेत्र, तिल के चिह्नों से युक्त, गोल

चेहरा, छोटे पैर, छोटी नाक, मुख छोटा, कान बड़े, पिंडली तथा पैरों पर चिह्न हो, बाँईं तरफ नाक में छिद्र हों।

∴ शूद्र वर्ण है, राजा का लेखक अथवा ज्योतिषी; गुणों से युक्त, सुन्दर दाढ़ीवाला, गेहुँआ रंग होगा। भौहें खुली. हाजिरजवाब, मुख पर दाहिनी तरफ चिह्न या दाग या बगल के नीचे चिह्न जख्म का होगा, छोटी नाक चौड़े दाँत का हो।

⁝ गौर वर्ण, वैश्य जाति का, दीर्घ देहवाला, स्त्री संज्ञक हो, पतला व दुबला शरीर, बारीक आवाज, छोटा सिर, नाक और कान पर या छाती के बाँईं तरफ निशान या तिल हों।

अवधि-ज्ञान

पाशक पातन करके, प्रस्तार बनाकर, प्रश्न गृह प्रथम-गृह, तथा १३-१४ व १५ की शुभाशुभ दशा देखकर कार्यसिद्धि की अवधि निकालनी पड़ती है। इसके लिये पहले ही पाशक पातन-काल में संकल्प मन में कर

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
दैत्यगुरु	वाग्मी	कवि	विधु	शीतांशु	पात	लोहित	सौरि	उष्णगु	मन्दग	बोधन	सूरि
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३३	३६
१	३	६	१०	१५	२१	२८	३६	४५	५५	६६	७८

१३	१४	१५	१६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वक्र	आर	तीक्ष्णांशु	सौम्य
३९	४२	४५	४८
९१	१०५	१२०	१३६

लेना चाहिये कि अमुक प्रश्न-विषयक कार्य की सिद्धि तथा अवधि निकालने के निमित्त यह पाशक डाल रहा हूँ। यदि ऐसा न किया हो तो केवल अवधि के लिये पाशक पातन कर प्रस्तार बना लेना चाहिये और उसके लिये विजदह पंक्ति तथा उसकी संख्याओं से निर्णय करना चाहिये। विजदह पंक्ति के सोलह रूपों का यह क्रम है तथा उनके गृह के ध्रुवाङ्क और रूपों के ध्रुवाङ्क पृष्ठ १६ के चक्र में देखें। जैसे ∴ दैत्यगुरु का गृह ध्रुवाङ्क २ रूप ध्रुवाङ्क १ है।

अवधि विचार के प्रस्तार में विचारना चाहिये कि विजदह क्रम के अनुसार कौन रूप स्वक्षेत्री है। स्वक्षेत्री रूपों के रूप ध्रुवाङ्क ही कार्य-सिद्धि की अवधि है। यह संख्या दिनों की है।

यदि ऊपर बताया हुआ रूप प्रस्तार में पुनरुक्त होकर कई स्थानों में पड़ गया हो तो रूप-ध्रुवाङ्क में प्रत्येक गृह के ध्रुवाङ्क जोड़कर एक संख्या बना लें और फिर प्रस्तार में देखें कि प्रश्न-गृह से पुनरुक्त रूप आगे है या पीछे, यदि पीछे हो तो प्रश्न-गृह के ध्रुवाङ्क उक्त संख्या में जोड़ लें। यदि प्रश्न-गृह से आगे हो तो उतने ही न्यून कर दें। यह अवधि भी दिनों की ही निकलेगी।

यदि प्रस्तार में विजदह पंक्ति का कोई भी रूप स्वक्षेत्री न हो तो विन्दु (जो कि रेखा के दो होते हैं) तथा केवल विन्दुओं को गिन कर १६ से भाग दें। शेष की जो संख्या हो उसी रूप को प्रस्तार में देख लें कि कौन है तथा किस गृह में है। यही रूप अवधि का बोधक है। जिस गृह में यह हो उसके अंक लेकर अवधि निकालनी चाहिये। अवधि-बोधक रूप प्रस्तार यदि अग्निगृह में है तो दिन, वायु में है तो सप्ताह, जल में है तो मास तथा पृथ्वी में है तो वर्ष का बोधक होता है।

विशेष—शीघ्र एक मास के भीतर सम्पन्न होनेवाले कार्यों की सिद्धि की अवधि निकालने के लिये अवधि-बोधक रूप तथा विजदह क्रम से प्रश्न के ही रूप के अङ्क जोड़कर १६ से भाग देकर मिनट, घंटा, दिन, सप्ताह निकाले जाते हैं; इसमें मास, वर्ष नहीं होते हैं।

विन्दु-गति-प्रणाली

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अङ्गभूत इस प्रश्न-शास्त्र का रूपात्मक फलादेश विचार इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है—प्रत्येक रूप विन्दुओं का समूह मात्र होता है। अतः प्रश्नशास्त्र के विशेषज्ञों ने अधिक से अधिक सूक्ष्मतापूर्वक प्रश्न का निर्णय करने के लिये विन्दु-गति-प्रणाली को विशेष महत्त्व दिया है। इसका मूलाधार अभी तक हमें जो कुछ देखने को मिला है वह अरबी व फारसी ग्रन्थों में है। मैंने अपने ४८ वर्षों के अनुभव में जिन सिद्धान्तों को सत्य पाया है वे ही इस ग्रन्थ में लिखे जा रहे हैं।

जिस प्रकार रूपात्मक फलादेश के लिये मेरुदण्ड स्वरूप शकुन पंक्ति इस शास्त्र में स्वीकार की गई है, उसी प्रकार विन्दुगति-फलादेश में अ, ब, द, ह पंक्ति की विशेषता है।

अ, ब, द, ह पंक्ति का क्रम यह है :—

गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
नाम	वाग्मी	लोहित	उष्णगु	विधु	पात	बोधन	वक्र	सौरि	मन्दगा	तीक्ष्णांशु	दैत्यगुरु	सूरि	आर	कवि	शीतांशु	सौम्य
रूप	÷≡	÷⁚	⁝	≡÷	÷÷	⁚⁚	⁝	≡⁝	÷÷	⁚÷	÷÷	≡⁚	÷⁚	⁚⁝	⋮	≡

इस अ, ब, द, ह पंक्ति का मूल स्वरूप ⋮ चतुर्बिन्दुक शीतांशु है। अ अक्षर आतिश अर्थात् अग्नि-तत्त्व का प्रतीक है, ब अक्षर वाद अर्थात् वायु का प्रतीक है इसी प्रकार द जल एवं ह पृथ्वी का प्रतीक है। शीतांशु में ⋮ चारों तत्त्व खुले और सौम्य में ≡ चारों बन्द हैं। अतः बिन्दु-गति-प्रणाली में ये दोनों रूप अप्रामाणिक माने जाते हैं। जब कभी निर्णेता के सम्मुख इन रूपों के प्रकट होने का अवसर आता है तो प्रश्न असफल एवं प्रस्तार बद्ध माना जाता है। इस विषय में कुछ आचार्यों का मतभेद है जो आगे चलकर प्रकट होगा।

इस विराट् सृष्टि को कोई भी सांसारिक व्यक्ति देख या समझ नहीं सकता

है। इसी विराट् सृष्टि में उत्पन्न मनुष्य के मन की गति को भी कोई देख या समझ नहीं सकता। बस, यहीं प्रश्न की जड़ खुद जाती है। यहीं पर इस विराट् सृष्टि के समस्त विद्वानों का परिश्रम सफलता पाने के लिए सचेष्ट होता है। विद्याध्ययन, तपोबल, योगाभ्यास आदि के द्वारा इस महाप्रश्न को हल करने में जिन महानुभावों ने अपने जीवन की आहुति दे दी है तथा इसके बदले में सफलता पायी है और स्वयं जीवन्मुक्त होकर संसार को अन्धकार में प्रकाश दे गये हैं, उन्हें महर्षि कहा जाता है। उनके दिये हुए दिव्य ज्ञान को शास्त्र कहा जाता है। शास्त्रों का मत है कि यह विराट् सृष्टि कुछ नहीं है; सिर्फ आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी तथा आत्मा का समवाय है। समवाय का अर्थ होता है मिलावट। मिलावट ऐसी नहीं जैसी कपड़े में तागे की होती है; बल्कि ऐसी कि जैसी तागे में रूई की। रूई और तागे में अन्तर पुरुष के पुरुषार्थ का है। पुरुष अपने पुरुषार्थ, व्यापार या प्रयत्न द्वारा रूई के रेशे बट कर तागे बना लेता है और फिर उन तागों का परस्पर योग करके कपड़ा बना लेता है। कपड़े में प्रत्येक तागा दिखाई पड़ता है। तागे में रेशे दिखाई नहीं पड़ते। तागे अपना स्वरूप रखते हुए कपड़े का रूप पा जाते हैं, परन्तु रेशे अपना स्वरूप मिटाकर तागा बन पाते हैं। इस प्रकार उलझे हुए इस संसार में शास्त्र का ही महत्त्व है कि वह मनुष्य को सुलझा दे। ऊपर कहे गये पाँचों तत्त्वों में प्रश्न-शास्त्र के नियमानुसार आकाश प्रश्नकर्त्ता की इच्छाशक्ति तथा शेष चारों तत्त्व इस रमल शास्त्र के मूलाधार चतुर्विन्दु-स्वरूप ⁝ शीतांशु के क्रमशः विन्दु हैं। यही विन्दु परस्पर गुणित होकर सौम्य ☰ में बद्ध अर्थात् जड़ एवं शीतांशु ⁝ में प्रकट अर्थात् चैतन्य हैं। यह चारों चैतन्य हैं यानी चारों चल रहे हैं। शीतांशु रूप निर्णायक नहीं हो सकता, इसमें आया हुआ आकाश तत्त्व (प्रश्न कर्त्ता की इच्छा-शक्ति) प्रथम विन्दु अग्नि स्वरूप है। वह ऊपर को चलता है। उसे द्वितीय विन्दु वायु से सहायता मिलती है। वायु और अग्नि की मैत्री है। प्रश्न के मूल इच्छा-शक्ति में अग्नि की तीक्ष्णता मिल जाती है वह उसे गति देता है; परन्तु आगे चलकर जल विन्दु भी खुला है। अतः वह इच्छा-शक्ति आकाश और उसका आधार अग्नि विन्दु तथा इन दोनों का सहायक (गति देने-

वाला) वायु बिन्दु चलकर अग्नि के शत्रु और वायु के सम जल में चला जाता है और शत्रुक्षेत्री होने के कारण निर्बल पड़ जाता है; फिर भी शान्ति नहीं मिलती। अग्नि तो जल में शान्त हो जाता है; परन्तु उसका मित्र वायु उसे फिर गति देता है और तब वह चलकर चौथे विन्दु पृथ्वी में समा जाता है। पृथ्वी जल का मित्र है। अब जब कि चारों बिन्दु (शीतांशु ⁞ में एकत्र हो गये तब मित्रता और शत्रुता के संघर्ष में पड़कर आकाश तत्त्व को परस्पर गुणित होकर सौम्य ≣ बना डालते हैं। इसी लिये रमल शास्त्र ने बिन्दु-गति-प्रणाली में ⁞ ≣ इन दोनों को व्यर्थ माना है। इसी प्रकार प्रत्येक रूप का स्वतंत्र इतिहास है। जो स्थान-स्थान पर स्पष्ट किया जायेगा। ध्यान रखना है कि निर्णायक रूप केवल युग्मविन्दुक ÷ ≐ ⁝ ≑ ÷ ≐ ही हो सकते हैं। विषम विन्दु रूप निर्णायक नहीं होते हैं।

इस विन्दु-गति के विषय में सबसे पहले अ ब द ह पंक्ति के रूपों के क्रम को जान लेना आवश्यक है। प्रश्नकर्त्ता की इच्छा का स्वरूप तो आकाश तत्त्व लिखा जा चुका है। यह तत्त्व सबसे ज्यादा शून्य एवं अप्रत्यक्ष माना गया है। इसी तत्त्व की स्थिति जिस तत्त्व में, जिस रूप में, जिस घर में जैसी होगी तदनुसार ही मनोरथ-प्रश्न की सिद्धि या असिद्धि होगी। इच्छा के बाद दूसरा तत्त्व अग्नि है। यह आकाश तत्त्व की अपेक्षा अधिक भारवाला तथा प्रत्यक्ष है। अरबी वर्णमाला का प्रथम अक्षर होने के कारण 'अ' इसका प्रतीक माना गया है। इसकी संख्या अ ब द ह पंक्ति में पहला गृह है तथा इसमें प्रथम विन्दु और फिर तीन रेखाएं हैं ≐। ≐ इसका नाम वाग्मी है।

प्रस्तुत शास्त्र में यह ≐ वाग्मी बृहस्पति का स्वरूप है जो कि केवल अग्नि विन्दु मुक्त होने से निर्गम रूप है। इसकी "अ" संज्ञा है। इस पंक्ति का दूसरा रूप ⩦ लोहित होता है। यह मंगल का स्वरूप है। वायु विन्दु खुला और शेष तीन चिन्दु इसके बन्द होते हैं। वायु विन्दु को अग्नि बिन्दु से अधिक भारवाला स्वीकार किया गया है। इसकी संख्या दो है और पंक्ति में दूसरा स्थान है। इसका कारण यह है—संख्या की मूल प्रकृति शून्य होती है। किसी भी संख्या के बाद इसे स्थापित करने के कारण यह संख्योत्तर हो जाता है। तब

यह दशगुणित का बोधक होता है। पंक्ति के प्रथम रूप ⁝ की संख्या एक है। उस पर संख्या की मूल प्रकृति विन्दु को स्थापित किया तो १० हुए। अग्नि इत्यादि चारों तत्त्वों से विभाजित करने पर शेष जो बचता है वही इसकी संख्या एवं स्थान हो गया है। इसका प्रतीक व अक्षर है। अरबी भाषा की वर्ण-मातृका का "ब" दूसरा अक्षर भी है। इस प्रकार व और ब, अक्षर अरबी वर्ण-मातृका क्रम से और शेष द और ह, अक्षर नक्षत्र-मातृका क्रम से प्रतीक हुए हैं।

इस पंक्ति का तीसरा रूप ⁝ उष्णगु तथा प्रतीक अक्षर द होता है। द, का पूर्ववर्ती वायु तत्त्व तथा मूल संख्या १० होती है जो बटकर २ रहती है। इसी मूल संख्या पर एक मूल प्रकृति विन्दु स्थापित करने से १०० की संख्या बन जाती है। नक्षत्रों के वर्गीकरण स्वरूप १२ राशियों की संख्या १२ से १०० को विभाजित करने पर शेष संख्या ४ बचती है यही संख्या ४ तथा प्रतीक अक्षर "द" ⁝ उष्णागु का होता है।

प्रस्तुत पंक्ति का चतुर्थ रूप विधु तथा संख्या ८ और प्रतीकाक्षर "ह" होता है। द की मूल संख्या १०० पर मूल प्रकृतिक विन्दु रखने से १००० होता है। नक्षत्र लोक (आकाश) के ८ भेद माने गये हैं। १००० को ८ से विभक्त करके शेष ८ ही बचता है। यही संख्या तथा चतुर्थ गृह एवं ह इसका प्रतीकाक्षर होता है। इस क्रम से अ १, ब २, द ४, ह ८, संख्या का तथा अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी—तत्त्वों का प्रतीक होता है। इसी क्रम से प्रत्येक रूप का इतिहास, संख्या तथा अ, ब, द, ह प्रतीकाक्षर हैं।

⁝ पाँचवें रूप पात में अ का अङ्क १ और द का अङ्क ४ तत्त्व खुले हैं। इनका योग ५ है अतः रूप ⁝ पाँचवें घर का स्वामी कहा गया है।

⁝ छठे रूप बोधन में ब और द विन्दु खुले हैं ब के अङ्क २ और द के अङ्क ४ हैं अतः २+४=६ हुए इसी कारण रूप ⁝ छठे घर का स्वामी कहा गया।

⁝ सातवें रूप वक्र में अ, ब, द तीनों विन्दु खुले हैं अ १, ब २ और

द के ४ अङ्क हैं अस्तु १+२+४=७ हुए। इसी प्रकार वक्र रूप सातवें घर का स्वामी कहा गया है।

≡ आठवें रूप सौरि में केवल ह विन्दु खुला है 'ह' के अङ्क ८ हैं अतः रूप सौरि आठवें घर का स्वामी बना।

≑ नवाँ रूप मन्दग है, इसमें अ और ह विन्दु खुला है अतः अ का अङ्क १ और ह के ८ मिलकर ९ हुए, अतः नवें रूप का स्वामी मन्दग कहा गया है।

≓ दसवाँ रूप तीक्ष्णांशु है इसमें ब और ह बिन्दु खुले हैं २+८ का योग १० है, इसी कारण दसवें घर का स्वामी रूप तीक्ष्णांशु हुआ।

÷ ग्यारहवाँ रूप दैत्यगुरु है, इसमें अ तथा ब और ह विन्दु खुले हैं अस्तु १+२+८=योग ११ हुआ, अतः ग्यारहवें घर का स्वामी दैत्यगुरु हुआ।

⩦ बारहवें घर का स्वामी रूप सूरि मिला। कारण, इसमें द और ह विन्दु खुला है ४+८=१२ हुआ।

⁝ त्रयोदश रूप में आर मिला, आर में अ १, द ४, ह ८=योग १३ होता है। अतः यह रूप आर ⁝ तेरहवें घर का स्वामी बना।

⁝ चौदहवें रूप कवि में ब २, द ४, ह ८=योग १४ है।

⁞ पन्द्रहवें रूप शीतांशु में चारों बिन्दु अ, ब, द, ह खुले हैं १+२+४+८=योग १५ है अतः पन्द्रहवें घर का स्वामी शीतांशु हुआ।

≣ बाकी सौम्य सोलहवें रूप शीतांशु का सजातीय गुणनफल ही है अतः संख्या १५ और गृह की संख्या का योग १६ हो जाता है। अ, ब, द, ह पंक्ति के रूपों का यह इतिहास रमल-रहस्यकार रमलार्णवकार इत्यादि भारतीय आचार्यों ने तथा सुर्खाव दानियाल इत्यादि आचार्यों ने स्पष्ट किया है। 'रमल-रहस्य' कार ने यह भी कहा है कि यूनान खुरासान अरब तथा तुर्किस्तानवाले इस इतिहास को प्रमाणित करते हैं।

अ ब द ह पंक्ति के विचार-क्रम में रूपों का कोई महत्त्व नहीं होता विन्दु का होता है। पूर्व भाग में वर्णित सुश्रुत पंक्ति में जैसे विन्दु का कोई महत्त्व नहीं है, जो कुछ है केवल रूपों में शुभाशुभ फलादेश का लिखा गया है।

उदाहरण के लिये यों समझें कि किसी शुभ प्रश्न के प्रस्तार में वाग्मी ⠿ प्रथम गृह में आ जावे तो प्रश्न आधा सफल माना जाता है। क्योंकि वाग्मी शुभ ग्रह वृहस्पति का रूप है और सुश्रुत अर्थात् शकुन पंक्ति में इसे प्रथम गृह प्राप्त है। प्रस्तार में यह प्रश्नकर्ता की इच्छा का स्वरूप माना जाता है तथा स्वक्षेत्री है।

यदि यही प्रश्न अ ब द ह पंक्ति के क्रम में विचारा जाय और प्रस्तार के प्रथम गृह में यह रूप हो तो इसका कोई मूल्य नहीं। यद्यपि अ ब द ह पंक्ति में भी यही प्रथम रूप माना गया है। कारण स्पष्ट है कि इसका फलादेश विन्दु पर निर्भर है। यदि प्रश्न हो कि धन प्राप्त होगा ? और लग्न विन्दु पृथ्वी का मन्दग ⠿ हो तो यही वाग्मी सोपान-क्रम में अग्नि तत्त्व का नवम विन्दु होगा। अतः स्वक्षेत्री विन्दु होकर बली माना जायगा और सिद्ध करेगा कि दूर यात्रा से धन प्राप्त होगा।

अ ब द ह क्रम में रूपों का एक क्रम है। यह अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी, इस क्रम पर निर्भर है। अग्नि इत्यादि ४ तत्त्व हैं। अतः एक क्रम की चार पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ८ रूप होते हैं, जिस तत्त्व की जो पंक्ति होगी उसमें प्रत्येक रूप का वह विन्दु विन्दु रूप ही होगा। इसीलिये शीतांशु ⁝ प्रत्येक पंक्ति में आता है और इसीलिये ⠿ ⠿ ⠿ ⠿ यह रूप एक ही एक बार सोपान-क्रम में दिखाई पड़ते हैं।

अ ब द ह क्रम में जिस रूप का तत्वानुसार जो स्थान सर्व प्रथम है उस रूप को सोपान-क्रम में प्रथम स्थान प्राप्त है, इसी क्रम से अग्नि पंक्ति में ⠿, वायु पंक्ति में ⠿ तथा जल पंक्ति में ⠿ तथा पृथ्वी पंक्ति में ⠿ रूप को प्रथम स्थान दिया गया है। इसी प्रकार शीतांशु ⁝ रूप की स्थिति चारों तत्त्वों में आठवें रूप का स्थान है। क्योंकि अ ब द ह क्रम में यह पन्द्रहवाँ रूप है।

ऊपर लिखी गई युक्ति के आधार पर यह सिद्ध है कि प्रस्तार में कोई भी रूप अपना महत्त्व नहीं रखता—महत्त्व केवल विन्दु का है इसलिये विन्दु की गति प्रत्येक तत्त्व के क्रम में बिचारनी पड़ती है। जैसे अग्नि क्रम में सर्वप्रथम ⩧ को मूल प्रकृति की पंक्ति में स्थान मिला और वही स्थान तत्त्व क्रम में प्राप्त है।

प्रस्तार की मातृ पंक्ति के ४ रूप तो पासा से ही बनाते हैं। फिर प्रत्येक रूप का एक-एक तत्त्व लेकर ४ रूप और बना लेते हैं। यह दुहितृ पंक्ति है। फारसी भाषा में मातृ पंक्ति को "उमहात" तथा दुहितृ पंक्ति को "बनात" कहते हैं। इन्हीं आठों के गुणनफल से अन्य रूप बनते हैं, जैसे—मातृ पंक्ति के प्रथम तथा दूसरे रूप के गुणा से नवाँ तथा तीसरे और चौथे के गुणा से दसवाँ तथा पाँचवें और छठें के गुणन से ग्यारहवाँ तथा सातवें और आठवें रूप के गुणा से बारहवाँ रूप बन जाता है। इनको दौहितृ पंक्ति कहते हैं। उपर्युक्त मातृ पंक्ति तथा दुहितृ पंक्ति का गुणनफल क्रमानुसार त्रयोदश और चतुर्दश रूप होते हैं। त्रयोदश रूप लग्न भाव का निष्कर्ष तथा चतुर्दश रूप लग्न भाव (प्रश्न कर्त्ता की मनोभिलाषा) के वर्तमान कालीन स्वरूप का (धर्माधर्म का) निष्कर्ष माना गया है। चतुर्दश और त्रयोदश का गुणनफल पृच्छक को प्राप्त होने वाले शुभाशुभ भाग्य का क्षेत्र माना गया है। भाग्य का क्षेत्र (१५) तथा भोक्ता (लग्न) का सम्मिश्रण १६वाँ रूप है। अतः इसे साक्षि पंक्ति यवनाचार्य से लेकर आजकल तक के दैवज्ञ मानते रहे हैं। प्रस्तार के समस्त रूपों का अवसान १५ में हो जाता है। इसी का नाम तुला (मीज़ान) है। यह गुणनफल से उत्पन्न है। गुणनफल के कोष्ठ १५ तुला में रूप सम आयेगा। अर्थात् दो विन्दु दो पाई अथवा चारों बिन्दु या चारों पाई तुला (१५) में आवेंगी। यदि पन्द्रहवें घर में रूप ⩦ या ⩧ या ⁝ या ⋮ या ÷ या ∸ या ≡ या ⩦ आ जावें तो समझना चाहिये कि हमारे प्रस्तार बनाने में कोई त्रुटि हो गई है पुनः प्रस्तार को देखकर त्रुटि ठीक कर लेनी पड़ेगी। तुला (१५) में सदैव ⩦ या ⩧ ≐ या ⩦ या ≑ या ≡ या ⁞ या ≡ यही रूप आयेगा।

यदि तुला (१५) में सौम्य ≡ आ गया तो प्रस्तार बद्ध माना जाता है, या तो पाशक-पातन के नियमों का पालन दैवज्ञ ने नहीं किया है या प्रश्नकर्ता

को इस समय प्रश्न करने की आज्ञा उसका भाग्य नहीं दे रहा है। यद्यपि इस अवसर पर दैवज्ञ हठवादिता से काम लेकर बद्ध प्रस्तार का उद्घाटन कर लेते हैं; परन्तु वह संकटकाल का विषय है। शुभ तथा शान्त समय हो तो २४ घंटा बाद पुनः पाशक पातन करके नवीन प्रस्तार बनाना चाहिये।

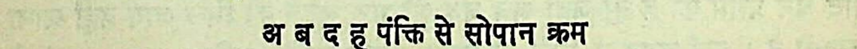
यदि प्रस्तार ठीक है तो १५ तुला (मीज़ान) गृह का प्रथम विन्दु तो मूक प्रश्न का विषय समझ कर छोड़ दिया जाता है। शेष दूसरा बिन्दु, जो फलादेशी है, लिया जाता है। इसे गति दी जाती है। यह या तो १३ से मातृ पंक्ति को जायेगा या १४ से दुहितृ पंक्ति को जायेगा। मातृ पंक्ति या दुहितृ पंक्ति में कहीं भी गया हुआ रूप जिस तत्त्व का होगा, उसी में चलेगा। प्रथम रूप की ओर या अष्टम की ओर जहाँ रुके, वहीं विन्दु-विश्रान्तिक गृह है। रुका विन्दु नीचे नहीं उतरता, लम्बी गति से आगे या पीछे चलता है। मातृ पंक्ति या दुहितृ पंक्ति में जो भी रूप गृहानुसार विन्दु की या उसकी मित्र प्रकृति का प्रकृतिक होगा उसी का प्रमाणिक रूप स्वीकार किया जाता है। इसमें आचार्यों ने सम-विषम को महत्त्व नहीं दिया है। यदि कभी ऐसा अवसर पड़े कि उक्त दोनों पंक्तियों में कोई भी रूप मनोभिलाषी विन्दु की प्रकृति का या उसकी मित्रप्रकृति का न मिले तो तुला गृही रूप १५ को पुनः वापस आ जाता है और उसे ही अपना विश्रामिक रूप मान लेता है। तात्पर्य यह कि मनोभिलाषी रूप कभी भी निर्बल रूप में नहीं रुकता। निर्बल रूप होता भी एक ही है। वह शत्रु तत्व का जैसे तुला (१५) में उष्णगु ∸ वायु विन्दु चलेगा तो इसे अग्नि मित्र मिलेगा। वायु तो अपना ही गृह है। जल सम है पृथ्वी शत्रु गृह है। यह उसकी पंक्तियों में पृथ्वी को छोड़कर सर्वत्र रुक सकता है। इसे लग्न विन्दु कहते हैं। पृच्छक की मनोभिलाषा का स्वरूप यही विन्दु है। मनोभिलाषा यदि धन प्राप्ति की है तो जहाँ खूब धन जी भर लूटने को मिल जाय वहाँ जाना चाहती है। वहाँ जगह न मिले तो स्वल्प प्रयास करके अधिक लाभ जहाँ से हो वहाँ जाना चाहेगी। यदि वह भी सम्भव न हो तो समगृही रह जायेगी अर्थात् मेहनत मजदूरी करके पेट पालेगी और भविष्य में अवसर ताकती रहेगी। परन्तु

शत्रु गृह में न जायगी क्योंकि वहाँ पर लोटा धोती छिन कर खुद को भी जान का भय होगा।

इसी लग्नविन्दु को लेकर प्रस्तार में देखने के प्रथम तत्त्व क्रम के सोपान में देखना चाहिये कि मनोभिलाषी विन्दु किस तत्त्व का है। तथा तत्त्व सोपान क्रम में वह रूप उसी तत्त्व की पंक्ति का कौन सा है। जो होवे उसे लग्न मान लें; और उससे दूसरा धन तीसरा कुटुम्ब चौथा भूमि इत्यादि पाँचवाँ सन्तान इत्यादि सोलहों रूपों के १६ गृह समझ लें।

विचारणीय प्रश्न के गृह का निश्चय करके पाँसा छोड़ें, प्रस्तार बनायें और लग्न विन्दु निश्चय करें। उसे प्रस्तार का प्रथम गृही रूप मानकर प्रस्तार में उसे प्राप्त गृह के अनुसार लग्न का बलाबल देख लें फिर प्रश्न-गृह के रूप का विचार करें। बलाबल के क्रम में हमने इस पुस्तक में प्रत्येक गृह के विचार में रूप का, जिसे विन्दु कहा जाता है, १०० बल स्वीकार किया है। क्रम यह है कि विचारणीय विन्दु के चार भाग विचारे जाते हैं: प्रथम मूल विन्दु (मनोभिलाषी) फिर उसका वर्तमान विन्दु (२) गुप्त मूलविन्दु (३) तथा वर्तमान विन्दु और मूल विन्दु का दृष्टि सम्बन्ध। प्रत्येक भाग समबल है। अतः हमने स्वयं ही २५-२५ संख्या के अनुपात से (आधुनिक काल की छात्र-परीक्षा के समान) १०० विन्दु मान लिये हैं। मित्रगृही तथा स्वक्षेत्री पूर्णबल हैं। सम आधा उत्कृष्ट में पूर्ण तथा शत्रु में शून्य, यही दृष्टि का क्रम है। शुभ दृष्टि का पूर्ण, अशुभ का शून्य, शुभाशुभ का अर्ध। योगतः ३० के नीचे बल निर्बल है। ३० से ६० तक मध्यम बल है। ६० से ऊपर पूर्ण बल है। यदि मूल विन्दु बली है, तो आशा पूर्ति शीघ्र और सरलता से हो जाती है। मध्यम बल में प्रयत्न से तथा कुछ कठिनता से, निर्बल हो तो असम्भव ही समझो। सफलता न हो।

अ ब द ह पंक्ति से सोपान क्रम



उपर्युक्त अ ब द ह पंक्ति से ८ विन्दु अग्नि के हैं। ८ विन्दु वायु के

तथा ८ विन्दु जल के और ८ विन्दु पृथ्वी के लेकर पूरा सोपान बनता है। जैसे अग्नि तत्त्व में रूप ·——— ··—— ·—·— ···— ·——· ··—· ·—·· ···· और वायु तत्त्व में रूप के विन्दु —·—— ··—— —··— ···— —·—· ··—· —··· ···· मिलते हैं इसी प्रकार अ ब द ह पंक्ति के जल तत्त्व के विन्दु रूप से लें तो रूप ——·— ·—·— —··— ···— ——·· ·—·· —··· ···· पायेंगे। फिर पृथ्वी तत्त्व के विन्दु से ले लेवें तो इस प्रकार रूप ———· ·——· —·—· ··—· ——·· ·—·· —··· ···· बन गया इसी प्रकार चारों तत्त्वों के रूप विन्दुओं को लेकर पूरा सोपान बना लिया। इस चक्र में जैसे मूल विन्दु

सोपान क्रम चक्र

अग्नि सोपान	·———	··——	·—·—	···—	·——·	··—·	·—··	····
वायु सोपान	—·——	··——	—··—	···—	—·—·	··—·	—···	····
जल सोपान	——·—	·—·—	—··—	···—	——··	·—··	—···	····
पृथ्वी सोपान	———·	·——·	—·—·	··—·	——··	·—··	—···	····

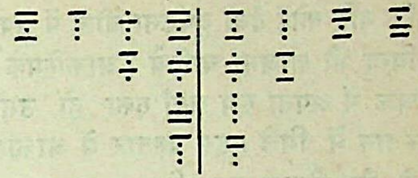
(विचारणीय विन्दु) जल सोपान का सूरि रूप है तो जल तत्त्व का पाँचवाँ स्वयंभाव है। यह प्रस्तार में जिस तत्त्व के गृह में होगा उसके अनुसार मित्र-गृही, स्वगृही, उत्कृष्ट, मित्रगृही या शत्रुगृही माना जायेगा। इसका वर्तमान काल अब हम अपने पाठकों को नमूने के तौर पर एक प्रस्तार बनाकर समझा देना उचित समझते हैं ताकि उपर्युक्त बातें समझ में आ जायँ। एक सज्जन ने प्रश्न किया तो पासा द्वारा प्रस्तार बनाया और मातृ पंक्ति के ४ रूप बने; फिर दुहितृ पंक्ति बनाकर क्रमानुसार पूरा प्रस्तार बना लिया। प्रस्तार बनाने का क्रम पहले लिख चुके

——·—	—···	·—··	——·—	—··—	····	——·—	—·——
		—·—·	·——·	·——·	—··—		
			··——	····			
			—···	——··			

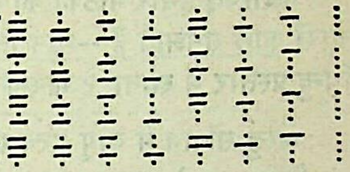
हैं। अस्तु, खाना १५ के रूप में, जिसे तुला या मीजान कहते हैं, २ विन्दु हैं (१) जल विन्दु (२) पृथ्वी विन्दु। प्रथम जल विन्दु तो मूक प्रश्न

निकालने का है दूसरा विन्दु फलादेश निकालने का है अस्तु तुलागृही पृथ्वी तत्त्व का विन्दु खाना १३ के रूप शीतांशु ⁝ के पृथ्वी तत्त्व तथा खाना १४ के रूप ≐ के पृथ्वी तत्त्व को गुणा से बनाकर खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का विन्दु बना है। अस्तु, तुला-चालित विन्दु खाना १३ के रूप शीतांशु के पृथ्वी तत्त्व में ही जायेगा। चौदहवें रूप ≐ का पृथ्वी तत्त्व बद्ध (–) है। विन्दु तुला का त्रिधर विन्दु खुला होगा और उसी तरफ जायेगा इसी कारण तुला चालित विन्दु खाना १३ के पृथ्वी तत्त्व रूप ⁝ में पहुँचा। फिर खाना १३ से खाना १० रूप मन्दग ≑ में गया। नवें रूप बोधन ⁝ का पृथ्वी तत्त्व बद्ध है वहाँ जा नहीं सकता फिर खाना १० से खाना ३ रूप शीतांशु ⁝ में जाकर रुका। अस्तु, तुला-चालित विन्दु प्रथम खाना १३ में फिर खाना १० में होकर खाना ३ में जाकर रुका अब हमको यह मालूम हुआ कि खाना १५ का तुला-चालित विन्दु खाना ३ मित्रक्षेत्री में रुका। कारण, खाना ३ जल तत्त्व का है जल तथा पृथ्वी की मित्रता है। इसी प्रकार अग्नि तथा वायु की मित्रता है और अग्नि तथा जल की एवं वायु तथा पृथ्वी की शत्रुता है। तब तुला-चालित विन्दु चाहे वायु का हो या जल का हो अथवा पृथ्वी तत्त्व का हो। अपने स्थान से चलकर जहाँ रुकेगा प्रथम उसका बल देखा जायेगा। यदि स्वक्षेत्री है तो विशेष बलवान् होगा। जैसे कोई व्यक्ति चलकर अपने घर पर आ जाय तो उसका अपने घर पर पूर्ण अधिकार होता है। अस्तु, तुला-चालित विन्दु यदि स्वगृही है तो पूर्ण बलवान् माना जायेगा। यदि तुला-चालित विन्दु मित्रगृही में रुका तो कुछ शक्ति क्षीण जान पड़ती है। यद्यपि कोई कार्य अपने मित्र से कहेंगे तो वह काम पूरा जरूर करेगा अन्तर इतना है कि अपने घर में कहना नहीं पड़ता है और मित्रगृही से कहना पड़ेगा तब वह काम बनेगा, यदि तुला-चालित विन्दु शत्रुक्षेत्र में गया तो निर्बल माना जायेगा। कार्य की पूर्ति असंभव होगी। यदि तुला-चालित विन्दु उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री में रुका तो कोई आचार्य तो उत्तम लिखते हैं कोई मध्यम फल लिखते हैं। परन्तु हमारी राय में वह विन्दु समत्व भाव में माना जायेगा, जैसे सर्व साधारण से मिला-भेंटी होती है। उसी प्रकार मध्य श्रेणी का बल उस विन्दु को मिलेगा। अस्तु, तुला-चालित विन्दु

जहाँ रुके उसी स्थान को अपना लग्न मान लें या भाग्य का प्रथम स्थान मान लें। इस विन्दु से हम तीनों काल का हाल मालूम करेंगे। अब हम इसी प्रकार प्रस्तार के अनुसार सोपान-चक्र बनाते हैं।



सोपान चक्र



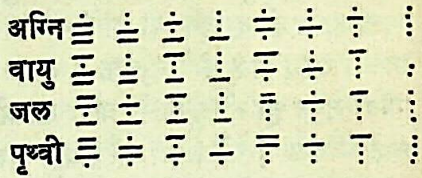
अब प्रस्तार का तुला-चालित विन्दु तृतीय गृही रूपात्मक शीतांशु ⁞ में रुका है वहाँ से दाहिने या बायें विन्दु जा नहीं सकता। कारण, सभी रूपों में पृथ्वी तत्त्व में रेखा (–) है। यदि विन्दु मिल जाता तो दाहिने या बायें भी जा सकता था। अब सोपान-चक्र में रूप ⁞ के जल तत्त्व को लिया क्योंकि हमारा पृथ्वी तत्त्व ही तो तुला से चला था और जल तत्त्व में रुका है। अस्तु, सोपान-चक्र में रूप ⁞ को लिया और यही भाग्यगृह माना। विन्दु अपने मित्र के गृह में रुका है। मित्रक्षेत्री होने से बलवान् हो रहा है। अब सोपान में रूप ⁞ को लिया। इसका वर्तमान रूप ≡ हुआ क्योंकि वर्तमान रूप तो वही माना जाता है जो अपने स्थान से उसी तत्त्व के रूप से आगे हो। चूँकि ⁞ से आगे तो कोई रूप मिलता नहीं यदि मिलेगा तो पुनः जल तत्त्व का रूप सोपान-चक्र में ≡ ही मिलेगा। अस्तु, वर्तमान रूप ≡ हुआ और भूतकाल के रूप ⁞ से पहले ≡ है। अस्तु, भूतकाल कवि ≡ रूपात्मक हुआ और भविष्य काल का रूप उससे आगे पृथ्वी तत्त्व का आठवाँ रूप सोपान का रूप शीतांशु ⁞ मिला। अस्तु, अपने भाग्य के रूप ⁞ से वर्तमान काल रूप ≡ और भविष्यकाल रूप पृथ्वी तत्त्व का आठवाँ रूप ⁞ मिला इस प्रकार से भूत, भविष्य, वर्तमान रूप को सोपान से लेकर अपने प्रस्तार में तलाश करना चाहिये, उन्हीं रूपों के बलाबल से तीनों काल का फलादेश रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार कहना चाहिये। भूत, भविष्य, वर्तमान के अतिरिक्त एक विन्दु और भी देखा जाता है। इसका नाम आकस्मिक विन्दु है। आकस्मिक विन्दु से तात्पर्य यह है

कि यदि कोई दैवी दुर्घटना बीच में उपस्थित हो जाय तो रमलज्ञ को आकस्मिक विन्दु भी खोजना चाहिये। आकस्मिक विन्दु वही माना जाता है, जो सोपान-चक्र में अपना रूप जहाँ रुका हो उसी तत्त्व के आगे जो चौथा विन्दु उसी स्थान में मिले। इस प्रस्तार में आकस्मिक विन्दु दूसरा पृथ्वी तत्त्व का रूप ⁝ है और तीसरा रूप अग्नि तत्त्व का आठवाँ रूप ⁝ है और चौथा रूप वायु तत्त्व का आठवाँ रूप ⁝ है।

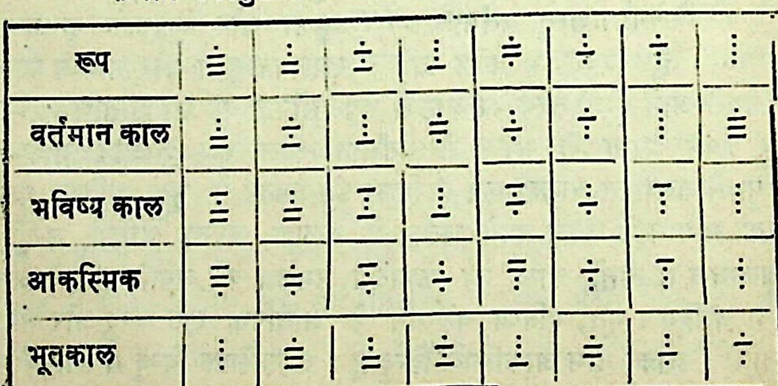
कदाचित् हमारे पाठकों की समझ में न आया हो तो दूसरी विधि से भी चारों काल समझाते हैं—मान लिया हमारा विन्दु वायु तत्त्व का तुला चालित विन्दु प्रस्तार में खाना २ में रूप ≐ में गया।

अस्तु सोपान में वायु तत्त्व का रूप ≐ लिया। यही भाग्य का स्थान है और इसका वर्तमान रूप बोधन ⁝ है जो उसी क्रम में आगे है और भूतकाल का रूप ⁝ है जो ≐ से उसी क्रम में पहले है। और भविष्यकाल का रूप जल तत्त्व का रूप ≑ हुआ जो दूसरी श्रेणी पर उसी के नीचे है और आकस्मिक रूप अग्नि तत्त्व का रूप ≐ हुआ क्योंकि वायु के बाद फिर तीसरा पृथ्वी

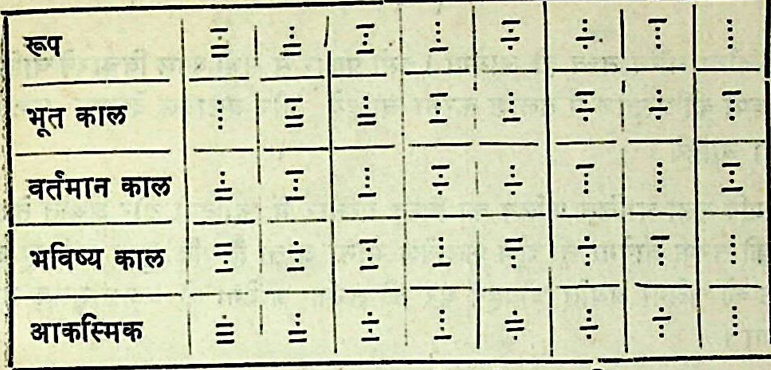
सोपान-चक्र



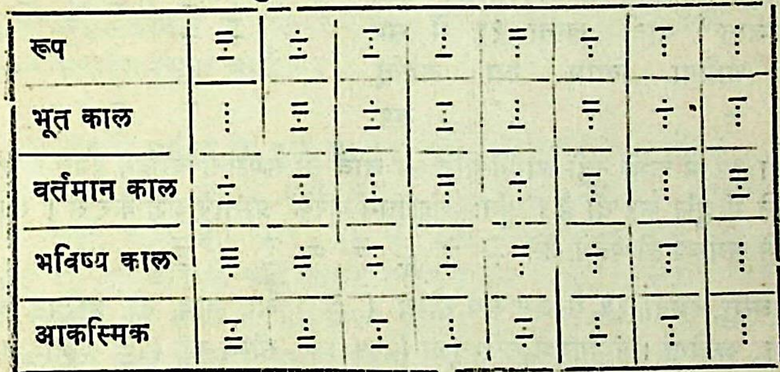
सोपान-चक्रानुसार अग्नि तत्त्व के वर्तमान आदि चक्र



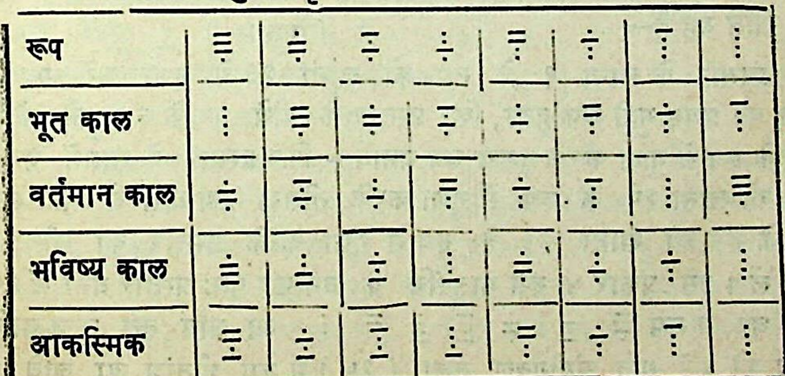
सोपान-चक्रानुसार वायु तत्त्व के वर्तमान आदि चक्र



सोपान-चक्रानुसार जल तत्त्व के वर्तमान आदि चक्र



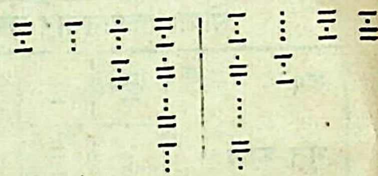
सोपान-चक्रानुसार पृथ्वी तत्त्व के वर्तमान आदि का चक्र



और चौथा अग्नि तत्त्व ही आयेगा। इसी प्रकार से सभी काल विचारने चाहिये। इन रूपों को प्रस्तार में तलाश करना चाहिये और बलाबल देखकर फलादेश कहना चाहिये।

यदि तुला-चालित फलित का विन्दु प्रस्तार में दाहिनी ओर अर्थात् तेरहवें घर की तरफ जायेगा तो शुभ फलादेश माना जाता है यदि तुला से विन्दु बाईं तरफ को चलेगा अर्थात् चौदहवें घर की तरफ जायेगा तो अशुभ सूचक माना जायेगा।

हम प्रथम लिख चुके हैं कि तुला (मीजान) यानी खाना १५ में सम रूप आयेगा विषम रूप अर्थात् ≡ ≡ ≡ ÷ ÷ ≡ रूप



खाना १५ में कभी नहीं आयेंगे यदि आ जावें तो समझना चाहिये हमने प्रस्तार बनाने में त्रुटि कर दी है। पुनः संशोधन करके प्रस्तार शुद्ध कर लें। खाना १५ में समरूप ही पड़ेंगे जैसे ÷ ÷ ÷ ÷ ÷ ≡ ⁝ ≡ ।

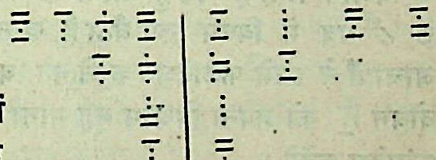
अस्तु, खाना १५ में जब रूप सौम्य (≡) आ जाय तो प्रस्तार बद्ध समझा जायेगा। संयोगवश यदि तुला (१५) में सौम्य रूप (≡) आ जाय तो प्रस्तार बद्ध का परिवर्तन करके तब फलादेश कहना चाहिये। परिवर्तन करने की रीति यह है—

प्रस्तार के खाना १ के रूप को खाना १३ से गुणा करें यह मातृ पंक्ति का प्रथम गृही रूप हुआ, फिर प्रस्तार के चौथे घर के रूप को चौदहवें घर के रूप से गुणा करके दूसरा रूप बनायें। फिर प्रस्तार के सातवें घर के रूप को खाना १५ के रूप से गुणा करके तीसरा रूप बना लें और खाना १० के रूप को खाना १६ के रूप से गुणा करके प्रस्तार का चौथा रूप बना लें। इस प्रकार ४ रूप मातृपंक्ति के बनाकर पुनः प्रस्तार बना लें। जब तुला घर में रूप ÷ ÷ ÷ ≡ ÷ ÷ ⁝ आ जाँय तब तुला-चालित विन्दु को करें यदि संयोगवश तुला (१५) में रूप शीतांशु आ जावे तब

प्रथम विन्दु अग्नि तत्त्व को छोड़ दे। तुला से प्रथम विन्दु चालित से मूक प्रश्न निकाला जाता है। मूक प्रश्न निकालने को रीति हम पाठकों को आगे चलकर बतायेंगे अभी प्रसंग तो फलादेश निकालने का चल रहा है। अस्तु।

यदि रूप शोतांशु ⁝ का दूसरा विन्दु वायु तत्त्व का खाना १५ से चलकर मातृपंक्ति में जाय तो सर्वंप्रथम देखना होगा कि तुला-चालित विन्दु जहाँ रुका है वह रूप सम है या विषम। यदि विषम रूप है अर्थात् उस गृह में रूप ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ पड़ता है तब तो हमें खाना १५ के गृह को भाग्यस्थान मानकर उसी से सम्बन्धित गृह को सोपान-चक्र के अनुसार देखना होगा। सोपान-चक्र की अपनी कामना के इच्छित रूप को अब प्रस्तार में देखना चाहिये और उसी के शुभाशुभ बलाबल को देखकर फलादेश कहना चाहिये।

अब देखना चाहिये कि तुला-चालित बिन्दु यदि सम रूप में पड़ा है तब तो पृच्छक का भाग्य स्थान वही प्रथम गृह माना जायेगा तुला-चालित विन्दु जहाँ रुका है। उस घर के उसी तत्त्व के अनुसार वह विन्दु दाहिने या बायें और भी कहीं जाकर रुकता है या नहीं। मिसाल के तौर पर हम पाठकों को समझाते हैं—ऊपर प्रस्तार में तुला का प्रथम विन्दु सूरि ⁝ का जल तत्त्व चलकर प्रथम खाना १३ में गया फिर १३ से खाना ९ रूप बोधन ⁝ में गया, फिर बोधन से खाना २ रूप विधु ⁝ में मातृपंक्ति में जाकर रुका, अब प्रस्तार के तीसरे गृह में रूप शोतांशु ⁝ का जल तत्त्व विन्दु



खुला है तो खाना २ का जल तत्त्व का विन्दु खाना ३ में गया फिर खाना ३ से चार में गया फिर वहाँ से खाना ५ में होता हुआ वही जल तत्त्व का विन्दु खाना ८ में जाकर विश्राम पाता है। अस्तु तुला-चालित विन्दु प्रथम खाना ८ में विश्राम पाता है। इसी प्रकार दूसरे विन्दु को देखना चाहिये कि वह विन्दु मातृ पंक्ति या दुहितृ पंक्ति में जाकर कहीं दायें या बायें को सैर करते गया है या

नहीं अस्तु दाहिने या बायें जहाँ सैर करके रुके, वही हमारा भाग्य-स्थान माना जायगा।

इस अवसर पर यह बात भी विचारनी होगी कि विन्दु ने जहाँ विश्राम लिया है वह रूप सम है या नहीं। यदि सम रूप है तब तो ठीक है यदि विषम रूप में अर्थात् ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ या ⁝ इनमें विश्राम पाता है तो हम इस गृह को अपना भाग्य स्थान नहीं मानेंगे। ऐसी दशा में देखना होगा कि विन्दु तुला का जो चलकर विश्राम पाता है प्रस्तार में सम रूप कौन है उसीको प्रथम गृह भाग्य का मानें। प्रायः ऐसा भी होता है तुला-चालित विन्दु जहाँ-जहाँ होकर विश्राम पाता है उसमें २ या ३ स्थानों पर सम रूप मिलेंगे। ऐसी दशा में रमलज्ञ को अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिये। देखना चाहिये कि हमारा तुला-चालित विन्दु कई सम रूपों को पार करता हुआ आगे गया है अतः इनमें बलवान् रूप कौन-सा है? जो बलवान् हो उसी को प्रथम गृह भाग्य का मान लें।

बलवान् रूप वही माना जायगा जो अपने तत्त्व का स्वक्षेत्री होगा या मित्र-क्षेत्री होगा। यदि शत्रुक्षेत्री होगा तो निर्बल होगा। इसी प्रकार बुद्धि से काम लेना चाहिये। आगे प्रश्नोत्तर निकालते समय हम पाठकों को भली प्रकार समझाते चलेंगे कि इस प्रस्तार में तुला-चालित विन्दु खाना २ में होकर खाना ४ में विश्राम पाता है परन्तु खाना २ में रूप ⁝ विषम है और खाना ५, ६, ७, ८ सब में विषम रूप बैठा है, खाना ३ में शीतांशु ⁝ अवश्य सम है पर आचार्यों ने इससे फलादेश कहने को वर्जित किया है। अस्तु, खाना ४ के रूप बोधन ⁝ को अपना विश्राम गृह माना है और इसी को भाग्य स्थान मानकर फलादेश कहेंगे।

मूक प्रश्न का विन्दु खाना ४ रूप बोधन में अपने अनुकूल पाया चूँकि तुला से जल तत्त्व का विन्दु चला है अस्तु, हम जलतत्त्व के विन्दु को सोपान में ढूँढ़ेगें। जल तत्व में

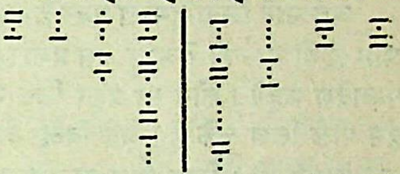
सोपान चक्र



अग्नि
वायु
जल
पृथ्वी

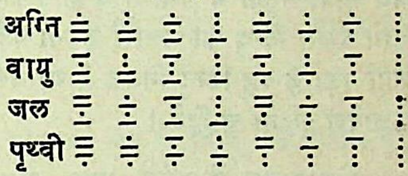
तीसरा विन्दु रूपात्मक है और इसका वर्तमान रूप है। यह रूप अबदह चक्र के अनुसार सातवें गृह का स्वामी है।

सप्तम भाव गायब या विपक्षी से सम्बन्ध रखता है। यह रूप हमारे प्रस्तार में मौजूद नहीं है और न गुप्त रूप ही से पैदा होता है। बजाय इसके इसका विलोम रूप कवि सप्तम भाव प्रस्तार में मौजूद है। सूरत इसकी धन व जीविका की है अस्तु अपनी बुद्धि से रमलज्ञ कहेगा कि पृच्छक चाहता है किसी अज्ञात व्यक्ति से धन प्राप्त करे अतः उससे धन मिलेगा या नहीं ?



क्योंकि रूप का वर्तमान रूपात्मक सूरि तुला गृह में बलवान् होकर बैठा है। कारण, जल तत्त्व का रूप जल तत्त्व में स्वक्षेत्री होकर परम बलवान् हो जाता है। और रूप को हम लिख चुके हैं। यह अयोग है इससे फलादेश शुभ नहीं होता है। अस्तु, उसको छोड़कर खाना १५ के रूप से फलादेश कहा। रूप तुला का और रूप को गुणा किया तो यह रूप तीक्ष्णांशु पैदा हुआ। यह भी रूप माल का कहा जाता है। यह प्रस्तार में खाना १२ में मौजूद है और यह गृह शत्रु तथा व्यय का होने से अशुभ माना जाता है। इसलिये अपनी बुद्धि के अनुसार यह उत्तर दिया कि इस प्रकार से धनोपार्जन में उससे शत्रुता तो पैदा होगी परन्तु परिणाम में मेल हो जायेगा। इस प्रकार से मूक प्रश्न निकाला जाता है।

सोपान चक्र



विन्दु-चाल-क्रम की विधि

जब तक विन्दु-चाल-क्रम को पूर्ण रूप से समझ न लें तब तक फलादेश न कहें। प्रस्तार में तुला गृह में दूसरा विन्दु जो फलादेश निकालने का होता है देखना चाहिये कि वह विन्दु मातृ पंक्ति में जाता है या दुहितृ पंक्ति में जाता है।

जहाँ बिन्दु विश्राम पावे उसी गृह के रूप को भाग्य का प्रथम स्थान मानें उसी के बलाबल से फलादेश कहें उसी रूप से भूत, भविष्य, वर्तमान और आकस्मिक घटना का फलादेश रूपों के बलाबल से कहें।

अब मान लिया हमारा प्रश्न है कि व्यापार या कोई अन्य कार्य करें तो जीविका प्राप्त होगी या नहीं ? अस्तु, इस प्रकार के प्रश्न का रूप-रीति से हम दशम भाव से फलादेश कहेंगे। कौन सा प्रश्न किस गृह से निकालना चाहिये, इसकी तालिका हम पीछे लिख चुके हैं। अब बिन्दु चाल के अनुसार दशम भाव को देखकर फलादेश कहेंगे। बिन्दु-चाल द्वारा फलादेश तो सोपान-चक्र ही से ज्ञात करना चाहिये। इस प्रकार से तुला-चालित बिन्दु प्रस्तार में जहाँ विश्राम पावे और वह अपने तत्त्व के अनुसार सानुकूल हो उसी को प्रथम गृह भाग्य का मानकर अब सोपान-चक्र में उसी तत्त्व के रूप को ढूँढ़कर प्रथम गृह माना, फिर उसके आगे दशम बिन्दु को तलाश करना पड़ेगा। सोपान का दशम विन्दु प्रस्तार में कहाँ पड़ा है वह बिन्दु निर्बल है या बलवान् है। उसी के अनुसार रमलज्ञ को फलादेश कहना चाहिये।

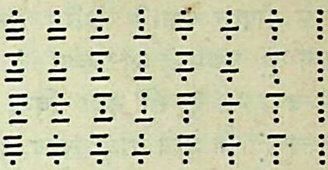
सोपान-चक्र में अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी ये चार तत्त्व होते हैं। प्रत्येक सोपान में ८ रूप पैदा होते है जिनको पूर्ण रूप से समझा चुके हैं।

यदि प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न दूर की यात्रा द्वारा हानि-लाभ का फलादेश जानना है तो यह नवें घर से सम्बन्ध रखता है अतः वहीं सोपान-चक्र में तुला चालित विन्दु को देखना चाहिये। नवाँ विन्दु किस प्रकार देखेंगे। मिसाल के तौर पर मान लें कि हमने प्रस्तार बनाया तुला गृही ⩦ आया। उसके दूसरे विन्दु को जो फलादेश कहनेवाला है, चालित किया तो विन्दु रूप लोहित ⩧ में विश्राम पाया अतः विन्दु ⩧ को प्रथम भाग्य का गृह माना।

सोपान-चक्र में वायु तत्त्व में रूप ⩧ प्रथम विन्दु है। अतः ⩧ से ⁝ तक आठ विन्दु हुए। अब वायु तत्त्व का सोपान समाप्त हो गया और नवें विन्दु वायु के बाद जो जल विन्दु का रूप ⁝ वायु विन्दु के नीचे मिला, उसी को नवाँ बिन्दु ⁝ माना और दशम विन्दु ⩧ हुआ। १६वाँ विन्दु वायु तत्त्व

का कवि में मिला और बिन्दु १७ उसी तत्त्व के नीचे पृथ्वी तत्त्व में रूप को पाया और बिन्दु १८ पृथ्वी तत्त्व का पाया तथा १९वाँ विन्दु पृथ्वी तत्त्व में रूप को पाया। इसी प्रकार बीसवाँ विन्दु रूप

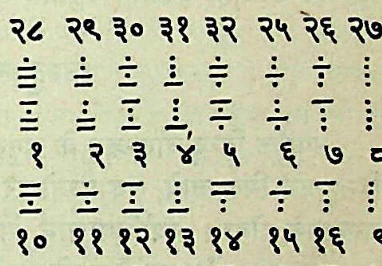
सोपान-चक्र



और २१ वाँ विन्दु रूप और २२वाँ विन्दु रूप तथा २३वाँ विन्दु रूप में और २४वाँ विन्दु रूप को पृथ्वी तत्त्व में पाया। अब पचीसवें विन्दु उसी पृथ्वी तत्त्व रूप के ऊपर अग्नि तत्त्व में रूप को पाया और २६वें विन्दु अग्नि के रूप को पाया और २७वें विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप सोपान में को पाया। अब अग्नि तत्त्व में के पूर्व है अतः २८वें विन्दु अग्नि तत्त्व के रूप को पाया। इसी प्रकार ३२वाँ विन्दु अग्नि तत्त्व का पाया।

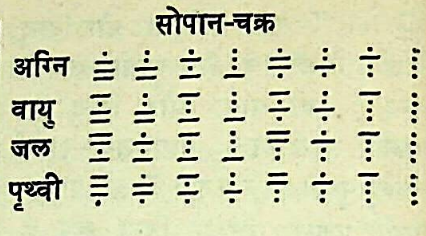
इस प्रकार सोपान चक्र में अपने इच्छित गृह के विन्दु को तलाश करना चाहिये। हमारे पाठकों को खूब अच्छी तरह से सोपान चक्र की चाल समझ में आ जाय इसलिए पुनः सोपान चक्र क्रमानुसार बनाकर दिखला रहे हैं। वायु तत्त्व का विंदु प्रथम से लेकर ३२ तक के सोपान विन्दुओं का चित्र बनाकर दिखला दिया है। इसका विधान यही है कि सोपान चक्र में जो विंदु जिस तत्त्व में विश्राम

सोपान-चक्र



पाता है उससे अन्त तक जितने विन्दु गिनती में आ जायँ उनको गिनें और सोपान चक्र के तत्त्व और फिर उसी तत्त्व के सोपान चक्र में क्रमानुसार प्रथम से आरम्भ करें, जब ८ सप्ताह हो जायँ तो आठवें विन्दु के नीचे जो रूप

या विन्दु हो वही नवाँ विन्दु होगा—जैसे सोपान चक्र के अग्नि तत्त्व का रूप ⁝ प्रथम है और रूप ⁝ अग्नि तत्त्व का ८ है तो नवाँ विन्दु अग्नि तत्त्व ⁝ के नीचे वायु तत्त्व का रूप ⁝ है अतः यह नवाँ विन्दु हुआ और दसवाँ विन्दु पुनः वायु तत्त्व के रूप ⁝ का विन्दु होगा। ११ वाँ वायु का रूप ⁝ और १६ वाँ विन्दु वायु तत्त्व का रूप ⁝ होगा क्योंकि अग्नि तत्त्व के रूप ⁝ का प्रथम विन्दु आरम्भ होकर रूप ⁝ अग्नि तत्त्व में समाप्त हो जाता है और उसी के नीचे वायु तत्त्व का रूप ⁝ नवाँ विन्दु होकर फिर सोलहवाँ विन्दु वायु तत्त्व में रूप ⁝ पर विश्राम पा जाता है। आशा है पाठकगण भली प्रकार समझ गये होंगे। विन्दु-चालन का यही प्रकार है। प्रथम मालूम करना चाहिये कि प्रश्न किस गृह का है ? अतः प्रस्तार में तुला-चालित-विन्दु जहाँ विश्राम पावे वही प्रथम गृह-भाग्य मान लिया जायगा, अब सोपान-चक्र में उसी तत्त्व के सामने अपने रूप का विन्दु तलाश करके विन्दु-चाल के क्रम से जिस गृह का प्रश्न हो उसी के अनुसार शुभाशुभ फलादेश कह दें।



विन्दु चाल के नियम

उपर्युक्त विन्दु-चाल-क्रम के अनुसार सोपान चक्र में अपने अभीष्ट प्रश्न का विन्दु जब मिल जावे, तब प्रश्नोत्तर निकालने में निम्न बातों को समझना भी आवश्यक होगा। ज्यौतिषाचार्य सुर्खाव ही, जिनका परिचय प्रथम दे चुके हैं विन्दु चाल-प्रवर्तक हुए हैं उनके अनुसार फलादेश के सम्बन्ध में ये तीन नियम समझने जरूरी हैं (१) बलावल विन्दुतत्त्वानुसार (२) शुभाशुभ दृष्टि (३) विन्दु जीवित रहता है या मृत्यु पा जाता है। ईरान देश के रमलाचार्य अताउल्ला साहब ने विन्दु की शत्रुता तथा मित्रता पर विशेष जोर दिया है। उनका मत है कि जिस प्रस्तार में तीनों नियम, जो सुर्खाव ने लिखे हैं नियमानुसार ठीक होंगे उसके फलादेश में कभी त्रुटि न होगी और जिस प्रस्तार में विन्दु

का स्वामी बलवान् होकर स्वक्षेत्री होगा वह कार्य अच्छी प्रकार पूर्ण रूप से हो जायगा। अस्तु, याद रखना चाहिये कि विन्दु का स्वामी सोपान चक्रानुसार अपने इच्छित गृह से चौथा विन्दु उसी तत्त्व का होगा और वही स्वामी माना जायेगा। ऊपर के प्रस्तार में अग्नि तत्त्व ≐ का स्वामी उससे चौथा विन्दु अग्नि तत्त्व का रूपात्मक वक्र ⋮ है। यह ≐ का स्त्रामी है या ≐ का चौथा विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप मन्दग ÷ है। इसी प्रकार अन्य तत्त्वों के चौथे विन्दु का स्वामो भी समझें।

विन्दु के बलाबल का विचार

हम प्रथम लिख चुके हैं कि प्रस्तार का तुला-चालित विन्दु मातृ पंक्ति या दुहितृ पंक्ति में जहाँ विश्राम पावे वहाँ देखना चाहिये कि स्वक्षेत्र में रुका है या मित्रक्षेत्र में या शत्रुक्षेत्र में या उत्कृष्ट मित्रक्षेत्र में। इसके जानने की यह रीति है—यदि तुला-चालित-विन्दु स्वक्षेत्री हो अर्थात् अग्नि तत्त्व का विन्दु तुला से चलकर अग्नि तत्त्व में, वायु तत्त्व का विन्दु वायु क्षेत्र में, जल तत्त्व का विन्दु प्रस्तार के जल क्षेत्र में और पृथ्वी तत्त्व का विन्दु पृथ्वी के गृह में पड़ जाय तो वह स्वक्षेत्री होकर परम बलवान् होगा। यदि वह विन्दु मित्र के गृह में पड़ेगा तो भी बलवान् होगा। जैसे कि अपने मित्र के घर आया है तो सम्मान पायेगा ही मगर अपने घर की और बात है। स्वक्षेत्री अपनी इच्छानुसार मालिक है किन्तु मित्र क्षेत्र में मित्र का परामर्श करके सफल-मनोरथ होना पड़ता है। यदि विन्दु उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है तो समभाव में रह जाता है। यदि शत्रुक्षेत्र में विश्राम पाया है तो वह निर्बल हो गया।

प्रस्तार में १, ५, ९. १३ गृह तो अग्नि तत्त्व के हैं।
२. ६. १०, १४ गृह वायु तत्त्व के हैं।
३, ७, ११. १५ गृह जल तत्त्व के हैं।
४. ८. १२, १६ गृह पृथ्वी तत्त्व के हैं।

उदाहरण

अग्नि विन्दु अग्नि में स्वक्षेत्री, वायु में मित्रक्षेत्री, जल में शत्रुक्षेत्री, और पृथ्वी में समक्षेत्री है।

वायु विन्दु वायु में स्वक्षेत्री, अग्नि में मित्रक्षेत्री, जल में समक्षेत्री, और पृथ्वी में शत्रुक्षेत्री हैं।

जल विन्दु जल में स्वक्षेत्री, पृथ्वी में मित्रक्षेत्री, अग्नि में शत्रुक्षेत्री, और वायु में समक्षेत्री है।

पृथ्वी विन्दु पृथ्वी में स्वक्षेत्री, जल में मित्रक्षेत्री, अग्नि में समक्षेत्री और वायु में शत्रुक्षेत्री है।

"गुप्त रहस्य"—यदि अग्नि तत्त्व का विन्दु जल तत्त्व में, और जल तत्त्व का विन्दु अग्नि गृह में पड़े तो बारीक अन्तर रखता है और यदि अग्नि विन्दु जल में विश्राम पाता है तो शत्रुक्षेत्र मे पड़कर अपनी हस्ती मिटा देता है, ऐसी दशा में पूर्ण असफलता होती है। विपरीत इसके यदि जल विन्दु अग्नि गृह में विश्राम पावे, तो समझना चाहिये यह विन्दु यद्यपि शत्रुक्षेत्र में आया है परन्तु इसकी पूर्ण शक्ति क्षीण नहीं हुई है, क्योंकि जल की प्रकृति अग्नि को बुझा देने की है। अतः पृच्छक की आशा पूर्ति में पूर्ण निराशा नहीं होती है पर रुकावट कार्य में जरूर पड़ जाती है। यह अन्तर अग्नि और जल में है। ऐसी दशा में रमलज्ञ यह कहेगा कि वर्तमानकाल में अड़चनें पड़ रही हैं परन्तु परिश्रम और पुरुषार्थ से अन्त में सफलता होगी।

यही क्रम वायु और पृथ्वी मे कहना चाहिये। पृथ्वी का विन्दु वायु में पूर्ण निर्बल होता है यदि वायु विन्दु पृथ्वी में आवे तो यद्यपि वह शत्रुक्षेत्री है किन्तु वायु पृथ्वी पर विजयी होता हे अतः ऐसी स्थिति में प्रथम कठिनता होगी किन्तु पुरुषार्थ और परिश्रम से अन्त में विजयी होगा।

त्रिविधा मैत्री

विन्दु की मित्रता तीन प्रकार की होती है—

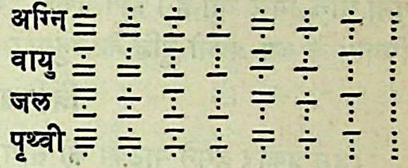
(१) साधारण मित्रता (२) मुख्य मित्रता (३) पूर्ण घनिष्ठ मित्रता।

इन में साधारण मित्रता तो अग्नि और वायु की केवल रूपों द्वारा है। जैसे वाग्मी ☱ अग्नि का रूप है और लोहित वायु का रूप है तो यह अग्नि और वायु की साधारण मित्रता मानी जायेगी।

खास मित्रता अग्नि और वायु की सोपान चक्र के क्रम से मानी जाती है।

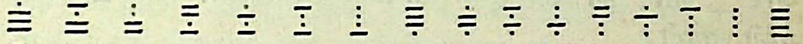
देखें इस सोपान चक्र में रूप ⁝ का अग्नि विन्दु तथा वायु तत्त्व का रूप ⁝ का विन्दु खास मित्र हैं और विन्दु २ अग्नि का ⁝ वायु तत्त्व में रूप ⁝ दूसरा खास मित्र है। विन्दु तीसरा अग्नि ⁝ का विन्दु वायु

सोपान चक्र



के रूप ⁝ का खास मित्र है। इसी प्रकार सम्पूर्ण खास मित्रों को समझना चाहिये। तीसरी घनिष्ठ मित्रता का ज्ञान अ व द ह पंक्ति के चक्र से ज्ञात होता है।

अ व द ह क्रम यह है



१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

घनिष्ठ मित्रता को यवनाचार्य दोस्ती खुलुमखास कहते हैं। घनिष्ठ मित्रता उस अग्नि विन्दु और उस वायु विन्दु की है जो अवदह पंक्ति में अग्नि के आगे वायु का विन्दु है, जैसे वाग्मी ⁝ अवदह पंक्ति में प्रथम गृह का रूप है और उसके आगे दूसरे गृह में लोहित ⁝ का वायु विन्दु है अतः ⁝ अग्नि ⁝ वायु का घनिष्ट मित्र है। इसी प्रकार विन्दु रूप पात ⁝ का अग्नि विन्दु उसके आगे बोधन ⁝ वायु विन्दु का घनिष्ट मित्र है। इसी प्रकार अग्नि और वायु की, जल और पृथ्वी की तथा पृथ्वी और जल की घनिष्ट मित्रता समझें। जैसे बोधन ⁝ रूप का जल विन्दु और सौरि ⁝ का पृथ्वी विन्दु, ये घनिष्ट मित्र हैं इसी प्रकार वायु विन्दु ⁝ जो दूसरे गृह का मालिक है उसके आगे तीसरे गृह के उष्णगु रूप ⁝ के अग्नि विन्दु ⁝ से घनिष्ट मित्रता रखता है। इसी प्रकार सोपान चक्र में रूप विधु ⁝ जल तत्त्व के विन्दु का मित्र खास रूप ⁝ पृथ्वी तत्त्व का विन्दु है। यह मित्र खास है घनिष्ट मित्र नहीं है क्योंकि घनिष्ट मित्र तो अवदह पंक्ति से मालूम करते हैं और सोपान चक्र के अनुसार मित्र खास माने जाते हैं। अवदह पंक्ति में ⁝ चौथे गृह में है उसका

जल विन्दु रूप जो आठवें गृह में है उसका पृथ्वी तत्त्व का विन्दु यह मित्र घनिष्ट भी बनता है। खास मित्र भी है और घनिष्ट मित्र भी बन रहा है अतः दूनी शक्ति मिल रही है। इसी प्रकार और रूपों की खास मित्रता तथा घनिष्ट मित्रता के रूप अपनी बुद्धि के अनुसार जान लें।

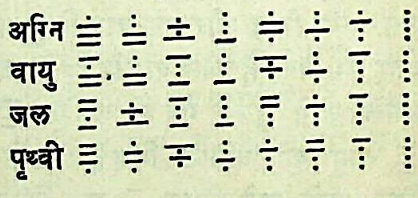
त्रिविध शत्रुता

जिस प्रकार हमने पाठकों को साधारण मित्र, मुख्य मित्र, घनिष्ट मित्र का उदाहरण सहित चित्र बनाकर समझाया है। उसी प्रकार शत्रुता भी ३ प्रकार की होती है (१) साधारण शत्रुता (२) मुख्य शत्रुता (३) घनिष्ट शत्रुता।

इसमें साधारण शत्रुता तो वह है जो प्रत्येक अग्नि रूप से प्रत्येक जल रूप की होती है और वायु की पृथ्वी से हुआ करती है। जैसे रूप जल का है और अग्नि का रूप है तो साधारण तौर पर और की शत्रुता मानी जायेगी।

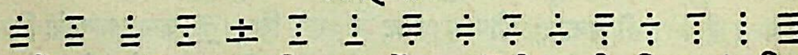
(२) दूसरी मुख्य शत्रुता वह है जो अग्नि और जल के बीच अथवा वायु और पृथ्वी विन्दु के बीच सोपान चक्र के अनुसार है। जैसे सोपान चक्र में अग्नि रूप का विन्दु और जल तत्त्व में रूप का जल विन्दु यह मुख्य शत्रु हैं। इसी प्रकार सोपान चक्र के अनुसार मुख्य शत्रुता भी रमलज्ञ को मालूम करनी चाहिये।

सोपान चक्र



इसी प्रकार घनिष्ट शत्रुता का ज्ञान अवदह पंक्ति के रूपों के अनुसार बतलाना चाहिये।

अवदह पंक्ति



इसमें रूप २ का वायु विन्दु आठवें गृह के पृथ्वी विन्दु का घनिष्ट शत्रु होता है। इसी प्रकार अपनी बुद्धि क अनुसार तीनों प्रकार की शत्रुता रूपों द्वारा, सोपान द्वारा और अवदह पंक्ति द्वारा ज्ञात करें।

मित्रता आदि से लाभ

मित्रता और शत्रुता का लाभ यह है—हमको देखना चाहिये कि तुला-चालित विन्दु जहाँ पर विश्राम पाता है वह स्वक्षेत्र है या नहीं, यदि अपने क्षेत्र में विश्राम नहीं पाया है तो देखें कि विन्दु मित्र के गृह गया है या नहीं। यदि मित्रगृही है तो समझें विन्दु को शक्ति मिल रही है। फिर भी विश्रामगृह के विन्दु को देखें कि अवदह पंक्ति के अनुसार कौन रूप आया है और उस रूप का निवास जहाँ विश्राम मिला है किस घर में है। वजाय विश्राम गृह के उस घर में कौन रूप है ? अगर उस रूप में जहाँ विन्दु ने विश्राम पाया है, उसमें भी विन्दु उसी तत्त्व का है तो प्रश्नकर्त्ता की कामना अपने उद्योग से ही पूरी होगी। अगर उसमें विन्दु मित्र का है तो मित्र की सहायता से सफलता मिलेगी। यदि वह घनिष्ट मित्र के गृह में गया है तो बिना सिफारिश के स्वतः कार्य पूरा होगा। यदि दोनों विन्दु न मिलें, केवल साधारण मित्रगृही विन्दु हो तो पुरुषार्थ तथा घोर परिश्रम से कार्य की सफलता हो।

यदि तुला-चालित-विन्दु शत्रुक्षेत्री हो और सोपान चक्र के अनुसार मुख्य शत्रु हो अथवा अवदह पंक्ति के अनुसार घनिष्ट शत्रु पड़ जावें तो कार्य में सफलता न मिले इस प्रकार रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार फलादेश कहना चाहिये।

दृष्टि का विचार

जिस प्रकार ज्योतिष शास्त्र में जन्माङ्ग चक्र में ग्रहों की दृष्टि का विचार करके शुभाशुभ फलादेश दैवज्ञ बतलाते हैं इसी प्रकार रमलशास्त्र में भी दृष्टि-ज्ञान का विचार परमावश्यक है।

रमलशास्त्र में ५ प्रकार दृष्टि कही गई हैं।

(१) साधारण दृष्टि (२) मित्र दृष्टि (३) अर्द्ध शत्रु दृष्टि (४) पूर्ण शत्रु दृष्टि (५) सम दृष्टि।

साधारण दृष्टि, जिसे यवनाचार्य नजर तसदीद भी कहते हैं, वह है कि जहाँ पर विन्दु विश्राम पाया है उससे आगे जिस गृह का

प्रश्न पृच्छक का है सोपान चक्र के अनुसार उसी गृह के विन्दु को लेकर प्रस्तार चक्र से देखें कि वह विन्दु किस गृह में बैठा है और विश्राम गृह में यदि खाना ३ या ११ गृह में हो तो वह साधारण दृष्टि है।

यदि खाना ५ या ९ में हो तो मित्र दृष्टि समझें। यदि विन्दु के विश्राम स्थान से अपने अभीष्ट विन्दु का रूप सप्तम भाव में हो तो पूर्ण दृष्टि मानी जायगी। यदि विश्राम विन्दु से हमारे अभीष्ट विन्दु का रूप चौथे अथवा दसवें गृह में हो तो अर्द्ध शत्रु है। सम दृष्टि दूसरे गृह की दृष्टि को कहते हैं।

साधारण दृष्टि में अपने मनोरथ की सिद्धि में प्रथम सरलता प्रतीत हो परन्तु अन्त में कठिनाई उठानी पड़े। साधारण दृष्टि का अर्थ है कि कार्य कठिनता से पूरा हो। मित्र दृष्टि में आदि से अन्त तक सफलता प्राप्त होती रहे। अर्द्ध शत्रु दृष्टि चौथे तथा दसवें स्थान की मानी जाती है इस दृष्टि में प्रथम प्रश्नकर्त्ता की कामना पूर्ति में अड़चनें पड़ें तब अन्त में सफल मनोरथ हो। पूर्ण दृष्टि बराबर की दृष्टि मानी जाती है विश्राम गृह विन्दु का रूप अपनी अभीष्ट अर्थात् उसका जिस गृह का प्रश्न हो सोपान चक्र के अनुसार उसी तत्त्व का विन्दु प्रस्तार में सातवें बैठा हो तो किसी प्रकार सफलता न हो। षडष्टक दृष्टि वह है जो ६-८-१२ हो अर्थात् विश्राम गृह का विन्दु अपने मनोरथ के इच्छित घर के ६ या ८ या १२वें पड़ा हो, उसमें सफलता नहीं होती।

विन्दु का जीवन-मरण विचार

जब विन्दु विश्राम का बलाबल विचार कर लें और शत्रु-मित्र-गृह विचार कर लें एवं दृष्टि विचार भी कर लें जैसा कि हम समझा चुके हैं। तब एक रहस्य पूर्ण बात विन्दु के जीवन-मरण की समझना भी रमलज्ञ को परम-आवश्यक है।

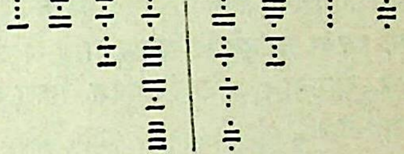
विन्दु की मृत्यु कब मानी जाती है इसके जानने की रीति यह है कि तुला-चालित-विन्दु प्रस्तार में जहाँ विश्राम पावे उसको भाग्यस्थान मानकर फिर जिस गृह के सम्बन्ध का फलादेश मालूम करना है, सोपान चक्र के अनुसार उसी गृह के बिन्दु को देखें कि आपके बताए हुए प्रस्तार में वह विन्दु किस गृह में बैठा है और विश्राम-गृह-विन्दु अर्थात् अपने भाग्यस्थान से वह रूप जो सोपान चक्र

से निकाला है प्रस्तार में कहाँ है ? उसका कैसा बल है ? कैसी दृष्टि है ? कैसा मित्रता या शत्रुता है ? तब सभी बातों पर विचार कर लें।

अब देखें हमारे मनोरथवाला सोपान चक्र के अनुसार प्राप्त रूप प्रस्तार के किस गृह में वैठा है और अवदह पंक्ति के अनुसार किस गृह में है। अस्तु, उस रूप को उसी गृह के मालिक रूप से जो कि अवदह चक्र का है, गुणा करें यदि गुणा करने से वह विन्दु ज्यों का त्यों रहता है तो वह विन्दु जीवित माना जायेगा और यदि उस स्थान में गुणा करने से पाई (–) बन गई तो समझ लें विन्दु मर गया अर्थात् मनोरथ की शक्ति क्षीण हो गई।

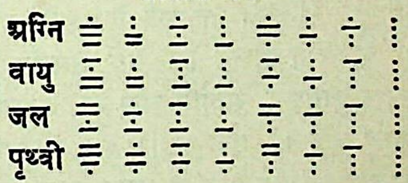
पाठक बन्धु इस रहस्य को भली प्रकार समझ लें इसलिये हम एक उदाहरण द्वारा विन्दु के जीवन-मरण का चित्र देते हैं।

मान लें किसी ने आकर प्रश्न किया कि हमारी अमुक कामना पूरी होगी या नहीं ? प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार



बना हारा खाना १५ से तुला-चालित विंदु मातृ पंक्ति के तीसरे गृह में जाकर पुनः दाहिने चलकर प्रथम गृह ≑ में विश्रान पाता है अतः यही भाग्य स्थान माना। अब सोपान चक्र को देखा, पृथ्वी तत्त्व का विंदु चला है अतः पृथ्वी तत्त्व रूप ≑ को प्रथम गृह मानकर आशा का ११ वाँ गृह लेना है तो पृथ्वी तत्त्व ≑ का प्रथम

सोपान चक्र



गृह, ÷ दूसरा, ÷ तीसरा, ÷ चौथा, ÷ पाँचवाँ, ÷ छठा, ⋮ सातवाँ फिर लौट कर ≑ आठवाँ पाया। अब ≑ के ऊपर अग्नि तत्त्व में उसी क्रम में ≑ नवाँ ÷ दशवाँ, ÷ ग्यारहवाँ विन्दु पाया। इस रूप ÷ को प्रस्तार में देखा तो लग्न से १२वें गृह में बैठे पाया। दृष्टि अशुभ हो गई किन्तु रूप खाना १२ में बैठा है और अवदह चक्र के अनुसार रूप ÷ १२वें गृह का मालिक है।

अस्तु, रूप ⁝ को ⁝ से गुणा किया तो रूप ÷ पाया। इसको पृथ्वी तत्त्व के विन्दु से गुणा करने से जीवित पाया अतः यद्यपि १२वीं दृष्टि अशुभ है किन्तु विन्दु जीवित है इसलिये पृच्छक की कामना बड़ी अड़चनों के बाद पूरी होगी यदि दोनों के गुणा से पृथ्वी तत्त्व का विन्दु जीवित न रहता उस स्थान प रेखा (–) बन जाती तो हम कहते कि विन्दु मर गया, मनोरथ किसी प्रकार सिद्ध न होगा।

रमलज्ञ के लिये विन्दु के जीवन-मरण का ध्यान करना आवश्यक होता है। यदि वह विन्दु किसी शुभ कार्य के प्रति मृत्यु पाता है तो परिणाम अशुभ होगा और यदि विन्दु कायम रहे तो अशुभ फल कहें। यदि अशुभरूप कार्य का प्रश्न करने में विन्दु क्षीण हो जाय तो शुभ फल समझें।

यदि विन्दु मृत्यु को प्राप्त हो और उस गुणनफल के रूप में उसका मित्र विन्दु पैदा हो जावे तो ऐसी दशा में विन्दु की शक्ति कुछ निर्बल मानी जायगी क्योंकि उसकी शक्ति तो मिट गई मगर मित्र की शक्ति मौजूद है। तब रमलज्ञ को कहना चाहिये कि इस दशा में आपका कोई मित्र सहायता करेगा और कार्य बन जायगा। यदि संयोगवश विन्दु शत्रुगृही पैदा हो जाय तो निराशा हो जायगी।

अब हम अपने पाठकों को सम्पूर्ण प्रश्नों के उत्तर विन्दु की चाल के अनुसार प्रथम गृह से १२वें गृह तक के प्रश्नोत्तर लिखते हैं।

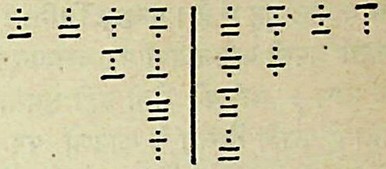
सावधान होकर देखें, सुनें, समझें और इसी प्रकार अपनी बुद्धि के अनुसार प्रस्तार बनाकर सोपान चक्र को बनायें। अच्छा तो यह होगा कि रमलज्ञ सोपान चक्र को एक कागज पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखकर एक दफ्ती में चिपकाकर सदैव पाँसे के साथ रक्खें ताकि बार-बार सोपान चक्र बनाने की नौबत न आवे।

प्रथम गृह के प्रश्नों का विचार

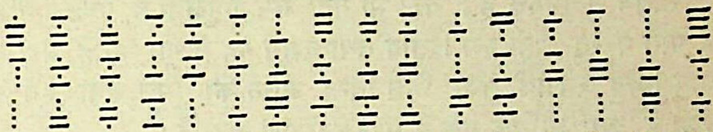
(१) इस समय भाग्य उन्नति पर है या अवनति पर ?

इस प्रकार के प्रश्न को पृच्छक से मालूम करके रमलज्ञ ने पाँसा फेंककर मातृ पंक्ति के चार रूप बनाये और पूरा प्रस्तार इस प्रकार बना—

सर्व प्रथम प्रस्तार के समस्त रूपों को अवदह पंक्ति के रूपों से गुणा करके गुप्त रूप का निर्माण कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।



अवदह
प्रस्तार रूप
गुणन रूप



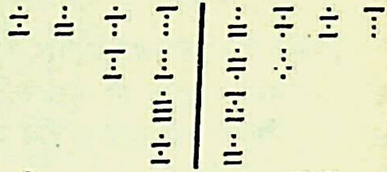
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

विशेष टिप्पणी—यह प्रस्तार तथा इसके सम्बन्ध का समस्त विचार रमल-के परमाचार्य सुर्खाव की पुस्तक के मतानुसार लिया गया है। भारतवर्ष में बादशाह सिकन्दर के साथ सुर्खाव ज्योतिषी ईरान से आये थे।

(१) विन्दु (लग्न भाव) १५ गृह से वायु विन्दु को गति दी गई क्योंकि तुला-चालित का प्रथम विन्दु अग्नि का मूक प्रश्न निकालने का है। इस भाग में हमको केवल विन्दु-चाल द्वारा प्रत्येक प्रश्न का फलादेश विस्तारपूर्वक समझना है। मूक प्रश्न निकालने की रीति दूसरे भाग में लिखेंगे।

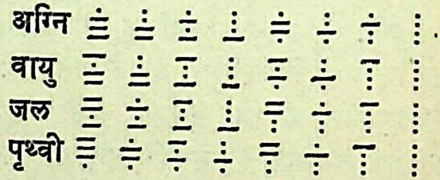
अस्तु, तुला-चालित वायु विन्दु प्रथम १३ वें गृह में रुका, फिर १३ से चलकर नवें गृह में रुका फिर नवें से चलकर प्रथम गृह में विश्राम पाता है। वायु विन्दु १५ से चलकर खाना १ अग्नि में आता है अतः विन्दु मित्र के गृह में पड़ गया क्योंकि हम प्रथम कह आये हैं अग्नि और वायु की मित्रता है तथा प्रद्रहवें घर का शत्रुक्षेत्री है क्योंकि अग्नि का रूप जल घर में बैठा है। अतः इसीको निर्णायक मानकर प्रश्न का रूप स्वीकार किया। यद्यपि रूप विषम है किन्तु तुला रूप से बली है : चूँकि तुला चालित-विन्दु प्रथम गृह में में वायु विन्दु का रुका है। वह दोनों रूप प्रश्नकर्त्ता की इच्छा रूप के बोधक हैं। प्रन्द्रहवाँ जल गृह है। मनोभिलाषा का विन्दु जिस स्वरूप से चला वह अग्नि का है अतः पृष्छक की मनोभिलाषा वायु रूप अर्थात् चञ्चल है और उसे साथी विन्दु अग्नि का सन्ताप देनेवाला मिल जाता है में। अग्नि और बायु के

साथ जल गृह में है। पृच्छक चिन्तित है। अग्नि पर जल बली होता है अतः प्रश्न कर्त्ता अपनी कठिनाइयों पर बलवान् है परन्तु वायु के साथ (मनोभिलाषी विन्दु के साथ) जल की मैत्री नहीं समता है परिस्थितियों पर पृच्छक काबू नहीं पा रहा है यद्यपि चिन्ता के कारणों पर प्रश्नकर्त्ता बली है। विन्दुवाला वही स्वरूप ⁞ सातवें में पुनरुक्त है। वहाँ भी यही रूप शत्रुक्षेत्री है, पृच्छक के सहायक नहीं दें पाते परन्तु यही रूप द्वितीय तथा दशम गृह में गुप्त भी है, यहाँ मनोभिलाषी वायु बिन्दु स्वक्षेत्री तथा मित्र विन्दु अग्नि का मित्र क्षेत्री एव रूप ⁞ मिल बली है, अतः आर्थिक बल से प्रश्नकर्ता पूर्ण बली है।



खाना १५ से तुला चालित विन्दु विश्राम गृही १ तक मार्ग में १३ वें व नवें दो रूप ⁞ और ⁞ इस मनोभिलाषी विन्दु को मिलते हैं दोनों रूप वायु की तथा दोनों अग्नि के गृह हैं। १३ वें गुप्त रूप ⁞ तथा नवें में गुप्त ⁞ है। प्रन्द्रहवें गुप्त ⁞ है, १५ और १३ समान ही हैं। नवें मनोभिलाषी विन्दु को अधिक उष्णता तथा तीव्रता प्राप्त है। यही स्थिति प्रथम गृह की है, उसमें पहुँचकर विन्दु अत्यन्त उष्ण तथा तीव्र हो जाता है। अस्तु पृच्छक इस समय चिन्ताओं से इतना व्याकुल तथा उसका मन इतना सन्तनप्त है कि कर्तव्य का मार्ग ही नहीं दीख पड़ता है, यह विन्दु १३ और ९ और १ में सर्वत्र विन्दु रूप ही रहा है, कहीं भी गुणनफल से ⁞ का वायु विन्दु रेखा (—) होकर मृतक नहीं हुआ है। अतः पृच्छक की दशा अभी तक वैसी ही चली जा रही है।

सोपान चक्र

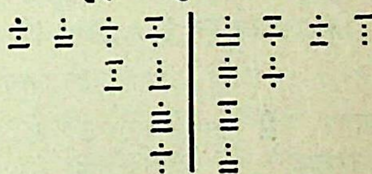


अब सोपान चक्र में देखा तो निर्णय का विन्दु ⁞ का दूसरा वायु ⁞ है। वायु पंक्ति के सोपान में इस अपने मनोभिलाषी विन्दु को रूप ⁞ के वर्तमान का रूप ⁞ है जो प्रस्तार में कहीं भी प्रकट दिखाई नहीं देती परन्तु गुप्त रूप से यह खाना १, ५, १३ और १४ वें घर में है। १, ५, १३

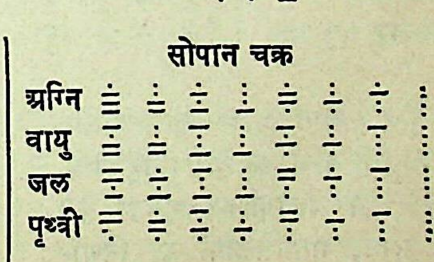
मित्रक्षेत्री बली तथा १४ स्वक्षेत्री बली है। रूप ⁝ का प्रकट में न होना शिथिलता का सूचक है, परन्तु तीन स्थानों पर मित्रबली तथा १४ वाँ स्वबली, जो कि धर्माधर्म-गृही भी है, यह बहुत अच्छा है।

मनोभिलाषी विन्दु का भविष्यकाल जल का रूप ⁝ है। यह प्रस्तार के प्रथम गृह में शत्रुक्षेत्री है। यह भी कठिनाई का सूचक है। इसमें भी अग्नि का विन्दु जो कि मनोभिलाषी विन्दु का मित्र है, है ही नहीं। जलविन्दु अपने मित्र, पृथ्वीविन्दु के साथ है। अग्नि पर जल सदैव बली होता है, अतः प्रत्येक प्रकार से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त होगी। परन्तु प्रस्तुत दशा ठीक नहीं है। इस प्रकार प्रथम बिन्दु का, जो कि मनोभिलाषा का निर्णय विन्दु है विचार समाप्त हुआ। अब इनके सहायक विन्दुओं को देखना है।

(२) दूसरा विन्दु (धन भाव) पूर्वोक्त वायु पंक्ति के रूप ⁝ का दूसरा विन्दु ⁝ वायु का है, जिसको प्रथम वर्तमान काल मान चुके हैं। यह विन्दु प्रस्तार में प्रकट नहीं है। परन्तु गुप्त रूप से १, ५ एवं १३ वाँ मित्रक्षेत्री तथा १४ वाँ स्वक्षेत्री उत्पन्न होता है। गृहानुसार ३० प्रतिशत अशुभ ७० प्रतिशत शुभ है। इसका वर्तमान काल वायु का रूप ⁝ है (सोपान चक्र देखो) प्रस्तार में तेरहवें में मित्रक्षेत्री प्रकट है तथा नवें गृह में गुप्त रूप से मित्रक्षेत्री है। यह अपने से पाँचवें स्थान पर स्थिति मनोभिलाषी मूल विंदु वायु ⁝ को शुभ दृष्टि से देखता है यह शुभ तथा बली बनानेवाला है।



(७) सातवाँ विंदु (प्रतिद्वन्द्वी भाव) प्रस्तुत मूल विंदु वायु ⁝ का वायु ⁝ प्रस्तार में प्रकट रूप से तीसरा समक्षेत्री तथा पाँचवाँ मित्रक्षेत्री है। एवं गुप्त रूप से १२वें गृह में शत्रुक्षेत्री है, इसका वर्तमानकालिक विन्दु



वायु ⁝ प्रस्तार में नवें मित्रक्षेत्री में प्रकट तथा छठे गृह में गुप्त रूप से स्वक्षेत्री है। मूल विन्दु (वायु ⁝) को ९ वीं दृष्टि तथा प्रस्तार में ⁝ ५ वीं शुभ दृष्टि से देखता है। अतः पूर्व दिशा की यात्रा लाभदायक है।

(१०) दशम विन्दु (कर्म, मान, प्रतिष्ठा भाव) पासा जल का ⁝ है। यह प्रथम गृह में प्रस्तार में शत्रुक्षेत्री है। इस का वर्तमान जल का रूपात्मक शीतांशु ⁝ प्रस्तार में प्रकट रूप में नहीं है। परन्तु गुप्त से खाना ५, १३ शत्रुक्षेत्री हैं तथा १४ वें गृह में समक्षेत्री है। अस्तु ७० प्रतिशत निर्बल है। अतः व्यापारिक दशा डाँवाडोल रहेगी।

११ वाँ विन्दु (आशा भाव) जल के सोपान चक्र में जल का ⁝ है। यह प्रस्तार में प्रकट मौजूद नहीं वरन् गुप्त रूप से खाना १, ५, १३ शत्रुक्षेत्री में वैठा है तथा १४ वें में समक्षेत्री है। इसका वर्तमानकाल जल सोपान का ⁝ है। यह प्रस्तार में प्रकट रूप में नहीं है मगर गुप्तरूप से प्रस्तार में सातवाँ स्वक्षेत्री बली तथा शुभ है।

प्रश्न का परिणाम

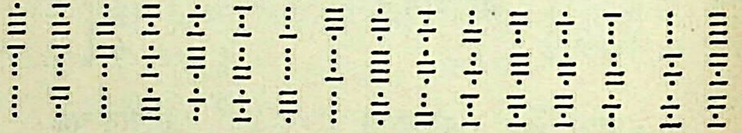
यह निकला कि पृच्छक को यद्यपि इस समय चिन्ता है, व्यापार कुछ शिथिल है परन्तु निकट भविष्य में भाग्य का ग्रह उन्नत अवस्ता में जानेवाला है, अतः भविष्य में फल सन्तोषजनक एवं उत्तम है।

(२) मुझे उच्च पद, प्रसन्नता तथा सौभाग्य प्राप्त होगा या नहीं ?

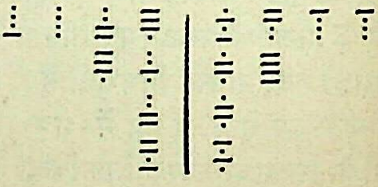
विचारणीय गृह १, ५, १०, ११ तथा १४ होते हैं ?

गुप्तोद्घाटन

अवदह
प्रस्ताररूप
गुणनरूप

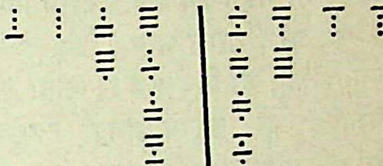


प्रस्तार



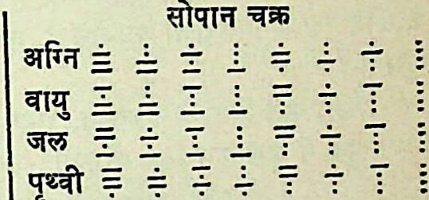
(१) लग्न भाव—तुला-चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का तीसरे गृह मित्र-क्षेत्रीं ⁝ में बली होकर रुकता है। यही लग्न, मनोभिलाषी या निर्णा-

यक विन्दु माना गया है। इसका वर्तमानकाल जल तत्त्व का रूप ≑ सोपान चक्रानुसार प्रस्तार में मौजूद नहीं है मगर गुप्तरूप से पाँचवें गृह में उत्कृष्ट मित्र-क्षेत्री है। तथा १४ वें गृह में शत्रुक्षेत्री है अतः इसकी शक्ति मध्य श्रेणी में रहती है। विन्दु खास, मित्रक्षेत्री एवं बलवान् है। इसका भविष्य अग्नि तत्त्व



का रूप ≑ है, जो प्रस्तार में दशम गृह में मित्रगृही तथा १३ वें में स्वक्षेत्री और बलवान् है। दशम विन्दु पर इसकी दृष्टि ८ वीं अशुभ पड़ती है परन्तु तेरहवें गृह पर दृष्टि बली है। अतः शुभ माना गया है।

सोपान चक्र में ≑ रूप पृथ्वी तत्त्व का पाँचवाँ विन्दु पृथ्वी का ≑ है, जो प्रस्तार में पाँचवें गृह में बैठा है। यह उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है और शुभ दृष्टि ≑ की तीसरी पड़ती है तथा १२वाँ स्वक्षेत्री होकर बैठा है। गुप्त रूप से सातवें



गृह में मित्रक्षेत्री है अतः पूर्ण बली है। वर्तमानकालिक विन्दु पृथ्वी सोपान का ÷ रूपात्मक है। प्रस्तार के दशम भाव में शत्रुक्षेत्री तथा १३ वाँ उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है तथा गुप्तरूप से ९ में भी उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है।

यह दशम भाव से द्वादश भाव स्थित ≑ को तीसरी शुभ दृष्टि से देखता है तथा पञ्चम भाव स्थिति ≑ को १० भाव से १२ वीं अशुभ दृष्टि से देखता है। इसी प्रकार १३ भाव ÷ १२ वें और पाँचवें स्थित ≑ को दूसरी योगवाही दृष्टि तथा पंचम शुभ-अत्युत्तम दृष्टि से देखता है। अतः यह पाँचवाँ विन्दु ७० प्रतिशत बली माना गया।

(१०) दशमभाव (प्रतिष्ठा) लग्न विन्दु पृथ्वी ≑ का दशम विन्दु अग्नि सोपान का ÷ है, जो कि दसवें प्रस्तार में मित्रक्षेत्री, १३ वें में स्वक्षेत्री बली प्रकट तथा नवें में स्वगृही बली गुप्त रूप से बैठा है। इसका वर्तमान काल अग्नि सोपान का ÷ है और प्रस्तार में ११ वाँ शत्रुक्षेत्री है मगर लग्न विन्दु में

दृष्टि ९ शुभ पड़ती है और लग्न विन्दु पृथ्वी से सोपान के रूप ⁝ की दृष्टि जोकि ⁝ पर आठवीं है, अशुभ पड़ती है। अतः स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री बल में न्यूनता आ गई। इस प्रकार दशम विन्दु ४० प्रतिशत बलवाला रह गया।

११ वाँ (आशा भाव) इस लग्न विन्दु का ग्यारहवाँ आशाभाव लग्न विन्दु ⁝ है, जो निर्बल है। खाना ११ शत्रुक्षेत्री है लेकिन वर्तमान काल से इसका ⁝ गुप्त रूप से पाँचवाँ स्वक्षेत्री तथा १४ वाँ मित्रक्षेत्री बलवान् है, अतः ७० प्रतिशत बली पाया।

१४ वाँ बिन्दु (धर्माधर्म-साक्षी तथा रमल दर्पण) इस प्रश्न का अन्तिम विचारणीय विन्दु १४ वाँ अग्नि का रूप ⁝ है। यह गुप्त रूप से खाना ४ में बैठा है। उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री समबली है और वर्तमान इसका ⁝ प्रकट में खाना ६ और १४ में मित्रक्षेत्री बलवान् है तथा गुप्त रूप से १० वाँ मित्रक्षेत्री है यह शुभ है।

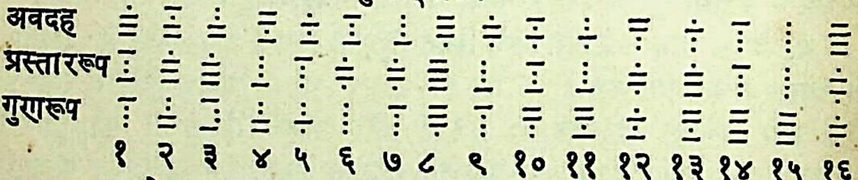
अस्तु, फल होता है उच्चपद, प्रसन्नता तथा सौभाग्य प्राप्त अवश्य होगा किन्तु पूर्व में कुछ कम फिर धीरे-धीरे उन्नति होगी।

(३) क्या मुझे प्रसन्नता प्राप्त होगी ?

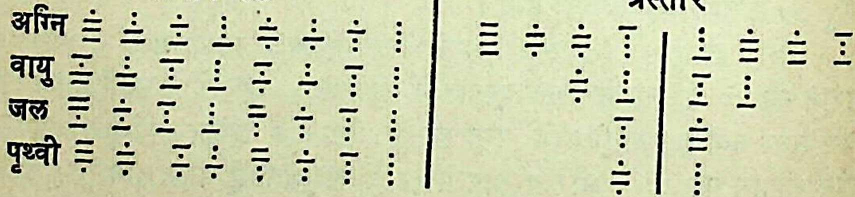
विचारणीय गृह—

१ लग्न, ५ मंगल तथा प्रसन्नता ११ वाँ आशा है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र — प्रस्तार



१—लग्नभाव का तुला-चालित वायु विन्दु चलकर पाँचवें गृह ⁝ में गया (यद्यपि वह ४ गृह में भी जाता है मगर शत्रुक्षेत्री होने के कारण निर्बल माना गया है। अतः पाँचवें गृह को लिया इसमें रूप ⁝ प्रामाणिक लग्न गृह हुआ) विन्दु मित्रक्षेत्री है और खाना १४ में भी मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान काल ⁝ वायु है, प्रस्तार में प्रकट खाना १५ समबली है तथा गुप्त रूप से छठाँ स्वक्षेत्री एवं बलवान् है। पूर्ण तथा शुभ दृष्टि से लग्न को देखता है। अतः लग्न विन्दु मित्रक्षेत्री, वर्तमान विन्दु ⁝ मसबली, गुप्त विन्दु छठा स्वक्षेत्री और दृष्टि उत्तम होने से ७० प्रतिशत बली माना गया।

५—मंगल तथा प्रसन्नता का पाँचवाँ विन्दु है अतः पाँचवाँ विन्दु रूप ⁝ खाना १ और १० में मित्रबली तथा स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान काल ⁝ खाना शत्रुक्षेत्री है। खाना ११ में समक्षेत्री प्रकट, नवम में मित्रक्षेत्री तथा खाना १ में गुप्त रूप से मित्रक्षेत्री है। इनकी स्थिति परस्पर ४ में अत्युत्तम तथा १ में शत्रुक्षेत्री होने से ७० प्रतिशत बली हो गई।

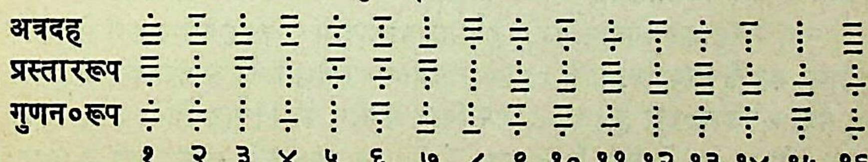
११—आशाभाव, इसका ग्यारहवाँ विन्दु सोपान क्रम में रूप शीतांशु ⁝ जल है। यह १५ वें में स्वक्षेत्री बलवान् है तथा छठें में गुप्त रूप से समबली है। इसका वर्तमान काल ⁝ जल है। यह प्रस्तार में प्रकट नहीं है न गुप्त रूप से ही पाया जाता है। अतः कुछ कमजोरी पाई जाती है।

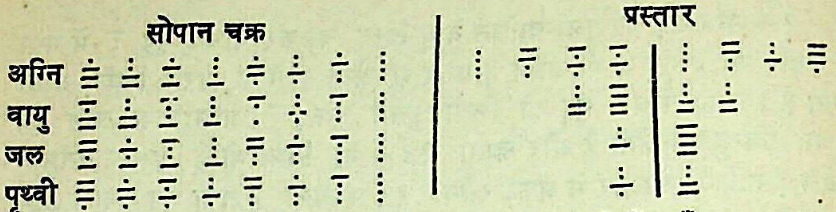
अस्तु, फल होता है कि पृच्छक को प्रसन्नता प्राप्त होगी मगर चिन्ता व्यथा भी साथ में रहेगी क्योंकि विन्दु पूरी ताकत नहीं रखता है।

(४) मेरा स्वास्थ्य कैसा रहेगा ?

विचारणीय गृह १, ५, ९, ६, ८, ११, हैं

गुप्तोद्घाटन चक्र





प्रस्तार का तुलागृही वायु विन्दु अष्टम भाव शत्रुक्षेत्री में पहुँचा। यह रूप निर्बल तथा अप्रामाणिक है अतः ⋮ को ही प्रामाणिक माना गया। यही लग्न विन्दु है। इसका वर्तमान वायु विन्दु का सोपान चक्र रूप ⋮ है यह रूप ⋮ प्रस्तार में प्रकट या गुप्त कहीं भी नहीं है। यह बड़ी कमजोरी है। यह अबदह पंक्ति का छठा रूप है। छठे गृह प्रस्तार में रूप ⋮ है। अस्तु ⋮ और ⋮ के गुण से रूप ⋮ आता है। वायु विन्दु मिट गया यह मृतक रूप में हो गया।

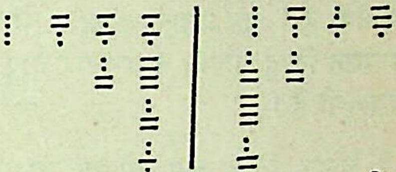
प्रस्तुत प्रश्न का सम्वन्ध स्वास्थ्य से है। स्वास्थ्य का सम्बन्ध निरोगता और अस्वस्थता (रोग) से है। अतः यह दोनों पक्ष प्रश्न के विचारणीय हैं।

१, ५, ९ गृह स्वाथ्य विचार के सोपान क्रम के हैं। प्रथम लग्न विन्दु ⋮ वायु है जो नवें में मित्रक्षेत्री, दसवें गृह में स्वक्षेत्री, १२ वें में शत्रुक्षेत्री, १४वें में स्वक्षेत्री तथा १५वें में समक्षेत्री हैं। इसका वर्तमान काल वायु का विन्दु ⋮ है जो गुप्त या प्रकट प्रस्तार में मौजुद नहीं है। यह ⋮ स्वयं लग्न विन्दु है। अतः दृष्टि का प्रश्न नहीं। वर्तमान के अभाव में एक स्थल १५ वाँ समक्षेत्री है, अतः पुनरुक्ति से यह विन्दु ५० प्रतिशत बली है।

पाँचवाँ विन्दु वायु का ⋮ है। यह दूसरे तथा सोलवें में स्वक्षेत्री तथा शत्रुक्षत्री (सम बली) है। गुप्त रूप से यह विन्दु खाना ४ में शत्रुक्षेत्री, खाना ७ में सम, ११ में सम और १६ में शत्रुक्षत्री है। ८ वीं दृष्टि से यह प्रथम ⋮ को देखता है अत ४० प्रतिशत बली है।

नवाँ विन्दु जल सोपान का ⋮ है। यह प्रस्तार में न तो प्रकट रूप में है और न गुप्त रूप से पाया जाता है। इसके वर्तमान को देखने की आवश्यकता नहीं। यह पक्ष कमजोर रहा है। ६, ८, १२ विन्दु से रोग का विचार किया जाता है। अस्तु, सोपान चक्र में छठा विन्दु रूप ⋮ है। यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है तथा

गुप्त रूप से भी नहीं पाया जाता है। प्रस्तार में छठे गृह में रूप है। इसका गुणन-फल (×) होता है। अतः वायु विन्दु मृतक रूप हो जाता है। यह शुभ चिह्न है। इसका आठवां विन्दु वायु है जो प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है बल्कि सम है।



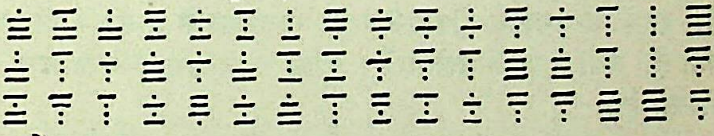
१२ वां विन्दु सोपाण क्रमानुसार जल का है। यह प्रस्तार में खाना ३ तथा ७ में स्वक्षेत्री बलवान् होकर बैठा है। यह दाखिल गृह कहलाते हैं। प्रश्न में रोग हटाने से लाभ माना जाता है। यह तो स्थायी करता है। यह ७० प्रतिशत बली है अत अशुभ है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि वर्तमान काल में पृच्छक का जैसा स्वास्थ्य (खराब) है, अभी उससे अधिक खराब होने की सम्भावना है। १२वें विन्दु का बली ७० प्रतिशत होना तथा ९वे का ४० प्रतिशत होना बीमारी को बढ़ाने का चिह्न है। शान्ति कराना जरूरी हो गया।

(५) मेरे मान, प्रतिष्ठा, व्यापारादि में तथा आय में किसी प्रकार से न्यूनता तो न होगी ?

विचाणीय गृह – १, ४, १३, १४ (लग्न, सुख, लग्न का साक्षी गृह तथा धर्माधर्म का साक्षी गृह)।

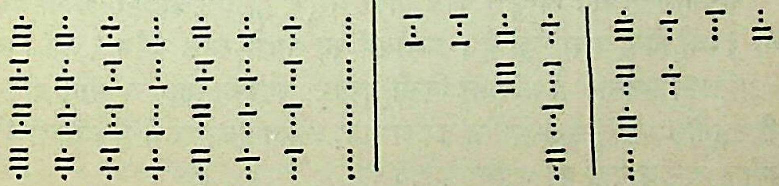
गुप्तोद्घाटन

अवदहपंक्ति / प्रस्तारकेगृह / गुणनफल



सोपान चक्र | प्रस्तार

अग्नि / वायु / जल / पृथ्वी



तुला-चालित विन्दु वायु का चलकर छठे गृह ⁝ में विश्राम पाकर पुनः बायीं ओर उसी क्रम से चल कर खाना ८ में विश्राम पाता है। चूँकि आठवां शत्रुक्षेत्री होता है, सातवाँ समक्षेत्री होता है और छठा ⁝ स्वक्षेत्री बलवान् है। अस्तु, छठें गृह को लग्न प्रमाणित किया। यही सर्वं प्रथम विचारणीय भी है। स्वक्षेत्री है। यह प्रसार खाना १ में मित्रक्षेत्री और पुनरुक्त होकर बैठा है। वर्तमान विन्दु सोपान चक्रानुसार वायु ⁝ है यह सातवें में सम तथा आठवें में शत्रुक्षेत्री है।

चौथा विन्दु वायु सोपान का ⁝ है। यह प्रस्तार में तो प्रकट रूप है और न गुप्त रूप है क्योंकि इसका वर्तमान रूप ⁝ प्रस्तार में न तो प्रकट पाया जाता है न गुप्त से है।

तेरहवाँ विन्दु जल तत्त्व का रूप ⁝ है। यह खाना १० में समक्षेत्री, सोलहवें में मित्रक्षेत्री, दूसरे गृह में गुप्त रूप से समक्षेत्री तथा तेरहवें में शत्रुक्षेत्री है। एवं १६वें में फिर पुनः मित्रक्षेत्री गुप्त रूप से बैठा। इसका वर्तमान विन्दु जल ⁝ प्रस्तार में तीसरे में स्वक्षेत्री तथा पाँचवें और नवें में शत्रुक्षेत्री होकर बैठा है। गुप्त रूप से कहीं नहीं पाया जाता है। आठवीं तथा सातवीं दृष्टि भी अशुभ है, अतः ४० फी सदी बल मिलता है।

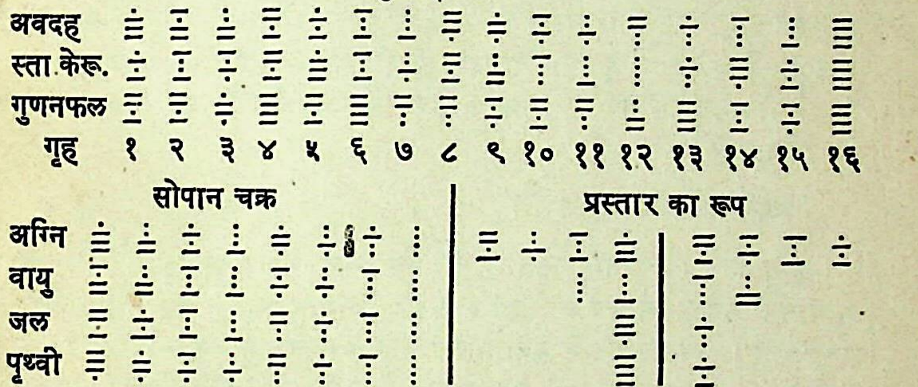
चौदहवाँ विन्दु जल का रूप ⁝ है, यह ऊपर की पंक्तियों में बता दिया गया है। इसका वर्तमान रूप जल ⁝ है जो प्रस्तार में दूसरे में समक्षेत्री होता है, ११वें में समक्षेत्री होकर बैठा है, गुप्त रूप से तीसरे में भी स्वक्षेत्री होकर बैठा है, तथा ८ वें मित्रक्षेत्री है। दृष्टि ९ की शुभ है अतः बल ६० प्रतिशत मिलता है।

परिणाम—चौथे विन्दु से काम होना अशुभ है, मान प्रतिष्ठा का पहला विन्दु तथा १३वाँ विन्दु बचा रहा है। धर्माधर्म का साक्षी रमल दर्पण १४वाँ विन्दु भी ६० प्रतिशत वर्तमान है। अस्तु किसी प्रकार रगड़-झगड़ कर मान प्रतिष्ठा तो बनी रहेगी। परन्तु सुख-शान्ति का अभाव, व्यापार-आमदनी में न्यूनता रहेगी। उपर्युक्त खराब गृहों की शान्ति करायें।

(६) क्या अचल सम्पति, पैतृक सम्पत्ति, स्थायी कोष वसाहों में लाभ अथवा लाटरी की प्राप्ति होगी ?

विचारणीय गृह लग्न विन्दु, चौथा तथा आठवाँ पैतृक सम्पत्ति व अन्य सम्पत्ति में प्राप्त हैं।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-गृही दूसरा विन्दु प्रस्तार के चौथे गृह में रुका है। क्योंकि अप्रामाणिक होने पर भी मित्रक्षेत्री है अतः बलबान् है। इसका वर्तमान विन्दु जल का रूप खाना १ में शत्रुक्षेत्री तथा १५ में स्वक्षेत्री है। मध्यम बल रहता है। लग्न विन्दु गुप्त रूप से खाना १ में स्वक्षेत्री है तथा ५ में शत्रुक्षेत्री तथा १० में समक्षेत्री है। लग्न से आठवें गृह में पुनरुक्त स्वक्षेत्री है।

लग्न विन्दु तथा वर्तमान विन्दु की परस्पर ४–८ अशुभ दृष्टि है। अतः विन्दु की शक्ति ४० प्रतिशत है।

४-८ गृह बली विन्दुयुक्त हैं और लग्न अष्टम विन्दु भी बली है। अतः सम्पत्ति तो प्राप्त होगी परन्तु उसके लिये उद्योग प्रश्नकर्ता को स्वयं करना पड़ेगा क्योंकि वर्तमान विन्दु प्रस्तार का शत्रुक्षेत्री है।

लाटरी या सट्टा में विजय पाने के लिये रमलज्ञ को दो बातों का ध्यान रखना चाहिये—१, ११, १४ प्रश्नकर्ता को तरफ तथा ४, ५, ७ विपक्षी को तरफ के विन्दु मानकर उनके बलावल से उत्तर देना चाहिये। देखिये प्रस्तार।

प्रथम गृह लग्न ⁝ मित्रक्षेत्री ४ व ८ में है। वर्तमान खाना १ शत्रु-क्षेत्री तथा खाना १५ स्वक्षेत्री और ११ वाँ विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है। यह प्रस्तार में प्रकट रूप में नहीं है पर गुप्तरूप से खाना ३ स्वक्षेत्री है, इसका वर्तमान रूप ⁝ प्रकट है। खाना ३ मित्रक्षेत्रो तथा गुप्त रूप खाना ९ समक्षेत्री और १५ में भित्रक्षेत्री है। १४ वाँ बिन्दु पृथ्वी का ⁝ रूप है यह प्रकट प्रस्तार में नहीं है मगर गुप्त रूप से खाना ७,८ ११ में भित्रक्षेत्री है अतः ५० प्रतिशत वल मिलता है।

विपक्षी के रूप ४, ५, ७ हैं।

लग्न का चौथा बिन्दु रूप ⁝ है यह प्रकट रूप में खाना ११ स्वक्षेत्री बलवान है मगर गुप्त रूप से कहीं नहीं है। वर्तमान रूप ⁝ का पाँचवाँ बिन्दु रूप ⁝ है। यव प्रस्तार में कहीं मौजूद नहीं है मगर गुप्त रूप से ७, ८, ११ में बलवान् है। सातवाँ विन्दु ⁝ यह प्रस्तार में दसवें गृह में समक्षेत्री है। गुप्त रूप से है नहीं। इसका वर्तमान रूप ⁝ प्रस्तार में बारहवाँ मित्रक्षेत्री बलवान् है।

अस्तु, विपक्षी रूप भी बलवान् हैं। अस्तु, फल यही होता है कि लाटरी या सट्टा नहीं मिलेगा जब १, ११, १४ प्रत्येक भाँति से पूर्ण बलवान् हों। और विपक्षी के रूप ४, ५, ७ प्रत्येक भाँति से निर्बल हो तभी विजय प्राप्त होती है।

(७) भाग्य इस समय किस ग्रह के कारण शिथिल है अथवा व्यापार क्यों मन्दा है और किस प्रकार लाभ होगा ?

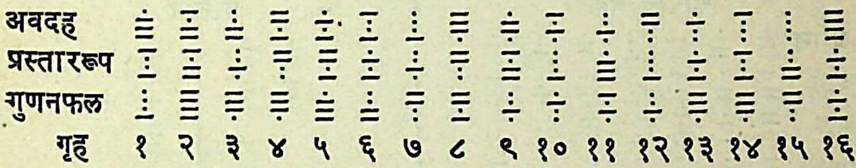
उत्तर में इसी प्रकार नियत करके प्रस्तार बनायें। फिर तुला-चलित बिन्दु प्रस्तार में जहाँ विश्राम पावे उसी को लग्न मान लें। तत्त्व सोपान में उसके वर्तमान क़ाल की दशा जानें तथा उसकी दशा में अन्तर्दशा जानने के लिये

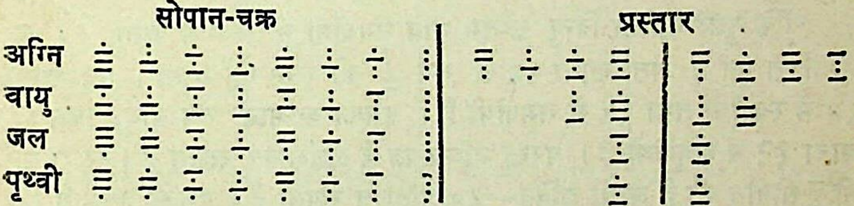
उसी का वर्तमान कालिक विन्दु ले लेवें। जिस रूप का जो ग्रह होगा वही दशा तथा अन्तर्दशा चलती है। यह आचार्यं सुर्खाव का मत है।

किन्हीं आचार्यों का मत है कि लग्न को वर्तमान दशा न माननी चाहिये क्योंकि ग्रह पञ्चम दृष्टि से प्रभाव डालता है। अतः लग्न से पञ्चम विन्दु का रूप जिस गृह से सम्बन्धित होगा उसी की वर्तमान दशा जानें तथा उस रूप का पर्तमान जो रूप हो वही ग्रन्तर्दशा जानें। यही हमारा भी मत है।

(८) आजकल भाग्य कैसा है ?

गुप्तोद्घाटन



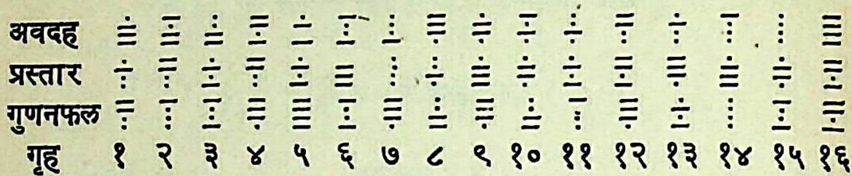


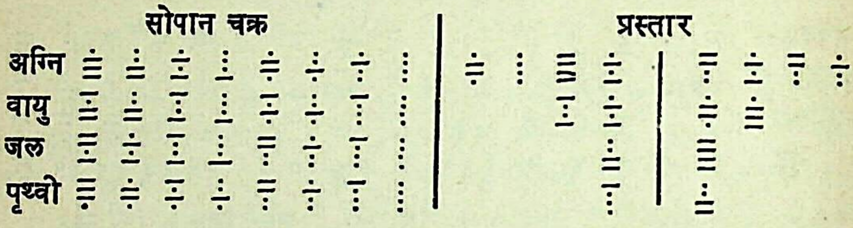
इस प्रस्तार में तुला-चालित विन्दु सप्तम गृह में समक्षेत्र में विश्राम पाता है। इसी को लग्न विन्दु माना। इसका वर्तमानकाल वायु सोपान द्वारा रूप को पाया। यह प्रस्तार में गुप्त या प्रकट रूप से कहीं भी नहीं है। अतः भाग्य उन्नति के लिये बिल्कुल बन्द है। यह चौदहवें गृह का मालिक है अतः १४ वें गृह में वैठे रूपों से गुणा किया तो रूप आया। वायु विन्दु भी मृतक रूप बन गया। अता प्रत्येक प्रकार से भाग्य खराब कहा जायगा।

(९) मैं जो कार्य करना चाहता हूँ उसका परिणाम कैसा रहेगा ?

विचारणीय गृह १, २ तथा १३ हैं।

गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित विन्दु सप्तम भाव समक्षेत्री में विश्राम पाता है। यह प्रमाणित गृह है अतः खाना १५ के रूप को लग्न गृह माना। यह खाना १४ में स्वक्षेत्री तथा १५ में समक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप वायु बोधन खाना १२ में शत्रुक्षेत्री है। परन्तु दृष्टियुक्त है अर्द्धशक्ति रखता है। दूसरा गृह भी सोपान का है आधी शक्ति--५० प्रतिशत रखता है। इसका वर्तमान रूप पात खाना ३, ११, ५ में समक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है और दृष्टि भी शुभ रखता है अतः बलवान् हो रहा है। फिर विन्दु १३ को देखा तो रूप को सोपानचक्र में पाया। यह प्रकट में खाना ४ तथा गुप्तरूप से खाना १ एवं खाना १५ में मित्रक्षेत्री, समक्षेत्री, स्वक्षेत्री तथा बलवान् है, पर इसका वर्तमान रूप शत्रुक्षेत्री होकर खाना १ में बैठा है। दृष्टियुक्त है। यद्यपि जल अग्नि गृह में पूर्ण निर्बल नहीं माना गया है, फिर भी पूर्ण शक्ति नहीं रखता है।

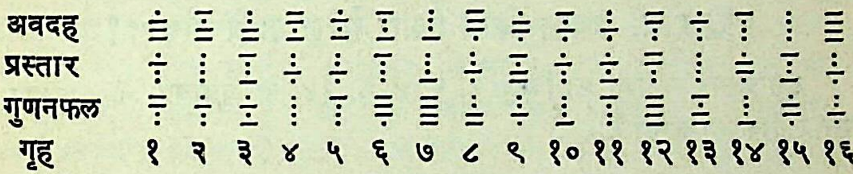
इस ⁝ जल का भविष्य रूप पृथ्वी का ⁝ रूप है। यह उपर्युक्त कथनानुसार तीनों जगह बलवान् है और स्वयं १३ वाँ विन्दु शक्तिशाली है।

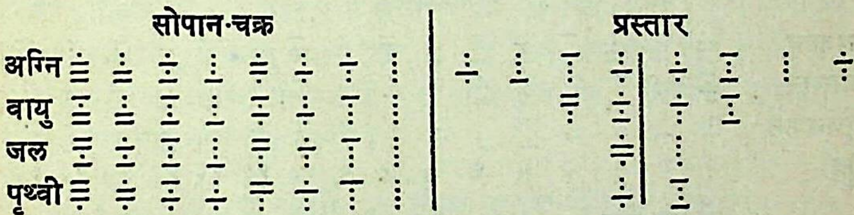
परिणाम यह निकला कि इस समय कुछ लाभ न होगा और हानि होगी परन्तु भविष्य में कुछ कालबाद लाभ होगा—कारण, भविष्य के दोनों गृह खाना १ व १३ बलवान् हैं।

द्वितीय-गृही प्रश्नों का विवरण

प्रश्न—(१) मेरे पास धन बना रहेगा या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन





तुला-चालित ⁝ का जल विन्दु तीसरे गृह में जाकर प्रथम गृह में विश्राम पाता है। तीसरे गृह को इच्छित बलवान् पाकर उसी को लग्न माना। यह ⁝ खाना ३ व १५ में स्वक्षेत्री बलवान् है और वर्तमान इसका जल सोपान क्रम का रूप ⁝ है। यह सप्तम भाव में स्वक्षेत्री बलवान् है और पञ्चम शुभ दृष्टि भी है अतः ७५ प्रतिशत बली है। चौथा बिन्दु जल का रूप ⁝ है। यह प्रथम व १०म में शत्रुक्षेत्री तथा समक्षेत्री है और वर्तमान इसका जल का रूप ⁝ है। यह छठे गृह में समक्षेत्री है। अर्द्धदृष्टि अशुभ भी है अतः पूर्ण बलवान् नहीं है। सोपान का पाँचवाँ विन्दु जल का ⁝ है। यह छठे गृह में समक्षेत्री है।

इसका वर्तमान जल रूप शीतांशु ⁝ १३वें गृह में शत्रुक्षेत्री है और अशुभ दृष्टि से युक्त है अतः निर्बल हो रहा है।

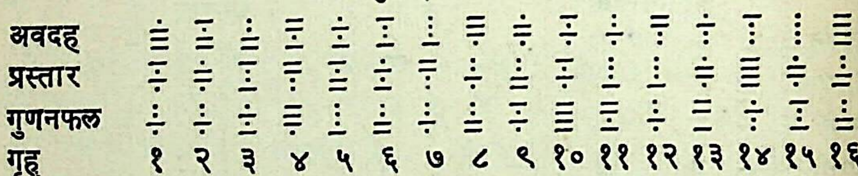
पाँचवाँ विन्दु जल का रूप ⁝ खाना १३ में शत्रुक्षेत्री है और वर्तमान पंचम का रूप ⁝ प्रस्तार में न तो प्रकट रूप है न गुप्त रूप से पाया जाता है। अतः परिणाम निर्बलता का है। अस्तु, कहा जा सकता है कि प्रश्नकर्ता का धन खिसक रहा है अन्य चारों विन्दु किसी प्रकार से बल नहीं पाते हैं।

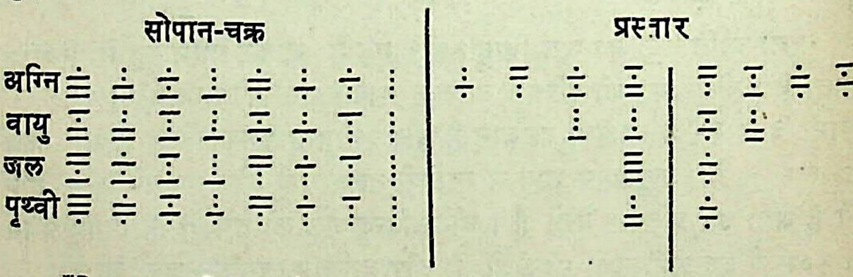
नोट—कोई-कोई आचार्य विन्दु १, ४, ५, ६ को तथा ३, ६, ८, १० को लेकर सबके बलाबल से उत्तर दिया करते हैं।

(२) मेरे व्यापार में लगी पूँजी की वृद्धि होगी वेतन वृद्धि होगी अथवा किसी प्रकार से लाभ होगा क्या?

इस प्रकार के प्रश्न का विन्दु १ २, ४, ६, १४ के बलाबल के अनुसार उत्तर निकाला जाता है।

गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु चौथे गृह ⁝ पर विश्रान्ति पाता है. स्वक्षेत्री तथा बलवान् है और चौथे गृह का बिन्दु भी बना रहता है। वर्त-

मान इसका पृथ्वी ÷ प्रकट अथवा गुप्त कहीं नहीं पाया जाता है। चूंकि यह १३वें गृह का मालिक है अतः प्रस्तार के रूप ≑ में ÷ को गुणा किया तो पृथ्वी विन्दु मृतक होता है। कुछ कमजोरी आ गई। दूसरा विन्दु इसी प्रकार ÷ प्रकट व गुप्त कहीं नहीं है। इसका वर्तमान पृथ्वी ⫶ भी प्रकट में कहीं नहीं पाया जाता है मगर गुप्त रूप से खाना १४ शत्रुक्षेत्री निर्बल मौजूद है और असली विन्दु लापता है। यह निर्बल है। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का रूप ⋮ है यह न तो प्रकट रूप में है न गुप्तरूप से प्रस्तार में मौजूद है। इसका वर्तमान पृथ्वी ≡ प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रूप से चौथे गृह में पाया जाता है। वह स्वक्षेत्री होने के कारण किसी प्रकार बलवान् बना है। लेकिन असली विन्दु है ही नहीं अतः निर्बलता-सूचक है। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का रूप मन्दग है ≑ है। शत्रु-क्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री खाना २, १३, १५ में मध्यम शक्ति रखता है। इसका वर्तमान रूप ÷ खाना १ में समक्षेत्री, खाना १० में शत्रुक्षेत्री, गुप्त रूप से खाना ९ में समक्षेत्री है। अस्तु ३० प्रतिशत बल मिलता है। इसका १४ वाँ विन्दु अग्नि का वाग्मी ≐ है। यह प्रस्तार में गुप्त या प्रकट कहीं नहीं है। इसका वर्तमान रूप ≐ प्रस्तार में खाना ९ में स्वक्षेत्री तथा १६ में समक्षेत्री है, यह बलवान् है। परन्तु असल विन्दु है नहीं, अतः कमजोरी पैदा करता है। नतीजा यह निकला कि प्रारम्भ में कुछ हानि होगी और निरन्तर यही हानि होती रहेगी कुछ आँसू पुछ जायेंगे।

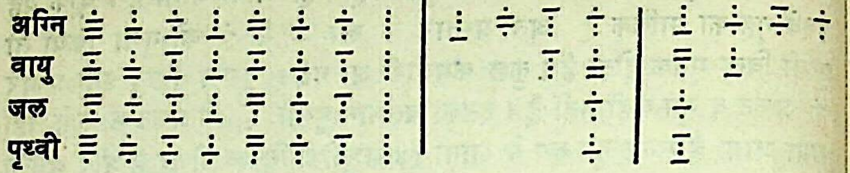
(३) अमुक व्यक्ति को किस उपाय से धन मिलेगा तथा अवनति कब होगी।

विचारणीय गृह २, ४, ६ तथा १४ हैं।

गुप्तोद्घाटन

अवदह	≐	≟	≐	≡	÷	⫟	⊥	≡	÷	≂	÷	≡	÷	⫟	⋮	≣
प्रस्तार	÷	≂	÷	⊥	÷	⫟	≑	⊥	⊥	≡	≐	⫟	÷	÷	⫟	÷
गुणनफल	≑	≡	≡	≐	≡	≡	⫟	⋮	⫟	⫟	≡	≡	⫟	≐	≑	÷
गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

सोपान-चक्र | प्रस्तार



इस प्रस्तार में तुला-चालित जल विन्दु खाना ८ मित्रक्षेत्र में विश्रान्ति पाता है। बायें जाता नहीं, रूप विषम होने से अप्रामाणित अवश्य है मगर मित्रक्षेत्री है अस्तु, इसी को लग्न माना, चूँकि अमुक व्यक्ति का प्रश्न है अस्तु सातवाँ विन्दु जो विपक्षी का होता है उसी को लिया। ७वाँ विन्दु रूप पात है। यह प्रस्तार में न तो प्रकट रूप में है न गुप्त रूप से ही पाया जाता है। परन्तु इसका वर्तमान रूप बोधन ( ) है। यह खाना १५ में स्वक्षेत्री एवं बलवान् है तथा गुप्त रूप से खाना १३ में शत्रुक्षेत्री तथा खाना १० मे समक्षेत्री है। कुछ शक्ति ३० प्रतिशत मिल रही है। विन्दु दूसरा यानी जल का दूसरा जल रूप उपर्युक्त प्रकट खाना १५ तथा गुप्त में खाना १३, १० मौजूद है शत्रुक्षेत्री तथा समक्षेत्री है। इस का वर्तमान रूप सोपान क्रमानुसार वक्र है। यह खाना ४ में मित्रक्षेत्री है तथा ९ में शत्रुक्षेत्री है परन्तु जल विन्दु अग्नि गृह पर शक्तिशाली पाया जाता है। अस्तु, शक्ति मिल रही है। इसका छठाँ विन्दु शीतांशु प्रस्तार में प्रकट रूप से नहीं मगर गुप्त रूप से ८वें गृह में पाया जाता है। मित्रक्षेत्री है और वर्तमान रूप सौरि प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं है मगर गुप्त रूप से खाना २ शत्रुक्षेत्री, ३ मित्रक्षेत्री, ५ समक्षेत्री, ६ शत्रुक्षेत्री में ११ व १२ मित्रक्षेत्र तथा स्वक्षेत्र में तथा शुभ दृष्टियुक्त पाते हैं भीतरी शक्ति मिल रही है और दोनों विन्दु २, ६ समरूप के नाते शुभ पाते हैं चूँकि सातवाँ विन्दु प्रकट में है नहीं यह कुछ कमजोरी उत्पन्न करता है।

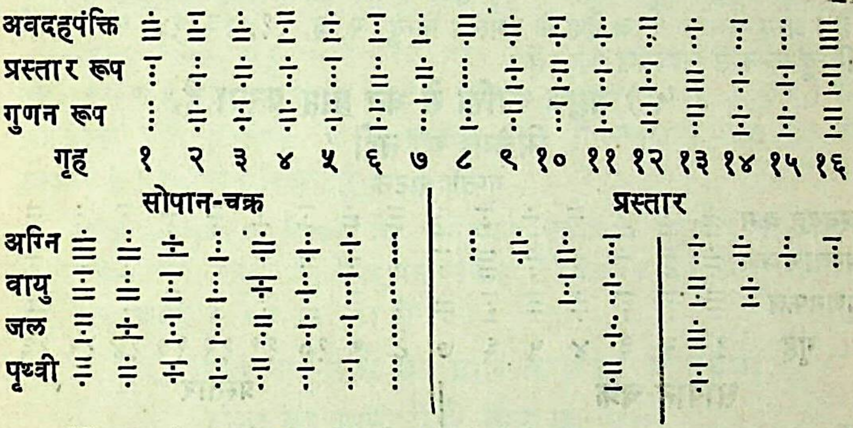
अस्तु, परिणाम यह होता है कि अमुक व्यक्ति के मालधन की क्षति न होगी। ज्योतिषाचार्य सुर्खाव ने इस प्रश्न में विन्दु २ व ८ लिया है जो सम्बन्ध रखता है अमुक व्यक्ति विपक्षी का है लेकिन गुजरातनिवासी रमलाचार्य सलीम का

कथन है कि सप्तम विन्दु को लग्न मानकर उससे २, ४, ६, १४ विन्दुओं के बलाबल से रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार परिणाम कहना चाहिये।

(४) अमुक व्यक्ति धनी है या धनहीन ?

विचारणीय गृह —विश्राम गृह का सातवाँ विन्दु लग्न का मानकर लग्न से २, ३, ११, १३, १४ विन्दुओं के बलाबल के अनुसार परिणाम निकालना चाहिये।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना में जाकर दाहिनी ओर प्रथम गृह में विश्रान्ति पाता है। इससे तृतीय गृह-रूप बलवान् मित्रक्षेत्री होने के कारण इसी को माना। चूँकि प्रश्न अमुक व्यक्ति का है, अतः विपक्षी सप्तम विन्दु को लग्न का विन्दु लिया। लग्न को शीतांशु ⋮ पाया। यह ८वें गृह में स्वक्षेत्री तथा बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु ☰ है, जो प्रस्तार में प्रकट अथवा गुप्त कहीं नहीं है, अतः निर्बलता का सूचक है। इसका दूसरा विन्दु भी ☰ प्रकट या गुप्त नहीं है, परन्तु इसका वर्तमान पृथ्वी ÷ तीसरे तथा सातवें गृह में मित्रक्षेत्री और बलयुक्त है। चूँकि असली है नहीं, वर्तमान विन्दु है, अतः असली शक्ति नहीं है। इसका तीसरा विन्दु अग्नि ≐ का खाना १३ में

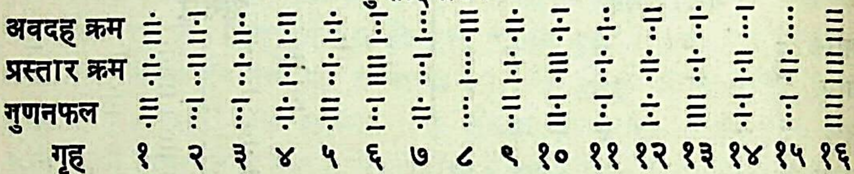
स्वक्षेत्री होने से बलवान् है। इसका वर्तमान रूप ⁝ खाना ६ में मित्रक्षेत्री है और अर्द्धशत्रुदृष्टि से युक्त है, अतः कुछ बल पाता है। इसका ११वाँ विन्दु वायु का ⁝ है जो खाना ८ में शत्रुक्षेत्री है। इसका वर्तमान वायु ⁝ है जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। यह निर्बलता का सूचक है।

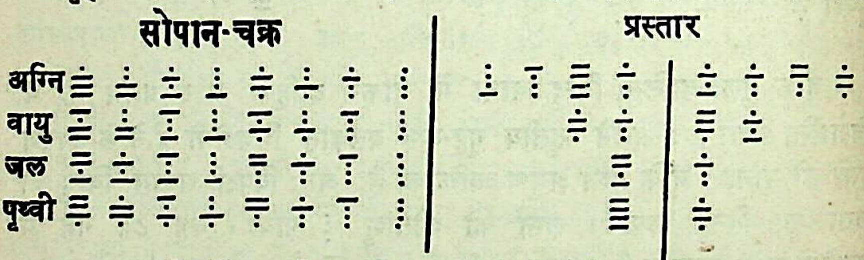
अस्तु, परिणाम यह निकला कि जिस व्यक्ति के विषय में पूछा गया है, वह साधारण श्रेणी का व्यक्ति—निर्धन है। कारण, तीनों विन्दु लग्न-गृह सहित निर्बल हैं। केवल एक विन्दु को शक्ति प्राप्त है।

रमलाचार्य सुर्खाव ने इस मामले में विन्दु प्रथम का सातवाँ लग्नगृह मान लिया है। उसका दूसरा विन्दु माल का है और ११वाँ विन्दु लाभ का है। अन्य अर्थात् अरब देश के रमलज्ञ विन्दु २, ३, ११, १३, १४ को सातवें विन्दु लग्न से फलादेश कहते हैं।

(५) अमुक व्यक्ति से धन प्राप्त करना है, मिलेगा या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन





इस प्रकार से विचारणीय गृह १, २, ८, १४ हैं। चूंकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु खाना ३ में विश्राम पाकर पुनः दाहिनी ओर चलकर खाना १ में समक्षेत्री होकर विश्राम पाता है। यही लग्न-गृह है। इस मंदग रूप का पुनरुक्त खाना १२ तथा खाना १५ में स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। इसका

वर्तमान रूप तीक्ष्णांशु ≑ है। यह प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं है। मगर गुप्त रूप से १४वें गृह में शत्रुक्षेत्री है और अर्द्ध दृष्टि (४) रखता है। बल कम-जोर पड़ रहा है।

दूसरा विन्दु रूप ≑ है, जो गुप्त रूप से शत्रुक्षेत्री खाना १४ में निर्बल है। इसका वर्तमान रूप दैत्यगुरु ÷ है, जो प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। अतः निर्बल हो रहा है। इसका आठवाँ विन्दु ≡ है, जो खाना १० में शत्रुक्षेत्री है और गुप्त रूप से खाना १, ५ में समक्षेत्री होकर बैठा है। इसका वर्तमान रूप ≑ खाना १, १२, १५ में समक्षेत्री, स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री बली है और शुभ दृष्टि से युक्त भी है, अतः ५० प्रतिशत बल मिल रहा है।

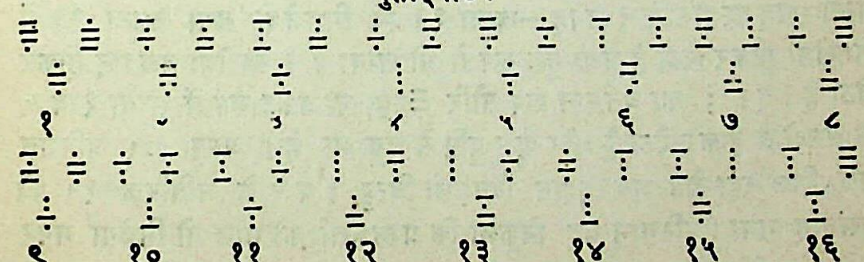
इसका १४वाँ विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप ÷ है, जो प्रस्तार में न तो प्रकट रूप में है और न गुप्त रूप से ही। इसका वर्तमान रूप ÷ (आर) है, जो खाना ३ में शत्रुक्षेत्री, ५ में स्वक्षेत्री, ११ में शत्रुक्षेत्री तथा १३ में स्वक्षेत्री है। कुछ बल मिलता है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि इस समय प्रश्नकर्ता महाशय की आशा बकरी के गले में उत्पन्न थन के समान व्यर्थ ही है। क्योंकि कोई विन्दु बलवान् नहीं पाया जाता है, अतः निराशा ही होगी।

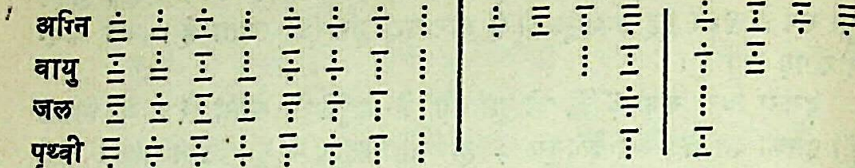
(६) अमुक व्यक्ति से धन प्राप्ति के विषय में झगड़ा होगा या आसानी से मिल जायगा ?

विचारणीय गृह—१, २, १५ हैं।

गुप्तोद्घाटन



सोपान-चक्र | प्रस्तार



अवदह क्रमानुसार प्रस्तार के रूपों को गुणा करके गुप्त रूप गृह इसी प्रकार से निकाले गये हैं।

चूँकि तुला-चालित विन्दु जल का खाना ३ स्वक्षेत्री होकर विश्रान्ति पाता है। इसका पुनरुक्त रूप ⁝ खाना ११ तथा १५ में स्वक्षेत्री बलवान् होकर बैठा है। इसका वर्तमान रूप ⁝ (वक्र) प्रकट में तो कहीं है नहीं, मगर गुप्त रूप से १०वें गृह में तथा १४ वें गृह में समक्षेत्री होकर बैठा है। यह ⁝ अशुभ दृष्टि से युक्त है, अतः ५० प्रतिशत बल मिल रहा है।

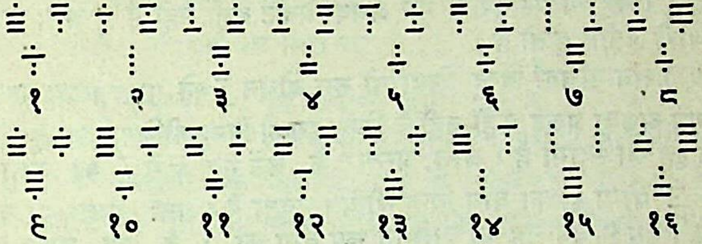
(२) इसका दूसरा विन्दु ⁝ गुप्त रूप से १० तथा १४ में समक्षेत्री होकर बैठा है। इसका वर्तमान रूप ⁝ प्रस्तार में न तो प्रकट है और न गुप्त है। यह १५वें गृह का स्वामी है। अस्तु, प्रस्तार के रूप १२ ⁝ को ⁝ से गुणा किया तो ⁝ रूप आया। जल विन्दु मृत्यु अवस्था को प्राप्त हो गया, अतः निर्बल हो रहा है।

(१५) अब १५वें विन्दु को लिया तो पृथ्वी तत्त्व का रूप शीतांशु (⁝) पाया। यह प्रस्तार में २ जगह—खाना १२ में मित्रक्षेत्री तथा खाना १३ में समक्षेत्री होकर बैठा है तथा गुप्त रूप से भी खाना ४ में स्वक्षेत्री बलवान् होकर बैठा है। इस ⁝ का वर्तमान रूप सौरि ⁝ है, जो प्रकट रूप में खाना १ व ५ में समक्षेत्री होकर बैठा है और शुभ दृष्टि से युक्त भी है। अस्तु, ७५ प्रतिशत बल मिल रहा है। अब ध्यान दिया तो विन्दु १ व २ के अतिरिक्त १५ को बलवान् पाया। परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्त्ता को माल तो मिलेगा मगर टिकेगा नहीं।

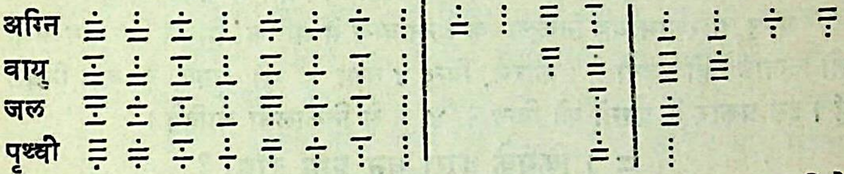
(७) मेरे भाग्य में धन-प्राप्ति का योग है या नहीं ?

विचारणीय गृह १, २, ४, ५ हैं।

गुप्तोद्घाटन चक्र



सोपान-चक्र | प्रस्तार



यह अवदह क्रम के रूप को प्रस्तार के रूप से गुणा करके गुप्त रूप लिये गये है।

चूंकि तुला-चालित वायु विन्दु पंचम गृह में विश्राम कर पुनः दाहिनी ओर चल कर खाना ३ में विश्रान्ति पाता है। इन तीनों स्थानों में हम पंचम गृह को मित्रक्षेत्री नाते से तगड़ा पाते हैं, अतः लग्नविन्दु पंचम गृह को माना। इसका वर्तमान रूप वायु शीतांशु है, जो खाना ७ और १५ में समक्षेत्री होकर बैठा है तथा गुप्त रूप से खाना २ तथा १४ में स्वक्षेत्री बलवान् होकर ५० प्रतिशत बल पाता है। शुभ दृष्टि से युक्त भी है। अतः कहा गया कि प्रश्नकर्त्ता का भाग्य सन्तोषजनक है।

(२) अब दूसरा विन्दु वायु का है, जो उपर्युक्त लिखित के अनुसार ५० प्रतिशत बल रखता है। इसका वर्तमान रूप वायु लोहित खाना ११ जल में समक्षेत्री होकर बैठा है और शुभ दृष्टि से युक्त भी है। यह भी लक्षण बलवान् बनने के हैं।

(४) अब विन्दु ४ को ढूँढा तो [illegible] को पाया। यह प्रस्तार में खाना १६ में शत्रुक्षेत्री तथा निर्बल होकर बैठा है। गुप्त रूप से भी खाना ४ शत्रुक्षेत्री होकर निर्बल हो रहा है। अस्तु, चौथा विन्दु कमजोर पाया। इसका वर्तमान रूप [illegible] है। यह भी प्रस्तार में गुप्त अथवा प्रकट कहीं नहीं है। अतः परिणाम में कमजोरी प्रतीत होती है।

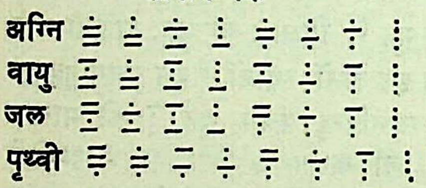
(५) अब पाँचवाँ विन्दु लिया तो रूप बोधन [illegible] को पाया। यह प्रस्तार में यद्यपि गुप्त अथवा प्रकट कहीं नहीं है किन्तु इसका विन्दु जीवित रहता है। कारण, यह छठे गृह का स्वामी है। अस्तु, प्रस्तार के छठें गृह [illegible] से [illegible] को गुणा किया तो रूप [illegible] पाया इसका वायु विन्दु जीवित रहता है। अतः आशा या सन्तोष-जनक है। इस पाँचवें गृह का वर्तमान रूप वायु का [illegible] है, जो खाना ३ व ४ में समक्षेत्री तथा शत्रुक्षेत्री होकर बैठा है, अतः परिणाम में कमजोरी है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि अन्न-वस्त्र से अधिक मिलने का ढंग अभी तो दिखाई नहीं पड़ता है। कारण, विन्दु ४ तथा ५ जो मुख्य हैं वह निर्बल हैं। इस प्रकार के प्रश्नों को विन्दु २, ४, ५ से निकालना चाहिये।

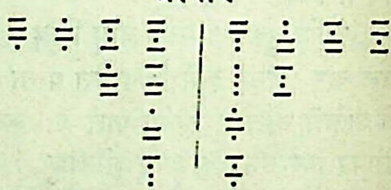
(८) किसके द्वारा धन प्राप्त होगा ?

विचारणीय गृह १, २ हैं।

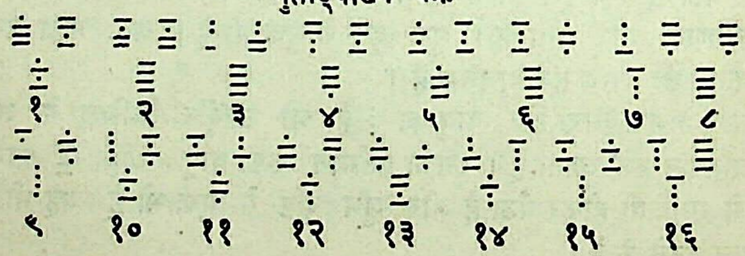
सोपान-चक्र



प्रस्तार



गुप्तोद्घाटन चक्र

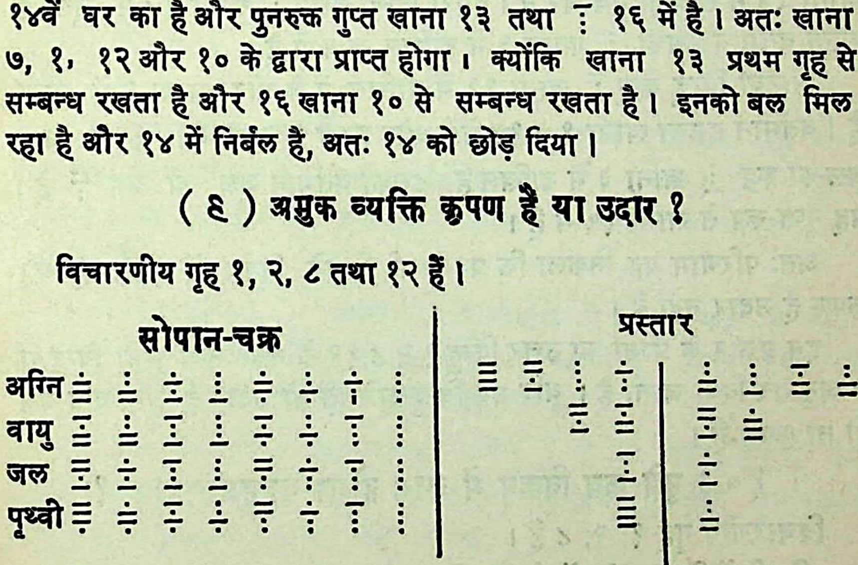


चूकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु खाना ४ में स्वक्षेत्री होकर विश्राम पाता है। विन्दु लग्न बलवान् है। इसका वर्तमान रूप ÷ प्रकट रूप में तो प्रस्तार में पाया नहीं जाता है मगर गुप्त रूप से खाना १२ में स्वक्षेत्री होकर बैठा है तथा १४वें गृह में शत्रुक्षेत्री होकर बैठा है। दोनों जगह अर्द्ध-दृष्टियुक्त तथा पूर्ण-दृष्टयुक्त है, अतः विन्दु को ५० प्रतिशत बल मिल रहा है।

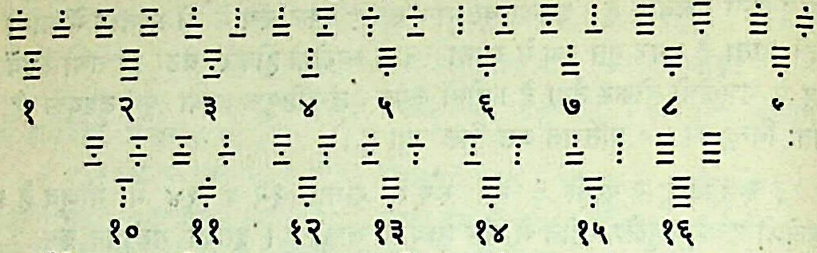
(२) विन्दु २ पृथ्वी ÷ गुप्त रूप से खाना १२ व १४ में मौजूद है। स्वक्षेत्री तथा शत्रुक्षेत्री होने से सम भाव में रहता है। इसका वर्तमान रूप ⁝ पृथ्वी खाना १६ स्वक्षेत्री होकर बल पा रहा है, अर्द्ध-दृष्टियुक्त तथा पूर्ण है। अतः शक्तिशाली बन रहा है। प्रमाण मिलता है कि प्रश्नकर्ता को धन प्राप्ति का योग है। अब यह ज्ञात करना है कि किसके द्वारा प्राप्त होगा ? दूसरे विन्दु को तथा उसके वर्तमान को देखा तो विन्दु खास खाना १६ में बलवान् पाया और गुप्त रूप से सातवें तथा १६वें में मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री पाते हैं। अतः परिणाम यह निकला कि दूसरा विन्दु ÷ १३वें घर का है, वर्तमान १४वें घर का है और पुनरुक्त गुप्त खाना १३ तथा ⁝ १६ में है। अतः खाना ७, १, १२ और १० के द्वारा प्राप्त होगा। क्योंकि खाना १३ प्रथम गृह से सम्बन्ध रखता है और १६ खाना १० से सम्बन्ध रखता है। इनको बल मिल रहा है और १४ में निर्बल है, अतः १४ को छोड़ दिया।

(६) अमुक व्यक्ति कृपण है या उदार ?

विचारणीय गृह १, २, ८ तथा १२ हैं।



गुप्तोद्घाटन चक्र



चूँकि तुला-चालित वायु तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ६ शीतांशु में, स्वक्षेत्र में विश्राम पाता है। चूँकि यह अप्रामाणिक है अतः खाना १५ को लग्न विन्दु माना। यह खाना १ में मित्रक्षेत्री है तथा खाना ४ में शत्रु क्षेत्री है। यह लग्न का रूप खाना १५ में दाखिल तो है पर वायु-विन्दु चर है। इसी प्रकार चौथे गृह में पृथ्वी तत्त्व में स्थिर तो है पर विन्दु चर है। खाना १ में रूप खारिज और विन्दु चर है। इसका वर्तमान रूप वायु खाना १४ में स्वक्षेत्री एवं चर है। दूसरा विन्दु वायु खाना १४ में खुला है परन्तु वर्तमान इसका खाना ३ में दाखिल तत्त्व में है।

आठवाँ विन्दु वायु खाना ११ में दाखिल में है और खाना २ में खुला है। वर्तमान इसका खाना १,४,१४ में है और प्रथम में खुला है। १२वाँ बिन्दु जल का रूप खाना ३ में दाखिल है। इसका वर्तमान जल का रूप है। यह गुप्त रूप से खाना १५ में है।

अतः परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता जिसके विषय में पूछता है वह कृपण है उदार नहीं है।

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर विन्दु १,२,८.१२ के बँधे तथा खुले बिन्दुओं के अनुसार दिया जाता है। यदि यह विन्दु खुले हों तो उदार है और यदि बँधे हो तो कृपण है।

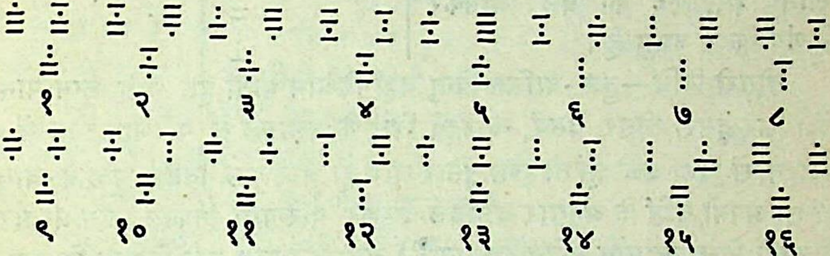
(१०) मुझे क्रय-विक्रय में लाभ होगा या हानि होगी ?

विचारणीय गृह १, २, ८ हैं।

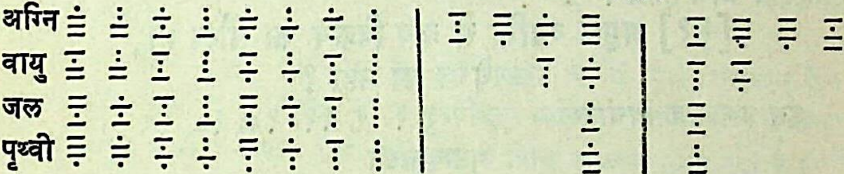
यदि तीनों विन्दु बली हों तो क्रय-विक्रय में लाभदायक होंगे। यदि निर्बल

हों तो हानिकारक समझें। यदि दूसरा विन्दु बलवान् हो और आठवाँ निर्बल हो तो खरीद शुभ हो। यदि इसके विपरीत हटें तो फल भी विपरीत कहें।

गुप्तोद्घाटन



सोपान-चक्र प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु शत्रुक्षेत्री आठवें गृह में रुका है। यही लग्न है अथवा भाग्य का गृह है। इसका वर्तमान रूप ⁝ (वक्र) १४वें गृह में वलवान् होकर गैठा है। और दृष्टि सप्तम रखता है। अस्तु ४० प्रतिशत बल मिल रहा है।

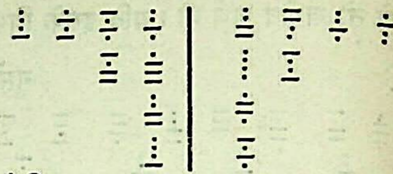
(२) दूसरा विन्दु ⁝ खाना १४ में स्वक्षेत्री है। गुप्त कहीं है नहीं। इसका वर्तमान रूप वायु ⁝ है जो नवें गृह में मित्रक्षेत्री है। मगर १२वीं दृष्टि अशुभ पड़ती है। अतः कुछ बल कमजोर हो गया है।

(८) इसका आठवाँ विन्दु वायु का उष्णगु ⁝ है जो खाना १५ में सम-क्षेत्री है तथा गुप्त रूप से खाना १ व ९ में मित्रक्षेत्री है और शुभ दृष्टि से युक्त है, अतः ५० प्रतिशत बल मिल रहा है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि क्रय-विक्रय दोनों में मध्यम लाभ रहेगा। कारण, दोनों विन्दु २ तथा ८ समान बली हैं।

दूसरी विधि से—खाना १ व १० से क्रय तथा खाना २ व ११ से विक्रय की दशा देखकर तथा खाना १५, १६ का बल जानकर निर्णय किया जाता है ।

प्रस्तार का रूप

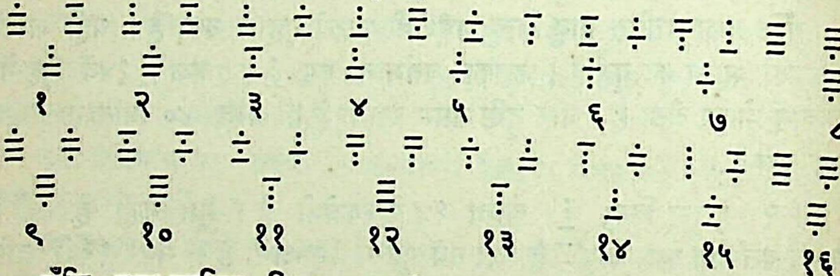


तीसरी विधि—तुला-चालित विन्दु जहाँ विश्राम पाता हो, वही लग्न मान लें। फिर दूसरे, तीसरे, दसवें, ग्यारहवें विन्दु के बलाबल से परिणाम निकालें। यदि चारों विन्दु बली हों तो इच्छानुसार लाभ हो और कुछ निर्बल कुछ बलवान् हों तो अपनी बुद्धि के अनुसार बलाबल देखकर परिणाम निकालें। इस प्रस्तार में चारों विन्दु वर्तमान सहित बलवान् हैं। अतः परिणाम यही निकला कि क्रय-विक्रय में लाभ होगा ।

[११] अमुक व्यक्ति से क्रय-विक्रय का सौदा हो जायेगा या नहीं ?

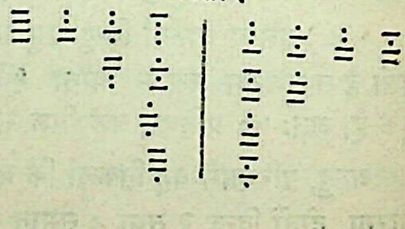
इस प्रकार के विचारणीय गृह विन्दु १, २, ११, १३, १४, १५ हैं।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित विन्दु सप्तम में जाकर पञ्चम भाव में रुकता है। लेकिन ५, ६ दोनों में विषम रूप है अतः खाना ७ का लग्न माना (१) प्रथम विन्दु मित्रक्षेत्री है खाना १२ में स्वक्षेत्री भी है और बल पा रहा है ।

प्रस्तार



इसका वर्तमान विन्दु सोपान-क्रमानुसार पृथ्वी का रूप ⁞ है, जो प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ६ शत्रुक्षेत्री है अतः बल क्षीण पड़ा। ३० प्रतिशत बल प्रथम विन्दु का लिया।

(२) दूसरा विन्दु रूप ⁞ गुप्त रूप से छठे गृह में शत्रुक्षेत्री होकर निर्बल हो रहा है। इसका वर्तमान रूप ⁞ खाना ५ में समक्षेत्री मिला तथा गुप्त रूप से खाना ११ मित्रक्षेत्री मिलता है इसलिये २० प्रतिशत बल मिलता है।

(११) इसका ११वाँ विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप ⁞ है, जो खाना ६ मित्रक्षेत्री में है। इसका वर्तमान रूप ⁞ है जो गुप्त रूप से उसी (६) में बैठा है। मित्रक्षेत्री है. अतः पूर्ण शक्ति पा रहा है।

(१३) इसका १३वाँ विन्दु अग्नि का शीतांशु ⁞ है। यह प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। इसका वर्तमान रूप ⁞ खाना ९ में स्वक्षेत्री कुछ बलवान् है।

(१४) विन्दु १४वाँ अग्नि ⁞ है, जो खाना ९ में पूर्ण बलवान् है। इसका वर्तमान अग्नि ⁞ खाना २ व १३ में मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री है तथा दृष्टि शुभाशुभ दोनों है। अतः दोनों स्थितियों में विन्दु बलवान् मिल रहा है।

(१५) इसका १५वाँ विन्दु अग्नि का ⁞ है। यह खाना २ में मित्रक्षेत्री तथा खाना १३ में स्वक्षेत्री है और बल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप ⁞ खाना ३ व ११ में शत्रुक्षेत्री बैठा है जो निर्बल हो रहा है पर शुभ दृष्टि से युक्त है, अतः १० प्रतिशत बल मिल रहा है।

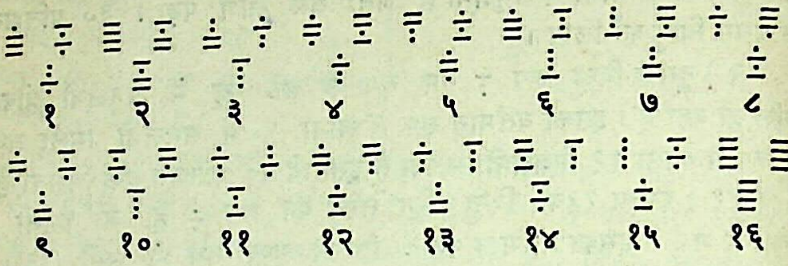
अतः परिणाम यह निकला कि क्रय-विक्रय हो जायेगा। लेकिन कठिनाइयाँ पैदा होंगी और वेचनेवाले को मूल्य भी कुछ कम मिलेगा।

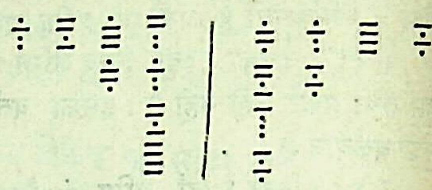
दूसरी विधि—विन्दु २ तथा १४ क्रेता के हैं, १ व १३ विक्रेता के हैं, १५वाँ विन्दु दलाल का है और ११वाँ सौदा का विन्दु है। अब अपनी वुद्धि के अनुसार २, १४ तथा १, १३ के बलाबल के अनुसार परिणाम कहें।

(१२) आजकल क्रय-विक्रय से लाभ होगा वा नहीं ?

इस प्रकार से विचारणीय गृह १ व ११ हैं। दोनों के बलाबल को देख कर फल कहें।

गुप्तोद्घाटन चक्र





तुला-चालित विन्दु खाना १ में पहुँचा, वह पुनरुक्त खाना ९ तथा १५ में है। स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप दैत्यगुरु ÷

प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १ में समक्षेत्री पैदा होता है और मित्रदृष्टि से युक्त है। अस्तु, विन्दु शक्ति पा रहा है।

(११) ग्यारहवाँ विन्दु अग्नि का रूप ⋮ है, यह प्रकट में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ६ में मित्रक्षेत्री होकर बैठा है। दृष्टि नहीं पड़ती है इसका वर्तमान रूप ÷ खाना ४ व १२ में समक्षेत्री है और पूर्ण-दृष्टियुक्त है, मित्रदृष्टि भी है। अस्तु, यह ११वाँ विन्दु बल पा रहा है।

अतः परिणाम यह निकला कि लाभ हो जायेगा मगर रुक कर, क्योंकि लग्न-गृह विन्दु समता में है। कम चालू लाभ होता रहेगा।

(१३) अन्न का क्रय-विक्रय कैसा रहेगा ?

इस प्रकार के प्रश्न में खाना ६ व ११ निर्गम हों तो विक्रय अच्छा हो। यदि विन्दु १ व १३ बली आगम हों तो क्रय करें १५, १६ को तो देखना जरूरी होता ही है।

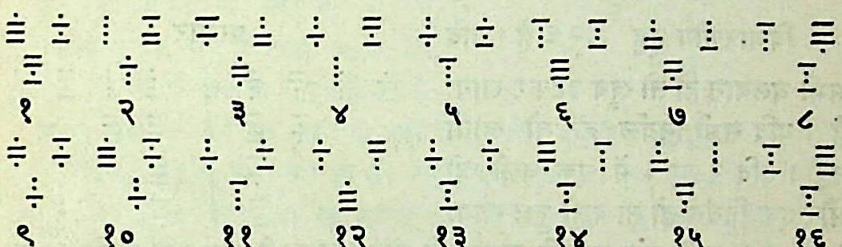
(१४) एक व्यक्ति के साझे में अन्न का व्यापार करना चाहते हैं, अपने नाम से लाभ होगा ? या साझीदार द्वारा लाभ होगा ?

ऐसी दशा में १३वाँ गृह प्रश्नकर्ता का है, २ व १४ साझीदार का है, तथा १५ प्रशनकर्ता का और १६वाँ साझीदार का निर्गम हो चाहे आगम वली श्रेष्ठ है।

(१५) अमुक खाद्य वस्तु या औषधि मेरे लिये हितकर है, या अहितकर है ?

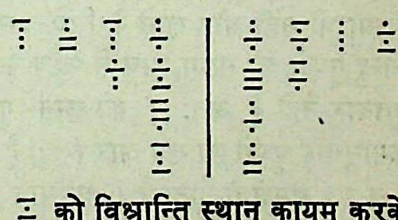
इस प्रकार के विचारणीय गृह विन्दु ६, ८ हैं।
छठा गृह औषधि का है यह कवि ⁝ स्वक्षेत्री है।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु द्वितीय गृह में होकर फिर बाईं तरफ चलकर खाना ८ में विश्रान्ति पाता है। मगर खाना २, ४, ५, ६. ८ के रूप अप्रामाणिक हैं। ⁝ बाईं तरफ अशुभ पड़ता है। अस्तु खाना ३ ⁝ को विश्रान्ति स्थान कायम करके लग्न माना।

प्रस्तार



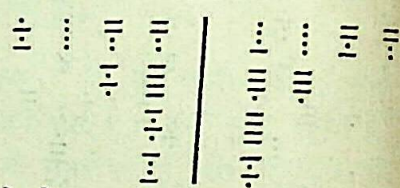
इसका दूसरा विन्दु वायु ÷ है जो ४, ५ तथा खाना १३ में शत्रुक्षेत्री तथा २ जगह मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप कवि ⁝ खाना ६ व ८ में स्वक्षेत्री तथा ८ में शत्रुक्षेत्री है। बैलंस बराबर आता है। अब ध्यान दिया तो वायु विन्दु २ जगह अग्नि में तथा वर्तमान वायु में पाया। शत्रुक्षेत्री को छोड़ दिया तो परिणाम निकला कि रोगी को दवा गर्मतर अनुकूल होगी। इसमें विचारणीय गृह तथा उसके वर्तमान रूप को देखना चाहिये। अग्नि वायु में गर्म तथा जल-पृथ्वी में ठंढी दवा हितकर होगी।

अन्य विधि—गृह ६ औषधि है। यह कवि ⁝ स्वक्षेत्री है। इसे वाग्मी ⁝ मित्रदृष्टि (५) से देखता है तथा शीतांशु ⁝ भी कवि ⁝ को शुभ दृष्टि से देखता है। आठवाँ रूप भी यही कवि ⁝ है। शत्रुक्षेत्री है मंत्री खाना १५ होता है। उसमें उष्णगु ⁝ और राजा १६ गृह होता है। उसमें रूप बोधन ⁝ है। अस्तु वह वस्तु या औषधि कुछ लाभ करेगी।

(१६) आज मैंने कुछ खाया है या नहीं ?

विचारणीय गृह १,२,६ हैं। यदि सभी बलवान् हों तो खूब डटकर खाया है। यदि सभी निर्बल हों तो खाया नहीं। यदि २ या ६ में एक बली हो और एक निर्बल हो तो कहो कुछ खाया है। १,२,६ बली शुभ आगमी या स्थायी हो तो खाया है और यदि निर्गम हों तो नहीं खाया है। यदि दोनों प्रकार के हों तो कम खाया है। सभी क्रूर ही हों तो खाया भी नहीं और खाने के लिये झगड़ा भी हुआ है। चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी का सप्तम भाव में पहुँच कर पंचम भाव में रुकता है। चूँकि ⁝ का एतबार नहीं है, अतः ⁝ को लग्न गृह माना। दूसरा विन्दु इसका सोपान क्रमानुसार पृथ्वी का रूप आर (⁝) है। यह गुप्तोद्घाटन करके देखेंगे तो खाना १ व १३ समक्षेत्री होता है। वर्तमान रूप पृथ्वी कवि ⁝ है। यह प्रस्तार में कहीं नहीं पाया जाता है।

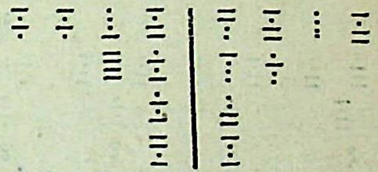
प्रस्तार



इसका छठा विन्दु पृथ्वी का रूप मन्दग है। यह प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ५ में पाया जाता है। यह समक्षेत्री है इसका वर्तमान रूप तीक्ष्णांशु खाना १२, १४ में पाया जाता है। स्वक्षेत्री तथा शत्रुक्षेत्री है, दृष्टियुक्त भी है और नहीं भी है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि रोगी ने कुछ बदपरहेजी की है। कारण, दोनों विन्दु प्रस्तार में नहीं हैं, लेकिन दूसरे से छठा विन्दु कुछ बली है। इससे नतीजा यह निकला कि कुछ खाया है। चूँकि विन्दु है। इसमें विन्दु अग्नि, जल, पृथ्वी हैं। अग्नि सम्बन्ध मिष्ठान्न से है और जल-पृथ्वी का वनस्पति आदि से है। बस कहा गया कि कुछ वस्तु शाक आदि खाया है। कुछ मिष्ठान्न खाया है।

(१७) आज बादल घिरा है, वर्षा होगी या नहीं ?

प्रस्तार



यदि रूप विधु प्रस्तार में जल या पृथ्वो के गृहों में हों। १, ५, ९, १३ गृह अग्नि के और २, ६, १०, १४ वायु के गृह हैं तथा ३, ७, ११, १५ प्रस्तार में जल के गृह कहे गये हैं। अस्तु, रूप जल या पृथ्वी के गृहों में हों और साक्षी उसके इत्यादि के रूप हों अर्थात् जल रूप हो तो वर्षा खूब होगी। इस प्रस्तार में १६वें गृह में है। यह राजा का गृह माना गया है। और यह रूप मन्त्री तथा लग्न के गुणन से बना है। रूप विधु मित्रगृही है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि वर्षा होगी। जल तत्त्व के रूप यदि जल गृहों में प्रस्तार में आवें तो खूब वर्षा होगी। इसके अतिरिक्त यदि १ व १० गृह में आगम रूप अर्थात् दाखिल रूप हों तो भी वर्षा खूब हो। यदि वायु रूप प्रस्तार में अधिक हों अथवा पृथ्वी के रूप अधिक हों तो आकाश में बादलों का झुरमुट रहेगा वर्षा न होगी। यदि अग्नि के रूप अधिक हों तो पूर्ण आकाश निर्मल रहेगा। इस प्रस्तार में २, ४, ९, १५, १६ में जलरूप हैं। और खाना ६, ११, १३ १४ अग्निरूप हैं। इसमें जल रूप ५ स्थान पर हैं मगर अग्नि रूप बलवान्

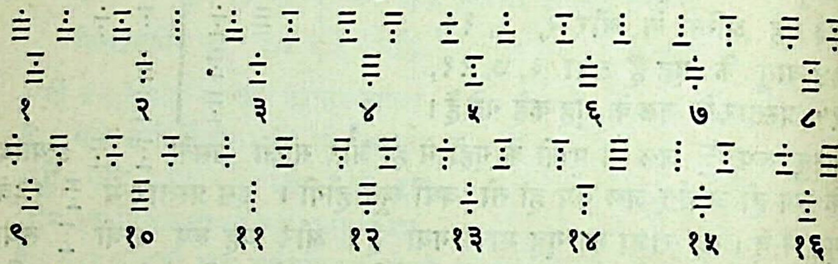
है, और वायु रूप भी बलवान् है और पृथ्वी भी बलवान् हैं, अस्तु परिणाम निकला कभी आकाश पर बादल रहेगा, कभी छोटी बूँदें रहेंगी। कारण जल-रूप निर्बल हैं। इसी प्रकार रमलज्ञ को अपनी बुद्धि के अनुसार विन्दु-चाल द्वारा फलादेश कहना चाहिये। यदि प्रथम ४, १० विन्दु सोपान क्रम में जल विन्दुमय वर्तमान रूप के बलवान् हों तो वर्षा होगी।

तृतीय-गृही प्रश्नों का विवरण

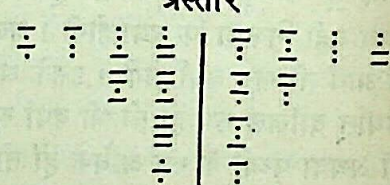
(१) क्या मुझे शिल्प-विद्या (सिलाई, कताई, बुनाई, ढलाई, लोहार का काम इत्यादि) प्राप्त होगी, या नहीं ?

विचारणीय गृह १, ३ हैं।

गुप्तोद्घाटन चक्र



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु जल का खाना २ में पहुँच कर पुनः बाईं तरफ जाकर चौथे गृह में विश्रान्ति पाता है, यही लग्न विन्दु माना जाता मगर तीसरे गृह में रूप ⋮ का विन्दु स्वक्षेत्री होने से परम बलवान् है, अतः लग्न-विन्दु तृतीय गृह ⋮ को माना इस का वर्तमान विन्दु जल रूप ⋮ प्रस्तार में छठे गृह में पड़ा है। समक्षेत्री है और अर्द्धशत्रु दृष्टि रखता है। खाना २ का वर्तमान विन्दु ⋮ है, जो चतुर्थ

मित्रक्षेत्री गृह में है तथा नवम में समक्षेत्री है और साधारण दृष्टि रखता है। विन्दु को बल ३० प्रतिशत मिल रहा है।

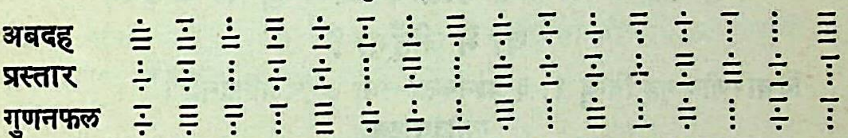
(३) तीसरा विन्दु जल का ⁝ है। मित्रक्षेत्री है और सम दृष्टि भी है। इसका वर्तमान रूप जल का आर ⁝ प्रकट में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना २ में बैठा है और तीसरी दृष्टि शुभ है। बली रूप है ⁝ नवें गृह में शत्रु-क्षेत्री है। लेकिन अग्नि में जल विन्दु बलवान् होता है, अतः परिणाम निकला कि परिश्रम अधिक करने पर विद्या प्राप्त होगी। कारण, चौथे गृह में भी ⁝ मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान जल ⁝ गुप्त रूप से दूसरे गृह में उत्कृष्ट मित्र-क्षेत्री सम बल रखता है। अस्तु, ४० प्रतिशत बल है।

अन्य आचार्य ३, ९, ११ विन्दुओं के बलाबल से परिणाम निकालते हैं। उस विधि की अपेक्षा यह ठीक जान पड़ता है।

(२) अमुक व्यक्ति वस्तुतः विद्वान् है या केवल दिखावा है ?

विचारणीय गृह विन्दु ५, ९, १० हैं।

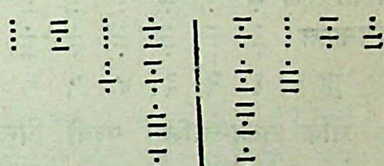
गुप्तोद्घाटन



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

चूंकि तुला-चालित विन्दु जल का तीसरे शीतांशु ⁝ में रुका परन्तु वह निर्णायक नहीं माना जायेगा। कारण, इसके चारों तत्त्व खुले हैं। अतः तुला गृह ⁝ को आचार्य सुर्खाव ने लग्न माना।

प्रस्तार



इसका पाँचवाँ विन्दु जल ⁝ है, जो प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान जल ⁝ १६वें प्रकट में मित्रक्षेत्री है। बल इसका २५ प्रतिशत हो रहा है।

नवाँ विन्दु पृथ्वी का ⁝ है, जो प्रकट में प्रस्तार में नहीं है मगर गुप्त रूप से नवें गृह में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है और समबल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप मंदग ⁝ है। यह प्रकट में प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त से छठे शत्रुगृह तथा १३वें उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री में समबल और दृष्टि-युक्त है। अस्तु, कम अर्थात् ३० प्रतिशत बल रखता है।

(१०) इसका १०वाँ बिन्दु पृथ्वी का ⁝ गुप्त रूप से छठे में शत्रुक्षेत्री तथा १३वें समक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⁝ है. जो २, ४, ११ शत्रुक्षेत्री स्वक्षेत्री मित्रक्षेत्री प्रकट में तथा गुप्त रूप से खाना १ तथा १५ में मित्रक्षेत्री है। यह ४० प्रतिशत बल पा रहा है।

परिणाम यह निकला कि कोई भी विन्दु ५० प्रतिशत तक बल में नहीं पहुँचता है। अस्तु, यह व्यक्ति धूर्त है और दिखावा मात्र बनाये है।

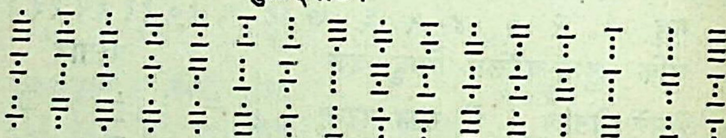
नोट–सुर्खाब के चन्द प्रस्तारों में विन्दु १० और १५ के अनुसार इस प्रश्न का हल दिखाया है। अनुभव करें।

(३) अमुक व्यक्ति से शास्त्रार्थ करना है, वह जीतेगा या मैं जीतूँगा ?

विचारणीय गृह विन्दु १, ३ प्रश्नकर्ता तथा ७, ९ प्रतिद्वन्द्वी।

गुप्तोद्घाटन

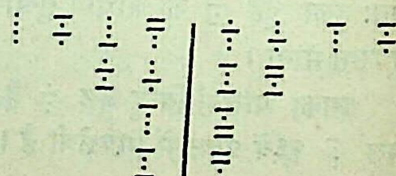
अवदह
प्रस्ताररूप
गुणनफल



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

चूँकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु खाना ५ में होकर दाहिनी तरफ सैर करता प्रथम गृह में जाकर रुकता है। रूप ⁝ को लग्न माना। यह प्रस्तार में दो जगह खाना ५ तथा १५ में

प्रस्तार



मौजूद है। उत्कृष्टमित्रक्षेत्री है। ४० प्रतिशत बल मिल रहा है। वर्तमान इसका पृथ्वी ÷ स्वक्षेत्री खाना ४ में बलवान् बैठा है। दृष्टि साधारण है अतः साधारण बल मिल रहा है।

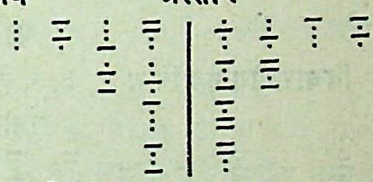
(३) तीसरा विन्दु पृथ्वी का ⁝ है। यह शत्रुक्षेत्री खाना २ तथा १४ में है। वर्तमान इसका पृथ्वी ⁝ स्वक्षेत्री खाना ८ में बलवान् है तथा खाना १३ में गुप्त रूप से समक्षेत्री भी है। पूर्ण तथा साधारण दृष्टि भी है। अस्तु, साधारण बल मिल रहा है। यह दोनों विन्दु प्रश्नकर्ता के हैं।

(७) सातवाँ विन्दु पृथ्वी ÷ है। यह प्रथम तथा सप्तम में समक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। वर्तमान इसका पृथ्वी ÷ तीसरे व ११वें में मित्रक्षेत्री होकर बैठा है। साधारण दृष्टि तथा मित्र दृष्टि से युक्त है, अतः पूर्णबली है।

(९) नवाँ विन्दु अग्नि ⁝ खाना ६ में मित्रक्षेत्री है, और वर्तमान इसका अग्नि ÷ प्रकट में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ४, ५ एवं १२ में समक्षेत्री, स्वक्षेत्री तथा समक्षेत्री हैं, और पूर्ण दृष्टि, साधारण दृष्टि तथा मित्र दृष्टि से युक्त है। परिणाम बल का मिल रहा है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता हार जायेगा और विपक्षी विजयी होगा। कारण, प्रतिद्वन्द्वी के विन्दु बलवान् हैं।

अन्यविधि प्रस्तार



मान लो विन्दु पंचम को लग्न न मानकर खाना १ ÷ को जहाँ विन्दु रुका है उसी को लग्न माना। यह प्रस्तार में खाना १ व ७ में समक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ खाना ३ व ११ जल में मित्रक्षेत्री है तथा १ में समक्षेत्री मित्र है। तीसरी दृष्टि भी शुभ है अतः बल इसे ७० प्रतिशत मानेंगे।

(३) तीसरा विन्दु पृथ्वी ÷ है। यह खाना ५ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री (सम बल) तथा १५ में मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप ÷ है।

यह खाना ४ में स्वक्षेत्री प्रकट, ७ व ९ में गुप्त रूप से मित्रक्षेत्री व समक्षेत्री है। दृष्टि अशुभ है अतः बल ५० प्रतिशत है।

७ वाँ विन्दु पृथ्वी का ⁞ है, जो गुप्त रूप से तीसरे में मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान पृथ्वी ⁞ है, जो गुप्त रूप में ४, ५, १२ स्वक्षेत्री, उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री (समबल) तथा स्वक्षेत्री है। बल ४० प्रतिशत है।

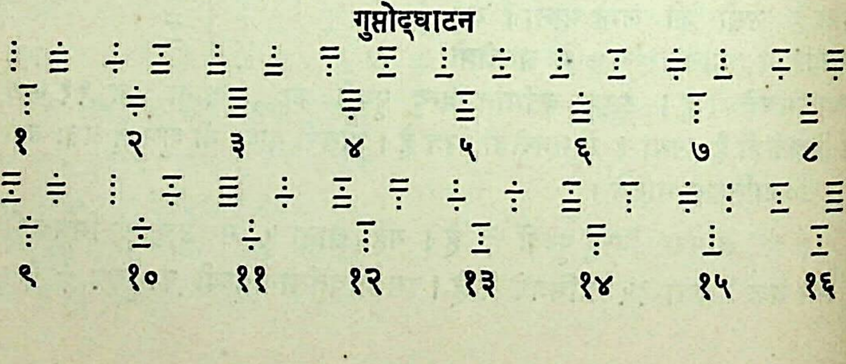
९वाँ विन्दु पृथ्वी का ⁞ है, जो कि तीसरे में मित्रक्षेत्री तथा ११वें में भी मित्रक्षेत्री है। यह गुप्त रूप से खाना १ में समक्षेत्री है। इसका वर्तमान पृथ्वी ⁞ है। जो कि ५वें में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री ११ वें में मित्रक्षेत्री है। तीसरी दृष्टि भी शुभ है। बल ६० प्रतिशत है।

परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता के अनुपात में प्रतिद्वन्द्वी के विन्दु अधिक बली हैं अतः प्रश्नकर्ता की पराजय होगी। अतः शास्त्रार्थ के पच्चड़ में उसे नहीं जाना चाहिये। यह मत आचार्य सुर्खाब का है। मिश्र-यूनान तथा भारतीय रमलज्ञों ने प्रश्नकर्ता को १, ३, ९ और प्रतिद्वन्द्वी को ७, ९, ११ माना है और तदनुसार बलाबल से प्रश्न का परिणाम कहते हैं।

(४) किसी इष्ट देवता को सिद्ध करने के लिये अनुष्ठान अथवा किसी कार्य सिद्धि के लिये तान्त्रिक प्रयोग करना है, सफलता मिलेगी या नहीं ?

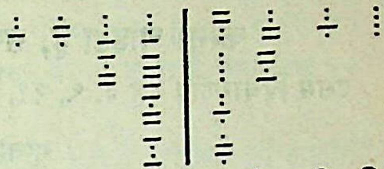
विचारणीय गृह विन्दु १, ३, ९ हैं।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी बिन्दु खाना ४ स्वक्षेत्री में रुका। यही लग्न स्थान कायम किया। प्रथम गृह बलवान् है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी ÷ आर है, जो प्रकट में नहीं है। मगर गुप्त रूप से नवें घर में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होकर बैठा है और सम बल पा रहा है। छठी दृष्टि (अशुभ) युक्त है, अतः शक्ति कम पा रहा है क्योंकि लग्न का रूप भी गुप्त रूप से खाना १४ में शत्रुक्षेत्री है। अस्तु वल पूर्ण तो नहीं ५० प्रतिशत माना गया है।

प्रस्तार



(३) तीसरा विन्दु पृथ्वी का कवि ⁝ है। यह गुप्त रूप से खाना १ में समक्षेत्री होकर सम बल पा रहा है तथा १२वें में शत्रुक्षेत्री भी गुप्त रूप से है। इसका वर्तमान पृथ्वी का शीतांशु ⁝ है जो खाना १ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री सम बल पा रहा है। खाना १० में शत्रुक्षेत्री होकर बलहीन हो रहा है। सात और १० की दृष्टि भी अशुभ है। बल ३० प्रतिशत है। इसका भविष्य विन्दु अग्नि का शीतांशु खाना १ व १० में स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है।

(९) नवाँ विन्दु अग्नि का वक्र ⁝ है। यह पाँचवें तथा छठे में स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप मन्दग ÷ ७ तथा १५ में शत्रुक्षेत्री है, निर्बल हो रहा है और सप्तम दृष्टि भी अशुभ हो रही है। बल ३० प्रतिशत रहता है।

परिणाम—वर्तमान विन्दु पूर्ण बली नहीं है, परन्तु भविष्य विन्दु सन्तोषजनक है। अस्तु, ६ मास बाद प्रश्नकर्ता को पूर्ण सफलता मिलेगी। अभी कार्य नहीं करना चाहिये। अन्य विधि से खाना १ में शीतांशु है। यह शुभ तो है पर शत्रुक्षेत्री होने से निर्बल है। तीन में उष्णगु ⁝ जल में अग्नि का होना शत्रुक्षेत्री होने से निर्बल है। ९ में विधु जल का रूप अग्निगृह में निर्बल है। मंत्री मंदग ÷ है। राजा खाना १६ बोधन ⁝ है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि फिर सफलता नहीं मिलेगी।

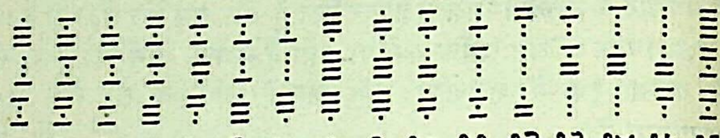
(५) टोना-टोटका या मनौती या देवपूजन कामनानुसार करना चाहता हूँ, सफलता होगी या नहीं ?

इसमें विचारणीय गृह ३, ९, ११, १५ विन्दु होते हैं।

गुप्तोद्घाटन

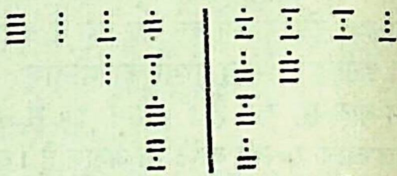
अबदह प्रस्तार

गुणनफल



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

प्रस्तार



चूँकि तुला-गृह वायु विन्दु प्रस्तार के तीसरे में होकर प्रथम गृह में रुका लेकिन खाना २ में स्वक्षेत्री होने से बलवान् है, अतः लग्नगृह बोधन खाना २ को माना। यह तीसरे में समक्षेत्री भी है, गुप्त रूप से खाना १ में मित्रक्षेत्री भी है। वर्तमान इसका वायु का वक्र है, यह खाना १ में मित्रक्षेत्री तथा खाना ६ में स्वक्षेत्री भी है। दृष्टि २-४ की ठीक नहीं। अतः बल ४० प्रतिशत रहता है।

(३) तीसरा विन्दु वायु प्रस्तार में गुप्त या प्रकट कहीं नहीं पाया जाता है। यह बहुत बड़ी कमजोरी है क्योंकि प्रधान विन्दु यही है। यह दसवें गृह का मालिक है, अस्तु प्रस्तार के दसवें रूप उष्णगु से गुणा किया × ( ) तो वायु विन्दु भी लुप्त हो गया।

(९) नवाँ विन्दु जल का रूप पात है। यह खाना ४ में मित्रक्षेत्री तथा गुप्त रूप से खाना ३ में स्वक्षेत्री भी है। बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु जल का बोधन है, यह तीसरे में स्वक्षेत्री तथा २ में मित्रक्षेत्री होकर सम बल पाता है। मगर गुप्त रूप से खाना १ में शत्रुक्षेत्री भी है, दृष्टि दूसरी ठीक नहीं। अस्तु, बल ४० प्रतिशत रहा।

(११) ११वाँ विन्दु जल का है। यह प्रथम में शत्रुक्षेत्री तथा

खाना ६ में समक्षेत्री है। इसका वर्तमानकालिक विन्दु जल का सूरि है, जो प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ५ में शत्रुत्तेत्री है और निर्बल है। तथा खाना १५ में स्वत्तेत्री भी है। बैलेंस बराबर का हो जाता है, अतः वल ४० प्रतिशत माना गया।

(१५) १५वां विन्दु जल का शीतांशु ( ) है। खाना ७ में स्वक्षेत्री तथा १२ में मित्रक्षेत्री है, गुप्त रूप से १३वें में शत्रुक्षेत्री तथा १४वें में समक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप जल का विधु रूप प्रकट खाना १६ में मौजूद है। तथा गुप्त में दूसरे तथा १६वें उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री (समबल) तथा मित्रत्तेत्री में पूर्ण बल पा रहा है। बल ५० प्रतिशत हैं। परिणाम यह है कि सहायक विन्दु तो मध्यम बली है, परन्तु मुख्य तीसरा विन्दु है नहीं, अतः ८० प्रतिशत सफलता की आशा नहीं और २० प्रतिशत मिलेगी भी तो बड़े परिश्रम से।

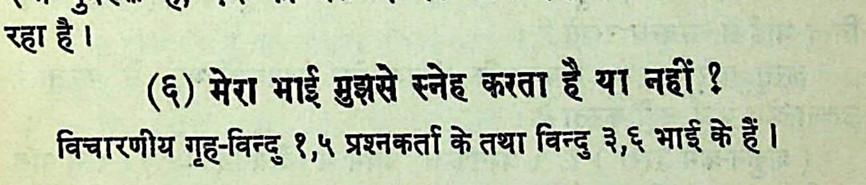
(रूपों द्वारा फलादेश)

३ में बोधन , ९ में वाग्मी , १५ में उष्णगु है। राजा विधु है और लग्न में वक्र है, यही ६ में है, अतः प्रश्नकर्ता के स्वयं करने से कुछ न होगा दूसरे से धन देकर कराये तो सफलता होगी। कारण मूलभाव ३ का २ में पुनरुक्त है, १५ का वल २ को और १६ का बल ३ को मिल रहा है।

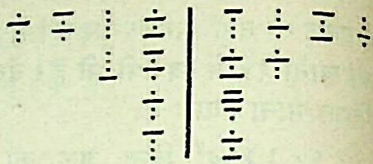
(६) मेरा भाई मुझसे स्नेह करता है या नहीं ?

विचारणीय गृह-विन्दु १,५ प्रश्नकर्ता के तथा विन्दु ३,६ भाई के हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित जल विन्दु ८वें में रुकता है, यही लग्न माना। यह खाना ८ में मित्रक्षेत्री, ९ में शत्रुक्षेत्री, १४ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री (समविन्दु) शक्ति रखता है और सातवें में स्वक्षेत्री भी है। इसका वर्तमान विन्दु जल ⁝ खाना ४, १६ में मित्रक्षेत्री है तथा १६ में गुप्त रूप से भी है। इसकी पाँचवीं शुभ दृष्टि भी है, अतः वल ६० प्रतिशत है।

(५) पाँचवाँ विन्दु जल का ÷ है, जो प्रस्तार में खाना ५ में शत्रुक्षेत्री खाना १० में समक्षेत्री, तथा खाना १५ में स्वक्षेत्री है। गुप्त रूप से खाना ९ व १३ में शत्रुक्षेत्री है और वर्तमान इसका जल का वोधन ⁝ खाना २ में समक्षेत्री है. दृष्टि शुभ भी है। अस्तु, ४० प्रतिशत वल रखता है। दोनों विन्दु प्रश्नकर्ता के हैं।

तीसरा विन्दु जल का शीतांशु ⁝ है, जो छठे घर में समक्षेत्री है। गुप्त रूप से खाना ९ में शत्रुक्षेत्री है। खाना २ में समक्षेत्री भी है, और अर्द्ध मित्रदृष्टि भी रखता है। अस्तु, २५ प्रतिशत बल मिल रहा है।

इसका सातवाँ विन्दु जल का वक्र ⁝ है। यह खाना १२ मित्रक्षेत्री है। वर्तमान इसका जल का सूरि ÷ है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। यह दोनों विन्दु भाई से सम्बन्ध रखते हैं।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि जितना प्रेम प्रश्नकर्ता भाई से करता है उतना प्रेम भाई नहीं करता है।

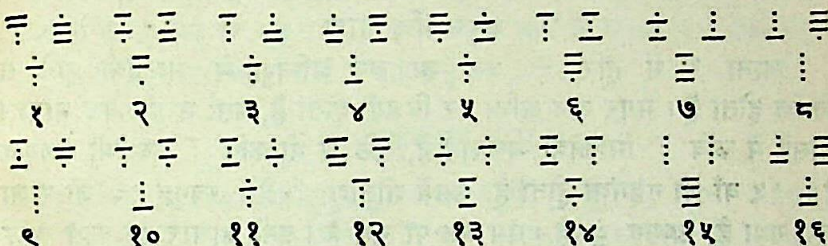
(शकुन-क्रम द्वारा) १, ५ प्रश्नकर्ता प्रथम में दैत्यगुरु ÷ है। ५ में पात ÷ है। ३, ७ भाई के गृह हैं। ३ में दैत्यगुरु ÷, समबल ७ में तीक्ष्णांशु ÷ शुभ है। ३ में समक्षेत्री, ७ में मित्रक्षेत्री, ५ का पात ÷ खाना १५ में मंत्री बन रहा है। ३ का दैत्यगुरु ÷ १६ में कवि ⁝ है।

परिणाम—प्रश्नकर्ता ऊपरी दिखावा करता है। पर भाई ऊपर से कुटिल भीतर से नर्म रहता है। यह अपनी बुद्धि से निकालना चाहिये।

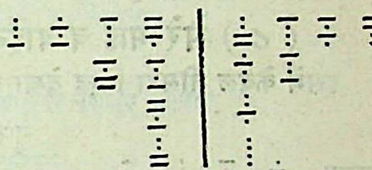
(७) हमारे भाई की परिस्थिति कैसी है ?

विचारणीय गृह विन्दु १, ३, ६ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु दूसरे गृह में स्वक्षेत्री होकर बैठा है, यद्यपि वहाँ से बायें चलकर खाना ४ शत्रु-क्षेत्री में रुकता है। चूँकि दूसरा गृह स्वक्षेत्री है, अतः इसी दूसरे गृह को लग्न माना। यह गुप्त रूप से प्रस्तार के १४ गृह में स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु जल दैत्य गुरु खाना १३ में मित्रगृही है। बल ६० प्रतिशत माना गया।

(३) लग्नविन्दु का तीसरा विन्दु वायु का कवि है। यह प्रस्तार में तीसरे में समगृही तथा गुप्त रूप से बारहवें में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान विन्दु १५ में समक्षेत्री तथा ८ व ९ में शत्रुक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। १०वीं दृष्टि है। बल ४० प्रतिशत माना गया।

(६) छठा विन्दु वायु का उष्णगु है। यह १६ वें में प्रकट तथा गुप्त रूप से दोनों में शत्रुक्षेत्री है। इसका वर्तमान वायु रूप बोधन है। जो खाना ९ में मित्रक्षेत्री तथा खाना ११ में समक्षेत्री तथा गुप्त रूप से खाना १३ में मित्रक्षेत्री है। ६, ८ दृष्टि अशुभ है। अस्तु, अशुभ दृष्टि के विचार से वल ३० प्रतिशत ही रह जाता है, साधारण शक्ति प्राप्त होती है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता का भाई स्वस्थ है परन्तु चिन्तायुक्त है।

(१) प्रथम विन्दु वली होने से स्वस्थ कहा (३) मध्यम बल (६) निर्बल है। इसी कारण चिन्तायुक्त है, यह उत्तर निकाला गया।

शकुन-पंक्ति द्वारा

खाना १ में सूरि ÷ जल का रूप अग्निगृह में शत्रुक्षेत्री होने से निर्बल होता है। मगर जल अग्नि पर विजयी होता है, अतः मध्यम बल माना। तीसरे में कवि ÷ मित्रक्षेत्री बलवान् है, छठे में भी कवि ÷ स्वक्षेत्री बलयुक्त है। १५ वाँ जो गृहमंत्री होता है उसमें शीतांशु ⁝ है। स्वगृह १६ जो राजा कहा गया है, उष्णगु ≐ है। सम बल पा रहा है। इसी आधार पर कहा, भाई स्वस्थ है, मगर चिन्तायुक्त है।

(८) मेरे भाई व बहिन हैं कि नहीं तथा कितने हैं ?

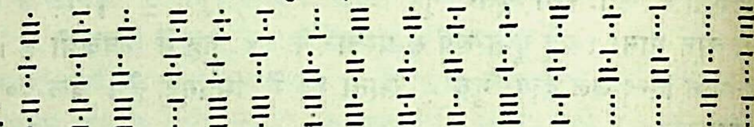
इसमें केवल तीसरा विन्दु देखा जायेगा।

गुप्तोद्घाटन

अबदह

प्रस्तार

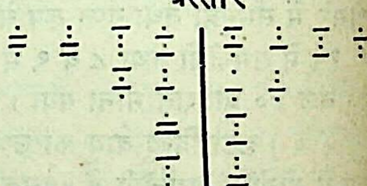
गुणनफ.



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

चूँकि तुला-चालित वायु स्वक्षेत्री खाना २ में होकर चतुर्थ गृह शत्रुक्षेत्री में जाता है, पर बिन्दु खाना २ में स्वक्षेत्री होने से बलवान् है, अतः इसी बोधन ⁝ को लग्न बिन्दु माना।

प्रस्तार



इसका तीसरा बिन्दु वायु का तीक्ष्णांशु ÷ है। यह प्रस्तार में २ जगह खाना ४ तथा १२ में शत्रुक्षेत्री है। मगर मित्रदृष्टि ३, ११ से है। अस्तु, फल हुआ कि प्रश्नकर्ता की दो बहिनें हैं। कारण, दोनों बिन्दु चौथे और बारहवें पृथ्वी तत्त्व

में हैं। अग्नि-वायु तो नर कहलाते हैं और जल-वायु स्त्रीलिंग कहलाते हैं। इसी कारण पृथ्वी गृह के नाते २ बहिनें कही गयीं। वर्तमान इसका वायु दैत्यगुरु ÷ है। यह २ जगह पुनरुक्त है। (१) खाना ११ जो स्त्रीलिंग है और यह लग्न से दृष्टि युक्त है, यह भी सम्बन्ध बहिन से रखता है। दूसरा खाना ९ जो अग्नि का है, यह नर गृह में है, यह सम्बन्ध भाई से रखता है। इसलिये कहा गया कि प्रश्नकर्ता के १ भाई ३ बहिन हैं।

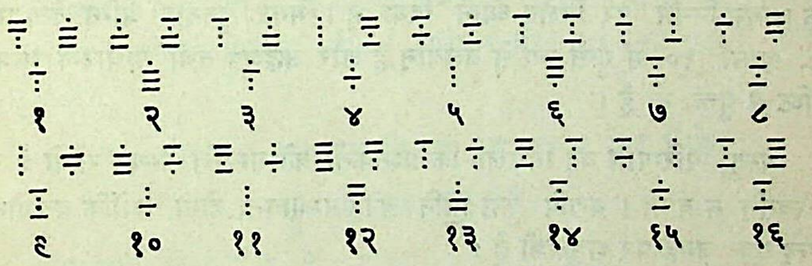
शकुन-क्रम द्वारा

तीसरा गृह भाई का होता है। खाना ३ में ⫶ है, जो खाना ७ तथा १५ में है। तीनों गृह जल के स्त्रीलिंग हैं, अतः कहा कि प्रश्नकर्ता को ३ बहिनें हैं।

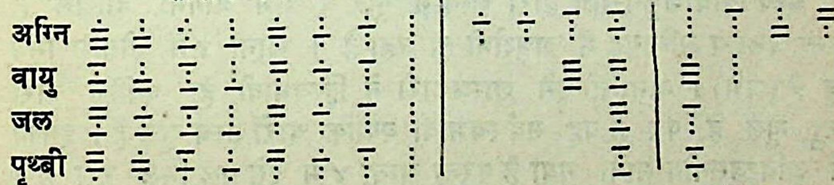
चतुर्थ गृह के प्रश्नों का विवरण

(१) क्या हमारी सम्पत्ति स्थिर रहेगी?

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु खाना ३ मित्रक्षेत्री में पहुँचकर पुनः बाईं तरफ सैर करता आठवें गृह में विश्रान्ति पाता है। अस्तु, खाना ५ का रूप तीक्ष्णांशु ⁝ उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होने से इसी को लग्न माना। शेष सब विषम बिन्दु रखते हैं। हाँ, चौथे में ⁝ है, अतः यह भी अप्रमाणित है इसी कारण ⁝ को लग्न माना।

इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का आर ⁝ है। यह खाना ७ में मित्रगृही तथा ८ में स्वक्षेत्री है। बलवान् है। वर्तमान इसका रूप कवि ⁝ है, जो खाना ३ में मित्रक्षेत्री और खाना ६ में शत्रुक्षेत्री है। दृष्टि शुभ भी है तथा अर्धशत्रु दृष्टि भी है। अस्तु, बल ४० प्रतिशत रहता है। इसका भविष्य रूप अग्नि का दैत्यगुरु ⁝ है। यह प्रकट में तो नहीं प्रस्तार में देख पड़ता है, मगर गुप्त रूप से खाना ४ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होकर समबल पाता है। और दृष्टि साधारण मित्र (२) तथा शुभ दृष्टि से युक्त है, तथा खाना १० में मित्रक्षेत्री भी है। विन्दु दाखिल (आगम) तथा खारिज (निर्गम) दोनों जगह हैं। अस्तु, बल ४० प्रतिशत पा रहा है तथा विन्दु खास तथा वर्तमान विन्दु इसका स्थिर रूप बलवान् है। इस प्रकार के प्रश्नोत्तर में सुर्खाव आचार्य ने विन्दु के आगम-निर्गम पर विशेष ध्यान दिया है। मगर पुनरुक्त अग्नि दैत्यगुरु ⁝ खाना १० में गुप्त रूप से बलवान् है और अर्द्धशत्रु तथा साधारण मित्र-दृष्टि से युक्त भी है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता की सम्पत्ति स्थिर रहेगी और परिवर्तन न होगा। यद्यपि कुछ हानि की सम्भावना होगी क्योंकि वर्तमान विन्दु एक जगह पर शत्रुक्षेत्री है।

अन्य विधि शकुन-पंक्ति द्वारा लग्न में सूरि ⁝ शुभ आगमो 'दाखिल' है परन्तु जलरूप अग्निगृह में शत्रुक्षेत्री हो रहा है। खाना ४ में शीतांशु मित्र गृह है (शुभ)। माना तो इसे शास्त्रकारों ने द्विस्वभावी है, क्योंकि चारों विन्दु खुले हैं, पर है यह सर्व स्वभावी क्योंकि चारों तत्त्व खुले हैं। इसको पूर्ण अविश्वसनीय माना गया है परन्तु खाना ४ में इसे बल मिल रहा है।

इसका मंत्री तीक्ष्णांशु तथा राजा बोधन है। लग्न और सम्पत्ति (१,४) को एक में मिला दें, अर्थात् पृच्छक के हाथ में सम्पत्ति आ जाने पर सूरि का उष्णगु हो जाता है। आगामी के स्थान पर निर्गम बनता है। और खाना ४ का भूत रूप कवि है। यह आगामी (दाखिल गृह) है। अस्तु, भूत काल में सम्पत्ति सञ्चित हुई है। अव यह चलने को तैयार हो रही है।

परन्तु १, ४ के योगी रूप को मन्त्री से मिलने पर मन्दग बनता है, अर्थात् १ व ४ के गुणा से (×) बना। फिर को खाना १५ से गुणा किया तो मन्दग बन गया। यह ग्रह क्रूर द्विस्वभावी है पर कुशल इतनी है कि इसका पता प्रस्तार में नहीं है। यह मंदग शकुन-क्रमानुसार छठें गृह में स्थान पाता है। प्रस्तार में छठे गृह में कवि है। यह खाना ३ और १३ में पुनरुक्त भी है। ६, १३ में स्वगृही तथा मित्रगृही है। ३ में समगृही है।

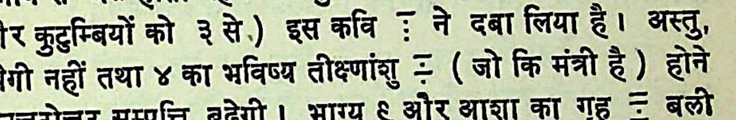
अतः परिणाम यह निकला कि सम्पत्ति में न्यूनाधिक्य वर्तमान काल में मन्दग के प्रभाव से भले होता रहे। परन्तु ३ मोरचे (लग्न को १३ से, शत्रु को ६ से और कुटुम्बियों को ३ से) इस कवि ने दबा लिया है। अस्तु, सम्पत्ति जायेगी नहीं तथा ४ का भविष्य तीक्ष्णांशु (जो कि मंत्री है) होने के कारण उत्तरोत्तर सम्पत्ति बढ़ेगी। भाग्य ९ और आशा का गृह बली है, शुभ है।

(२) सम्पत्ति का क्रय-विक्रय इस समय मेरे लिये शुभ है, या अशुभ ?

बिचारणीय विन्दु १, ३, ४, ५ हैं

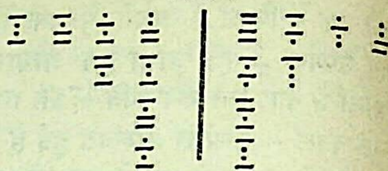
गुप्तोद्घाटन

अवदह, प्रस्तारक्रम, गुणनफल



गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित जल विन्दु खाना २ और ÷ में रुका है, यही लग्न विन्दु माना। कारण, प्रथम गृह का बलाबल तो देखना है। इसी कारण ÷ को लग्न विन्दु माना यह उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री और है समबल पा रहा है। गुप्त रीति से खाना ११ में स्वक्षेत्री भी है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ कवि है, जो प्रकट खाना ९ में शत्रुक्षेत्री है तथा गुप्त रूप से ८वें मित्रक्षेत्री होकर बैलंस बराबर बना रहा है। इसका बल ४० प्रतिशत है।

इसका तीसरा विन्दु जल का शीतांशु ⁝ है, जो प्रकट में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना २ में मित्रक्षेत्री है। समबल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु ☰ है, जो खाना १२ में मित्रक्षेत्री तथा खाना १३ में शत्रुक्षेत्री है। बैलंस बराबर रहा है, दृष्टि १२ पर मित्रदृष्टि है तथा १३ से छठी अशुभ है। अस्तु, बल साधारण पाया है। ३० प्रतिशत बल माना।

इसका चौथा विन्दु जल का ☰ विधु है। यह १२ वें मित्रक्षेत्री तथा १३वें शत्रुक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु पात ÷ है। जो खाना ६ में समक्षेत्री है तथा १६ में मित्रक्षेत्री है। दृष्टि चौथे अर्द्ध शत्रु रखती है। अस्तु, इसका बल भी ४० प्रतिशत है।

इसका पाँचवाँ विन्दु जल का पात ÷ है, जो ६ में समबल तथा १६ में मित्रक्षेत्री है। खाना ७, १६ में स्वक्षेत्री गुप्त तथा १६ में भी गुप्त मित्रक्षेत्री है। इस पात ÷ का वर्तमान विन्दु बोधन ⁝ है, जो खाना ८ व ११ में मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री है, शुभदृष्टियुक्त है, पूरा बल पा रहा है। ६० प्रतिशत बल माना।

परिणाम शुभ है। सम्पत्ति बनी रहेगी, क्रय-विक्रय में लाभ रहेगा। कारण, ४, ५ विन्दु बलयुक्त हैं। आचार्य सुर्खाव ने इस प्रश्न में माना है कि लग्न के साथ यदि तीसरा विन्दु बली हो तो खरीद शुभ हो और लाभ हो। यदि चौथा

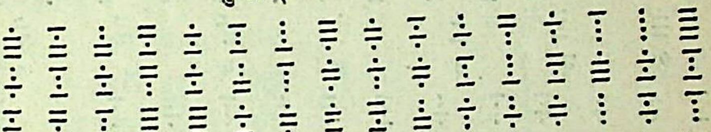
विन्दु बलवान् हो तो धान्य पर नफा है। यदि पाँचवाँ विन्दु बली हो तो खरीद-दार को लाभ हो हमारी राय है कि चौथा विन्दु वर्तमान के साथ विचारणीय है. परन्तु नवाँ विन्दु जो भाग्य का है तथा ११ वाँ विन्दु जो आशा का है, इन दोनों के बलाबल को भी लेकर परिणाम कहना चाहिये।

(३) इस स्थान पर हमको लाभ होगा या हानि होगी ?

विचारणीय गृह केवल १,४ हैं।

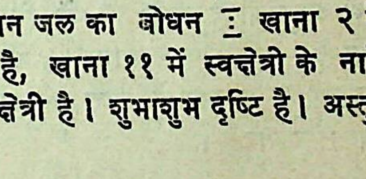
गुप्तोद्घाटन

अवदह क्रम
प्रस्तार क्रम
गुणनफल



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

प्रस्तार



तुला का जल विन्दु खाना २ में होकर खाना ३ स्वक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न विन्दु माना। यह खाना ५ और १५ में शत्रुक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री है और खाना ६ में गुप्त रूप से सम बल भी पा रहा है। इसका वर्तमान जल का बोधन खाना २ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री के नाते सम बल पा रहा है, खाना ११ में स्वक्षेत्री के नाते पूरा बल पा रहा है तथा गुप्त से तीसरे स्वक्षेत्री है। शुभाशुभ दृष्टि है। अस्तु, विन्दु में बल ४५ प्रतिशत है।

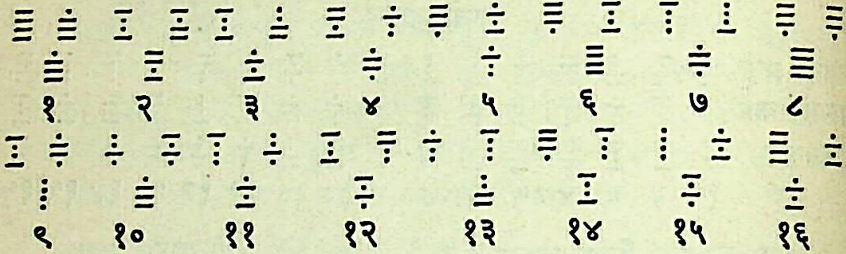
(४) चौथा बिन्दु सोपानक्रमानुसार जल का सूरि है, जो खाना ४ में मित्रगृही है। वर्तमान इसका जल (आर) है यह खाना ९ में शत्रुक्षेत्री तथा गुप्त रूप से खाना में स्वक्षेत्री भी है। दृष्टि ६ अशुभ है। बल अनुमान से ४५ प्रतिशत है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि स्थान लाभदायक होगा। कारण, चौथा विन्दु भी पृथ्वी का मित्र गृह बली है। इसलिये पृच्छक को इस स्थान पर लाभ होगा।

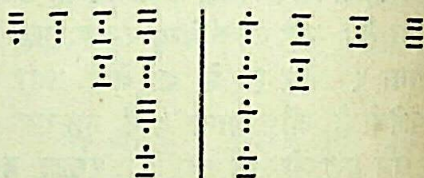
(४) मैं मकान या जमीन खरीदना चाहता हूँ ? उसमें लाभ होगा या हानि ?

विचारणीय विन्दु १, ४, ५ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला से जल विन्दु चलकर प्रस्तार में तीसरे स्वक्षेत्री ⁝ को लग्न बनाया है। यह खाना २, ६, ९, १२ में है। २, ६ में समबल पाता है, ९ में शत्रुक्षेत्री है तथा १२, में मित्रक्षेत्री है। इसी प्रकार खाना १४ में समबल पाता है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। अस्तु, बल केवल ३५ प्रतिशत रहता है।

(४) इसका चौथा विन्दु जल का आर ⁝ है। यह खाना में मित्रक्षेत्री के नाते बल पा रहा है, मगर खाना १३ शत्रुक्षेत्री होने से निर्बल हो रहा है। पुनः खाना ५ में गुप्त रूप से शत्रुक्षेत्री है। इस चौथे विन्दु का वर्तमान जल ⁝ है, जो खाना ७ व ११ में स्वक्षेत्री के नाते पूरा बल पा रहा है मगर दृष्टि ४, ८

अशुभ है। अस्तु, बल ५० से ३५ ही प्रतिशत रह जाता है। यह विन्दु मुख्य है।

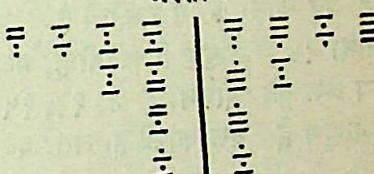
(५) इसका पाँचवाँ विन्दु जो शुभाशुभ परिणाम का है वही जल का ⁝ है, जो उपर्युक्त रीत्यानुसार ७, ११ में बल पाया हुआ ४-८ दृष्टि से ३५ प्रतिशत बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु जल का शीतांशु ⁝ है। यह प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ९ में शत्रुक्षेत्री है। चूँकि जल विन्दु अग्नि पर विजयी माना गया है, अतः बल ३५ प्रतिशत माना गया।

परिणाम यह निकला कि यह मकान मध्यम श्रेणी का है, न हानि ही होगी न लाभ ही होगा।

(५) यह मकान मेरे लिये शुभ है या अशुभ है ?

विचारणीय गृह १, ४, ५ हैं।

प्रस्तार



चूँकि तुला का जल विन्दु खाना ८ ⁝ में मित्रगृही होकर रुका। यही लग्नविन्दु है। यह खाना ४ में पुनरुक्त भी बली है मगर गुप्त रूप से १३वें में (÷ × ⁝) की गुणा से शत्रुक्षेत्री ⁝ पैदा होता है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है, यह प्रकट प्रस्तार में नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ७ में है। कारण ७ में ⁝ है और अवदह क्रम से ७ का मालिक ⁝ है। अस्तु ⁝ ⁝ को गुणा किया तो ÷ आया स्वक्षेत्री बली है तथा खाना १० में समक्षेत्री है। बल ४० प्रतिशत रहा। इसका चौथा विन्दु जल का ⁝ है। गुप्त रूप से ९ में शत्रु गृह है, (÷ ⁝) ⁝ इसका वर्तमान ⁝ जल का है यह ५ शत्रुगृह तथा १४ में समक्षेत्री है। चौथे विन्दु का प्रकट न होना कमजोरी लाता है, अतः बल ३० प्रतिशत माना।

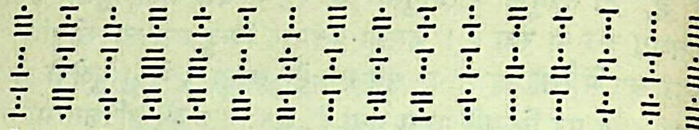
इसका पाँचवाँ विन्दु जल का ⁝ उपर्युक्त लक्षणवाला तथा दूसरे गुप्त गृह समबली है इसका वर्तमान जल का ⁝ है। १५, १६ में बल पा रहा है। दूसरी तीसरी दृष्टि भी शुभ है। बल में ४० प्रतिशत है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि मकान सामान्य रीति में रहेगा।

(६) मकान बनवाना चाहता हूँ, बनेगा या नहीं ?

विचारणीय गृह विन्दु १, ४, ६, ८ है।

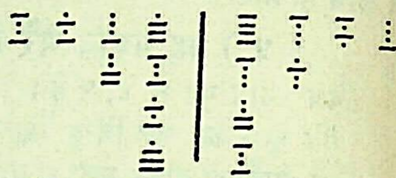
गुप्तोद्घाटन

अवदह
प्रस्तार
गुणनफल



गृह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

प्रस्तार



चूँकि तुला का जलविन्दु चलकर खाना ६ में होता हुआ खाना ८ में विश्रान्ति पाता है, मगर खाना ७ को स्वक्षेत्री होने से लग्न-विन्दु माना। यह खाना ७ में स्वक्षेत्री है तथा खाना १४ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है, मध्यम (सम) बल पा रहा है। इसका पर्तमान रूप जल का बोधन ८, ११, १५ में मित्रक्षेत्री है, इस पर ४, ५, २ दृष्टि शुभाशुभ है। बल काफी है, अत: ६० प्रतिशत माना जायेगा।

(४) इसका चौथा विन्दु जल का सूरि है। यह प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। इसका वर्तमान रूप जल है यह खाना ९ में शत्रुगृही है। गुप्त रूप से खाना ३ में स्वगृही बलयुक्त है। खाना ११ में भी स्वक्षेत्री होकर बल पा रहा है। चौथे मूल विन्दु के न होने से दृष्टि का प्रश्न ही नहीं उठता है। चतुर्थ गृह में गुप्त और १२ का है। इनमें जल विन्दु है इतना शुभ है, इसी कारण बल इसका ३० प्रतशित रहता है।

(६) इसका छठा विन्दु जल का कवि है, जो खाना ३ व १० में स्वक्षेत्री तथा समक्षेत्री होता है। गुप्त रूप से खाना ८ और १३ में मित्रक्षेत्री तथा शत्रुक्षेत्री है। इसका वर्तमान जल का शीतांशु है, जो प्रकट रूप से नहीं, मगर गुप्त रीति से खाना १२ में मित्रगृही होकर बैठा है। बल इसका ४० प्रतिशत माना जायेगा।

(८) इसका आठवाँ विन्दु जल का है, जो प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रीति से खाना ४, ५, ९, १० में क्रमशः मित्रक्षेत्री, शत्रुक्षेत्री, शत्रुक्षेत्री तथा समक्षेत्री है। वर्तमान इसका जल है, यही लग्नविन्दु भी है। बल पा रहा है। बल इसका ४० प्रतिशत है।

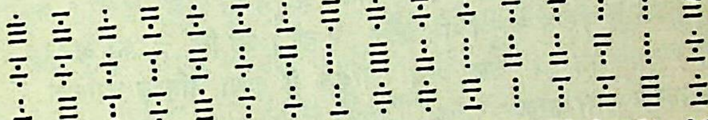
अस्तु, परिणाम यही निकला कि मकान बनने में कठिनाई पड़ेगी। कारण, चौथा विन्दु तो हीन बली है ही, अन्य विन्दु भी विशेष बल नहीं पाते हैं।

(७) हमारा मकान कैसा है, शुभ या अशुभ ?

विचारणीय गृह १, ४, ५ हैं।

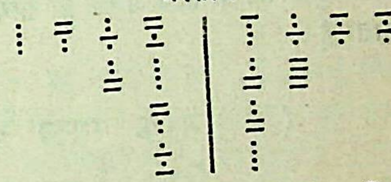
गुप्तोद्घाटन

अवदहपंक्ति
प्रस्तार रूप
गुणनफल



गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

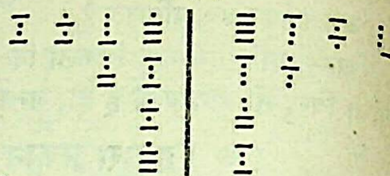
प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु चलकर खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न विन्दु माना। इसका चौथा विन्दु सोपान क्रम से वायु का रूप उष्णगु है। यह खाना १० में स्वक्षेत्री, खाना १२ में शत्रुक्षेत्री तथा खाना १३ में मित्रक्षेत्री है। विन्दु १० वायु में, विन्दु १२ पृथ्वी में और विन्दु १३ अग्नि में है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि मकान शुभ और खुला हुआ है। ऊँची जगह पर है। कारण, वायु विन्दु हवादार से सम्बन्ध रखता है और वायु विन्दु पृथ्वी में पड़ता है यह सम्बन्ध रखता है ऊँचाई से। मकान की कुर्सी ऊँची है, और वायु विन्दु जो अग्नि गृह में पड़ा है, यह साबित करता है पुख्ता मकान को। इसी प्रकार लग्न का विन्दु जहाँ-जहाँ पुनरुक्त हो उसी सम्बन्ध से परिणाम अपनी बुद्धि के अनुसार निकालना चाहिये। इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तार बनाकर चतुर्थ विन्दु

के बलाबल पर निकालना चाहिये जैसे चतुर्थ गृह प्रश्न-संख्या के प्रस्तार से देखना है तो उसका लग्न विन्दु जल का [illegible] है। इसका चतुर्थ विन्दु [illegible] है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। चतुर्थ-गृही गुणनफल ([illegible] × [illegible]) [illegible] है। जिस में जल विन्दु ज़ीवित है। इसका वर्तमान जल [illegible] है, जो प्रकट रूप में खाना ९ जल में शत्रुक्षेत्री है। गुप्त

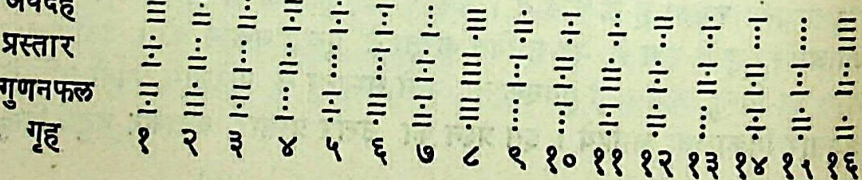
प्रस्तार



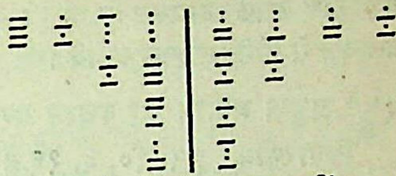
रूप से यह विन्दु खाना ३ व ११ में मौजूद है। स्वक्षेत्री से बलवान् है, जल के [illegible] का भविष्य विन्दु भी यही पृथ्वी सोपान होता है। अतः निर्णय यह हुआ कि यद्यपि दिखावे में मकान अशुभ-सा दीख पड़ता है, क्योंकि मूल विन्दु है ही नहीं परन्तु चतुर्थ गृह और १२ वाँ (जो कि [illegible] का अवदह पंक्ति का गृह है) गुणनफल में जल विन्दु जीवित है तथा भविष्य कालिक [illegible] पृथ्वी ९ में समक्षेत्री तथा उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री पृथ्वी से अग्नि सम और अग्नि से पृथ्वी उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होता है। अतः भविष्य में यह मकान अशुभ न रहेगा और वर्तमान में भी कुछ कष्ट के साथ अच्छा ही रहेगा। ऐसी स्थिति में मध्यम श्रेणी का माना जाता है।

(८) अमुक स्थान या अमुक मकान किस दिशा को बसा हुआ है, दशा मकान की क्या है ?

विचारणीय गृह ३, ४, ५, ९ हैं।



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालति जल विन्दु खाना ७ रूप पात ÷ में रुकता है और यही लग्न विन्दु माना गया। यह खाना १ में शत्रुक्षेत्री तथा ७ में स्वक्षेत्री और खाना १२ में मित्रगृही है। दो जगह बलवान् और १ जगह कमजोर है। वर्तमान विन्दु देखने की जरूरत नहीं।

(४) इसका चौथा विन्दु सोपान-क्रमानुसार जल का रूप आर ÷ है। यह प्रस्तार में नहीं है और दरवाजे से सम्बन्ध रखता है। अस्तु, कहा गया सामने का दरवाजा उजाड़ है। कारण, चौथा विन्दु है ही नहीं। नवाँ विन्दु पृथ्वी का रूप सौरि (≡) है, यह प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ६ में शत्रुगृही तथा ८ में स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप मंदग ÷ है, जो प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १२ में स्वक्षेत्री बलयुक्त है और दृष्टि ६ की रखता है। खाना १५ में मित्रबली है यह नवाँ विन्दु पिछवाड़े से सन्बन्ध रखता है। अस्तु, पीछेवाला मकान किसी तरह आबाद है। कारण, यह विन्दु कुछ शक्तिशाली है।

(३) तीसरा विन्दु जल का ⋮ है। यह प्रकट खाना ६ में स्वगृही बल पा रहा है तथा खाना ४ में मित्रगृही भी है। यह उस स्थान या मकान का भाग है। इसका वर्तमान जल का सूरि ÷ है, जो प्रस्तार में न तो प्रकट रूप में है न गुप्त रूप से। अतः वाम भाग भी कुछ आबाद है। कारण, विन्दु कम शक्ति पा रहा है।

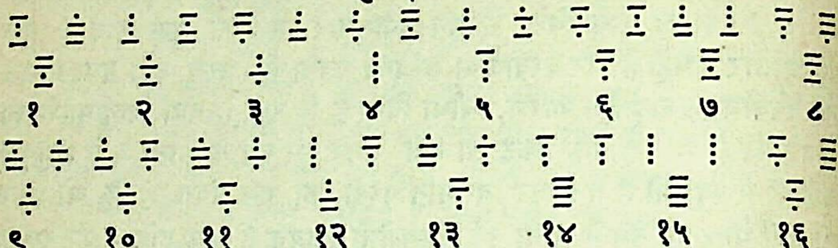
(५) इसका पाँचवाँ विन्दु जल का आर ÷ है, जो प्रस्तार में किसी प्रकार मौजूद नहीं है, इसका वर्तमान जल ⋮ है। छठे गृह में समबल पा रहा है। यह दक्षिण भाग का विन्दु है। यह भी शिथिल है। अस्तु, पाँचवाँ विन्दु निर्बल माना। दक्षिण भाग कुछ-कुछ आबाद बाकी वीरान है। शकुन क्रमानुसार प्रस्तार बनाकर चौथा गृह लग्न माना उसमें रूप स्वक्षेत्री या मित्रगृही हो तो सामने का मकान बसा हुआ है, शत्रुक्षेत्री हो तो उजाड़ है और समक्षेत्री हो तो अधबसा है। इसी प्रकार तृतीयगृह रूप को वाम भाग मानें। तीसरे

गृह के बलाबल से वाम भाग का हाल बतावें। पाँचवें रूप से दक्षिण दिशा का हाल उसके बलाबल से कहें। नवाँ रूप पीछे है उसके शुभाशुभ अथवा बलाबल से पीछे का हाल बतावें।

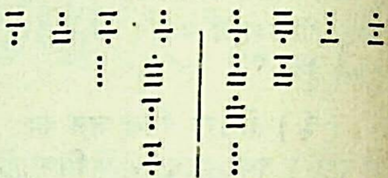
(९) अमुक मकान या स्थान पर रहने से कोई भय तो न होगा ?

विचारणीय गृह ५, १०, ६, १६ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु सप्तम भाव में रुकता है, इसी को लग्न माना जायेगा। इसका चौथा विन्दु वायु का रूप तीक्ष्णांशु है। वह खाना ६ में स्वगृही होने से बलवान् है तथा गुप्त खाना ११ में सम बल पा रहा है और खाना १६ में शत्रुक्षेत्री के नाते कमजोर भी होता है। इसका वर्तमान रूप वायु दैत्यगुरु है, जो खाना ४ में शत्रुक्षेत्री होने से कमजोर है तथा खाना ५ में मित्रगृही से बल पा रहा है और दृष्टि भी शुभ (३) है। अस्तु. ४० प्रतिशत बल कहा गया।

(५) इसका पाँचवाँ विन्दु वायु उपर्युक्त रीत्यनुसार ४० प्रतिशत बल पा रहा है। इसका वर्तमान वायु कवि खाना १४ में बलयुक्त है मगर ८ वीं दृष्टि कुछ निर्बल कर रही है।

(१०) इसका दशम विन्दु जल का है, जो खाना १ में शत्रुक्षेत्री कमजोर है तथा वर्तमान रूप वायु प्रस्तार में प्रकट या गुप्त कहीं है नहीं, अतः कमजोरी पैदा कर रहा है।

(६) इसका छठा विन्दु वायु ⋮ खाना १४ में स्वक्षेत्री होने से बलवान् है। इसका वर्तमान वायु का ⋮ गुप्त खाना ४ में कमजोर तथा प्रकट खाना १५ मे सम वल पा रहा है। १२, १४ विन्दु लग्न से शुभ-दृष्टि-युक्त है। अस्तु, परिणाम ४० प्रतिशत बल का रहा।

(१६) इसका १६ वाँ विन्दु जो राजा का है वह जल का ⋮ है। यह खाना १२ और १५ में मित्रगृही तथा स्वगृही होने से शक्तिशाली है। इसका वर्तमान जल का विधु ⋮ है। जो खाना १ में शत्रुगृही होने से कमजोर है, तथा खाना ७ में स्वगृही होने से बलवान् है। दृष्टियुक्त भी है, अतः ३० प्रतिशत वल रहा। कुछ कम बल पाता है।

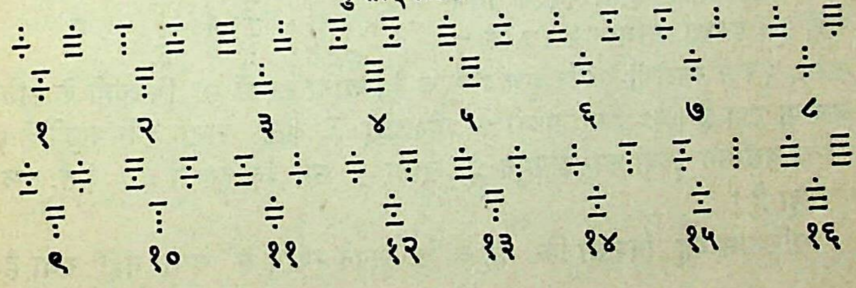
परिणाम यह निकला कि स्थान किसी कदर कमजोरी पा रहा है। कारण, चौथे विन्दु का पुनरुक्त खाना १६ शत्रुगृही होने से कमजोर हो रहा है, मुख्य यही विन्दु माना गया है। चौथा विन्दु नौकर शिष्य आदि का है वह भी कमजोर होंगे, नोचा-खसोटी करेंगे। पाँचवाँ विन्दु मध्यम बल रखता है, शेष सभी विन्दु भी मध्यम बल रखते हैं।

आचार्य सुर्खाव ने चौथे विन्दु से स्थान, पाँचवें विन्दु से नौकर शिष्य आदि, १० वें विन्दु से हाकिम तथा छठे शौर १६ वें से सर्व साधारण को माना है, इसी प्रकार सभी गृहों के बलाबल से फल कहना चाहिये।

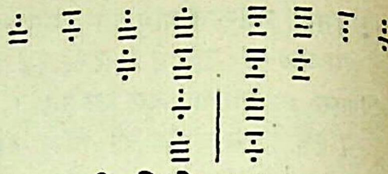
(१०) अमुक व्यक्ति को अमुक स्थान पर छोड़ आया हूँ, वह वहाँ पर है या नहीं ?

विचारणीय गृह ६, १२ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार

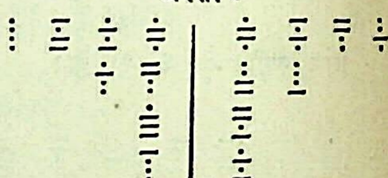


चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु सप्तम भाव ≑ मित्रगृह में रुका है, यही लग्न माना। इसका छठाँ विन्दु पृथ्वी का शीतांशु ⁝ है। वह प्रस्तार में गुप्त या प्रकट कहीं नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु रूप सौरि ≡ है। यह भी किसी प्रकार न गुप्त है न प्रकट। अतः कमजोरी है। यह विन्दु उस स्थान से सम्बन्ध रखता है जहां प्रश्नकर्ता उस व्यक्ति को छोड़ आया है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि वहां नहीं है।

इसका १२ वाँ विन्दु अग्नि का मंदग ≑ है। यह खाना १२ में उत्कृष्ट मित्र-क्षेत्री है। सम बल रखता है। इसका वर्तमान दैत्यगुरु ÷ है, जो खाना १ में स्वक्षेत्री तथा खाना १४ में मित्रगृही है। दृष्टि ७ तथा ८ शुभ तथा अशुभ दोनों हैं। वैलंस बराबर हो गया। विन्दु को ५० प्रतिशत बल मिला रहा है। अतः परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता जहाँ अपने सम्बन्धी को छोड़ आया था वह वहाँ नहीं है मगर दूसरे स्थान चला गया है। कारण बारहवाँ बिन्दु दूसरे स्थान का है।

अन्य तरीका

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना २ सूरि ≑ में रुका है। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का रूप सूरि ≑ है, जो खाना २ में शत्रुक्षेत्री तथा खाना ११ में मित्र-गृही है। इसका वर्तमान रूप आर ÷ खाना १२ में स्वक्षेत्री है और शुभ दृष्टियुक्त है। खाना ११ में भी मित्रगृही के नाते बल पा रहा है। १६ विन्दु पृथ्वी का तीक्ष्णांशु ≑ और खाना ३ मित्रगृही है। इसका वर्तमान पृथ्वी का दैत्यगुरु ÷ खाना में सम बल रखता है। अतः बल पा रहा है।

परिणाम यह निकला कि वह व्यक्ति अपने स्थान से चला नहीं गया है

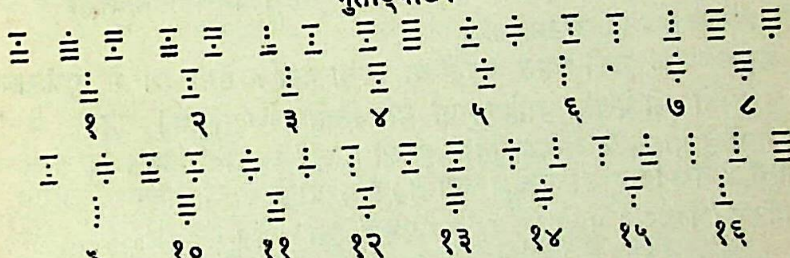
बल्कि दूसरी जगह जाने का प्रोग्राम बना रहा है। कारण, दशम विन्दु जो उस स्थान का है जिससे सम्बन्ध है और १६ वाँ विन्दु, अन्य स्थान से सम्बन्ध रखता है। दोनों बराबर बल रखते हैं।

विधान—रमलज्ञ को चाहिए कि लग्न विन्दु से ४ व १० को देखें यदि चौथा बलवान् हो तो वहीं है, यदि दसवाँ वलवान् हो तो अन्य स्थान पर चला गया है। यदि किसी गायब की बाबत देखना हो तो सातवें विन्दु का चौथा विन्दु लें उसके बलाबल से परिणाम अपनी बुद्धि अनुसार लगावें।

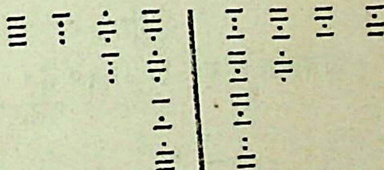
(११) अमुक व्यक्ति से मिलने जाता हूँ वह घर पर है या नहीं ?

विचारणीय गृह ७, ८ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु खाना ७ में विश्राम पाता है इसी को लग्न माना। इसका सातवाँ विन्दु वायु का तीक्ष्णांशु ÷ है। यह प्रस्तार में नहीं है और न गुप्त रूप से ही पाया जाता है इसका वर्तमान विन्दु वायु रूप दैत्यगुरु ÷ है। यह भी प्रस्तार में किसी प्रकार नहीं मिल रहा है, अतः कमजोरी पाई जाती है।

(८) इसका आठवाँ विन्दु वही ÷ प्रस्तार में गुप्त अथवा प्रकट कहीं नहीं मिल रहा है। इसका वर्तमान रूप कवि ⁝ खाना ७ तथा १२ में समक्षेत्री तथा त्रीक्षेत्रुश है। परिणाम कमजोरी का है, अतः कहा गया कि मुलाकात न

होगी। कारण, आठवाँ विन्दु भी निर्बल है। इसका कायदा यह है कि यदि सातवाँ विन्दु निर्बल हो और आठवाँ बलवान् हो तो मुलाकात हो जायेगी। परन्तु इच्छानुसार कार्य न हो यदि आठवाँ विन्दु निर्बल हो और सातवाँ विन्दु बलवान् हो तो खातिरदारी खूब हो पर लाभ न हो। यदि दोनों बलवान् हों तो मिले भी और काम भी बन जावे।

अन्य रीति से उत्तर शकुन-पंक्ति द्वारा

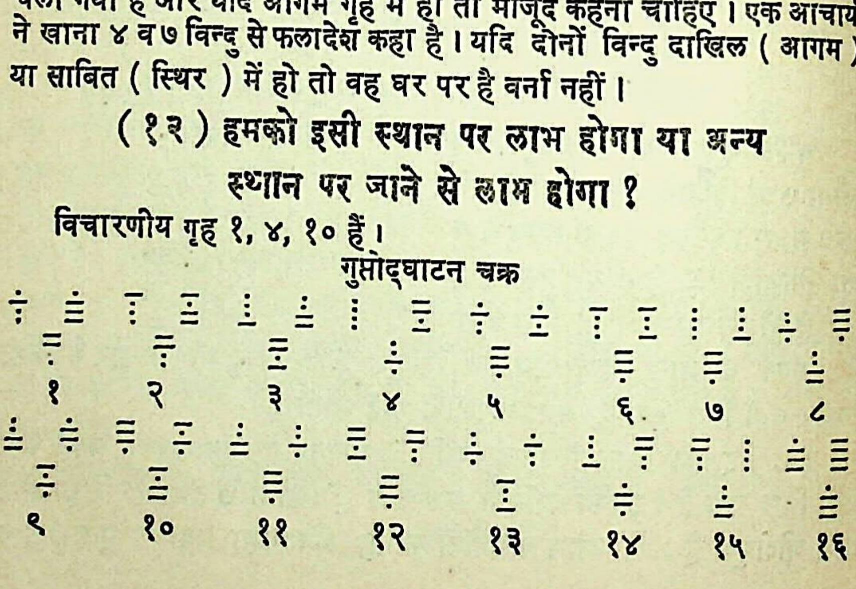
खाना ११ में मंदग ÷ मित्रगृही है, वह घर पर है। खाना १६ में वाग्मी ≟ है। यही स्थान राजा का कहा गया है। इसमें निर्गम रूप ≟ हैं, अतः मिलेगा नहीं। कारण, मन्त्री गृह खाना १५ में भी उष्णागु निर्गम रूप बैठा है। वह मिलना नहीं चाहता है। यदि किसी अधिकारी से मिलना चाहते हो तो दशम गृह को देखो यदि उसमें निर्गम (खारिज) रूप हो तो न मिलेगा यदि आगम रूप यानी दाखिल रूप हो तो मिलेगा।

अमुक व्यक्ति उसी स्थान पर है या चला गया? ऐसी दशा में चौथे तथा नवें विन्दु को भी देखना चाहिए नवाँ यदि निर्गम (खारिज) गृह में है तो चला गया है और यदि आगम गृह में हो तो मौजूद कहना चाहिए। एक आचार्य ने खाना ४ व ७ विन्दु से फलादेश कहा है। यदि दोनों विन्दु दाखिल (आगम) या साबित (स्थिर) में हो तो वह घर पर है वर्ना नहीं।

(१२) हमको इसी स्थान पर लाभ होगा या अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा?

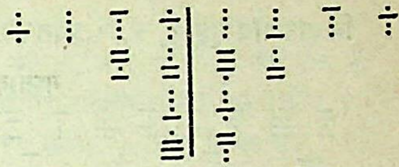
विचारणीय गृह १, ४, १० हैं।

गुप्तोद्घाटन चक्र



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु खाना ४ में जाकर बाईं तरफ जाता हुआ सीधे आठवें गृह में विश्राम पाता है। चूँकि ÷ को बल ८ में मिल रहा है। अतः इसी को लग्न गृह माना।

प्रस्तार



यह खाना १३ में पुनरुक्त सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप सूरि ⁝ गुप्त रूप से खाना २ में शत्रुगृही है और सातवीं दृष्टि तथा छठीं दृष्टि १३ से अशुभ है। परिणाम कमजोरी का है।

(४) इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का कवि ⁝ है। यह खाना २ तथा ६ में शत्रुगृही निर्बल है। इसका वर्तमान पृथ्वी का शीतांशु ⁝ चौथेवें सातवें में स्वगृही तथा मित्रगृही है। दृष्टि शुभ तथा अशुभ दोनों हैं। अतः ४० प्रतिशत बल रह गया। यही विन्दु उस स्थान से सम्बन्ध रखता है, जहाँ के विषय में प्रश्न किया गया है।

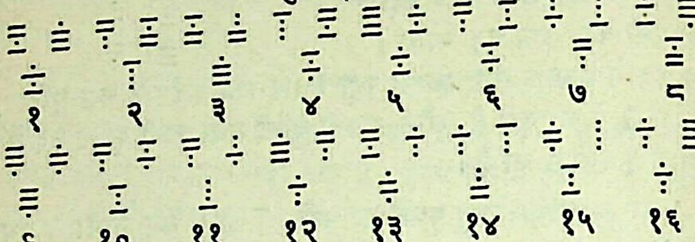
(१०) इसका दशम विन्दु अग्नि का ⁝ वक्र है। यह खाना ३ में शत्रुगृही है तथा १४ में मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान अग्नि का रूप मंदग ÷ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है, अतः परिणाम कमजोरी का है। बस, कहा गया कि प्रश्नकर्ता को दोनों स्थानों पर लाभ होगा। कारण, चौथा तथा दशम विन्दु दोनों कमजोर है। लग्नगृही साधारण बल रखता है। नियम यही है कि यदि खाना १ तथा ४ के विन्दु मय वर्तमान के बलवान् हों तो यहीं लाभ होगा। यदि १ व १० बलवान् हों तो अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा। इसमें दोनों कमजोर हैं, अतः सन्तोष करें आगे जाने का प्रोग्राम न बनायें।

शकुन-पंक्ति द्वारा फलादेश-खाना १ में आर ÷ मंगल का रूप है। शत्रुगृही है, अतः भाग्य प्रश्नकर्ता का खोटा है। चौथे गृह में शीतांशु ⁝ है। यह स्थान सम है। खाना १० में सौरि ≡ है। यह शत्रुगृही है। आगमी (खदाखिल) है। मंत्री सूरि ⁝ बलवान् है और राजा वाग्मी सम बल रखता है। अस्तु, यही परिणाम रहा कि दोनों जगहें समान हैं। भटकना व्यर्थ है, ग्रह खोटे हैं। शुक्र, चन्द्र, शनि की शान्ति करायें।

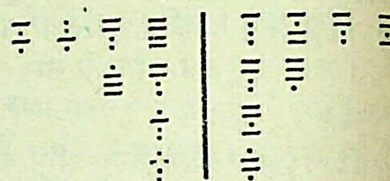
(१३) मुझको पिता से लाभ होगा या नहीं ?

विचारणीय गृह १, २, ५ प्रश्नकर्ता के तथा ४, ५, ६ पिता के हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना ६ में विश्रान्ति पाकर पुनः अष्टम भाव ⫶ में विश्रान्ति पाता है, यही लग्न माना।

(२) इसका दूसरा विन्दु सोपानक्रमानुसार रूप दैत्य गुरु ÷ है। यह सप्तम भाव मित्रगृह में बलवान् है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी का सूरि ⫶ है। जो प्रस्तार में खाना २, ६ तथा १० में शत्रुक्षेत्री है तथा ११ में समक्षेत्री है। शुभ दृष्टि तथा अशुभ दृष्टि दोनों हैं, अतः ३० प्रतिशत बल मिला। यह दूसरा विन्दु प्रश्नकर्ता के लाभ का है।

(५) इस पंचम विन्दु पृथ्वी का रूप कवि ⫶ है। यह खाना ४ में स्वगृही बलवान् है। इसका वर्तमान रूप शीतांशु ⋮ है, यह प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। अस्तु, कमजोरी पाई जाती है। यह पंचम विन्दु पिता की सम्पत्ति का है, वर्तमान में कुछ कमजोरी है मगर आशा पूर्ण है, पिता से लाभ होगा।

अन्य विधि—यवनाचार्य ख्वाजा नसीरउद्दीन का अनुभव इस प्रकार के प्रश्न पर यह है कि वह विन्दु १, १०, ३ का प्रश्नकर्ता की ओर से तथा ४, ५, ६ का पिता की सम्पत्ति से सम्बन्ध करते हैं। यदि १, ३, १० विन्दु बलवान् हों और

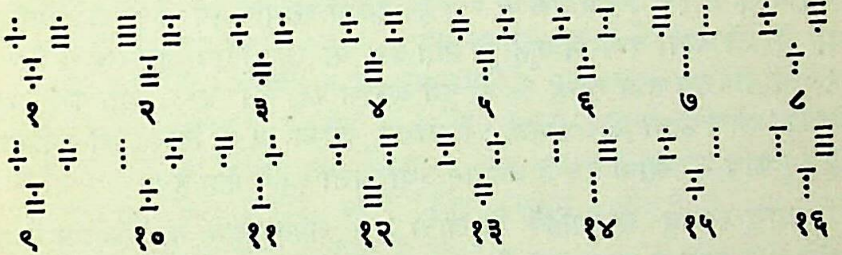
४, ५, ६ निर्बल हों तो प्रश्नकर्ता को पिता से लाभ हो यदि इसके विपरीत हों तो लाभ न हो।

केवल प्रस्तार के रूप

प्रस्तार में खाना १ में विधु ≡ है। जल का रूप अग्नि में कमजोर है शत्रुगृही है। २ में सूरि ≑ समगृही, आगामी, मध्यबली और शुभ है। ५ में। सौम्य ≡ बद्ध तालाबन्दी है। मंत्री खाना १५ मंदग ÷ और राजा खाना १६ ÷ है। दोनों बलवान् हैं। आशा कम है। भावेश काम करता है, लग्न निर्बल है, धन भाव साधारण निर्बल और ५ बन्द है। अस्तु, पिता असन्तुष्ट है अत कम लाभ की आशा है।

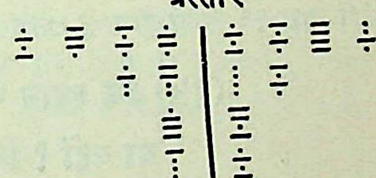
(१४) मेरा बाप मुझसे प्रसन्न है या अप्रसन्न है ?

विचारणीय गृह १, ४, १० हैं।



चूँकि तुला-चालित विन्दु जल तत्त्व का चल कर खाना ४ मित्रक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। इसी को भाग्य स्थान या लग्नविन्दु मान लिया। लग्न बलवान् है।

प्रस्तार



(४) इसका चौथा विन्दु जल का सूरि ≑ है। यह खाना ११ में स्वक्षेत्री बलवान् है। इसका वर्तमान रूप जल का ÷ है। यह खाना १२ में मित्रक्षेत्री बलवान् है और ९ वीं मित्रदृष्टि भी है। अस्तु, कहा गया कि बाप का भाग्य प्रबल है।

(१) प्रथम विन्दु खाना ६ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होने से सम बल पा रहा है तथा खाना ८ में मित्रक्षेत्री के नाते पूर्ण बल पा रहा है। खाना १५ में स्वगृही है। वर्तमान इसका वायु ⁝ है, जो प्रस्तार में गुप्त या प्रकट कहीं नहीं है। अस्तु, ४० प्रतिशत बल पा रहा है। कारण, ⁝ छठें गृह का मालिक है। अस्तु, छठें गृह में बैठे हुए रूप ⁝ को छठें गृह के मालिक रूप से गुणा करते हैं तो ⁝ × ⁝ रूप ⁝ पैदा हो जाता है। विन्दु लुप्त हो जाता है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि पिता खुश है मगर वर्तमान दशा पिता की कुछ चिन्तनीय है। कारण, प्रथम बलवान् है और चौथा विन्दु भी बलवान् है। केवल चौथा विन्दु वर्तमान का ⁝ यह गुप्त या प्रकट कहीं नहीं मिल रहा है।

(१०) इसका दशम विन्दु पृथ्वी का रूप मंदग ⁝ है। यह पंचम भाव में सम बल पा रहा है। खाना ३ में मित्रगृही के नाते बल पा रहा है तथा गुप्त रूप में खाना १३ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी का शीतांशु ⁝ है, जो खाना ३ में मित्रगृही के नाते बल पा रहा है तथा गुप्त रूप से खाना १० में सम बल तथा खाना १५ में पूर्ण बल पा रहा है। अस्तु, पिता का भाग्य सन्तोषजनक माना और प्रसन्न है। कारण, इसका १५ वाँ विन्दु (जो मंत्री का है।) कवि ⁝ खाना १६ में बलवान् तथा राजा गृह में बैठा है।

अस्तु रमलज्ञ को चाहिये कि खाना १ से अपने भाग्य का बलाबल तथा चौथे और दसवें के बालबल से पिता का हाल कहना चाहिये। विन्दु खाना १५ मंत्री तथा १६ राजा होता है उसके बलाबल को भी देखना चाहिये।

(१५) इस स्थान या मकान में गड़ा धन है या नहीं ? मिलेगा या नहीं ?

यदि इस प्रकार का प्रश्न कोई करे तो निम्नलिखित ५ बातों पर प्रथम विचार करना चाहिये।

(१) प्रश्नकर्ता के भाग्य में माल मिलना बदा है कि नहीं ?

(२) उस स्थान या मकान में द्रव्य है कि नहीं ?

(३) यह द्रव्य सरलतापूर्वक मिलेगा या कठिनाई से ? प्रकट होगा कि नहीं ?

(४) यह द्रव्य स्थान या मकान के किस भाग में है और किस दिशा में है ?

(५) कितनी गहराई चौड़ाई में द्रव्य (दफीना) है ?

उपर्युक्त बातों पर विचार करके तब उत्तर देना चाहिए ।

इसी नियम से प्रस्तार बनावें, फिर देखें यदि प्रस्तार के खाना २ में ⁝ या ÷ या ÷ इनमें से कोई रूप हो, खाना ८ या १४ में पुनरुक्त हो और खाना १६, जो राजा होता है उसमें रूप शुभ दाखिल ÷ या ÷ या ⫶ हो तो धन मिलेगा । अन्य रूप यदि हों तो न मिलेगा । तत्पश्चात् खाना १,१०,२'१२ गृहों के रूप को लेकर नवीन प्रस्तार बनावें । फिर इस प्रस्तार के खाना १ के रूप को खाना १३ के रूप से गुणा करें । ४ को १४ से और ७ को १५ से तथा दसवें गृह के रूप को १६ वें गृह के रूप से गुणा करें इस प्रकार चार रूप बनायें । फिर इन चार से दो रूप बनायें । पुनः इन दो रूपों से एक रूप बनायें । इसी को लग्न का रूप मानें । यदि वह दोनों शुभ रूपों के गुणा से प्राप्त हो तो इसी वर्ष धन गड़ा मिलेगा । यदि एक शुभ तथा एक अशुभ रूप से गुणन फल निकले तो तीन वर्ष के भीतर मिलेगा । यदि दोनों अशुभ रूपों से यह रूप पैदा हो तो कभी आशा न करें ।

दूसरी विधि—यदि प्रस्तार में रूप मंदग ÷ पुनरुक्त हो अर्थात् दो या तीन जगह ÷ हो तो वहाँ द्रव्य जरूर होवे और मिले भी । यदि गुप्त रूप से पुनरुक्त हो तो न मिले । यदि वह रूप ÷ प्रस्तार में खाना ४, ७, १० में हो तो उस स्थान पर द्रव्य (दफीना) जरूर हो ।

तीसरी विधि—यदि प्रस्तार में खाना १० व ११ में आगम रूप (दाखिल रूप) हों और खाना ४ व ६ के गुणनफल से शुभ दाखिल रूप हों तो द्रव्य सरलतापूर्वक मिले । विपरीत से न मिले । यदि प्रस्तार में ३,४,५,१० गृहों में शुभ दाखिल रूप हों तब भी सरलतापूर्वक द्रव्य मिले, अन्य रूपों से न मिले ।

चौथो विधि—प्रस्तार के ३ व १० के गुणा से जगह मालूम करें।

पाँचवीं विधि—खाना ४ के रूप के अनुसार गहराई, चौड़ाई तथा लम्बाई मालूम करें।

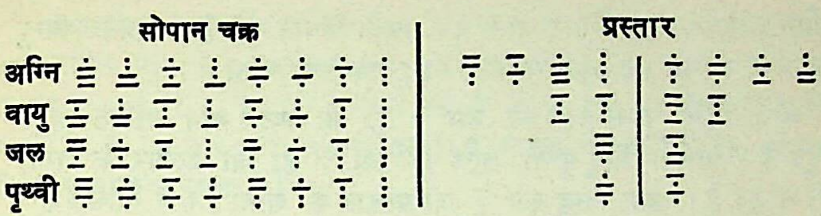
छठी विधि—प्रस्तार के खाना १ व ४ के रूपों को गुणा करके एक रूप बनावें। उस रूप का सम्बन्ध जिस धातु से हो उससे उस वस्तु को कहें यदि ≡ या ≑ हों तो कोयला लोहा अथवा काला पत्थर समझें। यदि ≐ या ≕ हों तो पीला तथा सफेद रंग, अशरफी चाँदी आदि कहे। यदि ⋮ या ÷ हों तो लाल रंग, मूँगा, ताँबा आदि समझें। यदि ≐ या ≕ हो तो सुवर्ण समझें। यदि ÷ या ⋮ हों तो चाँदी या रुपया समझें। यदि ⋮ या ≡ हो तो हरी वस्तु, हरा पत्थर आदि समझें। यदि ≕ या ⋮ हों तो भी चाँदी या रुपया समझें। यदि ≐ या ⋮ हों तो लोहा समझें।

अब हम विन्दु-चाल द्वारा प्रश्न के उत्तर को लिखते हैं। खाना १५ का तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु पंचम भाव में रुका। फिर वहाँ से दाहिने तरफ जाकर तीसरे गृह में विश्रान्ति पाता है और तीसरा गृह मित्रक्षेत्री है। अस्तु, तीसरे गृह का रूप मन्दग ≑ को लग्न माना।

इसका दूसरा विन्दु सोपान चक्र पृथ्वी का रूप ≕ है, यह प्रस्तार में दो जगहों पर खाना ७ तथा १५ में पाया। यह आगम अर्थात् दाखिल गृह में है। फिर विन्दु ४ को देखा तो रूप ≕ को पाया। यह आठवें गृह में स्वक्षेत्री स्थिर है। फिर छठें गृह को देखा तो रूप ⋮ को पाया यह ११ वें गृह में मित्रक्षेत्री आगम (दाखिल) गृह में बैठा है।

गुप्तोद्घाटन

अवदह रूप	≐	÷	≑	÷	⋮	≐	÷	≕	⋮	≡	⊤	⋮	≡	≡	÷	≑
प्रस्तार रूप	≡	÷	≐	⁻	≐	⊤	⊥	≡	≑	÷	÷	≕	÷	⊤	⋮	≡
गुणनफ-रूप	≡	⋮	÷	≑	≕	⋮	÷	≐	⋮	⊤	≐	≑	⋮	⊥	≐	≑
गृह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६



अब आठवाँ विन्दु लिया तो रूप ⁞ सोपान में पाया। यह खाना १४ में पाया यह गृह खारिज का है। कारण, प्रस्तार में १, ५, ९, १३ तथा २, ६, १०, १४, गृह में सोपान द्वारा निकाला रूप यदि इन गृहों में प्रस्तार में पड़े तो खारिज समझें अर्थात् दफीना नहीं है यदि ३, ७, ११, १५ या ४, ८, १२, १६ गृहों में सोपानचक्र द्वारा निकाले रूप प्रस्तार में पड़े तो द्रव्य उस स्थान पर अवश्य होता है। इस प्रस्तार में खाना २, ४, ६, ८ में रूप २ में ⁞ खाना ७, १५ में दाखिल गृह में है।

४ में रूप ⁞ खाना ८ में साबित गृह में है, दाखिल समझें।

६ में रूप ⁞ खाना ११ में दाखिल गृह में है।

८ में रूप ⁞ खाना १४ में खारिज गृह में है।

विचार किया तो ३ गृह में दाखिल है, केवल १ में खारिज है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि इस स्थान पर द्रव्य अवश्य है। क्योंकि कायदा है—यदि चारों विन्दु दाखिल या साबित गृह में हों तो द्रव्य जरूर हो। यदि भिन्न-भिन्न गृहों में हो तो जिधर मन अधिक पड़े अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दे। यदि खारिज गृहों में २, ४, ६, ८ विन्दु हों तो द्रव्य वहाँ नहीं होता है।

अब तीसरी विधि—यह द्रव्य आसानी से प्राप्त होगा या कठिनाई से प्राप्त होगा।

विन्दु—तीसरा, चौथा, पाँचवा, छठा, तथा दशम को देखा।

तीसरा विन्दु सोपानचक्र का रूप ⁞ है। यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है और न गुप्त रूप से ही वह पाया जाता है, लेकिन वर्तमान रूप ⁞ खाना ८ में

सावित (स्थिर) गृह में पाई जाती है। इसका विधान यही है जब असल विन्दु प्रस्तार में न मिले तब उसके वर्तमान विन्दु को लिया जाता है।

चौथा विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ≑ है, जो अष्टम भाव सावित गृह में मौजूद है। पाँचवा विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है, जो प्रस्तार के खाना ४ में मौजूद है। छठा विन्दु रूप ≑ जो प्रस्तार के खाना ११ में दाखिल है। दशम विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप ≟ है। यह खाना १ में खारिज गृह में है। कारण, १, ५, ९, १३ अग्नि गृह के खारिज (निर्गम) कहते हैं।

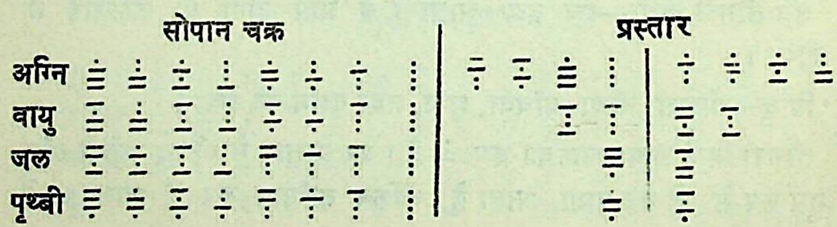
इस प्रस्तार में अधिकतर दाखिल तथा सावित का बहुमत है।

अस्तु, परिणाम निकला यह द्रव्य (दफीना) अवश्य निकलेगा। मगर परिश्रम तथा घोर पुरुषार्थ करना पड़ेगा। क्योंकि कायदा है खाना ३, ४, ५, ६ तथा १० कुल गृह दाखिल अथवा सावित गृह में हों तो द्रव्य सरलता पूर्वक निकलेगा। इसके विपरीत कठिनाई से।

चौथी विधि-स्थान शोधन ३ व १० के संयोग से जगह निकाली जाती है।

विन्दु ३ पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ । यह प्रस्तार में है नहीं। अस्तु, जाना कि स्थान लापता है। यह रूप वायु तत्त्व का है और वर्तमान इस रूप का ≑ है। इसका साथी रूप ≟ है। कारण दोनों बृहस्पति के रूप हैं। यह अग्नि तत्त्व का है और दशम विन्दु रूप ≟ भी अग्नि तत्त्व का है। अस्तु, बुद्धि से निकाला कि यह द्रव्य चूल्हा या भट्ठी या जहाँ चिराग रक्खा जाता है उसी जगह है। क्योंकि कायदा है कि यदि इनकी संयुक्त प्रकृति के रूप अग्नि तत्त्व के हों तो वह द्रव्य (दफीना) अग्नि के नीचे होता है। यदि वायु तत्त्व के हों तो ऊँचाई पर यदि जल तत्त्व के हों तो जल के नीचे और यदि पृथ्वी तत्त्व का हो तो भूमि में गड़ा होगा।

सोपान चक्र प्रस्तार



अब मालूम करना है कि किस दिशा में द्रव्य है। ऐसी दशा में खाना १५ का चालित प्रथम विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसे देखें वह किस गृह से सम्बन्ध रखता है। १, ५, ९, १६ पूर्व दिशा से; खाना ३, ७, ११, १५ उत्तर दिशा से खाना २, ६, १०, १४ वायु तत्त्व पश्चिम दिशा से तथा ४, ८, १२, १६ दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखता है।

अब देखना है कि खाना १५ का प्रथम विन्दु चलकर खाना १ रूप (• • — —) पर विश्रान्ति पाता है। यह रूप अग्नि की पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखता है। और खाना ४ तथा १४ रूप पश्चिम तथा दक्षिण से सम्बन्ध रखता है। अस्तु, तीनों के मत से उत्तर दिया कि द्रव्य दक्षिण पश्चिम के कोने में है।

पाँचवीं विधि—कितनी गहराई में वह द्रव्य है ? दशम विन्दु को लिया अग्नि का रूप (• • — —) है। इसको चौड़ाई लम्बाई ३ गहराई ९ है।

चित्र रूपों का

रूप	लम्बाई	चौड़ाई	गहराई	रूप	लम्बाई	चौड़ाई	गहराई
• — — —	७ हाथ	१ हाथ	८ हाथ	• — — •	५ हाथ	३ हाथ	५ हाथ
— • — —	७ "	१ "	८ "	— • — •	६ ,,	६ ,	६ ,,
• • — —	६ "	३ "	९ "	• • — •	५ ,,	४ ,,	५ ,,
— — • —	३ "	६ "	५ "	— — • •	६ ,,	४ ,,	४ ,,
• — • —	५ "	४ "	१२ "	• — • •	३ ,,	[illegible] ,,	६ ,,
— • • —	६ "	५ "	११ "	— • • •	५ ,,	३ ,,	५ ,,
• • • —	५ "	६ "	७ "	• • • •	४ ,	४ ,,	४ ,,
— — — •	६ "	४ "	५ "	— — — —	५ ,,	३ ,,	५ ,,

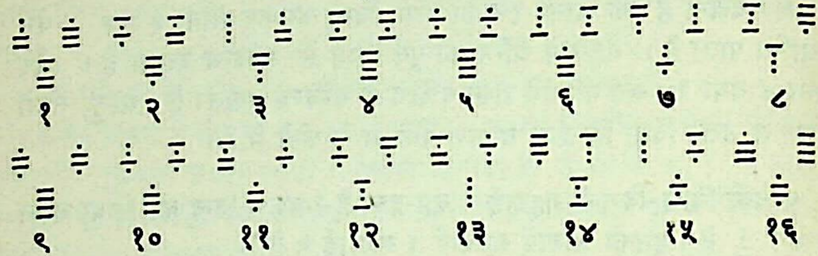
नोट—खाना १० तथा खाना में (— • • •) है, अतः यही नतीजा निकला कि यह द्रव्य इसकी स्त्री या सन्तान को मिलेगा और इसी समय या ५–६ मास बाद मिलेगा।

पञ्चम-गृही प्रश्नों का फलादेश

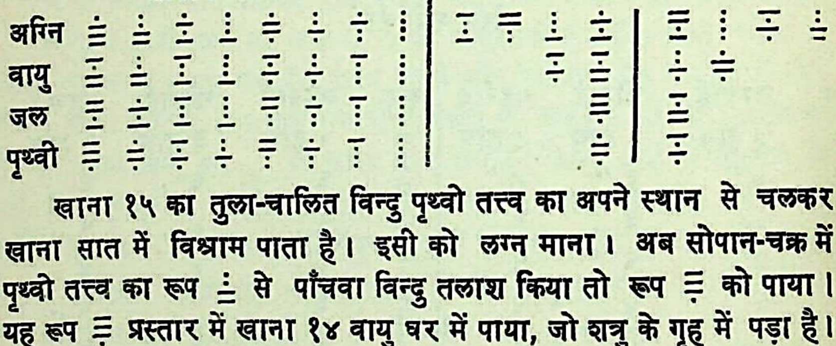
(१) मेरे भाग्य में सन्तान योग है या नहीं ?

विचारणीय गृह केवल पाँचवाँ विन्दु है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार का रूप



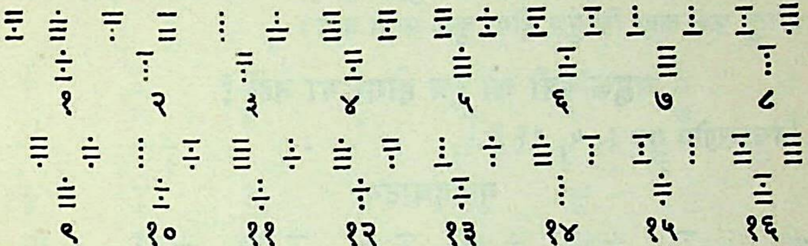
खाना १५ का तुला-चालित विन्दु पृथ्वो तत्त्व का अपने स्थान से चलकर खाना सात में विश्राम पाता है। इसी को लग्न माना। अब सोपान-चक्र में पृथ्वो तत्त्व का रूप से पाँचवा विन्दु तलाश किया तो रूप को पाया। यह रूप प्रस्तार में खाना १४ वायु घर में पाया, जो शत्रु के गृह में पड़ा है। अतः शत्रुगृही होने से विन्दु की शक्ति क्षीण पड़ रही है और लग्न से आठवें भी है तथा प्रस्तार में गुप्त रूप से भी कहीं पाया नहीं जाता है। रूप खाना १४ में है अतः खाना १४ का मालिक गृह रूप से गुणा किया तो रूप हुआ इस गुणनफल में पृथ्वी तत्त्व का विन्दु भी मर गया।

अस्तु, परिणाम यह हुआ कि प्रश्नकर्ता के भाग्य में सन्तान योग नहीं है। कारण, पंचम विन्दु प्रत्येक भाँति से निर्बल है।

(२) मेरे पुत्र होगा या नहीं ?

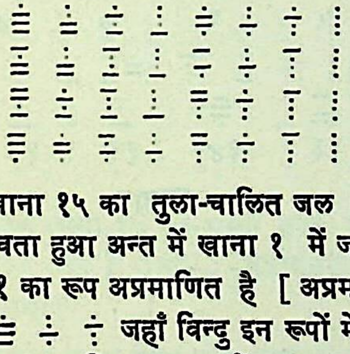
विचारणीय गृह १, ५, ११ हैं।

गुप्तोद्घाटन

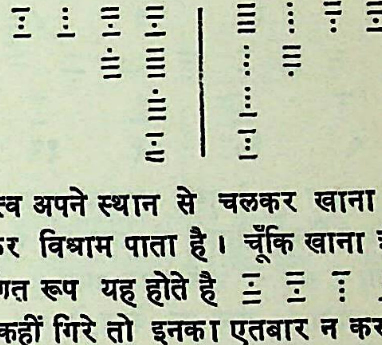


सोपान चक्र

अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी



प्रस्तार



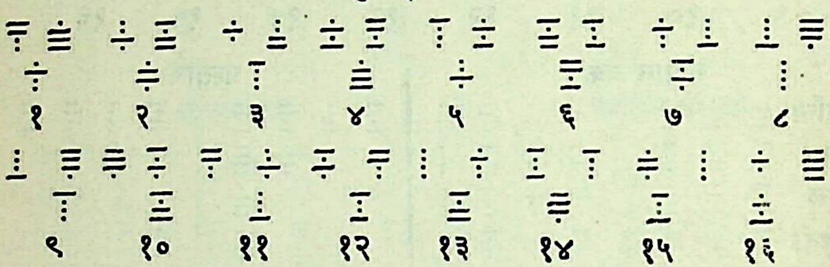
खाना १५ का तुला-चालित जल तत्त्व अपने स्थान से चलकर खाना ३ में पहुँचता हुआ अन्त में खाना १ में जाकर विश्राम पाता है। चूँकि खाना ३ी तथा १ का रूप अप्रमाणित है [अप्रमाणित रूप यह होते है जहाँ विन्दु इन रूपों में कहीं गिरे तो इनका एतबार न करन चाहिए। प्रमाणित रूप यह हैं । रूप तथा भा माने गये हैं।] इसी कारण खाना २ के रूप को लग्न कायम किया। चूँकि जल-तत्त्व का विन्दु चला है इसी कारण सोपान-चक्र के रूप को लग्न माना। इसका पञ्चम विन्दु रूप है। यह खाना १ में तथा खाना ५, ६ में मौजूद है—खाना १ व ५ तो अग्नि गृह होने के कारण शत्रुगृही है तथा छठा गृह उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है गुप्त रूप में यह खाना ४ मित्रगृही के नाते कुछ बल अपना पा रहा है। ४० प्रतिशत ओसत पड़ रही है। अतः फल निकला कि पुत्र होगा पर

उपाय करना आवश्यक है। इसमें आचार्य "सुर्खाव" का कथन है कि यदि पञ्चम विन्दु की तकरार हो अर्थात् पञ्चम विन्दु पुनरुक्त केन्द्र में हो यानी १, ४, ७, १० में और शुभ रूप में हो तो पुत्र पैदा हो। यदि विन्दु खाना २,६, १०, १४ में होतो अधिक आयु होने पर पुत्र पैदा हो। अन्य गृहों में हो तो निराशा हो—इस प्रस्तार में पाँचवाँ विन्दु खाना १ में तथा खाना ५, ६ में भी है। अस्तु, फल कहा कि पुत्र होगा कुछ समय बाद।

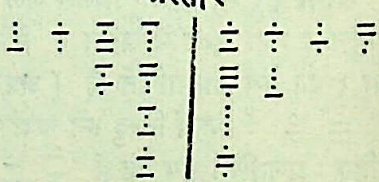
अमुक स्त्री को पुत्र होगा या नहीं ?

विचारणीय गृह १, ५, ११ हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



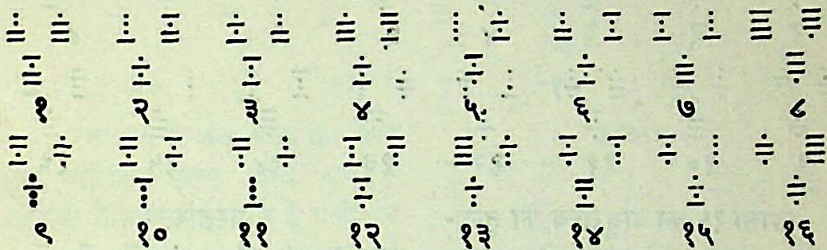
खाना १५ से पृथ्वी तत्त्व का तुलाचालित विन्दु खाना ३ में होकर अंत में खाना १ रूप ⩧ में विश्राम पाता है।

खाना १ लग्न का केन्द्र में रूप ⩧ है इसका पंचम रूप ≐ है। जो प्रस्तार में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ६ में वैठा है। उत्कृष्ट मित्रक्षेत्रा है। मध्यम बल रखता है तथा ११ वाँ विन्दु अग्नि तत्व का रूप ÷ है जो खाना २ में मित्रक्षेत्री तथा गुप्त रूप से खाना ५ में स्वक्षेत्री है। बलवान् है अतः फल होगा कि इस स्त्री के सन्तान होगी—मगर देर में। कारण, रूप ÷ का वर्तमान रूप ÷ शत्रुक्षेत्री खाना ७ जलगृह में है और गुप्तरूप से खाना १३ में भी है अतः फल हुआ कि कुछ काल बाद इस स्त्री के औलाद होगी।

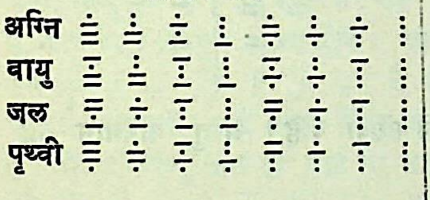
(४) मेरे सन्तान (पुत्र या कन्या) पैदा होगी या नहीं ?

विचारणीय गृह विन्दु पाँचवाँ, पुनरुक्त प्रस्तार में खाना ११, १४ या १६ में हो तो सन्तान योग होगा अन्यथा नहीं

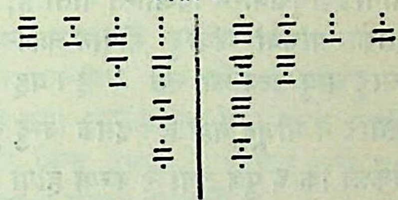
गुप्तोद्‌घाटन



सोपान-चक्र



प्रस्तार



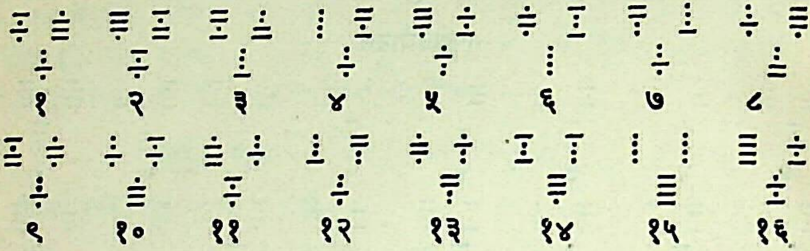
चूँकि खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का तुला-चालित विन्दु पंचम भाव में विश्रान्ति पाता है। रूप ⁞ अप्रामाणिक है। अस्तु, खाना १५ के रूप ⁞ को लग्न माना।

इसका पंचम विन्दु सोपानचक्र के अनुसार रूप ⁞ को पाया, जो प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १० में बैठा है। यह शत्रुक्षेत्री है। यवनाचार्य सुर्खाव ने लिखा है कि इस प्रकार के प्रश्न में पंचम विन्दु खाना ११, १४ या १६ में हो तो आशा है और यदि पुनरुक्त रूप प्रस्तार में न हो तो आशा न करें। इस प्रस्तार में पंचम विन्दु रूप ⁞ प्रकट नहीं है। गुप्त रूप से है तो शत्रुक्षेत्री है। पुनरुक्त ११, १४ या १६ में भी नहीं है।

अस्तु, अन्तिम निर्णय यह निकला कि सन्तान की कोई आशा नहीं है।

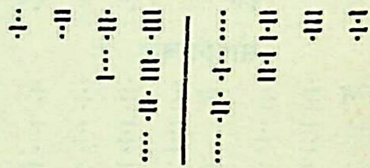
(५) मेरे कितने पुत्र होंगे ?

गुप्तोद्घाटन



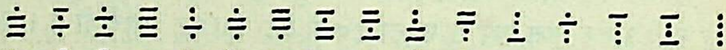
खाना १५ का वायु तत्त्व का तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ४ शत्रुक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है, इसका पाँचवाँ विन्दु सोपान-चक्रानुसार वायु तत्त्व का रूप ÷ है। यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसके विन्दु को संख्या ६ है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि ६ पुत्र तथा २ कन्या होंगी।

प्रस्तार



नोट—पंचम भाव का रूप ≡ स्त्री लिंग है और पुनरुक्त खाना २ में है, इसी ध्येय से २ कन्या कहा गया है।

अंक चक्र

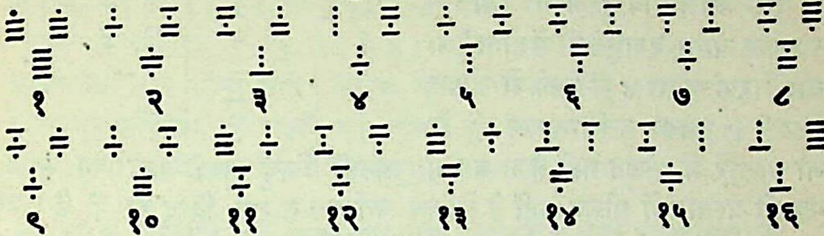
नाम रूप 

संख्या ७ ६ ६ ८ ५ ६ ७ ७ ७ ६ ६ ५ ५ ५ ८ ४

(६) मेरे पुत्र अधिक होंगे या कन्या ?

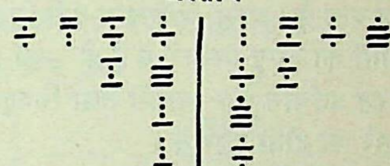
विचारणीय गृह पंचम विन्दु का रूप यदि अकेला है यानी नक्की है तो पुत्र और यदि जोड़ा जुत्फ का है तो कन्या होगी।

गुप्तोद्घाटन



खाना १९ से जल तत्त्व का विन्दु तुला-चालित सप्तम भाव रूप ≑ स्वक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। सोपान चक्रानुसार जल तत्त्व के रूप ≑ का पंचम विन्दु ≡ है। यह रूप नर का है, अतः कहा कि पुत्र अधिक होंगे। आचार्य सुर्खाव ने इस प्रश्न के उत्तर में रूप ≡ ≡ ≡ ≡ ≡ ⁝ ÷ ÷ को नर माना है अर्थात् तीन विन्दु या १ पाई अथवा तीन पाई व एक विन्दु वाले रूप पुरुष-वाचक से सम्बन्ध रखते हैं। और दो विन्दु तथा दो पाई या चारों विन्दु अथवा चारों पाई वाले रूप जैसे ≑ ≐ ≡ ≑ ≑ ≐ ≡ ⁝ कन्या से संबन्ध रखते हैं।

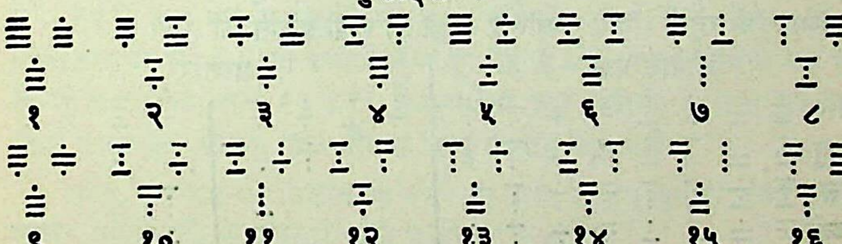
प्रस्तार



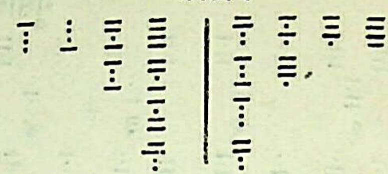
(७) सन्तान अभाव में दोष पुरुष का है अथवा स्त्री का ?

विचारणीय गृह १, पुरुष का तथा ८ स्त्री का है। जिधर कमजोरी हो उसी का दोष कहे।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



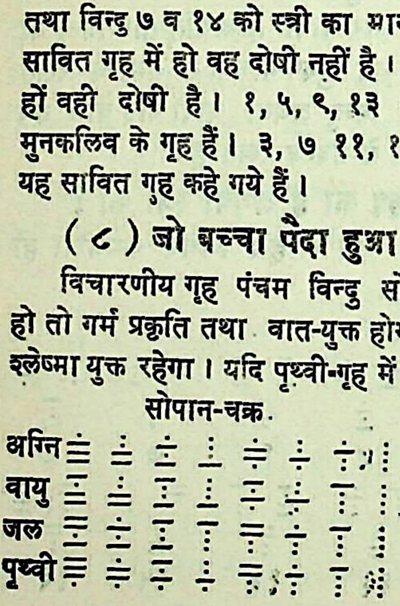
चूँकि खाना १५ पृथ्वी तत्त्व से तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना २ शत्रुक्षेत्री में होता हुआ बाईं तरफ खाना ४ में स्वक्षेत्री होकर बैठा है। इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी तत्त्व का ÷ है, यह भी प्रस्तार में मौजूद नहीं है लेकिन वर्तमान आठवें विन्दु का ⁝ है। जो खाना ४ में स्वक्षेत्री, खाना १५ में मित्रक्षेत्री तथा १६ में स्वक्षेत्री है। बलवान् है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि इसमें दोनों का दोष है, कारण दोनों का विन्दु प्रस्तार में है ही नहीं। अष्टम का विन्दु तो प्रस्तार में है नहीं वरन् वर्तमान रूप स्वक्षेत्री तथा मित्रगृही है। यदि एक का भी विन्दु होता तो दूसरे को दोषी ठहराते।

नोट—अन्य आचार्यों का मत है कि विन्दु १ तथा ८ को पुरुष का तथा विन्दु ७ व १४ को स्त्री का मानते हैं। अस्तु, जिसके विन्दु दाखिल व सावित गृह में हो वह दोषी नहीं है। जिसके विन्दु खारिज तथा मुनकलिव में हों वही दोषी है। १, ५, ९, १३ गृह खारिज के हैं और २, ६, १०, १५ मुनकलिव के गृह हैं। ३, ७ ११, १५ दाखिल गृह हैं और ४, ८, १२, १६ यह सावित गृह कहे गये हैं।

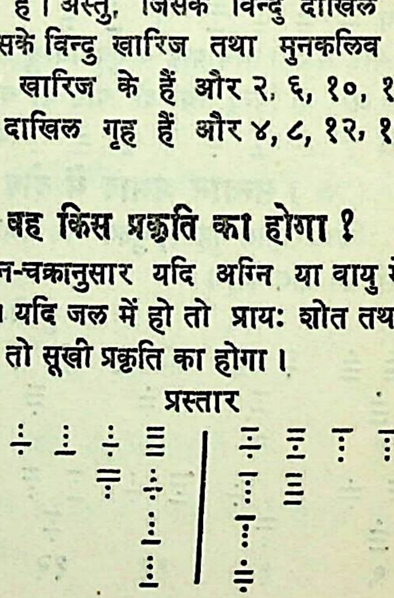
(८) जो बच्चा पैदा हुआ है वह किस प्रकृति का होगा ?

विचारणीय गृह पंचम विन्दु सोपान-चक्रानुसार यदि अग्नि या वायु में हो तो गर्म प्रकृति तथा वात-युक्त होगा। यदि जल में हो तो प्रायः शीत तथा श्लेष्मा युक्त रहेगा। यदि पृथ्वी-गृह में हो तो सूखी प्रकृति का होगा।

सोपान-चक्र.



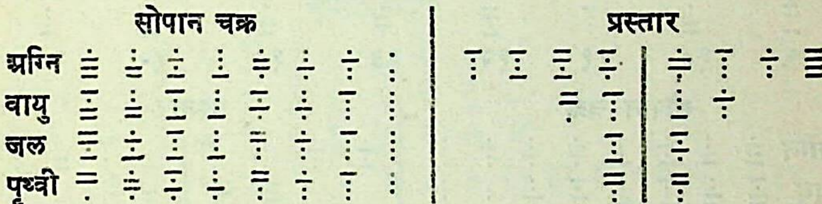
प्रस्तार



चूंकि खाना १५ से पृथ्वी तत्त्व का तुला-चालित विन्दु चौथे गृह स्वक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। इसका पंचम विन्दु सोपान-चक्रानुसार पृथ्वी तत्त्न का रूप ⁝ है जो खाना १, २, १०, १३ में है। इसी कारण फल कहा कि बच्चे की प्रकृति गर्म तथा खुश्क होगी। कारण, पृथ्वी तत्त्व का विन्दु खुश्की लाता है और अग्नि गृह का विन्दु गर्म प्रकृति का होता है। वायु विन्दु खाना २, १० का एतबार नहीं किया, क्योंकि ये तो शत्रुगृह के कारण निर्बल पड़ गये हैं।

(९) बच्चे को माता का दूध हितकर है या अन्य का ?

विचारणीय गृह विन्दु प्रथम माता का है और विन्दु तीसरा अन्य का। इन दोनों में जो बलवान् हो उसी का दूध हितकर होगा।



खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चल कर खाना २ शत्रु-क्षेत्री में होता हुआ पुनः बाईं तरफ चलकर खाना४स्वक्षेत्र में विश्रान्ति पाता है। यद्यपि खाना ५ में भी पहुँचता है मगर चतुर्थ गृह स्वक्षेत्री के नाते बलवान् पाया गया—इसी को लग्न विन्दु माना।

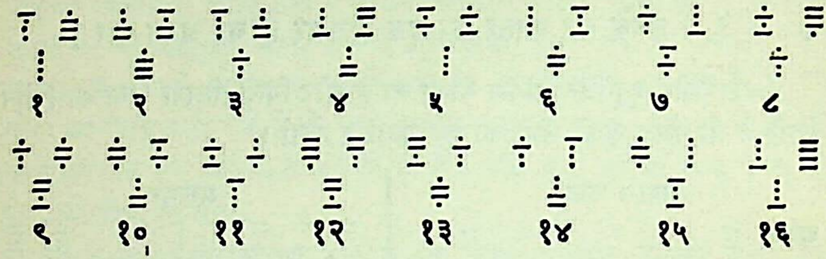
(१) ÷ स्वक्षेत्री होने से बलवान् है इसका वर्तमान रूप ÷ है जो खाना ५ व १३ में सम बल पा रहा है और शुभ दृष्टि भी रखता है। तीसरा विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है और इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो प्रस्तार में खाना १५ व १६ में मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री है अतः कुछ बल पाया जाता है। कारण, मुख्य तीसरा विन्दु प्रस्तार में है नहीं।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि बच्चे को माता का दूध हितकर होगा। इसी प्रकार अपनी बुद्धि के अनुसार अन्य प्रश्नोत्तर निकालें।

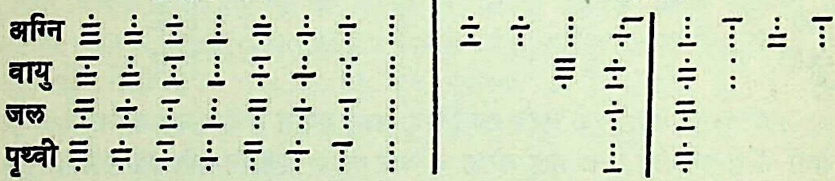
(१०) बच्चा जो पैदा हुआ है, वह भाग्यशाली है या भाग्यहीन ?

विचारणीय गृह १, ५ हैं तथा विन्दु ५, ९, ११ के बलाबल से फलादेश निकाला जाता है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में होता हुआ पुनः दाहिनी तरफ चलकर पंचम भाव में विश्रान्ति पाता है। चूँकि यह रूप प्रमाणित है [अप्रमाणित रूप ये हैं— ≐ ≡ ⁝ ⁝ ÷ ÷ ≐ ≡ जब विन्दु इन रूपों में विश्राम पायेगा तो अप्रमाणित माना जायेगा और जब विन्दु ÷ ÷ ÷ ≐ ÷ ⁝ इन रूपों में पड़ जायेगा तब प्रमाणित माना जायेगा] पंचम भाव रूप ÷ को लग्न माना। इसका वर्त्तमान रूप ÷ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है और न गुप्त रूप से ही पाया जाता है वरन् स्वयं पंचम भाव में सम बल पा रहा है। इसका पंचम विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ⁝ है जो खाना ३ में मित्रक्षेत्री है तथा गुप्त रूप से भी खाना ११ में,

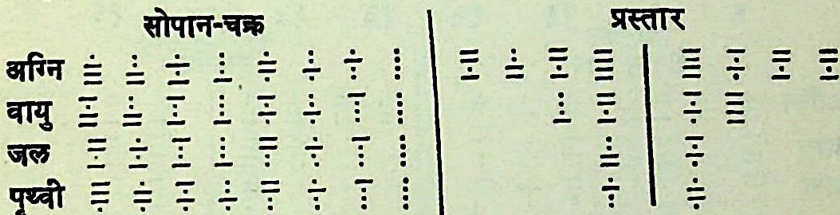
मित्रक्षेत्री है। बलवान् है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि बच्चा जो जन्मा है, वह भाग्यशाली है।

नोट—पाश्चात्त्य देश वाले इस प्रकार के प्रश्नोत्तर का १ व ५ के अतिरिक्त विन्दु ५, ९ तथा ११ के बलाबल से फलादेश निकालते हैं तथा विन्दु १, ५, १४ के बलाबल से बच्चे के माता-पिता का हाल देखा जाता है कि यह बच्चा माता-पिता को सुखी बना सकेगा या नहीं?

(११) पुत्र से जो आशा रखते हैं वह पूरी होगी या नहीं?

विचारणीय गृह १, ५, ११ हैं।





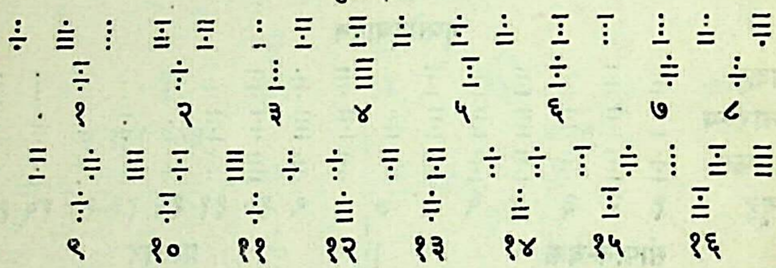
चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का अपने स्थान से चलकर तीसरे गृह मित्रक्षेत्री में आकर रुकता है। इसी को लग्न माना। यह १ मित्रक्षेत्री है, बलवान् है। इसका वर्तमान रूप ÷ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है, वरन् गुप्त रूप से खाना १२ में स्वगृही और बलवान् है। ७५ प्रतिशत बल मिलता है। इसका ÷ पुनरुक्त रूप खाना १० व १३ में निर्गम गृह में बैठा है और स्वयं खाना ३ में दाखिल (आगम) गृह में है। इसका पंचम विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप

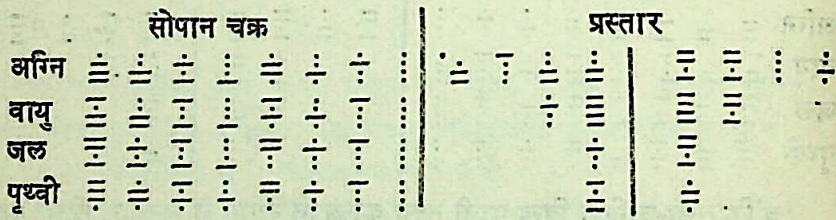
⁝ है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। जो कमजोरी का कारण है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि बच्चे से आशापूर्ति में विघ्न होगा। ११वाँ विन्दु आशा का है। यह अग्नि तत्त्व का रूप ⁝ है, जो खाना १२ में मध्यम बल रखता है। इसका वर्तमान रूप अग्नि का ⁝ है, जो खाना १६ में तथा गुप्त रूप से खाना १४ में मित्रक्षेत्री है। मध्यम बल मिल रहा है। अस्तु, फल होता है कि आशा मध्यम पूरी होगी।

(१२) मेरा पुत्र जो कहीं चला गया है वह मिलेगा या नहीं ?

विचारणीय गृह १ व ५ है।

गुप्तोद्घाटन





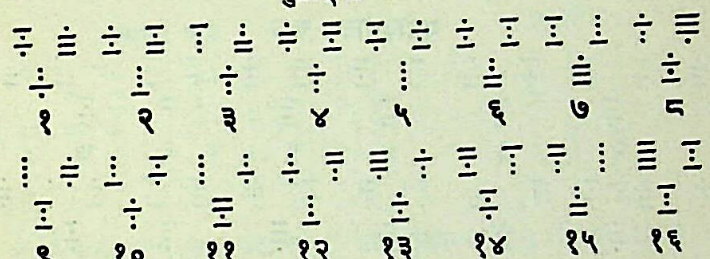
चूँकि खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ७ में विश्रान्ति पाता है। यह मित्रक्षेत्री है इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो प्रस्तार में खाना २ में मौजूद है। शत्रुक्षेत्री है और अशुभ दृष्टियुक्त है। अस्तु, बल मध्यम मिल रहा है। इसका पंचम विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ⁝ है, जो प्रस्तार में तो नहीं है मगर गुप्त रूप से खाना १ व १० में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री तथा शत्रु-

क्षेत्री में है। वर्तमान इसका पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है, जो खाना एक में सम बल पा रहा है। दोनों विन्दु पूर्ण बल नहीं दे रहे हैं। अस्तु, परिणाम यही निकला कि पुत्र से मेल की शीघ्र आशा नहीं पाई जाती है। इस प्रकार के विचार में प्रथम तथा पंचम विन्दु का बलाबल देखना चाहिये और उसी से अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर देना चाहिये।

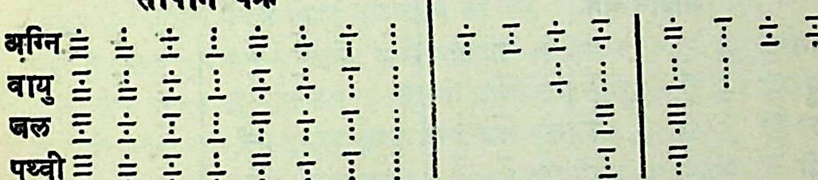
(१३) अमुक व्यक्ति के सन्तान है या नहीं ?

विचारणीय गृह १, ५ हैं।

गुप्तोद्घाटन

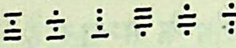


सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु ÷ पृथ्वी तत्त्व का अपने स्थान से चलकर खाना १ ÷ में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना इसका पंचम विन्दु पृथ्वी तत्त्व का ⁝ कवि है। यह प्रस्तार में खाना ३ में मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु रूप ⁝ खाना १ व ११ में मौजूद है। उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री विन्दु है। बल पा रहा है। अस्तु, ज्ञात होता है कि इसके सन्तान जरूर है। कारण पंचम विन्दु मय वर्तमान रूप के मौजूद है। आचार्य सुर्खाव ने यह भी लिखा है

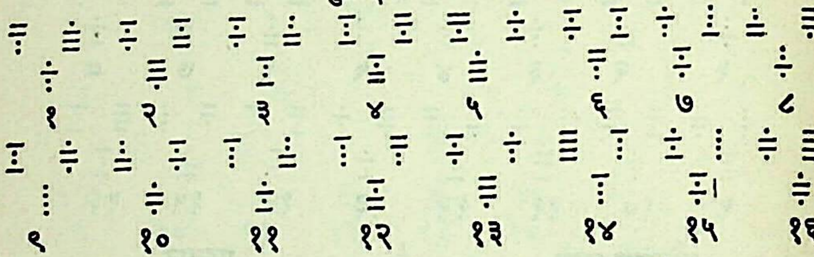
कि पाँचवाँ विन्दु यदि आगम (दाखिल) या स्थिर (साबित) तत्त्व का हो तथा पुनरुक्त (तकरार) भी आगम या स्थिर गृह में हो तो सन्तानवाला है। यदि पुनरुक्त ताक (नक्की) गृह में हो तो नर, यदि जुत्फ (जुट) गृह में हो तो कन्या समझना चाहिये। यदि पंचम विन्दु का रूप क्रूर ग्रह का हो तो पुत्र को अन्य वीर्य से उत्पन्न जाने, यदि शुभ ग्रह हो तो अपने वीर्य से समझे।

क्रूर ग्रहों के रूपों  हैं, शेष शुभ ग्रह के रूप हैं।

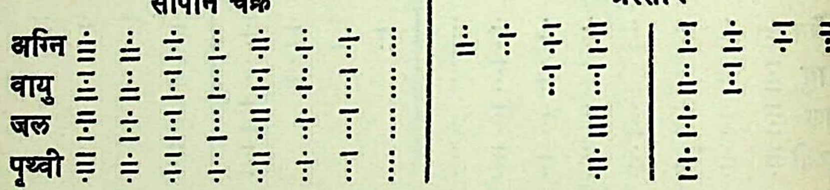
(१४) मेरा पुत्र जो जन्मा है वह दीर्घायु है कि नहीं ?

विचारणीय गृह १,८ हैं।

गुप्तोद्घाटन चक्र



सोपान चक्र   प्रस्तार

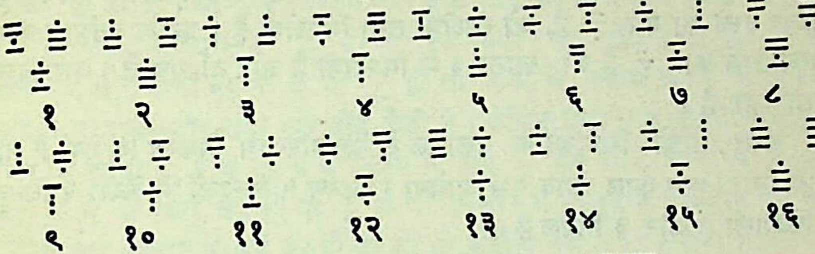


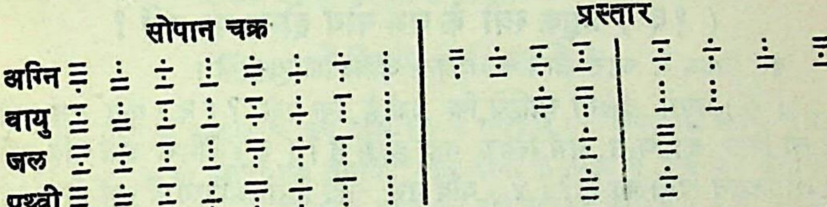
चूँकि तुला चालित जल तत्त्व का विन्दु अपने से चलकर खाना शत्रुक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न का स्थान है। इसका आठवाँ विन्दु जल तत्त्व का रूप  है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु रूप  है, जो खाना १ जल तत्त्व में शत्रुक्षेत्री है, अतः निर्बल है। अस्तु, दीर्घायु के कोई चिह्न नहीं पाये जाते हैं। इस प्रकार के विचार में विन्दु १ तथा ८ के बलाबल से अपनी बुद्धि के अनुसार जवाब देना चाहिये।

(१५) अमुक स्त्री गर्भवती है या नहीं ?

विचारणीय गृह-खाना ५, ६, ७, ११ हैं, बलाबल देखकर ज्ञान लगावें।

गुप्तोद्घाटन





चूँकि खाना १५ का जल तत्त्व का तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ५ शत्रुक्षेत्री में आकर रुकता है। यही लग्नगृह माना। खाना १ निर्बल है। इसका पंचम विन्दु जल तत्त्व का रूप है। यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना ३ में स्वक्षेत्री तथा खाना ९ में शत्रुक्षेत्री पाया जाता है। इसका वर्तमान रूप है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। अस्तु, कुछ बल क्षीण पड़ रहा है। इसका छठा विन्दु जल तत्त्व का रूप है, जो प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं पाया जाता है। इस छठे विन्दु का वर्तमान रूप है, जो खाना १ में शत्रुगृही होने के कारण निर्बल हो रहा है।

इसका सप्तम विन्दु जल तत्त्व का रूप है, जो खाना १ में शत्रुक्षेत्री निर्बल है। इसका वर्तमान रूप जल का है, जो खाना ७, १५ में स्वक्षेत्री के नाते बलवान् है, तथा खाना १४ में सम बल पा रहा है। अर्ध शत्रुदृष्टि तथा पूर्ण दृष्टि रखता है, अतः कुछ बल मिल रहा है।

इसका ११वाँ विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है, जो प्रस्तार में तो मौजूद नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना १४ शत्रुक्षेत्री होकर निर्बल हो रहा है। वर्तमान रूप इसका ÷ है, जो खाना ११ में मित्रक्षेत्री तथा खाना ८ में स्वक्षेत्री है और दृष्टि भी पड़ती है, अतः कुछ बल मिल रहा है। इसका १२वाँ विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है, जो स्वक्षेत्री तथा मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वीतत्त्व का ÷ है जो खाना ३ में मित्रक्षेत्री है और दृष्टियुक्त है। अतः बल मिल रहा है।

अस्तु, पाँचों विन्दुओं के बलाबल से यह परिणाम निकला कि गर्भ है तो नहीं मगर कुछ काल बाद गर्भ आवेगा। कारण ५ विन्दुओं में केवल २ बिन्दु शक्तिशाली हैं और ३ निर्बल हैं।

(१६) अमुक स्त्री के गर्भ-योग होगा या नहीं ?

इस विषय में चार बातों का देखना आवश्यक होता है।

(१) प्रथम देखना चाहिये कि गर्भ है कि नहीं ? (२) यदि गर्भ नहीं है तो किस कारण से गर्भ स्थिर नहीं होता है ? (३) तीसरी बात यदि गर्भ है तो कितने दिनों का है ? (४) यदि गर्भ नहीं है तो भविष्य में गर्भ होगा या नहीं ? इसी नियत से रमलज्ञ को चाहिये कि पासा डालकर प्रस्तार बनाये।

१—गर्भ है की नहीं ?

यदि प्रस्तार में रूप शुभ आगम (शुभ दाखिल) या जल के रूप अधिक हों अथवा प्रस्तार के खाना ६ में रूप निर्गम यानी खारिज रूप हों और कोई जल का रूप या ÷ खाना ५ में हों, या रूप ÷ व ÷ प्रस्तार में मौजूद हों, या खाना ५ व ६ के गुणनफल से शुभ रूप हो और ÷ खाना ११ में हो, या खाना ५ व ६ में शुभ रूप हों, या खाना ५ व ६ में ÷ या ⁝ हो, अथवा खाना १ व ११ में शुभ रूप हों, या खाना ६ में ⁝, ⁝, ⁝ में से कोई रूप हो, अथवा खाना १ से ५ तक किसी में ÷ ÷ ÷ ÷ ÷ में से कोई रूप हो तो गर्भ होता है, यदि यह रूप न हो तो नहीं होता।

२—कारण गर्भ न रुकने का

यदि खाना ६ में ÷ या ÷ में से कोई रूप हो और पुनरुक्त (तकरार)

खाना २ में हो अथवा खाना २ व ६ में दोनों जगह पर यह रूप हों, तो कहना चाहिये कि प्रेतबाधा के कारण गर्भ स्थिर नहीं हो पाता है। यदि ÷ खाना ६ में हो और पुनरुक्त खाना ३ में भी हो तो गर्भपात योग हो अथवा प्रेत-बाधा से गर्भाशय का छिद्र टेढ़ा हो गया हो, यदि खाना ५ व ६ दोनों में रूप ⋮ हो अथवा खाना ६ में ≘ हो तो रक्त-विकार का दोष होता है। यदि खाना ५ व ६ दोनों गृह में ≡ या ⩦ हों तो बाँझ के लक्षण कहने चाहिये। अथवा पुरुष कमजोर तथा स्त्री प्रौढ़ होती है। लेकिन ऐसा तब कहना चाहिए जब कि खाना १, ९ व १५ में से किसी में रूप ÷ हो और खाना ५ में ≡ या ⩦ में से कोई रूप हो या ≘ व ÷ प्रस्तार में मौजूद न हो और ≡ या ⩦ के रूप प्रस्तार में कई जगहों पर हों तो कदापि गर्भ न हो सकेगा।

३—गर्भ कितने दिनों का है ?

ऐसी दशा में प्रस्तार के रूप २ व ११ के गुणा से एक रूप प्राप्त करें। तथा खाना ६ व १५ का दूसरा रूप बनायें। फिर दोनों के गुणा से एक रूप बनायें यदि सही रूप ≐ या ≑ हो तो १ मास का गर्भ कहना चाहिये। यदि ÷ या ⁝ हो तो २ मास का गर्भ होगा। यदि ≡ या ⩦ हासिल हो तो ३ मास का गर्भ होगा। यदि रूप ⋮ या ≘ हो तो ४ मास का गर्भ कहना चाहिये। यदि ≐ या ≑ हासिल हो तो ६ मास का गर्भ होगा। यदि ≘ या ÷ हो तो सात मास का गर्भ होगा। यदि ÷ या ≡ हो तो ८ मास का गर्भ कहना चाहिये। यदि ÷ या ⋮ रूप हो तो ९ मास का कहना चाहिये।

यदि इस प्रस्तार में खाना ६ व ११ में ÷ हो तो बच्चा शीघ्र पैदा होने का योग पाया जाता है। यदि प्रस्तार के खाना ७ में ÷ और खाना ५ में ≘ हो तो गर्भ २ मास का होगा। यदि ≘ खाना ५ में हो और ÷ खाना १२ में हो तो प्रसव शीघ्र होने का योग बन रहा है। यदि खाना ५ में ÷ हो और ६, ७, ११, १२ में किसी में भी रूप ≘ हो और खाना ८ में अशुभ खारिज रूप हो तो गर्भ को धोखा होता है अर्थात् गर्भपात का योग बन जाता है। अथवा ९ मास के बाद १० या ११ मास पर बच्चा होता है।

४—आगामी गर्भ-धारण की आशा

प्रस्तार के खाना ५, ६, ९, ११, या १२ में किसी में ÷ हो, या प्रस्तार के कुल विन्दु १ से १६ तक की संख्या विषम (ताक) हो, या खाना ६ व १५ में ⁝ ⁝ में से कोई हो, अथवा खाना १ व ७ के गुणनफल तथा १ व ८ के गुणनफल के दोनों रूपों का गुणनफल ÷ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ में से कोई हो, या ÷ खाना ५ व १ में हो तो एक वर्ष के अन्दर गर्भ धारण हो जायेगा। यदि प्रस्तार के खाना ५ व ६ में ⁝ हो तो गर्भ तो नहीं वरन् वायु का गोला रक्त मांस का है। यदि प्रस्तार में जल का रूप अधिक हो और खाना ६ में शुभ दाखिल रूप हो तो गर्भ गुप्त रूप से है। यदि खाना ६ में दाखिल रूप न हो और जल के रूप यानो ÷ या ⁝ या ⁝ या ⁝ अधिक हों तो मासिक विकार हो गया है। यदि रूप ⁝ खाना ५ व ६ में हो तो गर्भपात का योग बनेगा।

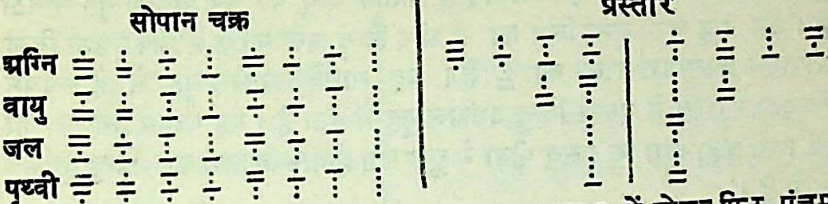
विन्दु चाल के अनुसार तुला-चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उसी को लग्न मानकर उसका छठा विन्दु दो गृहों में—जल या पृथ्वी के गृह में हों अथवा पाँचवाँ विन्दु का छठा दाखिल या साबित हो और दाखिल तथा साबित गृहों में हो तो गर्भ होता है, अन्यथा नहीं होता है।

छठा विन्दु देखें, यदि यह दो जगह अग्नि के गृहों में हों तो रक्तदोष से गर्भ टिकता नहीं है। यदि वायु गृह में दो जगह हों तो मांस का पिंड बन गया है गर्भ नहीं है। यदि जल के गृहों में दो जगह हो तो चरबी अधिक होती है। यदि पृथ्वी गृह में २ जगह हो तो गर्भाशय का दोष है।

छठें विन्दु का रूप जिस गृह से सम्बन्ध रखता है उसी से सम्बन्धित दिनों के अनुसार गर्भ हुआ करता है।

तुला-चालित विन्दु जहाँ विश्रान्ति पावे उससे पाँचवां, छठा, सातवाँ, ११ वाँ तथा बारहवाँ विन्दु के बलाबल के अनुसार तथा उनके वर्तमान विन्दुओं के बलाबल से भविष्य कहा जाता है। यदि सभी बलवान् हों तो १ वर्ष के भीतर गर्भ धारण हो। यदि तीन बलवान् हों तो ३० वर्ष के बाद। यदि दो बलवान् हों तो ४० वर्ष बाद गर्भ धारण योग पड़ेगा। यदि सभी विन्दु निर्बल हों तो कभी गर्भ न हो।

उपर्युक्त चारों बातों का विचार करने के बाद प्रस्तार बनाया—



तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चल कर खाना ९ में होकर फिर पंचम भाव में विश्रान्ति पाता है। इनमें का वायु विन्दु बलवान् है। सोपान-चक्रानुसार छठा विन्दु गर्भ का है, जो खाना १० व १४ में स्वक्षेत्री बलवान् है। इसका वर्तमान रूप है, जो खाना ३ दाखिल गृह में है। अस्तु, कहा गया गर्भ है। प्रस्तार के अन्दर रूप दाखिल जल का अधिक है और प्रस्तार में मौजूद है अतः कहा गर्भ जरूर है—और खाना ५, ६ में दाखिल तथा साबित रूप, तथा खाना १ व ११ में शुभ साबित तथा शुभ दाखिल रूप है और खाना ५ में रूप है। अस्तु, इतने सबूत मिले कि गर्भ है जरूर। अब देखना है कि गर्भ कितने दिनों का है—प्रस्तार का खाना २ व ११ के गुणा से रूप होता है तथा खाना ६ व १५ के गुणा से रूप पैदा होता है। इन दोनों के गुणा से से रूप पैदा होता है। यह शुक्र का रूप है जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। अस्तु, केवल २ मास का गर्भ पाया जाता है।

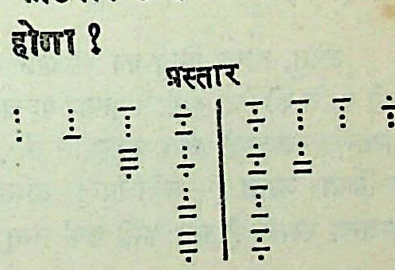
तुला-चालित विन्दु में बलवान् पाया गया। इसी को लग्न मानकर इसका छठा विन्दु वायु का पाया। यह चन्द्रमा का रूप है इसकी अवधि ४ मास की है।

(१७) गर्भवती का प्रसव कठिनाई से होगा या सरलता-पूर्वक होगा ?

विचारणीय गृह—१, ६ हैं।

यह यदि खारिज व मुनकलिब गृह में हो तो सुखपूर्वक अन्यथा कष्ट-पूर्वक प्रसव हो।

प्रस्तार



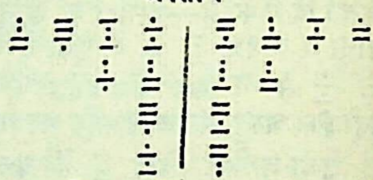
चूँकि तुला-चालित विन्दु अपने

स्थान से चलकर तीसरे गृह ⁝ में होकर खाना १ में विश्रान्ति पाता है इसमें दूसरे गृह में बैठा रूप ⁝ बलवान् है क्योंकि वायु का रूप वायु के गृह में बैठा है। यह गृह चर मुनकलिब का है और विन्दु जल का है। इसका छठा विन्दु सोपान-चक्रानुसार जल का ⁝ है। यह सातवें दाखिल गृह में है—प्रथम विन्दु चर तत्त्व में दूसरा विन्दु दाखिल गृह में बैठा है। यह मध्यम बल पा रहा है, अतः कहा गया कि प्रसव पीड़ा में कुछ कष्ट होगा— कारण छठा विन्दु दाखिल गृह में है।

(१८) बच्चा दिन को पैदा होगा या रात्रि को तथा किस साइत और किस लग्न में होगा ?

विचारणीय गृह—लग्न का रूप यदि अग्नि या वायु में पड़े तो दिन को पैदा होगा और यदि जल या पृथ्वी में पड़े ता रात्रि को होगा।

प्रस्तार



चूँकि खाना १५ पृथ्वी तत्त्व का चालित विन्दु सप्तम भाव ⁝ में जाकर रुका है। यहाँ लग्न का गृह माना। चूँकि यह विन्दु तथा रूप पृथ्वी का है अतः कहा गया कि प्रसव रात्रि को होगा—कारण, यही कायदा है कि यदि लग्न का विन्दु अग्नि या वायु के गृह में पड़ जावे तो बच्चा दिन को पैदा होगा और यदि जल या पृथ्वी में रुके तो रात्रि को होगा।

अस्तु, ताला विन्दु का रूप शनि का है, अतः कहा गया कि बच्चा शनिवार की रात्रि को पैदा होगा। इसका पञ्चम विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है, जो बृहस्पति से सम्बन्ध रखता है अतः बृहस्पति की साइत होगी। लग्न का निर्माण नवें विन्दु से किया जाता है—नवाँ विन्दु अग्नि तत्त्व का रूप ⁝ है। यह कर्क राशि से सम्बन्ध रखता है अतः इसी कर्क लग्न तथा आर्द्रा नक्षत्र में बच्चा पैद होगा।

नक्षत्र-ज्ञान चक्र

मूल, पूर्वाषाढा
अश्विनी, भरणी, कृत्तिका
मघा, पूर्वाफा. उत्तराफाल्गुनी
पुनर्वसु, पुष्य
अश्विनी भर. का यह भी रूप है
हस्त, चित्रा
उत्तराषाढा
श्रवण, धनिष्ठा
शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा
के नक्षत्र की तरह हैं
रोहिणी, मृगशिरा
उ. भा. पद, रेवती
अनुराधा, ज्येष्ठा
विशाखा, स्वाती
आर्द्रा
अश्लेषा

इसी प्रकार अन्य प्रश्नोत्तर निकालें।

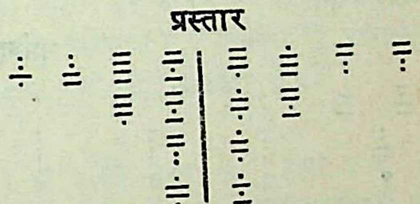
रूप	दिन का सम्बन्ध	रात्रि का सम्बन्ध
	सूर्य एतवार	बृहस्पति की रात्रि
	शुक्र शुक्रवार	मङ्गल की रात्रि
	बुध बुधवार	एतवार की रात्रि
	चन्द्रमा सोमवार	शुक्र की रात्रि
	शनि शनिवार	बुध की रात्रि
	बृहस्पति गुरुवार	सोमवार की रात्रि
	मंगल भौमवार	एतवार की रात्रि
	राहु-केतु शनिवार	मंगल की रात्रि

(१९) गर्भ में पुत्र होगा या कन्या ?

विचारणीय गृह पञ्चम विन्दु है।

तुला-चालित विन्दु खाना ५ रूप में रुका इसका पञ्चम विन्दु सोपान चक्रानुसार जल का रूप है। ग्रह बृहस्पति है और पुरुष लिंग है अतः कहा गया कि पुत्र होगा।

प्रस्तार

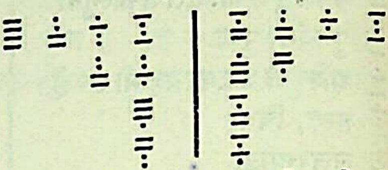


पञ्चम विन्दु के रूप को देखें, जिस ग्रह से सम्बन्धित हो उसी के अनुसार पुत्र व कन्या होने का उत्तर दें। एक आचार्य का कथन है कि विन्दु प्रथम व पञ्चम अग्नि या वायु में हो तो पुत्र, यदि जल या पृथ्वी में हो तो कन्या होगी।

(२०) अमुक प्राणी ने क्या नशा खाया है ?

विचारणीय गृह-पञ्चम विन्दु की खासियत।

प्रस्तार



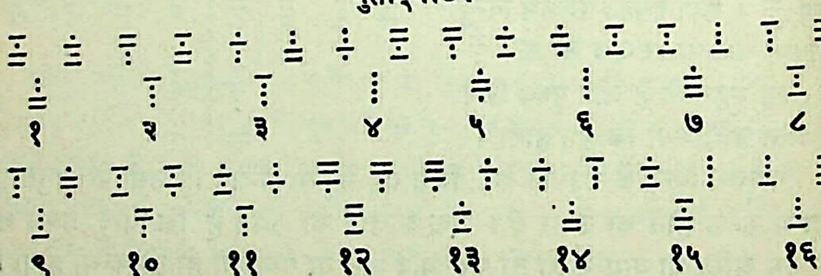
तुला-चालित विन्दु खाना २ रूप ÷ में विश्राम पाता है। इसका पञ्चम विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप ÷ है। यह ग्रह से सम्बन्ध रखता है। यदि पृथ्वी तत्त्व का विन्दु हो तो अफीम, वायु विन्दु हो तो भंग, गाँजा, चरस, ताड़ी आदि, यदि अग्नि हो तो शराब, यदि जल हो तो अन्य नशीली वस्तु खाई है। लेकिन यह रूप प्रस्तार में मोजूद नहीं है, अतः पूर्ण विश्वास खाने का नहीं है क्योंकि पाँचवाँ विन्दु यदि बलवान् हो तो नशा खाया है, यदि निर्बल हो तो नहीं खाया है। इसमें वर्त्तमान विन्दु नहीं देखा जाता है।

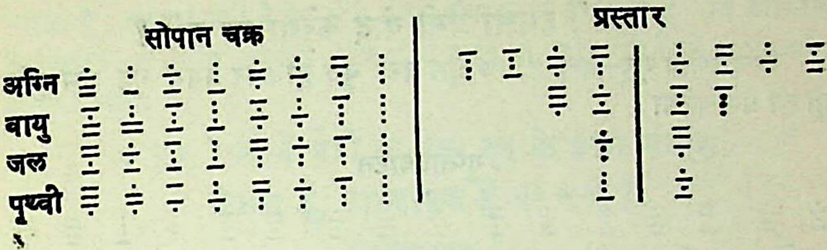
आचार्य सुर्खाव ने—शनि से अफीम, मंगल तथा सूर्य से शराब आदि, राहु केतु ÷ या ⁝ से गाँजा, चरस, भंग, ताड़ी आदि तथा अन्य ग्रह से कोई नशा सम्बन्ध नहीं रखता है—ऐसा कहा है।

(२१) इस जीवन में सुख व शान्ति मिलेगी या नहीं ?

विचारणीय गृह १, ४, ५ के विन्दु तथा वर्तमान विन्दु के बलाबल से फल कहना।

गुप्तोद्घाटन





चूँकि खाना १५ के जल तत्त्व का तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ५ रूप शत्रुक्षेत्री में विश्राम पाता है। इसका वर्तमान रूप जल विन्दु का है। जो खाना ३ में स्वक्षेत्री होने से बलवान् है तथा खाना १४ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। मध्यम बल मिल रहा है। एक जगह मित्रदृष्टि, एक जगह अर्द्ध शत्रु दृष्टि रखता है। अतः मध्यम बल पा रहा है। इसका चौथा विन्दु जो सुख-शान्ति का कहलाता है और जो जल का रूप है। यह प्रकट रूप में तो प्रस्तार में है नहीं, मगर गुप्त रूप से खाना ४ में मित्रक्षेत्री है तथा खाना ६ में मध्यम बल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप जल का प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १२ में मित्रगृही होकर बैठा है और दृष्टि मित्र का बना रहा है, अतः भीतरी शक्ति मौजूद है।

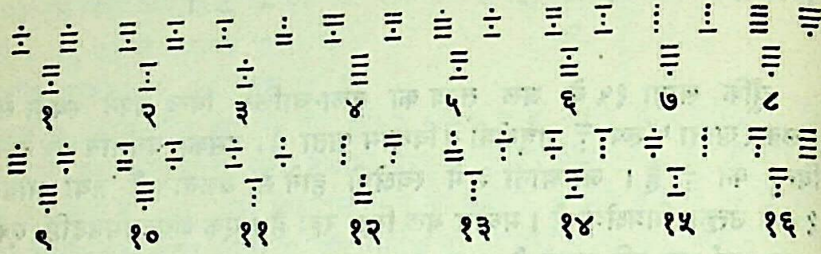
इसका पञ्चम विन्दु जल का है, जो खाना १२ में बैठा है। मित्रगृही भी है। इसका वर्तमान रूप है, जो खाना ११ व १५ में स्वक्षेत्री है और दृष्टि सम है। बल पूर्ण मिल रहा है, अतः परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता को सुख-शान्ति मिलेगी। कारण, १, ४, ५ तीनों विन्दु बलवान् हैं।

अन्य विधि—प्रस्तार के खाना १ व ५ को गुणा करें तथा १ व ११ को गुणा करें, दोनों को पुनः आपस में गुणा करें। यदि यह गुणनफल शुभ दाखिल हो और शुभ साबित हो तो सुख-शान्ति प्राप्त हो और यदि शुभ मुनकलिब या खारिज हो तो शान्ति न मिले। यदि अशुभ दाखिल या अशुभ साबित हो तो भी शान्ति न मिले।

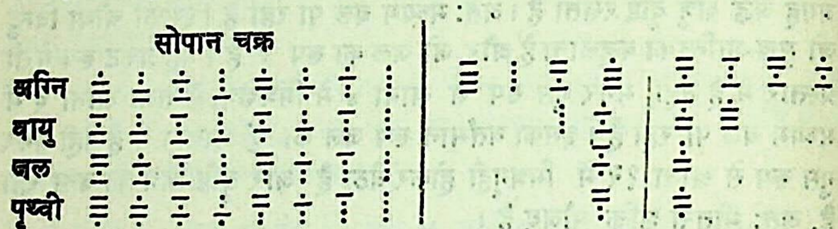
(२२) हमारा प्रेमी याद करेगा या नहीं ?

विचारणीय गृह–विन्दु ५, ७ शुभ बल युक्त हों और प्रथम गृह शुभ दृष्टि हो तो प्रेम करेगा ।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र



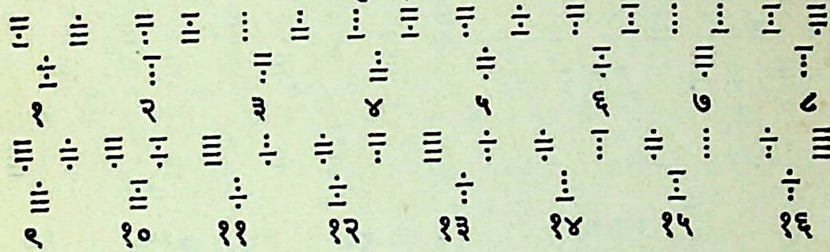
चूँकि खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का विन्दु चलकर खाना ७ मित्रगृह में जाकर विश्रान्ति पाता है । सप्तम में अप्रमाणित रूप ⁞ चारों विन्दु रखता है । इसका एतबार न करके खाना १५ के रूप ÷ को लग्न माना । इसका पंचम विन्दु पृथ्वी का रूप ÷ है । यह गुप्त या प्रकट कहीं भी नहीं पाया जाता है और सातवाँ विन्दु रूप ⁞ है, जो खाना ७ तथा १२ में मित्रगृही तथा स्वक्षेत्री है तथा मित्र दृष्टि और अर्द्ध शत्रु दृष्टि युक्त है । कुछ साधारण बल मिल रहा है । अस्तु, नतीजा यह निकला कि वह प्रेमी स्वयं याद न करेगा बल्कि किसी युक्त से असन्तोष का सन्देश भेज देगा ।

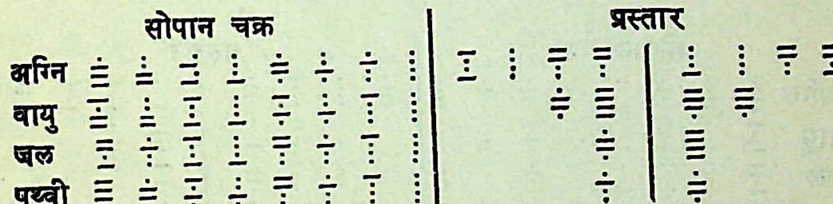
कारण, दो विन्दुओं में एक भी प्रस्तार में मौजुद नहीं और न गुप्त रूप से ही पाया जाता है । पंचम विन्दु मुख्य प्रेमी का है । केवल सप्तम विन्दु कुछ बल

रखता है। कायदा यही है कि यदि पंचम तथा सप्तम दोनों विन्दु मय वर्तमान के बलवान् हों और लग्न से शुभ दृष्टि रखते हों तो प्रेमो मिले-याद करे, अन्यथा नहीं।

(२३) अपने प्रेमी के पास दूत के द्वारा सन्देश भेजता हूँ, लाभदायक है या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में होकर अन्त में पंचम भाव में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है। यह तीसरे तथा सातवें गृह में मित्रगृही बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु रूप ≡ है, जो शत्रुगृही तथा ९ में सम बल पा रहा है तथा मित्र दृष्टि से युक्त है—बलवान् है।

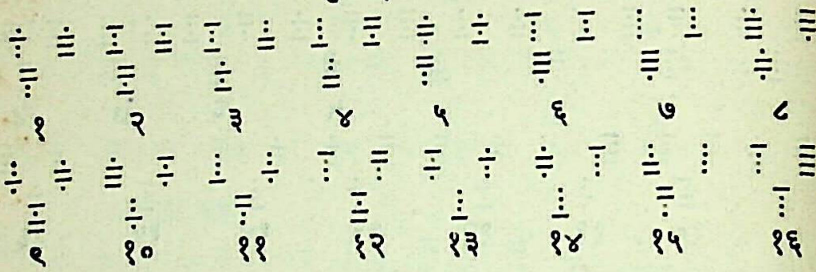
अस्तु, परिणाम यह निकला कि दूत द्वारा भेजा हुआ सन्देश लाभदायक होगा और प्रसन्नता होगी।

नोट—आचार्य सुर्खाव ने इस प्रकार के प्रश्नों को विन्दु ३ व ५ के बलाबल से भी किया है।

(२४) अपने प्रेमी के पास आदमी भेज रहा हूँ, मुलाकात होगी या नहीं ?

विचारणीय गृह—केवल आठवाँ बिन्दु दाखिल या साबित गृह में हो, तो मिलेगा अन्यथा नहीं।

गुप्तोद्घाटन

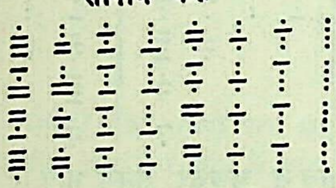


१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

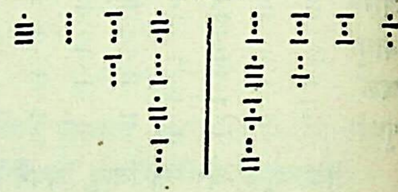
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६

सोपान चक्र

अग्नि
वायु
जल
पृथ्वी



प्रस्तार

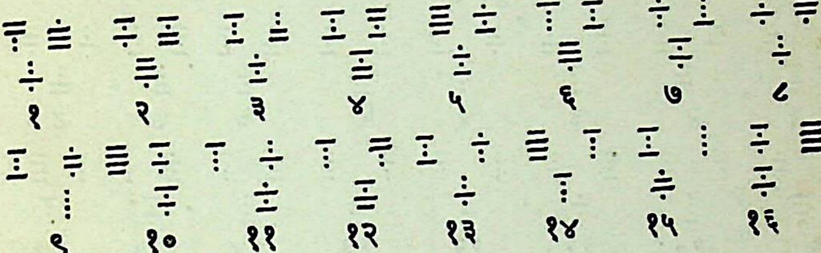


चूँकि तुला-चालित बिन्दु वायु तत्त्व का अपने स्थान से चल कर खाना २ में होकर खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। चूँकि यह रूप विषम होने के नाते अप्रमाणित है, अतः खाना २ को लग्न माना। इसका आठवाँ बिन्दु वायु तत्त्व का रूप है। यह खाना १५ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। मध्यम बल पा रहा है और दाखिल गृह में है। आचार्य सुर्खाव ने अपना सुझाव इस प्रकार दिया है कि यदि आठवाँ बिन्दु दाखिल या साबित गृह में हो तो मुलाकात होगी और कार्य बनेगा, इसके विपरीत से हतोत्साह होना पड़ेगा। अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रेमी गृह पर है और मिलेगा।

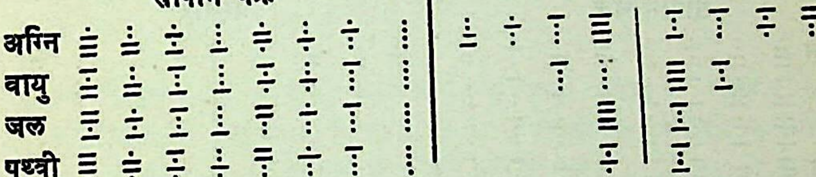
(२५) अपने प्रेमी को बुला रहा हूँ, आयेगा या नहीं ?

विचारणीय गृह-विन्दु ४ व ८ के बलाबल से फल कहें।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ६ शत्रुक्षेत्री में आकर विश्रान्ति पाता है. अतः लग्न निर्बल हो रहा है।

इसका चौथा विन्दु जल का रूप ⁝ है जो प्रस्तार में मौजूद नहीं वरन् गुप्त रूप से खाना ९ शत्रुक्षेत्री है। दृष्टि मित्र की है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ का है। यह भी गुप्त प्रकट कहीं नहीं है।

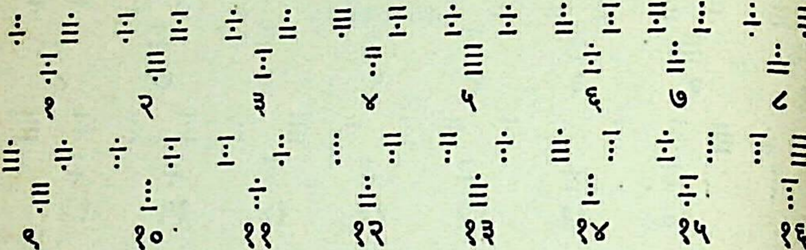
इसका आठवाँ विन्दु जल का ⁝ है। यह भी प्रस्तार में मौजूद नहीं है और न गुप्त रूप से ही पाया जाता है। इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो शत्रुगृही कमजोर है।

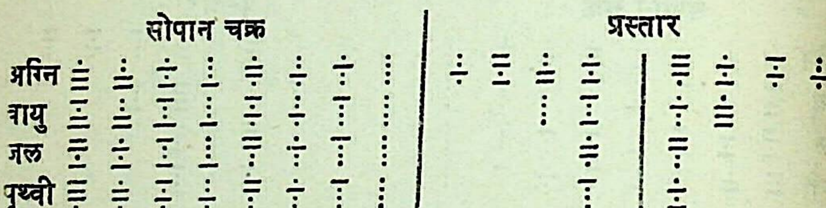
अस्तु, फल होता है कि उसके आने की आशा न करें सन्तोष करें।

(२६) हमारा प्रेमी हम को चाहता है कि नहीं ?

विचारणीय गृह—पंचम विन्दु मय अपने वर्तमान विन्दु के बली हो और पुनरुक्त गुप्तोद्घाटन केन्द्र में हो तो प्रेमी चाहता है।

गुप्तोद्घाटन चक्र



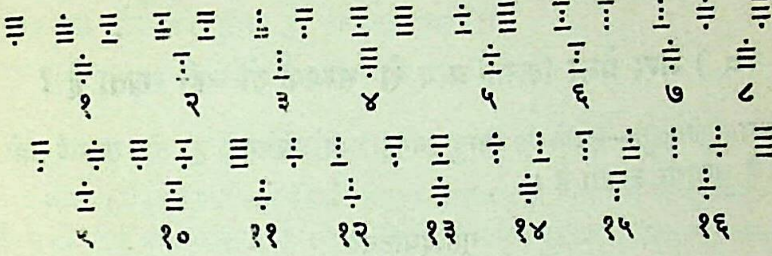


चूँकि तुला-चालित विन्दु जल तत्त्व का चलकर तीसरे गृह में स्वक्षेत्री होकर विश्रान्ति पाता है। यही लग्न विन्दु है। इसका पाँचवाँ विन्दु जल का ÷ है, जो खाना १० तथा गुप्त रूप से खाना ११ में मौजूद है। इसका वर्तमान रूप ⁝ है जो खाना १६ में मित्रक्षेत्री है तथा पूर्ण युक्त है—विन्दु शक्तिशाली है—अस्तु, कहा गया प्रेम करता है मगर कम कारण, वर्तमान ⁝ १६ में है।

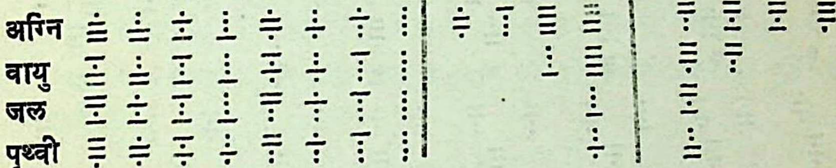
(२७) प्रेमी द्वारा मेरी आशा पूर्ण होगी या नहीं ?

विचारणीय गृह—१, ५, ६ तथा ११ स्थानों के रूप बली हों तो आशा पूरी हो।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूंकि खाना १५ से वायु तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में रुकता है। यह उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁝ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है और न गुप्त रूप ही से विन्दु पाया जाता है। परिणाम में कमजोर पाया जाता है।

इसका पंचम विन्दु वायु का रूप ⁝ है। यह गुप्त रूप से खाना २ व ६ में मौजूद है। बलवान् है। इसका वर्तमान रूप वायु ⁝ है, जो खाना १२ में शत्रुक्षेत्री तथा खाना १४ में स्वक्षेत्री है। दोनों जगहों पर दृष्टियुक्त है—बल पा रहा है। इसका छठाँ विन्दु वायु का ⁝ है। यह खाना १२ में शत्रुक्षेत्री के नाते कमजोर हो रहा है और खाना १४ में स्वगृही के नाते ताकत पा रहा है। अस्तु, बैलेंस बराबर हो रहा है। इस छठें विन्दु का वर्तमान ⁝ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है अतः कमजोरी है।

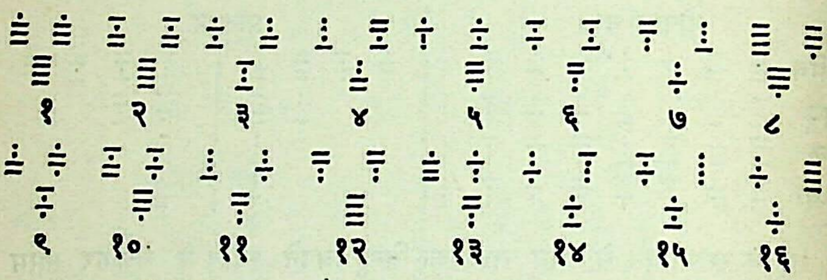
सभी बातों का विचार करने पर कमजोरी पाई जाती है। ११ वाँ विन्दु आशा का है, जो जल का रूप ⁝ है। यह गुप्त तथा प्रकट कहीं प्रस्तार में नहीं

है। अस्तु, यही परिणाम निकला कि प्रेमी से आशा पूरी न होगी। इसी प्रकार अन्य प्रश्न हल करें।

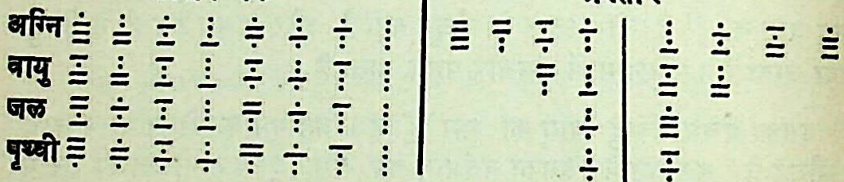
(२८) मेरा प्रेमी किसी अन्य से सम्पर्क तो नहीं रखता है ?

विचारणीय गृह—त्रयोदश विन्दु स्वगृही या मित्रगृही हो तो सम्पर्क नहीं रखता है अन्यथा रखता है।

गुप्तोद्घाटन



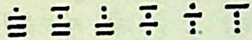
सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का सप्तम भाव में जाकर खाना ५ में रुकता है। चूँकि सप्तम भाव मित्रगृही के नाते बलवान् है। इसी को लग्न माना। इसका तेरहवाँ विन्दु अग्नि का ⁝ है। यह प्रस्तार में गुप्त अथवा प्रकट कहीं नहीं पाया जाता है। अतः परिणाम यही निकला कि वह किसी अन्य से सम्पर्क नहीं रखता है। कारण, कायदा है कि यदि १३ वाँ विन्दु बलवान् हो तो सम्पर्क नहीं रखता हैं। स्वगृही या मित्रगृही है ही नहीं। इसी प्रकार अन्य पस्तार निकालें।

(२९) मेरा प्रेमी पुरुष है या स्त्री ?

पंचम विन्दु को देखें वह किस गृह से सम्बन्ध रखता है ? यदि वह स्त्रीलिंग है तो स्त्री और यदि पुंलिग हो तो पुरुष समझें।

 यह नर के रूप हैं।

(३०) एक निमंत्रण में जा रहा हूँ कैसा रहेगा ?

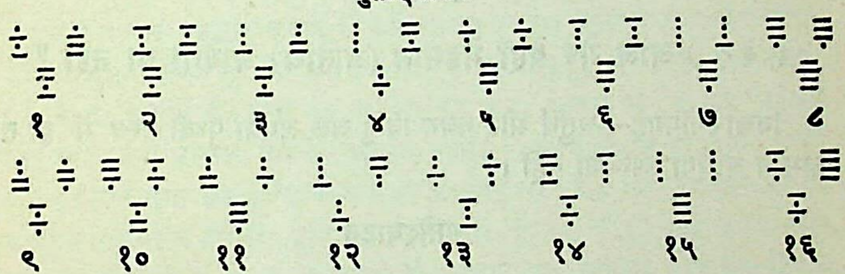
नोट—(प्रश्नकर्ता जब किसी विशेष प्रयोजन से निमंत्रण में वुलाया जाता है, तभी प्रश्न का अवकाश है। इसी नियत से पाँसा डालकर प्रस्तार बनाया।)

विचारणीयगृह-यदि दूसरे गृह का रूप बली हो तो खाद्य पदार्थ बढ़िया है।

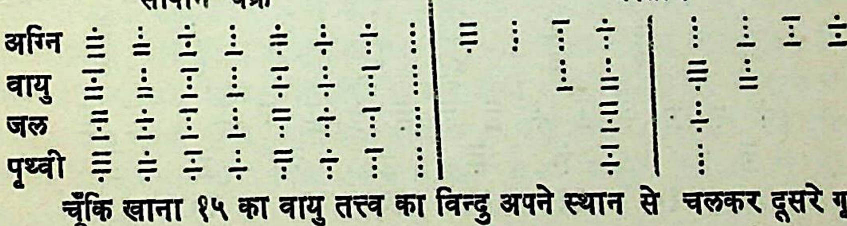
यदि चौथा गृह या चौथा विन्दु वली हो तो स्वागत सत्कार तगड़ा है।

यदि छठा रूप अथवा छठा विन्दु बलवान् हो तो कोई प्रसन्नता की भी वस्तु है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि खाना १५ का वायु तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर दूसरे गृह

में विश्रान्ति पाता है। यद्यपि वह विन्दु बाईं तरफ जाकर खाना ४ में रुकता है, मगर खाना २ में बलवान् होने के नाते ⋮ को लग्न विन्दु माना।

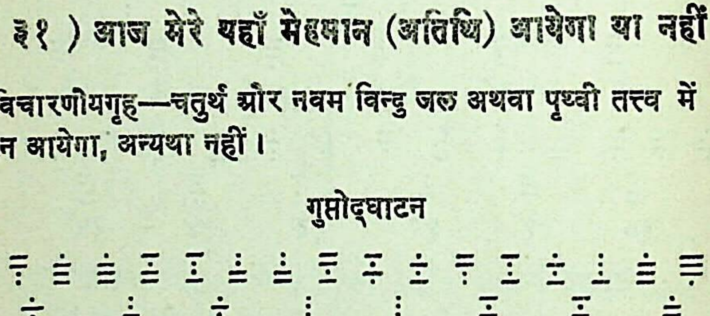
इसका दूसरा विन्दु वायु का ⋮ है, यह तीसरे तथा बारहवें गृह में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री द्वारा साधारण बल पा रहा है तथा खाना १२ में शत्रुक्षेत्री के नाते निर्बल हो रहा है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⋮ है, जो सोलहवें गृह में शत्रुगृही के नाते निर्बल हो रहा है और शत्रुदृष्टि भी है। चौथा विन्दु वायु का ⋮ है, जो खाना १३ में मित्रगृही हो रहा है। बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⋮ है, जो खाना ६ में स्वक्षेत्री के नाते बलवान् है और पञ्चम शुभ दृष्टि भी है अतः पूर्ण बलवान् है।

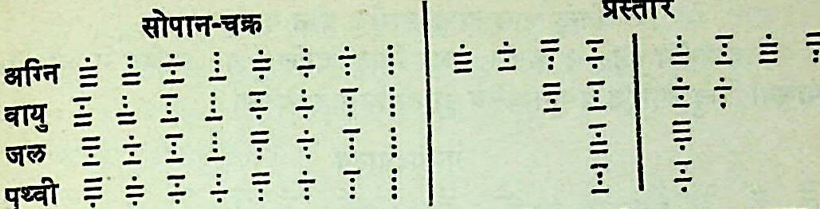
इसका छठा विन्दु वायु का रूप ⋮ है, जो चौथे में शत्रुगृही है तथा ७ व १५ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⋮ है। यह गुप्त रूप से दशम भाव में बलवान् है और दृष्टियुक्त है। अब इन तीन विन्दुओं में केवल १ विन्दु तगड़ा बलवान् है और बाकी दो निर्बल हैं। अतः परिणाम यह निकला कि निमन्त्रण या मेहमानी इच्छानुसार न होगी।

(३१) आज मेरे यहाँ मेहमान (अतिथि) आयेगा या नहीं ?

विचारणीयगृह—चतुर्थ और नवम विन्दु जल अथवा पृथ्वी तत्त्व में हों तो मेहमान आयेगा, अन्यथा नहीं।

गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना १ में विश्रान्ति पाता है। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है। वह प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से पञ्चम भाव में अग्नि तत्त्व (खारिज) में पैदा होता है। नवम विन्दु अग्नि का ⁝ है, जो प्रकट में प्रस्तार में नहीं है मगर गुप्त रूप से चौथे गृह (सावित में) पाया जाता है।

अतः कहा कि कोई अतिथि न आयेगा वरन् सन्देश आयेगा—कारण, दोनों विन्दु नहीं हैं। गुप्त रूप से एक माफिक है और एक माफिक नहीं है।

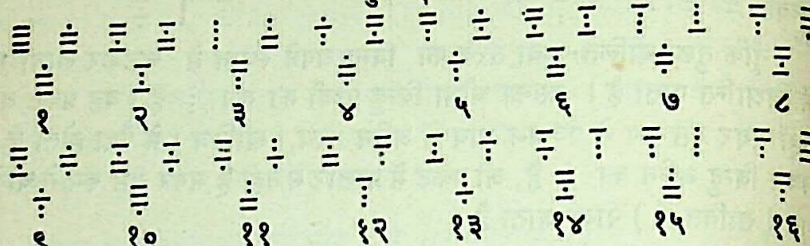
(३२) शिकार खेलने जाता हूँ मिलेगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनावें। यदि खाना १ शुभ दाखिल हो और खाना ५ में रूप शुभ खारिज हो, या खाना ५,७ शुभ दाखिल हो, या प्रस्तार के खाना १, ४, ५, ६, ७ गृहों के रूपों को क्रमशः रख कर प्रस्तार के ४ रूप कायम करके पुनः दूसरा प्रस्तार बनायें। अर्थात् खाना ६ को १ में, ७ को २ में, ५ को नं० ३ पर रखें तथा खाना १ के रूप को ४ नंबर पर रख कर उमहात कायम करके दूसरा प्रस्तार बनायें। यदि इस प्रस्तार में ⁒ या ⁒ हो और इस प्रस्तार में इन्हीं गृहों यानी १, ५, ६, ७ में हों तो शिकार खूब मिलेगा और विपरीत से नहीं मिलेगा। यदि खाना ५ में रूप ⁝ या ⁝ में से कोई आवे तो निशाना ठीक बैठेगा। यदि खाना १ शुभ दाखिल हो और खाना ५ शुभ खारिज हो तो निशाना ठीक लगे, शिकार भी मिले। यदि दोनों शुभ खारिज हो तो कुछ न मिले। यदि खाना ५, ६ दोनों शुभ दाखिल हो तो शीघ्र शिकार मिले यदि अशुभ दाखिल हो तो न मिले यदि शुभ खारिज या अशुभ खारिज हो तो शिकार न मिलेगा।

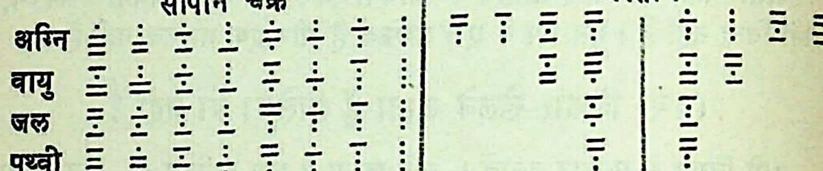
विन्दु चाल द्वारा उपर्युक्त प्रश्न का हल

विचारणीय गृह—१ व ५। प्रथम विन्दु दाखिल या साबित में हो और पाचवाँ विन्दु खारिज व मुनकलिब हो तो शिकार मिलेगा।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र — प्रस्तार

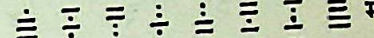


चूँकि खाना १५ से पृथ्वी तत्त्व का विन्दु चल कर खाना ५ में विश्रान्ति पाता है। इसीको लग्न माना। यद्यपि वह दाहिने तरफ खाना ३ पहुँचता है, पर विषम तथा अप्रमाणित होने के कारण दोनों को छोड़ दिया। रूप ⁝ को लग्न माना यह रूप खाना ८, १५ व १६ में पुनरुक्त दाखिल तथा सावित गृह में है, केवल खाना ५ खारिज गृह है। लेकिन मत पुनरुक्त (तकरार) के दाखिल व सावित में अधिक हैं।

इसका पंचम विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है। यह भी खाना ११ में दाखिल है। अस्तु, कहा गया कि शिकार न इच्छानुसार मिलेगा न सरलतापूर्वक। कारण, १, ५ दोनों विन्दु खाना दाखिल व साबित में तकरार करते हैं। आचार्य सुर्खाव ने लिखा है कि यदि विन्दु प्रथम दाखिल या सावित गृहों में हो और पाचवाँ विन्दु खारिज तथा मुनकलिव गृह में हो तो शिकार इच्छानुसार मिले यदि विपरीत हो तो शिकार न मिले।

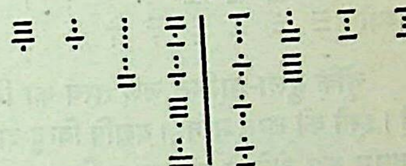
नोट—यदि पंचम विन्दु दाखिल व साबित गृह में हो तो निशाना ठीक बैठेगा। यदि ऐसा न हो तो निशाना ठीक न बैठेगा। इसके अतिरिक्त यदि खाना १ व १३ के विन्दु मुनकलिब अथवा खारिज गृह में हों तो निशाना चलाने वाले मिलकर शिकार करें।

(३३) मुझे इनाम मिलेगा या नहीं ?

प्रस्तार बनावें। यदि खाना ५ में  में से कोई रूप हो, अथवा खाना ५ का रूप शुभ दाखिल हो। या पाँचवें गृह का पुनरुक्त (तकरार) खाना १, ९, ११ या १४ किसी में हो, या प्रस्तार में बलवान् हो, अथवा १ व ५ को तथा ३ व ११ को गुणा करें, दोनों को फिर गुणा करके एक रूप बनायें। यह हासिल शुभ दाखिल हो तो इनाम मिलेगा।

विचारणीय गृह विन्दु चाल द्वारा पंचम विन्दु जल या पृथ्वी में पुनरुक्त हो तो मिलेगा। यदि तकरार १ या ९ या १४ में हो तो खूब इनाम मिलेगा।

प्रस्तार



तुला-चालित विन्दु  जल तत्त्व का चलकर खाना ४  में रुकता है। यद्यपि विन्दु ५ व ६ में भी जाता है मगर खाना ४ मित्रक्षेत्री होने से उसीको लग्न माना। यह विन्दु दाखिल तत्त्व का है, और साबित गृह में बैठा है। अस्तु, बलवान् हो रहा है, अस्तु कहा गया इनाम मिलेगा। इसका पंचम विन्दु जल का  है, जो खाना १ व २ खारिज गृह में है। अस्तु, आशा की झलक निराशा में बदल गई।

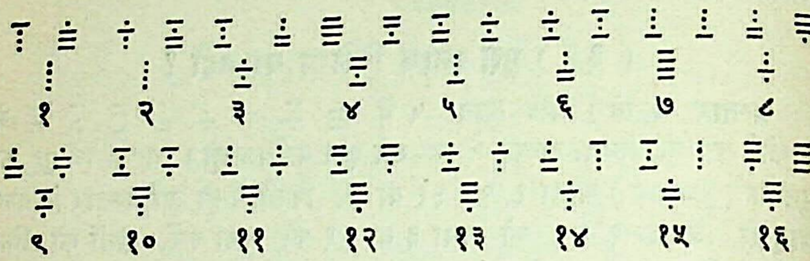
(३४) मैंने जो भेंट भेजी है वह यथास्थान पहुँचेगी या नहीं ?

प्रस्तार बनावें। यदि खाना २ में रूप शुभ खारिज हो और खाना ७ में शुभ दाखिल हो तो भेंट पहुँचेगी और यदि अन्य रूप हो तो निराशा होगी।

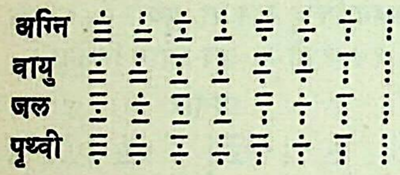
विन्दु चाल द्वारा—विचारणीय गृह यदि लग्न का दूसरा विन्दु खारिज अथवा

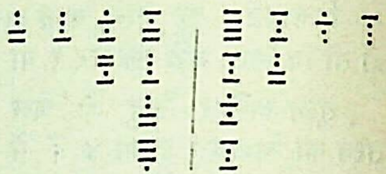
मुनकलिव गृह में हो और सप्तम विन्दु दाखिल या सावित गृह में हो तो भेंट यथास्थान पहुँचेगी और उसके बदले आपको शुभ-सूचक फल मिलेगा।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | **प्रस्तार**





चूँकि तुला-चालित जल तत्त्व का विन्दु चलकर खाना ३ में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना। यद्यपि विन्दु दाहिनी तरफ खाना १ तक जाता है मगर विषम रूप होने से एतवार न किया। रूप को लग्न माना। यह विन्दु जल गृह में होने से दाखिल गृह माना गया और खाना १० व १५ में पुनरुक्त है। यद्यपि १०वाँ गृह खारिज का है मगर पुनरुक्त ३, ७, १५ मरकज दाखिल २ जगह है। इसका पंचम विन्दु जल का है। यह खाना १ में खारिज में है। इसका तीसरा विन्दु जल का है, यह प्रस्तार में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ११ दाखिल में है।

इसका ११ वाँ विन्दु पृथ्वी तत्त्व का रूप है। यह गुप्त रूप से खाना ८ साबित गृह में है। अस्तु चारों विन्दुओं में ३ बलवान् है, अतः कहा गया भेंट पहुँचेगी।

खाना १ भेजने वाला है।

खाना ३ भेट का पहुँचना है।

खाना ५ पारितोषिक है।

खाना ११ परितोषिक की प्राप्ति का है।

अस्यु चारों रूप जल या पृथ्वी हो तथा स्वक्षेत्री या मित्रगृही हों तो भेंट द्वारा प्रश्नकर्ता को लाभ हो इसी प्रकार रमलज्ञ अपनी वुद्धि के अनुसार ज्ञात करें।

(३५) मेरे मित्र का पत्र या समाचार आवेगा या नहीं ?

इसी नियत से प्रस्तार बनायें—यदि पंचम गृह में शुभ दाखिल के अतिरिक्त ≐, ÷, ⩧, ⁝, में से कोई हो रूप ÷ या ≡ हो अथवा १ × ५ तथा ६ × १० दोनों के गुणनफल को फिर गुणा करें यदि हासिल रूप शुभ हो अथवा पंचम गृह का रूप शुभ हो और पंचम भाव का पुनरुक्त (तकरार) खाना ३, ९, ११, १४, १५, १६ में से किसी में हो अथवा पंचम में रूप ⁝ या ⩧ हो, तो पत्र अथवा खबर शीघ्र आयेगी।

खाना ५ का रूप जिस दिन से सम्बन्ध रखता हो उसी दिन पत्र आयेगा।

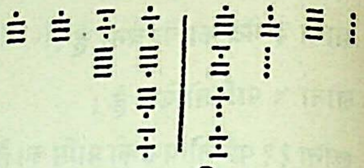
जैसे	≐ या ⩧ से गुरुवार	⁝ या ≡ से बुधवार
	≐ या ÷ से मंगलवार	≐ या ÷ से रविवार
	⁝ या ⩧ से सोमवार	÷ या ≡ से शनिवार
	÷ या ⁝ से शुक्रवार	≐ या ⁝ से भी शनिवार समझें।

यदि खाना ५ में ≐, ÷ या ⁝ हो और पुनरुक्त खाना ९ में हो तो पत्र मार्ग में है यदि खाना ३ या ७ में रूप खारिज हो तब भी यही फल होता है। यदि पंचम तथा सप्तम में शुभ दाखिल हो तो उसी दिन २४ घंटे के अन्दर पत्र आवे। यदि सातवें गृह का रूप पुनरुक्त ९, १०, ११, १२ में हो तो एक सप्ताह के अन्दर पत्र आयेगा। यदि १३, १४, १५, १६ में तकरार (पुनरुक्त) हो तो ९६ घण्टे के अन्दर पत्र या सन्देश आयेगा। अन्य सूरतों में देरी का फल कहना चाहिये।

विन्दु-चाल द्वारा विचारणीय गृह १, ९, १५ के रूप शुभ हों तथा निर्बल न हों तो समाचार या पत्र मिलता है अन्यथा नहीं।

खाना १५ के जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना १ में विश्रान्ति पाता है। इस रूप का एतवार न करके खाना १५ से फल कहा। इसका पंचम विन्दु आब ÷ है। वह पाँचवें तथा १३ वे में खारिज गृह में है। अस्तु, कहा गया कि पत्र या खबर आने में देर होगी। कारण विन्दु खारिज गृह में हो गया है।

प्रस्तार



आचार्य सुर्खाव का कथन है कि पंचम विन्दु दाखिल या सावित गृह में हो तथा पुनरुक्त दाखिल तथा सावित गृह में हो तो पत्र या सन्देशा आयेगा। यदि विपरीत हो तो नहीं आयेगा।

(३६) इस पत्र या दूत का समाचार जो मिला वह सत्य है या असत्य है

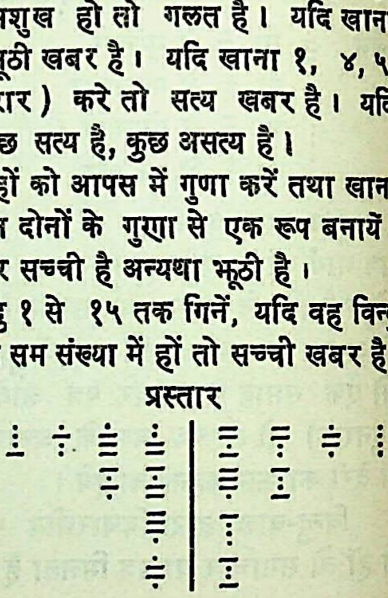
इसी नियत से प्रस्तार बनायें, यदि खाना ५ में रूप शुभ हो और शुभ गृह में पुनरुक्त हो तो खबर सत्य है, यदि अशुख हो तो गलत है। यदि खाना ३, ६, ८, या १२, में पुनरुक्त हो तो झूठी खबर है। यदि खाना १, ४, ५, १०, ११ अथवा १३ में पुनरुक्त (तकरार) करे तो सत्य खबर है। यदि २, ७, ९, १४, १५ या १६ में हो खबर कुछ सत्य है, कुछ असत्य है।

दूसरी विधि—प्रस्तार के १ व ५ गृहों को आपस में गुणा करें तथा खाना ५ व ७ गृहों के रूपों को गुणा करें। इन दोनों के गुणा से एक रूप बनायें। यदि हासिल रूप शुभ दाखिल हो तो खबर सच्ची है अन्यथा झूठी है।

तीसरी विधि—प्रस्तार के कुल विन्दु १ से १५ तक गिनें, यदि वह विन्दु विषम संख्या में हों तो खबर झूठी है, यदि सम संख्या में हों तो सच्ची खबर है।

तुला चालित विन्दु जल का खाना १ में शत्रुगृही होकर पहुँचा। इसका विश्वास न करके ⁝ को लग्न माना इसका पञ्चम विन्दु सोपान चक्र के अनुसार जल का रूप ⁝ है। वह १३

प्रस्तार



वें गृह में शत्रुगृही है। कमजोर है, मगर शुभ गृह में पुनरुक्त है। अस्तु कहा गया खबर न सत्य है न असत्य। यदि पंचम विन्दु बलवान् हो और शुभ गृह में पुनरुक्त हो तो खबर सत्य जाने, यदि अशुभ हो तो असत्य समझें, मगर यह रूप शुक्र का है और बलवान् है, अतः शीघ्र शुभ खबर आयेगी।

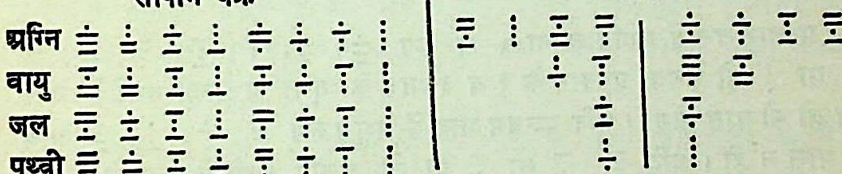
(७३) अमुक व्यक्ति के पास सन्देश-वाहक भेजता हूँ, क्या परिणाम होगा ?

विचारणीयगृह—(१) लग्न में विधु है, यह सन्देशा भेजने वाला है। (१०) में सौरि है, यह सन्देश पानेवाला है।

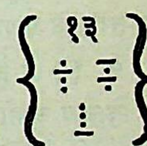
विधु जल है और सौरि पृथ्वी है। दोनों की परस्पर मित्रता है, अतः सन्देश का स्वागत होगा।

विन्दु चाल द्वारा तुला-चालित का वायु अपने स्थान से चलकर खाना २ वायु में स्वगृही होकर रुकता है। इसका वर्त्तमान रूप वायु वक्र है, जो गुप्त रूप से खाना १३ में मित्रगृही बलवान् है।

सोपान चक्र | प्रस्तार



इस वायु गृह का दशम विन्दु जल का बोधन है, जो उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री होकर सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान जल का रूप वक्र है। यह गुप्तरूप से खाना १३ शत्रुक्षेत्री है। बोधन रूप बुध से सम्बन्ध रखता है। इसका वर्तमान रूप वक्र केतु से सम्बन्ध रखता है। यह रूप दशम विन्दु का है और यही इसका वर्तमान रूप है। दोनों विन्दु मय अपने वर्तमान विन्दु के समभाव युक्त हैं।



अस्तु, परिणाम यही निकला—सन्देश वाहक का स्वागत होगा क्योंकि नियम यही है कि यदि बिन्दु १ व १० के दोनों के ग्रह परस्पर मित्र हों या एक ही स्थान में हों तो शुभ फल कहें। इसके विपरीत हो तो उल्टा फल कहें। यदि पञ्चम बिन्दु प्रस्तार के खाना १, ४, ७, १० में हो तो सन्देश वाहक शीघ्र लौट आवे। यदि २, ६, १०, या १४ में हो तो देर से आवे।

(३८) हमारा भेजा हुआ दूत उत्तर लेकर जो लौटा है, यह उत्तर सत्य है या असत्य, अर्थात् भविष्य में इस पर विश्वास किया जायेगा या नहीं ?

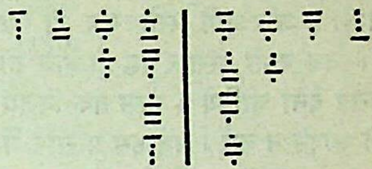
यदि खाना १ का रूप पुनरुक्त १० या ११ भाव में हो तो विश्वसनीय है अन्यथा विश्वास न करें।

३९ परीक्षा में पास होऊँगा या नहीं ?

प्रस्तार बनायें। यदि खाना ५ में रूप ≝, ÷, ⩨, ⨪, ⩧, ≐, ⩸ ⩪ या ⁝ हो अथवा प्रस्तार के १ व ३ भाव के गुणा से इन्हीं रूपों में कोई रूप हो तो पास होगा। यदि पञ्चम भाव में अशुभ रूप ≡, ÷, ⨪, ≟ आवे तो पास न हो। यदि ≣, ⨪ या ⩸ हो तो तृतीय श्रेणी में पास हो। यदि प्रस्तार के प्रथम गृह का रूप शुभ दाखिल या शुभ साबित हो और पुनरुक्त खाना ५, ९, ११ में हो तो पास होगा। यदि अशुभ हो तो फेल होगा। शुभ मुनकलिब से द्वितीय श्रेणी में पास हो। यदि खाना १ में ≝ और खाना ५ में ⩪ हो तो प्रथम श्रेणी में पास हो। यदि खाना ५ का रूप ४, ८, या १२ में पुनरुक्त हो तो फेल होगा। यदि खाना १ व ३ के गुणा से ⩪, ⩨ या ⩧ हो तो प्रथम श्रेणी में पास होगा। यदि ⨪, ≣ या ⩸ हो तो दूसरी श्रेणी में पास होगा। शुभ मुनकलिब से तृतीय श्रेणी में पास होगा।

चूँकि तुला-चालित विन्दु ÷ पृथ्वी तत्त्व का खाना में होकर पुनः खान ४ में स्वक्षेत्री बलवान् होकर बैठा है। इसका पञ्चम विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ है, जो खाना ८ में बलवान् है। नवम विन्दु अग्नि का ⁝ है जो खाना ७ में निर्बल तथा १० में मित्रगृही के नाते बल पा रहा है। इसका वर्तमान रूप अग्नि खाना ५ में बलवान् है, अतः परिणाम यह निकला कि पास होगा।

प्रस्तार



नोट—पञ्चम विन्दु नीची श्रेणी यानी दसवें तक तथा नवाँ विन्दु ऊँची श्रेणी का होता है। दोनों का बलाबल देखकर—तब फलादेश कहना चाहिये।

(४०) मुझे लाटरी, सट्टा, घुड़दौड़, ताश, जुआ, आदि में विजय होगी या नहीं ?

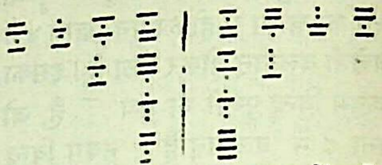
ऐसी दशा में प्रथम तो इन बातों में मनुष्य को पड़ना ही नहीं चाहिये। जुये आदि में बड़े-बड़े महानुभावों की हस्तियां बिगड़ गई हैं। इस प्रकार का व्यसनी पुरुष कभी सुख से रोटी नहीं खा सकता है। परन्तु रमल द्वारा प्रश्नोत्तर का विधान तो रमलज्ञ को जानना आवश्यक है। इसी कारण उसका नियम निम्न-लिखित दिया जाता है।

विन्दु—१, ११, १४ प्रश्नकर्ता के हैं और ७, ४, ५ प्रतिद्वन्द्वी के हैं। जिसके विन्दु बली हों वही जीतता है।

जिसकी तरफ शुभ दाखिल अथवा शुभ साबित हों वही जीतेगा। जिसकी तरफ अशुभ तथा मुनकलिब और खारिज रूप हों वह हारता है।

दूसरा विधान—१, २, ११, १४ गृह प्रश्नकर्ता के हैं तथा दूसरे विपक्षी का विन्दु सातवाँ फिर सातवें विन्दु का ११ वाँ तथा चौदहवाँ विन्दु देखना चाहिये उनके बलाबल के अनुसार जिसकी तरफ विन्दु बलवान् हों वही जीतेगा।

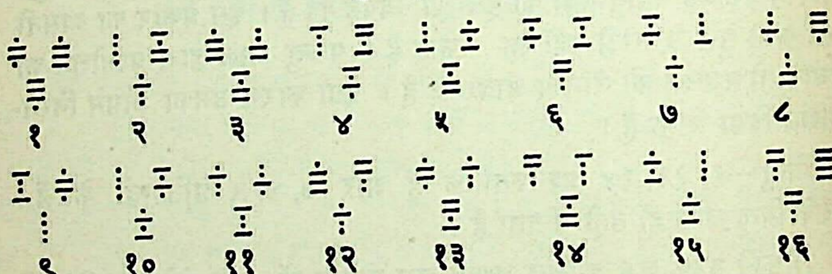
प्रस्तार



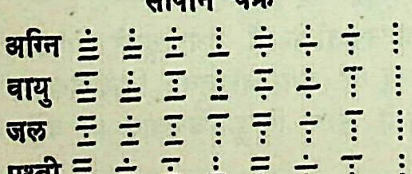
चूँकि खाना १५ में रूप सौम्य आया है और आगे प्रस्तार बद्ध हो गया है। जब कभी प्रस्तार बद्ध हो जावे तो उत्तर देना चाहिये ६ मास तक विजय की आशा न करें। अब इस प्रस्तार में १, ११, १४ में रूप निर्बल है। कारण, खाना १ में रूप विधु पड़ा जों अग्नि के गृह में जल का रूप होने से निर्बल हो गया। ११ में सौरि अशुभ दाखिल है। यद्यपि जल के गृह में पृथ्वी का रूप मित्रगृही है मगर अशुभ दाखिल होने से कमजोर पड़ गया है और १४ वें में भी अशुभ मुनकलिब रूप पड़ा है अतः प्रश्नकर्ता का मामला चौपट है।

अब इस प्रस्तार बद्ध का परिवर्तन किया १×१३ से प्रथम, २×१४ से दूसरा ३×१५ से तीसरा और ४×१६ से चौथा रूप बनाकर नवीन प्रस्तार बनाया।

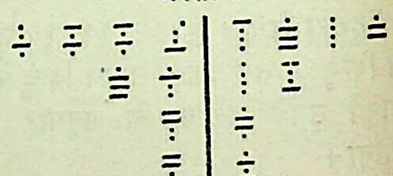
गुप्तोद्घाटन



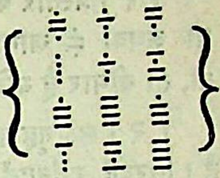
सोपान चक्र



प्रस्तार



१×३



तुला-चालित जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर पंचम भाव में होकर चतुर्थ गृह में विश्रान्ति पाता है, चूँकि दोनों विषम रूप हैं, अतः इनका विश्वास न करके खान १५ के रूप को लग्न कायम किया।

(१) बलवान् है। वर्तमान विन्दु ⁝ जल का खाना ९ में निर्बल हो गया।

(११) विन्दु पृथ्वी का ⁝ है, जो खाना ६ में शत्रुगृही तथा ७ में मित्र-गृही है। १ शुभ १ अशुभ है, अतः मध्यम है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⁝ अष्टम भाव में बलवान् है।

(१४) इस लग्न का १४ वाँ विन्दु पृथ्वी का रूप आर ⁝ है। जो खाना ११ मित्रगृही में बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप कवि ⁝ है, जो खाना ४ में बलवान् है अस्तु, सभी विन्दु बलवान् हैं। इस कारण उत्तर दिया गया कि ६ मास तक प्रश्नकर्ता सन्तोष से बैठा रहे। ६ मास बाद यदि पुनः कार्य आरम्भ करेगा तो विजय होगी। विपक्षी के विन्दु को भी देखना चाहिये यदि विपक्षी के भी सभी विन्दु बलवान् हों तो साधारण विजय होगी।

षष्टगृही प्रश्नों का विवरण

(१) रोगी रोग से मुक्त होगा या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्न में निम्न बातों का विचार करना आवश्यक होता है—

(१) प्रथम यह देखना चाहिये कि जिस प्राणी की बाबत इस प्रकार का प्रश्न हो यथार्थ में वह रोगी है कि नहीं ?

(२) यदि रोगी है तो क्या रोग है ?

(३) किस दोष से रोग पैदा हुआ ? (४) कब तक भय है ?

(५) रोगी परहेज करता है या नहीं ? (६) दवा उचित होती है या नहीं ?

(७) वैद्य या डाक्टर सुयोग्य है कि नहीं ?

(८) रोगी रोग से मुक्त होगा या नहीं ? (९) कब तक आराम होगा ?

(१) प्रस्तार बनावें यदि खाना १ का रूप पुनरुक्त ६, ७, ८ या १२ में हो अथवा ≑ खाना १५ में हो या खाना ६ का रूप पुनरुक्त खाना १२ में हो, तो बीमार है यदि ऐसा न हो तो भ्रम है।

(२) छठें गृह को देखें उसमें कौन रूप है यदि ≐ हो तो पित्त प्रकोप है। सिरदर्द, गर्दनदर्द, ताप शरीर गर्म, हलक में जलन, सन्निपाती बुखार हो। यदि ∸ हो तो कफ बलगम से व्याकुल है छाती में दर्द, पेट में विकार, रक्तविकार आदि हो। यदि ≡ हो तो पेट में सुद्दे हुए कब्ज रोग बना—तोंदी पर दर्द, शरीर में हड़फूटन पड़े। यदि रूप ⋮ हो तो बेहोशी का दौरा, खराबी मेदा तप-लरज़ा जुकाम आदि से कष्ट हो। यदि ≑ हो तो रक्तविकार या ऊँचे से गिरकर चोट लगने का भय होता है। यदि ≒ हो तो कब्ज रोग, पेट, दर्द, हड्डियों में दर्द होवे। यदि ≓ हो तो फेफड़ा में दर्द, सीना जुकाम, दर्द कमर, नेत्र कष्ट आदि हो। यदि ≖ हो तो शीत ज्वर हो सूजन वदन फालिज आदि बलगम व सरदी का प्रकोप हो। यदि ≐ हो तो ताप बुखार गर्मी खुश्की हो, खुश्की जिह्वा में हो। यदि ≒ हो तो रोग बलगम या खुजली आदि का भय हो अथवा काम ज्वर हो। यदि ∸ हो तो जुकाम, पेचिश, सर्दी, दर्द कान या चोट लगने के कारण से हो अथवा किसी नशीली वस्तु के सेवन से कष्ट का कारण बना हो। यदि ⋮ हो तो कफ, बात रोग से कष्ट हो। यदि ≓ हो तो दर्द कमर या मिरगी रोग हो या पेट विकार हो। यदि ⋮ हो तो आधासीसी दर्द हो।

(३) छठे गृह को देखें उसमें किस-किस तत्त्व के विन्दु हैं। उसके साथी रूप के प्रयोग से रोग का निर्णय करना चाहिये, जैसे—विन्दु अग्नि हो तो पित्त का तथा वायु हो वात का प्रकोप हो। यदि जल का विन्दु हो तो बलगम और यदि पृथ्वी तत्त्व का विन्दु हो तो पित्त तथा वात के विकार से रोग हुआ।

खाना ६ व ७ के रूप को आपस में गुणा करें। यदि वह शकुन-क्रमानुसार अपने गृह का रूप हो अथवा गुणनफल जिस गृह प्रस्तार में है उसी के सम्बन्ध से कारण रोग कहें।

(४) प्रस्तार के ६ व ८ गृहों को आपस में गुणा करें फिर ४ व १२ को गुणा करें फिर इन दोनों के गुणा से एक रूप बनावें। यदि हासिल

रूप शुभ खारिज हो और शुभ गृह में हो तो रोगी को कोई भय नहीं यदि शुभ दाखिल हो तो रोग देर में जावे। शुभ साब्रित तथा अशुभ साबित से भी रोग देर में जावे। अशुभ खारिज हो तो भय है।

(७) यदि खाना १० में ≡, ÷, ⁞, ⁞, ≡, ≡, ÷, ÷ में से कोई रूप हो तो वैद्य अथवा डाक्टर चतुर होता है यदि ≡ या ≡ हो तो इस वैद्य से लाभ न होगा।

(८) यदि हासिल शुभ खारिज हो तो रोग दूर हो। यदि अशुभ खारिज हो तो रोग बढ़े। यदि दाखिल या सावित हो तो भय हो।

(९) पूरे प्रस्तार के विन्दु गिनकर तीन से भाग दें। यदि एक बचे तो

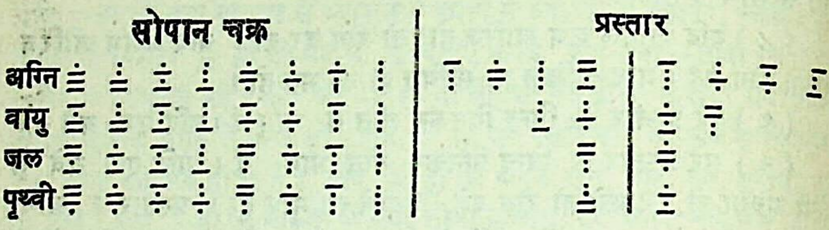
(९) पूरे प्रस्तार के विन्दु गिनकर तीन भाग दें। यदि एक बचे त रोगी अच्छा हो, २ बचे तो रोग बढ़े, ३ बचे तो मृत्यु हो। प्रस्तार के खाना ४, ६, ८, के रूप शुभ खारिज हों तो रोग दूर हो। यदि अशुभ खारिज हों तो रोग बढ़े। यदि ४, ८, १२, या १६ में रूप ÷ ≡ ≡ ÷ ⁞ ⁞ ÷ ≡ या ≡ में से कोई रूप हो तो भय हो। यदि खाना १, ४, ६, १० में रूप किसी सूरत में शुभ हो तो रोग जरूर दूर हो। यदि खाना ३, ६, १२ में ≡ ≡ ≡ ≡ ⁞ ÷ में कोई रूप हो तो रोग बढ़े, यदि खाना ६ में ≡ और ८ में ≡ तथा १ में ≡ और खाना ४ में ÷ हो तो निश्चय मृत्यु होवे। यदि रूप ÷ प्रस्तार में कई स्थानों पर हो तो रोगी आराम पायेगा ऐसा लक्षण समझें।

यदि खाना १ में ≡, ५ में ÷ १६ में ≡ और खाना ६ में ≡ हो तो भी मृत्यु अवश्य होगी। यदि तुला-चालित विन्दु अपने स्थान पर पहुँच कर दायें या बायें पुनः स्थान पाये तो शुभ लक्षण है, रोगी आराम पायेगा। खाना ४ और ९ के गुणा से यदि हासिल रूप ≡ ≡ ⁞ ≡ ≡ हो तो रोग बढ़ेगा। यदि खाना १ या ८ में ÷ या ≡ हो, खाना ४ में ≡ या ⁞ हो, खाना ५, १२ में ≡ या ≡ हो और तुला यानी खाना १५ में ≡ हो तो मृत्यु हो।

यदि खाना ६ का रूप शुभ खारिज हो और पुनरुक्त शुभ गृह में हो तो रोगी आराम पावे। यदि खाना ६ व १५ में ÷ या ≡ हो तो रोग की वृद्धि हो।

अन्य विधि—प्रस्तार के १ से १६ तक के कुल विन्दुओं को जोड़ें, यदि विन्दु अग्नि व वायु के अधिक हों तो रोगी अच्छा होगा यदि जल व पृथ्वी के अधिक हों तो मृत्यु होगी। यदि कुल विन्दु ३२ या इससे अधिक हों तो रोगी अच्छा होगा। यदि ३२ से कम हों तो भय है।

विन्दु चाल द्वारा हल



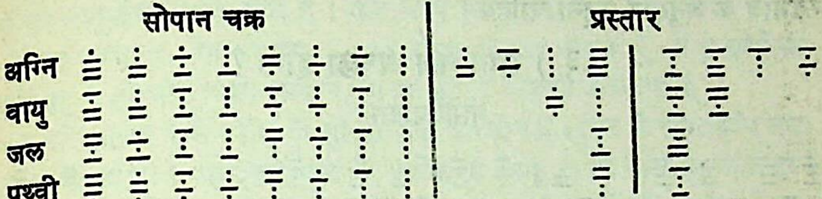
चूँकि खाना १५ का जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव ⁝ में विश्रान्ति पाता है। यद्यपि विषम रूप है तथापि मित्रक्षेत्री के नाते बलवान् है अतः यही लग्न माना। इसका वर्तमान रूप जल का ⁝ है। यह खाना ६ में है। सम बल पा रहा है और तीसरी दृष्टि है। कुछ बल पा रहा है। लग्न का पुनरुक्त रूप खाना ४ में भी है, वहाँ भी बलवान् है, इसका चौथा विन्दु जल का ⁝ है। यह खाना १० में सम बल पा रहा है तथा खाना १५ में पूर्ण बल पा रहा। अस्तु, विन्दु ४ बलवान है और वर्तमान इसका रूप ⁝ है, जो खाना १ में निर्बल है अतः बल साधारण है। यह दोनों विन्दु रोगी को आराम पाने के हैं।

अब इसका छठा विन्दु जल का रूप ⁝ है जो खाना १२ में मित्रगृही है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है। यह खाना ९ में शत्रुक्षेत्री तथा १४ में सम बल पा रहा है अतः कमजोर है। इसका आठवाँ विन्दु ⁝ है, जो प्रस्तार में है नहीं और वर्तमान इसका ⁝ बलवान् है। दोनों विन्दु साधारण बल पा रहे हैं।

अस्तु, फल हुआ कि रोगी अच्छा होगा। क्योंकि कायदा है यदि १ व ४

विन्दु बलवान् हों और ६ तथा ८ विन्दु निर्बल हों तो रोगी आराम पावे। विपरीत से विपरीत फल होगा।

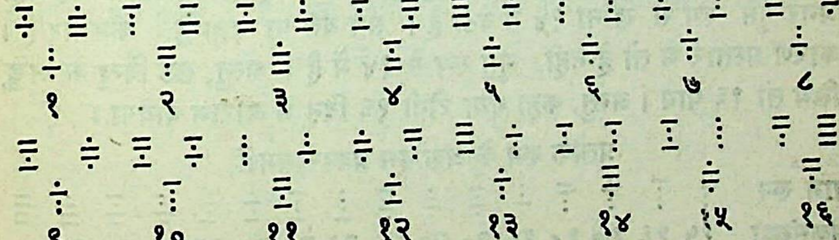
(२) रोग किस कारण से है ?



तुला-चालित विन्दु खाना ६ ⁝ में पहुँचा। पर यह रूप एतवार योग्य नहीं है। अस्तु, तुला गृह को लग्न माना। इसका छठाँ विन्दु जल का ⁝ है। यह खाना ६ और ११ में वायु तथा जल में है। अस्तु, कहा कि रोगी वात तथा बलगम रोग से पीड़ित है। इसे छठे विन्दु का वर्तमान रूप ⁝ है, जो खाना ९ तथा १० में अग्नि तथा वायु गृह में है। अस्तु, कहा गया कि रोगी बलगम हरारत (गर्मी) और वात से व्याकुल हो रहा है, रोग बढ़ रहा है। यह दशा रोग की है।

अब देखा कि किस कारण से ऐसी व्याधि हुई? छठे विन्दु का भूतकाल विन्दु कौन है? अस्तु, सोपान-चक्रानुसार पिछला विन्दु जल का ⁝ है और १२ वाँ विन्दु का भूतकाल विन्दु रूप ⁝ है। १२ वाँ विन्दु पृथ्वी का रूप ⁝ होता है। इससे पूर्व विन्दु भूतकाल का होता है। इसी कारण भूतकाल विन्दु ⁝ लिया। यह प्रस्तार में तो कहीं है नहीं। अस्तु, गुप्तोद्घाटन अवदह क्रमानुसार किया।

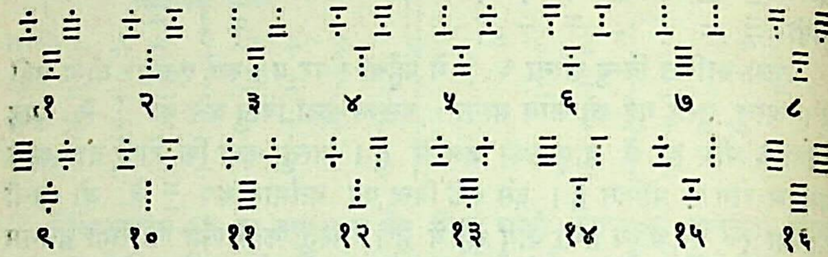
गुप्तोद्घाटन

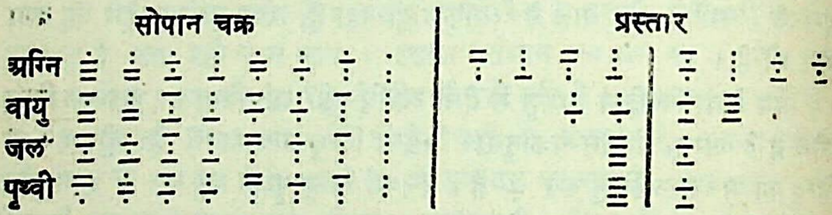


: यह रूप ÷ खाना १ तथा ८ में पाया जाता है। अस्तु, कहा गया कि रोग की जड़ बलगम और पित्त बिगड़ने से हुई—क्योंकि आचार्य सुर्खाव का कथन है कि रोग पैदा होने का कारण छठे तथा ११ वें विन्दु के भूतकाल के रूप के स्वभाव के अनुसार कहना चाहिये।

(३) रोगी कब अच्छा होगा ?

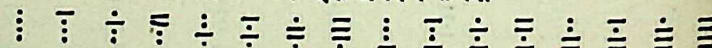
गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ३ में होकर खाना १ में विश्रान्ति पाता है। चूँकि खाना १ में शत्रुगृही है। अस्तु खाना २ के रूप ÷ को लग्न माना। इसका छठा विन्दु जल का ⁝ है। यह प्रस्तार में है नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १४ में बैठा है। सम बल पा रहा है। कमजोर है। कारण प्रस्तार में तो है नहीं, गुप्त रूप से १४ में है। अस्तु, छठे विन्दु के अङ्क लिये तो १६ पाये। अस्तु, कहा गया रोगी १६ दिन में आराम पायेगा।

प्रत्येक रूप के अंक इस प्रकार समझें

नाम रूप 

अंकसंख्या १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

(४) रोगी को शारीरिक रोग हैं या बाधा है ?

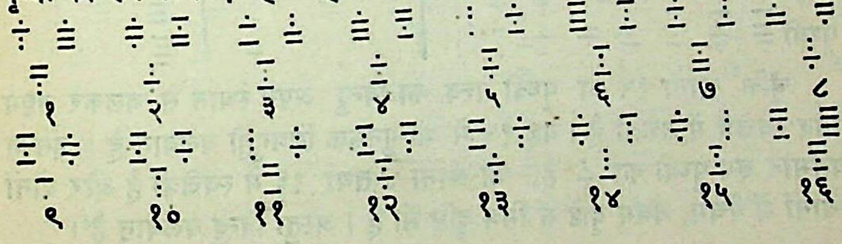
इस नियत से प्रस्तार बनावें। यदि प्रस्तार छठे गृह में ⁞ हो तो बाधा की बीमारी कहे अथवा ११ या १२ में हो तब भी बाधा का रोग है। यदि ☰ हो तो जादू-टोना किया गया है। यदि अन्य रूप हो तो रोग कहें। यदि लोहित ⁞, या मदंग ÷, या शीतांशु ⁞, या सौम्य ☰, या बोधन ⁞ में से कोई रूप छठे गृह में हो और दशम भाव में पुनरुक्त हो तो निश्चय प्रेतबाधा है।

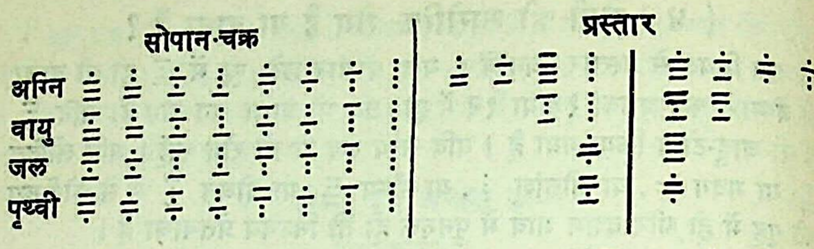
यदि खाना ६ में सौरि ☰ हो तो पित्त का जोर है। सिर में पीड़ा गर्दन तथा हलक में दर्द हो। यदि छठे भाव में अग्नि का विन्दु हो तो पित्त का जोर हो। वायु विन्दु हो तो वायु विकार कहें। यदि जल का विन्दु हो तो बलगम विकार कहें और यदि पृथ्वी का विन्दु हो तो अग्नि तथा वायु के प्रकोप से विकार है। यदि छठे गृह में अग्नि तथा वायु का विन्दु हो तो बात-पित्त का दोष कहें। यदि ३ विन्दु हों अर्थात् जल का विन्दु भी हो तो त्रिदोष कहें। यदि चारों विन्दु हों तो सन्निपात का रोग है।

फिर खाना ९ को देखें, यदि उसमें ÷ हो तो किसी के वियाग से बीमार हुआ है। यदि ⁞ हो तो पेट के विकार से बीमार हुआ है यदि ☰ हो तो मेदा की खराबी से बीमार हुआ है यदि ÷ हो तो पेचिश हुई है। यदि खाना ९ में ⁞ हो तो प्रेतबाधा है। यदि ⁞ हो तो बेहोशी मिरगी आदि राग हैं। विन्दु चाल में छठा तथा आठवाँ गृह का बलाबल देखना चाहिये। (विन्दु चाल)।

इसी नियत से प्रस्तार बनाया यह प्रस्तार बना।

चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना ५ में रुकता है। यह चारों विन्दु रखता है अतः इसका प्रमाण न करके १५ को लग्न माना। लग्न ÷ है। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का रूप कवि ⁞ है। यह प्रस्तार में है नहीं अतः गुप्तोद्घाटन किया—





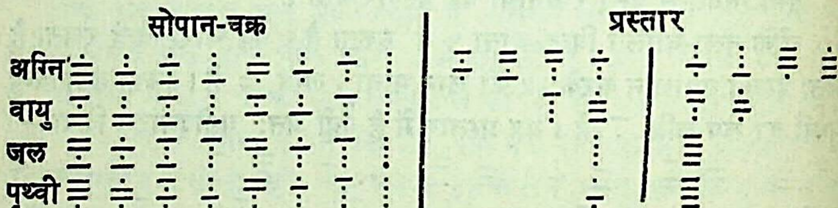
यह गुप्त रूप से खाना १० में बैठा है। अस्तु, कहा कि बाधा है। कारण, आचार्य सुर्खाब ने कहा है कि छठा विन्दु यदि वायु गृह में हो और वायु, पुनरुक्त हो तो बाधा की व्याधि है। यदि छठा विन्दु अग्नि गृह में हो और अग्नि या वायु में पुनरुक्त हो तो जादू-टोना किया गया है। यदि विन्दु जल या पृथ्वी में हो और अग्नि या वायु में पुनरुक्त हो तो रोग है।

(५) रोगी ने अपथ्य सेवन किया है या नहीं ?

प्रस्तार बनावें—यदि प्रस्तार के दूसरे गृह में जल या पृथ्वी का रूप हो तो रोगी ने जरूर अपथ्य सेवन किया है अन्यथा नहीं।

(६) मुझे पशु से लाभ होगा या नहीं

यहाँ पशु से तात्पर्य है छोटे पशु जैसे भेड़, बकरी, कूकुर इत्यादि।



चूँकि खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव स्वक्षेत्र में रुकता है। यह १५ में भी पुनरुक्त मित्रगृही बलवान् है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी का ⁝ है, जो खाना ४ तथा १६ में स्वक्षेत्री है और दोनों स्थानों में पंचम, नवम दृष्टि से मित्र दृष्टि भी है। अस्तु, विन्दु बलवान् है।

(२) इसका दूसरा विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो ४ व ८ में बलवान् स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी का ≑ है, जो खाना ६ में शत्रुक्षेत्री है और दृष्टि-युक्त है अतः साधारण बल मिल रहा है।

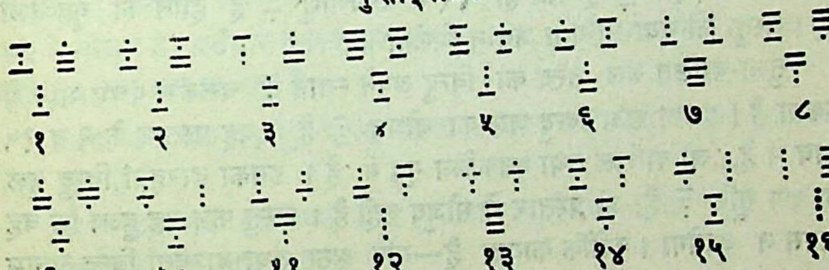
(६) इसका छठा विन्दु पृथ्वी का ⁝ है जो चौदहवें गृह में शत्रुक्षेत्री है। इसका वर्तमान रूप पृथ्वी का ≡ है, जो खाना २ में शत्रुगृही निर्बल है। लेकिन दृष्टियुक्त है। अस्तु, कुछ बल पा रहा है।

(१२) इसका बारहवाँ विन्दु अग्नि का मन्दग ≑ है। यह नवें गृह में स्वगृही के नाते बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का दैत्य गुरु ÷ है, जो खाना ४ व १६ में सम बल पा रहा है। अस्तु, कुछ बल मिल रहा है—इसलिये फल कहा कि पशु पालन से थोड़ा लाभ होगा। कारण, चारों विन्दुओं में केवल १ विन्दु बलवान् है और बाकी साधारण बल रखते हैं। यदि चारों विन्दु बलवान् हों तो पूर्ण लाभ हो।

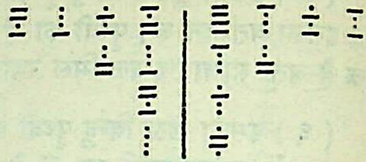
रूपों द्वारा फलादेश—१ में वाग्मी है, जो बलवान् है किन्तु २ में यही विपरीत होकर निर्बल हो गया है। ६ में स्वल्प बल पा रहा है। १२ में कवि निर्बल है अतः स्वल्प लाभ होगा।

(७) अमुक पक्षी या जानवर शिकार करेगा या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार

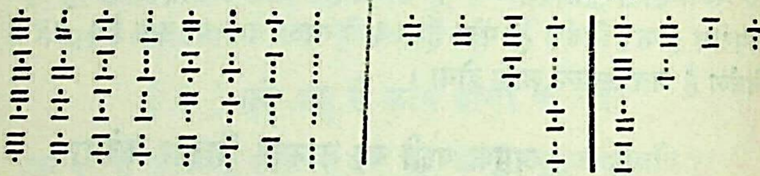


तुला-चालित विन्दु खाना ३ में रुका। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का है। यह प्रस्तार में नहीं पाया जाता है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप है, यह भी प्रस्तार में नहीं है। अतः गुप्तोद्घाटन करके गुप्त रूप निकाला।

जो गुप्त रूप से खाना ८ व ११ में स्वक्षेत्री तथा मित्रगृही है। अस्तु, कहा गया कि यह जानवर शिकार नहीं करेगा। कारण, यह कायदा है कि छठा विन्दु अग्नि गृह में हो तो जानवर शिकार करेगा। यदि ऐसा न हो तो विपरीत फल कहें। जब खास बिन्दु न हो तो उसके वर्तमान से फलादेश होगा।

(८) मेरा छोटा सा पशु अथवा पक्षी खो गया है, मिलेगा या नहीं ?

सोपान चक्र | प्रस्तार



विचारणीय गृह—विन्दु ६ व १२ पुनरुक्त दाखिल या सावित गृह में हों तो पशु मिलेगा, विपरीत से नहीं।

६ में लोहित है बली है, १२ में तीक्ष्णांशु है हानि का गृह बली है। अस्तु, जो गया सो गया अब न मिलेगा।

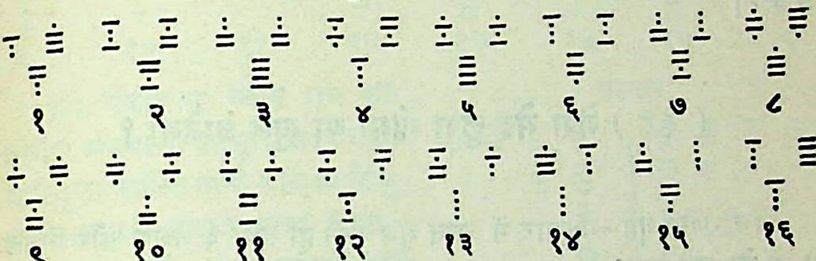
तुला-चालित जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर पंचम भाव में रुकता है। इसका छठा विन्दु जल का बोधन है। यह प्रस्तार के २ व १५ भाव में है, जो दाखिल तथा मुनकलिब गृह में है। इसका बारहवाँ विन्दु जल का रूप सूरि है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। अस्तु फल यह हुआ कि वह वापस न आयेगा। क्योंकि कायदा है—यदि छठा तथा बारहवाँ बिन्दु आगम

(दाखिल) अथवा स्थिर (साबित) गृहों में हो तो आवे और यदि विपरीत हो तो न आवे। छठा विन्दु दाखिल तथा मुनकलिब में होने में बल कम पड़ गया।

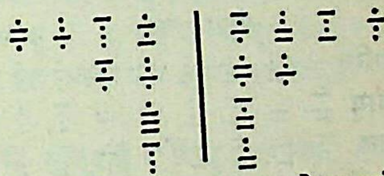
(६) मेरा सेवक ईमानदारी से सेवा करेगा या हानि पहुँचायेगा ?

विचारणीय गृह—१, ६. १२ के बलाबल से फलादेश कहा।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि खाना १५ से वायु तत्त्व का विन्दु चलकर खाना १ में होकर शत्रु-गृही खाना ४ में रुकता है। लेकिन वायु ⁝ को स्वक्षेत्री के नाते लग्न विन्दु माना। इसका छठा विन्दु वायु का रूप ⁝ है, जो गुप्त रूप से खाना १३ में मित्रगृही है तथा खाना १४ से स्वगृही बलवान् है। इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो प्रस्तार में प्रकट तो नहीं पर गुप्त रूप से मौजूद है। वर्तमान इसका रूप जल का आर ⁝ है, जो खाना १ में शत्रु-गृही है। सम बल पा रहा है।

प्रथम विन्दु बलवान् है, परन्तु उसका वर्तमान नदारद है, अतः कुछ बल मिल रहा है।

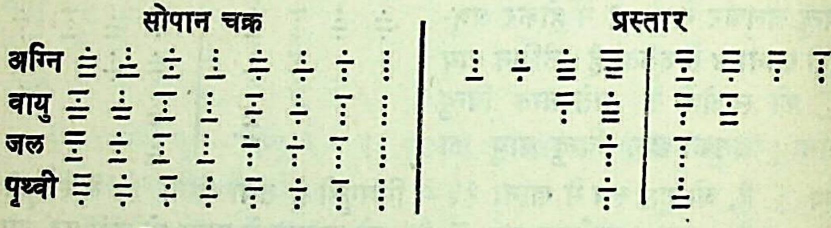
अस्तु, कहा गया इस सेवक द्वारा पूर्ण लाभ न होगा। सचेत रहें। कारण, ३ विन्दुओं में केवल एक बलवान् है।

(१०) सेवक की प्रकृति कैसी है ?

इसी नियत से प्रस्तार बनावें फिर देखें प्रस्तार के छठें गृह को यदि उसमें सौम्य ☷ रूप हो तो प्रकृति अच्छी है, क्रूर रूप हो, छठें गृह में शुभ दाखिल या शुभ सावित हो तो उत्तम प्रकृति है, अन्यथा क्रूर है। विन्दु चाल में भी यदि तुला-चालित विन्दु स्वगृही या मित्रगृही में विश्रान्ति पावे और छठा विन्दु पुनरुक्त शुभ गृह में हो तो सौम्य प्रकृति का हो अन्यथा क्रूर हो, उसका भरोसा न करें।

(११) मेरा भेद छुपा रहेगा या खुल जायेगा ?

विचारणीय गृह—प्रस्तार में लग्न शुभ बली हो तथा ६ अशुभ और निर्बल हो तो भेद लुप्त रहता है, अन्यथा प्रकट हो जाता है।

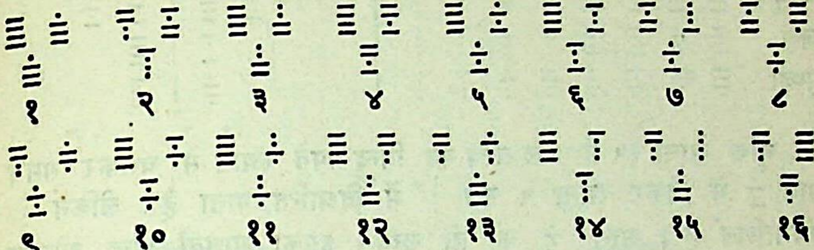


तुला-चालित ⁝ का वायु विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना १ मित्रगृही में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना।

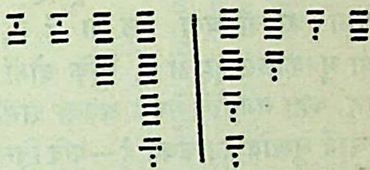
इसका छठा विन्दु वायु का वक्र ⁝ है, यह खाना ८ शत्रुक्षेत्री में है। मगर विन्दु सावित गृह में पड़ा है अतः कहा गया कि भेद छिपा रहेगा। आचार्य सुर्खाव का कथन है—यदि छठा विन्दु खारिज अथवा मुनकलिव गृह में हो तो भेद छिपा न रहेगा। यदि हासिल या सावित गृह में हो तो भेद छिपा रहेगा।

(१२) भागा हुआ आदमी वापस आयेगा या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



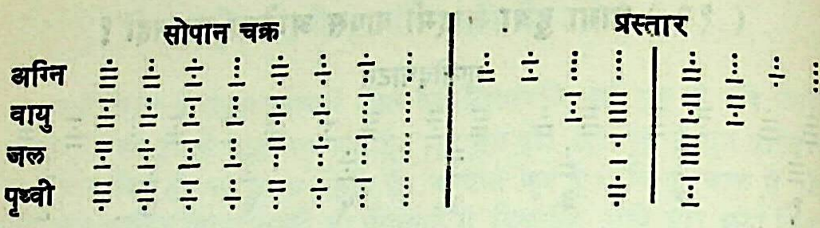
इस प्रकार का ध्यान धर कर प्रस्तार बनाया तो यह सूरत प्रस्तार की आई-तुला-चालित्त पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना २ शत्रु-गृही में आकर विश्रान्ति पाता है, इसी को लग्न माना। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का मंदग ÷ है। वह प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का तीक्ष्णांशु ÷ है, वह भी मौजूद प्रस्तार में में नहीं, अतः अवदह चक्र के अनुसार इस प्रस्तार से गुणा करके गुप्त रूप से निकला।

इस गुप्त रूप से खाना ८ और १० में मौजूद है। विन्दु मुनकलिब तथा स्थिर दोनों में पाया जाता है। अस्तु, कहा गया कि वापस आकर फिर चला जायेगा।

नोट—प्रस्तार का छठा रूप जल या पृथ्वी हो तथा पुनरुक्त भी जल या पृथ्वी में हो तो वापस आ जाता है, अन्यथा नहीं।

(१३) भागा हुआ नौकर या दासी लौटेगी या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्न में ६, ७, ८ गृह के रूप जल या पृथ्वी हों या इन्हीं तत्त्वों के गृहों में पुनरुक्त हों तो लौट आता है, अन्यथा नहीं ?



चूँकि खाना १५ से जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव ⁝ में होकर खाना ५ रूप ⁝ में विश्रान्ति पाता है। लेकिन ⁝ अप्रमाणित है। अस्तु ⁝ को ही लग्न। इसका सातवाँ विन्दु शीतांशु है, जो खाना २, ५, ६ में मौजूद है। खारिज तथा मुनकलिब गृह में विन्दु हैं। इसका आठवाँ विन्दु जल का ⁝ है, जो प्रस्तार के खाना ९ व १० खारिज तथा मुनकलिब गृह में है, चूँकि दोनों विन्दु खारिज तथा मुनकलिब गृह में हैं। अस्तु, कहा गया कि सेवक अथवा दासी के वापसी की कोई आशा नहीं क्योंकि आचार्य सुर्खाव का कथन है—यदि विन्दु दाखिल या सावित गृह में हो तो वापस आयेगा और यदि खारिज या मुनकलिब में हो तो न आयेगा।

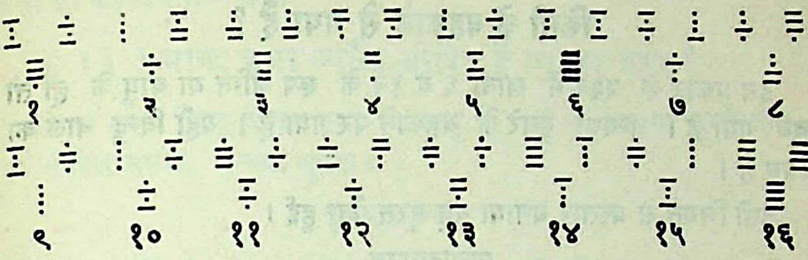
(१४) भागे हुए व्यक्ति की तलाश में आदमी भेजा है उसे वह मिलेगा या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्न में ६, ७, ८, १२ गृहों के रूप जल या पृथ्वी के हों तथा जल या पृथ्वी में पुनरुक्त हों तो भागा हुआ व्यक्ति मिल जाता है, अन्यथा नहीं।

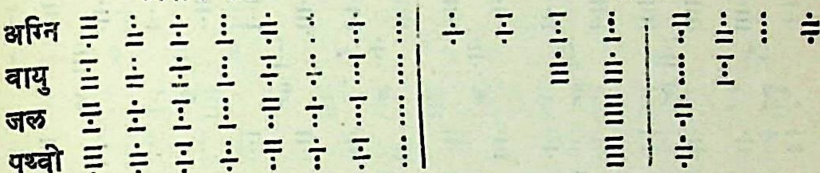
इसी प्रकार का ध्यान करके प्रस्तार बनाया तो यह प्रस्तार बना।

विचारणीय गृह—६, ७, ८, १२ के विन्दु दाखिल या सावित में पुनरुक्त हों तो वह मिलेगा अन्यथा नहीं।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | **प्रस्तार**



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न विन्दु माना। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का रूप मन्दग ÷ है, वह खाना १५ सावित गृह में है। इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी का तीक्ष्णांशु ÷ है, वह प्रस्तार के सप्तम भाव में दाखिल गृह में है इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी का दैत्य गुरु ÷ है। वह भी आठवें गृह में सावित गृह में बैठा है। इसका बारहवाँ विन्दु अग्नि का ÷ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना २ तथा खाना ७ और १२ में मौजूद है। खाना २ में मुनकलिब और खाना ७ और १२ केन्द्र दाखिल और सावित में है। गरज कि चारों विन्दु खाना दाखिल व सावित में अधिकतर हैं। यद्यपि दो जगह मुनकलिब व खारिज में है, लेकिन पुनरुक दाखिल सावित के वह विन्दु कमजोर हैं। आचार्य सुर्खाव ने लिखा भी है—यदि विन्दु दाखिल या सावित में अधिकतर हो तो भागा हुआ प्राणी वापस आयेगा। विपरीत से नहीं।

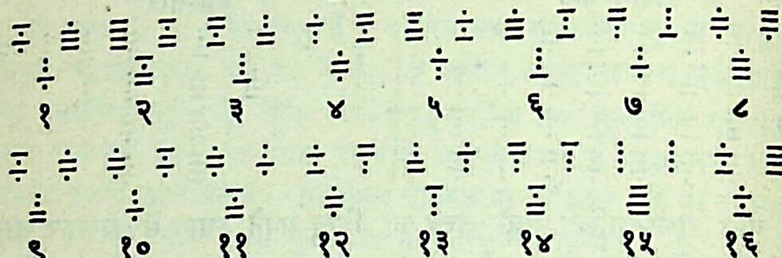
नोट—खाना १ ५, ९, १३ खारिज हैं, २, ६, १०, १४ मुनकलिब हैं, ३, ७, ११, १५ दाखिल कहलाते हैं तथा ४, ८, १२, १६ साबित कहलाते हैं।

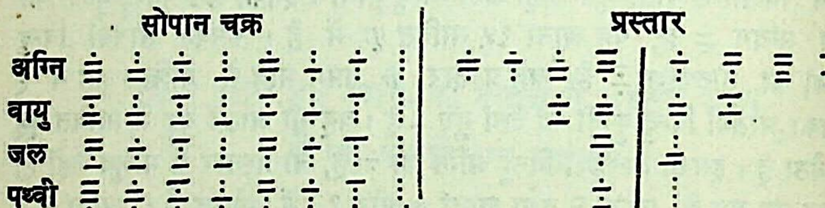
(१५) भागा हुआ व्यक्ति स्वयं भाग गया है या किसी के बहकाने से गया है ?

इस प्रकार के प्रश्न में खाना ६ व १२ के रूप अग्नि या वायु के हों तो स्वयं गया है। अन्यथा दूसरे के बहकाने पर गया है। यही विन्दु चाल का नियम है।

इसी नियत से प्रस्तार बनाया यह सूरत पैदा हुई।

गुप्तोद्घाटन





चूंकि तुला-चालित वायु तत्त्व का विन्दु खाना १ ⁞ में रुकता है। इस को लग्न माना। इसका छठा विन्दु वायु का उष्णगु ⁝ है, वह खाना १२ मित्र के गृह में है, और खारिज गृह हैं। इसका बारहवाँ विन्दु जल का कवि ⁞ है, यह प्रकट रूप से प्रस्तार में तो नहीं बल्कि गुप्त रूप से खाना १३ खारिजी गृह में बैठा है। उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है, मध्यम बल पा रहा है।

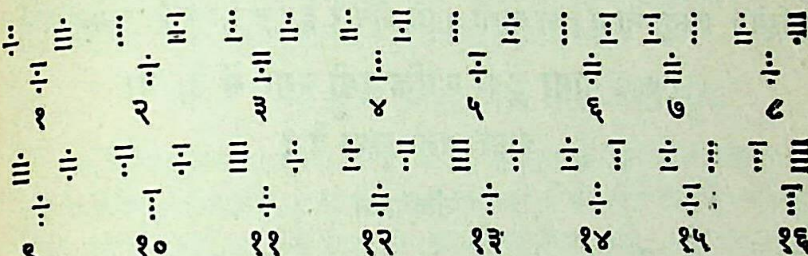
अस्तु, परिणाम यह निकला कि वह व्यक्ति स्वयं भाग गया है, किसी के बहकाने से नहीं गया है। आचार्य सुर्खाव का कथन है कि यदि दोनों विन्दु खारिज

अथवा मुनकलिब गृहों में हो तो खुद चला गया है, यदि दाखिल या सावित गृह बली हों तो बहकाने से गया है।

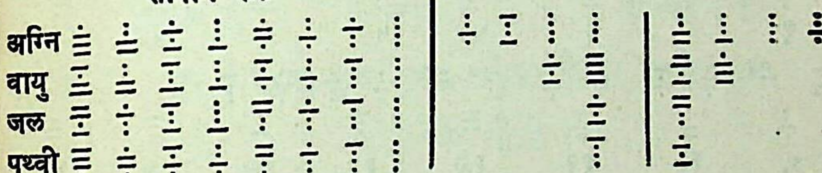
(१६) भागा हुआ व्यक्ति जीवित है या मर गया ?

भागे का दशम विन्दु जीवन तथा १४ मृत्यु है, इस में जल या पृथ्वी रूप हो तो जीवित समझें, अन्यथा मृतक।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि खाना १५ का जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में विश्रान्ति पाता है, यद्यपि वह दाहिनी तरफ भी खाना ५ में जमकर रुकता है। मगर खाना ५, ६ में ⁝ का प्रमाण न करके सप्तम भाव ⁝ को लग्न माना।

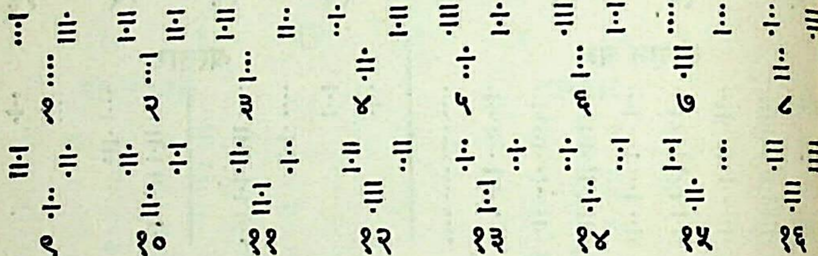
इसका दशम विन्दु पृथ्वी का रूप ÷ है। यह प्रकट रूप में तो प्रस्तार में है नहीं, मगर गुप्त रूप से खाना १५ में मित्रगृही बलवान् है, तथा खाना १ व ५ में सम बल रखता है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह खाना १ में उत्कृष्ट मित्रगृही है, सम बल पा रहा है और दृष्टियुक्त भी है। यह विन्दु जीवित से सम्बन्ध रखता है, इसका १४ वाँ विन्दु पृथ्वी का ⁝ है। यह

सोलहवें में गृह में बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁝ है, यह ५, ६, ७ में शम बली तथा शत्रुगृही हैं। यह साधारण बल पा रहा है। यह विन्दु मृत्यु का है।

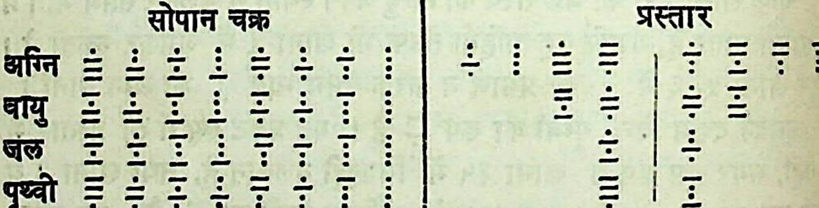
इसका बारहवाँ विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान ÷ गुप्त रूप से खाना १३ में मौजद है। साधारण बल पा रहा है, यह विन्दु रोग का है। इसमें चौथा विन्दु बलवान् है। आचार्य सुखवि का कथन है कि जो विन्दु बलवान् हों उन्हीं के वलाबल से फल कहना चाहिये। अस्तु, भागा हुआ प्राणी न तो बीमार है, न मृतक है, कुशल से है।

(१७) भागा हुआ व्यक्ति इसी नगर में है, या बाहर चला गया है ?

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ⋮ में विश्रान्ति पाता है। मगर यह रूप मान्य नहीं है, अतः खाना ≡ को लग्न माना।

इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं पाया जाता है। मगर इसका वर्तमान पृथ्वी ÷ खाना ८ और १३ में स्वक्षेत्री तथा समक्षेत्री बलवान् है।

यह विन्दु मुकाम हाज़िर नगर से सम्बन्ध रखता है। इसका सोलहवाँ विन्दु पृथ्वी का ≡ है। यह खाना ५ व १६ में सम बल तथा स्वक्षेत्री है, पूर्ण बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, जो खाना १० व ११ में शत्रु गृही तथा मित्रगृही है, और दृष्टि ७ तथा १२ है। यह विन्दु बाहर से सम्बन्ध रहता है, ध्यान पूर्वक देखो दशम विन्दु १६ वें में अतिरिक्त बलवान् है और सोलहवाँ बलवान् है। अस्तु, कहा वह नगर से बाहर नहीं गया है।

(१८) भागा हुआ प्राणी किस तरफ़ गया है ?

उपर्युक्त प्रस्तार का दशम विन्दु ÷ है, यह सूर्य से सम्बन्ध रखता है। सूर्य पूर्व से सम्बन्ध रखता है, अतः कहा गया कि वह पूर्व की ओर गया है। यदि दशम विन्दु बलवान् हो तो उसी दिशा से सम्बन्धित दिशा कहें, यदि १६ वाँ विन्दु बलवान् हो तो उसके माफिक़ दिशा कहें। रूप ≐ ≐ ÷ ⁝ पूर्व, ≡ ≡ ÷ ⁝ पश्चिम ≡ ÷ ⁝ ≡ उत्तर ≡ ≡ ÷ ÷ दक्खिन के हैं।

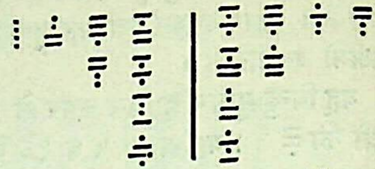
(१९) भागा हुआ पुरुष अकेला है या उसके साथ कोई और भी है ?

उपर्युक्त प्रस्तार में सातवाँ विन्दु देखा तो जल का रूप ≡ पाया। यह प्रस्तार में २ जगह खाना ३ व १२ में बलवान् है। अतः कहा दो प्राणी उसके साथ हैं, अकेला नहीं है। यदि निर्बल गृह में भी होवे तब भी साथी का होना कहें।

(२०) अमुक वस्तु खो गई है या चोरी गई है ?

यदि द्वितीय रूप अग्नि या वायु गृह हो या इन्हीं में पुनरुक्त हो तो चोरी गई जानें, अन्यथा खोई हुई।

प्रस्तार



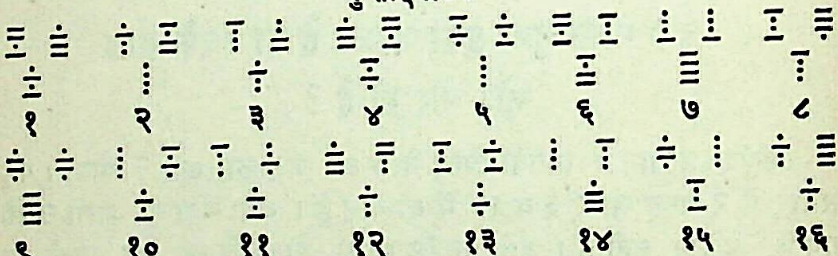
तुला-चालित विन्दु अष्टम भाव में रुका मगर खाना १५ को लग्न माना। इसका दूसरा विन्दु [illegible] है, यह खाना १४ मुनकलिब में है। इसका छठा विन्दु जल का [illegible] है, यह गुप्त रूप से चौथे गृह में है। स्थान सावित गृह है, और खाना ६ व १२ में गुप्त रूप से स्थान मुनकलिब व खारिज में है। खारिज तथा मुनकलिब में अधिकतर विन्दु हैं।

अस्तु, कहा माल चोरी गया है। क्योंकि कायदा है कि यदि विन्दु खारिज तथा मुनकलिब में पुनरुक्त हो तो माल चोरी गया है। यदि दाखिल या सावित में हो तो चोरी नहीं गया है।

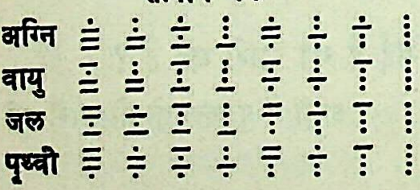
आचार्य सुर्खाव का कथन है कि यदि दूसरा विन्दु बलवान् हो और दाखिल या सावित में पुनरुक्त हो तो माल चोरी नहीं गया है। कहीं रखकर भूल गया है, इसके विपरीत से चोरी गई समझें।

(२१) खोई हुई वस्तु का पता लगेगा या नहीं ?

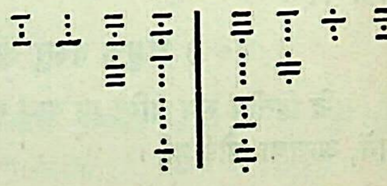
गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना १५ का पृथ्वी तत्त्व का अपने स्थान से चलकर खाना पांच में विश्रान्ति पाता है। विन्दु पृथ्वी तत्त्व का उत्कृष्ट मित्रक्षेत्र है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, जो गुप्त रूप से खाना १३ में है और मित्रदृष्टि से युक्त है। नवम दृष्टि है। अस्तु, विन्दु बलवान् है। इसका दूसरी विन्दु ÷ है, जो गुप्त रूप से खाना १३ में है और बलवान् है। इसका वर्तमान रूप ÷ है, जो प्रकट तथा गुप्त कहीं नहीं है, अतः कमजोर है।

इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी का मन्दग ÷ है, जो नवम तथा १५ भाव में है, सम बल तथा मित्र बल पा रहा है। कायदा यही है कि विन्दु बलवान् हो और लग्न से दृष्टि हो तो नष्ट वस्तु मिल जायेगी। अन्यथा नहीं मिलेगी। यदि विन्दु भिन्न हों तो कुछ मिलेगी कुछ न मिलेगी।

अन्य सरल विधि—खाना ६ के रूप को ७ से गुणा करें। यदि हासिल शुभ दाखिल हो तो मिल जायेगी। यदि किसी रूप से खारिज हो तो न मिलेगी। फिर प्रस्तार के कुल विन्दुओं को जोड़ें। २ पर भाग दें। यदि १ बाकी बचे तो मिलेगी। यदि पूरा बट जाय तो न मिलेगी।

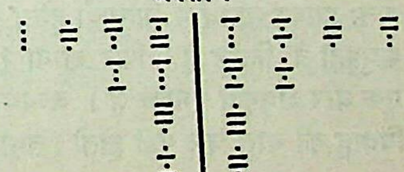
सप्तमगृही प्रश्नों का विवरण

(१) विवाह होगा या नहीं ?

विचारणीय विन्दु—१, ४, ७, ६, १०, ११, १४ होते हैं।

गृह विवरण—प्रथम लग्न है, उसे ही एक-एक मिलाकर ग्यारह होता है। अतः वह सर्वप्रथम विचारणीय होता है। चौथा स्थान सुख का है, सुख का मूल नारी है। अतः यह विन्दु इस प्रश्न का परमावश्यक अंग है। सातवां स्त्री-सुख है। स्त्रीसुख का अर्थ होता है गृहस्थाश्रम का सुख। यह इतना बड़ा होता है कि ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी तथा संन्यासी—इन तीनों आश्रमों को भिक्षा इसी से मिलती है। वर्तमान काल के आश्रम विहीन समाज तथा धर्म-निरपेक्ष राज्य में भी जो बीबीवाला दोस्त होता

प्रस्तार

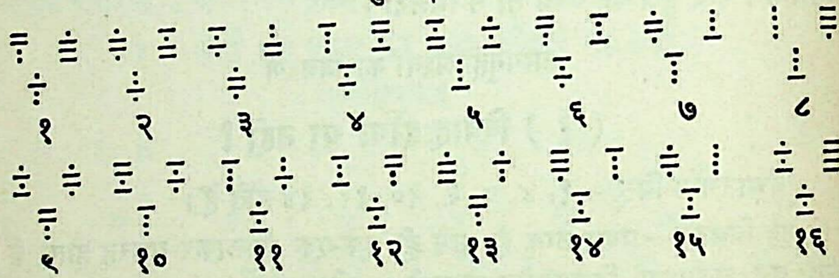


है, इष्ट-मित्र उसी का गृह तलाश करते हैं। कुछ न सही तो भी चाय तो घर की बनी शुद्ध तथा सद्भावना से समर्पित मिल ही जायेगी ! इसी आशा से।

अतः इस विन्दु को ही सभी रमलज्ञों ने निर्विरोध एक मत होकर प्रधानता दी है। नवाँ विन्दु धर्माधर्म गृहस्थ का है। दसवाँ विन्दु कर्म, मान-प्रतिष्ठा सामाजिक या राजनैतिक पद तथा अधिकार एवं अधिकारी का है। इसे संक्षेप में मानव के कर्मक्षेत्र का मूलपिंड कह सकते हैं।

११ वाँ विन्दु आशा, मित्र, सहायता या सहायक का है, इन सबका साकार रूप ही अर्द्धाङ्गिनी अनन्त काल पूर्व मानो गई थी और आज भी मानी जाती है। इसे आचार्य लोग क्यों छोड़ते। अब चौदहवाँ गृह दूसरे का साक्षी है, दूसरा गृह सम्पत्ति तथा अपत्य का होता है। जिसके लिये गृहिणी रिजर्व बैंक होती है। अतः ध्यान देने की बात है कि १२ गृहों में से ७ गृह विवाह के प्रश्न में छान डाले जाते हैं। तभी दैवज्ञ उत्तर देता है।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला चालित पृथ्वी विन्दु पहिले प्रस्तार के छठे, फिर वहाँ से सातवें, फिर आठवें गृह तक जाता है। परन्तु विश्वसनीय रूप सातवाँ ÷ मिलता है। यह मित्रगृही है। लग्नगृह इसी को माना। यह सोपान क्रम में पृथ्वी पंक्ति का है। अतः इसका सातवें में मित्रगृही होना बली है। एवं दूसरे भाव में भी ÷ है, जो शत्रुगृही है, निर्बल है। फिर खाना १५ में भी मित्रगृही है। लग्न-विन्दु यद्यपि एक बार शत्रुगृही पुनरुक्त है। अन्यथा प्रश्न करने का अवसर न मिलता तथा विवाह की बात चल पड़ी होती। तथापि यह तो बली है। अब आगे के विन्दुओं

की बात राम जाने। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह तीसरे में मित्र-गृही है। यह गुप्त रूप से खाना ४ में स्वगृही, छठे गृह में शत्रुगृही तथा खाना १२ में स्वगृही है। १० तथा ५ दृष्टि-सम्बन्ध भी अच्छा है, बल इसे ६० प्रतिशत प्राप्त हो रहा है।

इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का सोपान चक्र में ÷ है। यह प्रस्तार में प्रथम उत्कृष्ट मित्रगृही, छठे गृह में शत्रुगृही तथा गुप्त से ९ व १३ में उत्कृष्ट मित्रगृही है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। मगर गुप्त रूप से प्रथम गृह में उ० मित्रगृही है। बल में यह विन्दु ५५ प्रतिशत है।

इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी का सोपान चक्र में शीतांशु ⁝ है, जो खाना ८ में स्वगृही है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का सौरि ≡ है, यह खाना १४ में शत्रुगृहो है। बल इसका कम रह जाता है अर्थात् ३३ प्रतिशत बल है।

अब इसका नवाँ विन्दु अग्नि का ≐ है, जो खाना १३ में स्वगृही है। इसका वर्तमान विन्दु ≐ है, जो प्रस्तार में न तो प्रकट है और न गुप्प रूप से ही पाया जाता है। बल इस का २० प्रतिशत ही रह जाता है। प्रश्न के विषयभूत सज्जन विशुद्ध नास्तिक ज्ञात होते हैं। अब विवाह के लोभ से शायद वे मन से इतवार का व्रत करने लगे हैं।

इसका दशम विन्दु कर्म का ≐ है, जो गुप्त तथा प्रकट प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ÷ है, जो खाना ९ में स्वगृही है तथा खाना ११ में गुप्त रूप से शत्रुगृहो है। इसका ११ वाँ विन्दु भी अग्नि का ÷ है, जो खाना ९ में स्वगृही है तथा ११ में गुप्त रूप से शत्रुगृही है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ⁝ है, जो प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ५ तथा ९ में स्वगृही बैठा है। बल इसका ३० प्रतिशत है।

अब चौदहवाँ विन्दु ढूँढा तो अग्नि का ÷ पाया, जो प्रस्तार में प्रकट तो नहीं है मगर गुप्त रूप से खाना २ में मित्रगृही बैठा है। इसका वर्तमान रूप ÷ अग्नि का गुप्त रूप से खाना १ में स्वगृही बैठा है। दृष्टि ७ की अशुभ है। अस्तु, बल ३० प्रतिशत है।

इन सब का सार परिणाम यह निकला कि विवाह होगा।

इसी प्रश्न में नीचे लिखे क्रम से अन्य प्रश्न विचारे जाते हैं। यद्यपि आचार्यों ने इन प्रश्नों को अलग-अलग प्रस्तार देकर स्पष्ट किया है। परन्तु वह व्यर्थ का विस्तार-मात्र है। हम तो विचारणीय विन्दु ले रहे हैं।

(१) प्रथम विन्दु की निर्बलता से पति अस्वस्थ रहता है।
(२) दूसरे ,, ,, धन हानि होती है।
(३) तीसरे ,, ,, परिवार छुटता है।
(४) चौथे ,, ,, गृह-हानि होती है।
(५) पाँचवें ,, ,, सन्तान प्रतिकूल होतो है।
(६) छठे विन्दु को निर्बल होना चाहिये। यदि बली हुआ तो शत्रु वृद्धि करता है।
(८) आठवें विन्दु के निर्बल होने से ऋण-वृद्धि होती है।
(९) नवें बिन्दु के निर्बल होने से दुर्भाग्य उदय होता है।
(१०) दशम ,, ,, मान-प्रतिष्ठा भंग होती है।
(११) ग्यारहवें ,, ,, सन्मित्र छोड़ देते हैं, कुमित्र लग जाते हैं।
(१२) बारहवें ,, ,, पशु-हानि होती है और दिया हुआ ऋण डूब जाता है।
(१३) तेरहवें विन्दु ,, ,, दीनता बढ़ती है।
(१४) चौदहवें ,, ,, दम्पति का चरित्र भ्रष्ट होता है।
(१५) पन्द्रहवें ,, ,, परस्पर कलह होता रहता है।
(१६) सोलहवें ,, ,, सन्तान का अभाव होता है।

इन १६ विन्दुओं के विचार में जहाँ मूल विन्दु प्रस्तार में न मिले, वहाँ विन्दु का वर्तमान विन्दु लेना चाहिये। भविष्य विन्दु प्रत्येक विन्दु का विचारना अत्यन्त आवश्यक है। ध्यान देने पर आश्चर्य होता है कि आचार्य दानियाल, सुर्खाव इत्यादि इन अभारतीय विद्वानों ने विवाह के प्रश्न पर कितनी छान-बीन की है। साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व जब कि सिकन्दर बादशाह भारत

में आया था, उसके साथ आनेवाले महात्मा सुर्खाव के साथ ही यह रमल विद्या भारत में आई। तथा इन्हीं के मूल अरबी भाषा के ग्रंथ के परशियन में किये हुए आज से १०८ वर्ष पूर्व के अनुवाद-ग्रंथ से हम यह विचार उद्धृत कर रहे हैं। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के ग्रंथों में तो विवाह प्रकरण स्वतन्त्र भाग होती ही है।

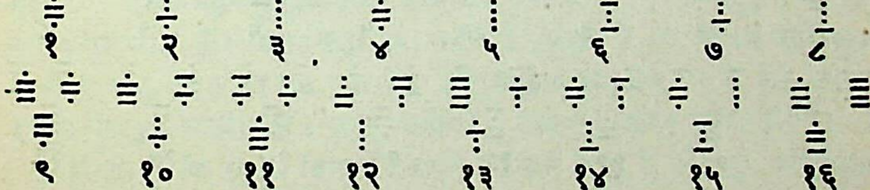
सम्भव है, अन्य पाठक इस पुस्तक में विवाह होगा या नहीं ? इस प्रश्न के विवरण में इतना विचार देखकर सोचें कि यह क्या भूल-भुलैया है ? परन्तु यह सब उसका संक्षिप्त—अति संक्षिप्त रूप है। क्योंकि विवाह-सम्बन्ध में भारतीय सिद्धान्तानुसार ज्योतिर्विद् आज भी विचार करते हैं। ज्योतिष शास्त्र के मुहूर्त भाग में (मुहूर्त-चिन्तामणि, मुहूर्त-मर्तण्ड, शीघ्रबोध आदि ग्रंथों में) सौम्य कर्म (विवाह, उपनयन, व्रतारम्भ, गृह-निर्माण, यात्रादि) तथा क्रूर कर्म (शत्रु के किले पर चढ़ाई, शत्रु-देश का लूटना, नगर-दाह, वध, बन्धन, चौर-कर्म, विषप्रयोगादि) का जितना निरूपण है, वह विवाह विचार के समक्ष कुछ नहीं है। लिखने को तो इस पर बहुत कुछ जी चाहता है। परन्तु अप्रस्तुत चर्चा समझ कर रुक जाते हैं। वर्तमान समाज में तो कुली की तरह पण्डित पकड़ लिया, नकली कुंडली बनवा ली, बस, लड़की या लड़के की उम्र चार साल कम हो गई।

अस्तु, रमलज्ञ को बड़ी सावधानी से सारी बातों पर विचार कर तभी सन्तोष-जनक उत्तर प्रश्नकर्त्ता को देना चाहिये।

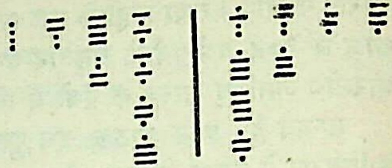
(२) यह विवाह जो निश्चित हो चुका है, शान्ति-पूर्वक होगा या नहीं ?

विचारणीय गृह—१, ५ होते हैं।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व विन्दु पाँचवें गृह में उत्कृष्ट मित्रगृही में रुकता है। यद्यपि इसने दाहिनी ओर खाना ११ तक सर की है। मगर ÷ को बलवान् पाया। यही लग्न-विन्दु है। यह ग्यारहवें में मित्रगृही पुनरुक्त है, और इसका वर्तमान न्दु पृथ्वी का ÷ है, जो प्रस्तार में प्रकट तो नहीं है मगर गुप्त रूप से खाना २ तथा १० में शत्रुगृही है। बल में यह ३० प्रतिशत माना जायेगा।

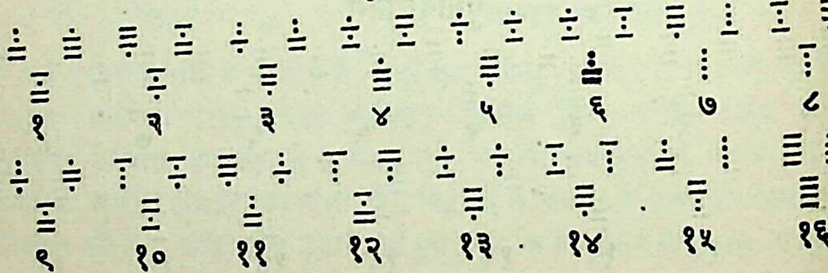
इसका पाँचवाँ विन्दु पृथ्वी का ⁝ है, जो प्रगट रूप में तथा गुप्त रूप में भी कहीं नह है। इ का वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⋮ है, जो खाना ८ में स्वक्षेत्री के नाते बलवान् है, इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ≡ है, जो खाना १ में उ. मित्रक्षेत्री है, ४० प्रतिशत का बल मिला।

नतीजा यह निकला कि पूर्ण शान्ति से तो नहीं, साधारण रूप में हो जायेगा। कायदा है, यदि १ व ५ दोनों विन्दु बलवान् हों तो पूर्ण शान्ति से काम हो जायेगा। विपरीत से बलाबल देखकर फलादेश कहें।

(३) यह विवाह किसके द्वारा निश्चित होगा ?

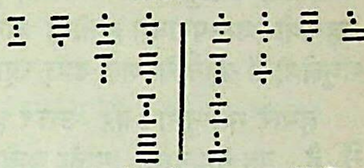
विचारणीय विन्दु—केवल सातवाँ है।

गुप्तोद्घाटन



तुला-चालित वायु विन्दु अष्टम भाव ⁝ में रुकता है। शत्रुगृही लग्न हुआ। इसका सातवाँ विन्दु वायु का ⁝ है, जो प्रस्तार में प्रकट रूप में नहीं है। मगर गुप्त रूप से खाना १ तथा

प्रस्तार



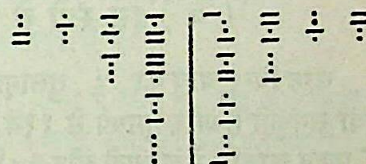
९ में मित्रगृही मौजूद है। इसका वर्तमान वायु का ⁝ है, जो खाना १ में मित्रगृही तथा खाना ६ में स्वगृही तथा ११ में उ. मित्रगृही है। अस्तु ७५ प्रतिशत बल पा रहा है। परिणाम यह निकला कि गुप्त रूप से अपने वंशज या किसी निकटसम्बन्धी के द्वारा तय होगा। कारण, विन्दु गुप्त रूप से खाना १ व ९ में बलवान् है। कायदा यही है कि जिस गृह में विन्दु बली हो उसी से सम्बन्धित रिश्तेदार द्वारा विवाह तय होगा।

(४) जिस स्त्री से विवाह होने जा रहा है वह कैसी है ?

विचारणीय विन्दु सातवाँ ही प्रधान रूप में किया जायेगा। क्योंकि कैसी है ? यह बड़ा गोल-मटोल सवाल है। ऐसे अवसर पर दैवज्ञ को कागज की नाव पर समुद्र पार करना पड़ता है।

चूँकि तुला-चालित विन्दु अष्टम भाव रूप ⁝ पर शत्रु गृह में विश्रान्ति पाता है। यह लग्न विन्दु है। इसका सातवाँ विन्दु शीतांशु ⁝ वायु का है, जो प्रस्तार में १६ वें में शत्रुगृही है।

प्रस्तार



इसका वर्तमान रूप वायु ⁝ है, जो खाना ५ व १० में स्वक्षेत्री तथा मित्रगृही है। दृष्टि-अर्द्धशत्रु दृष्टि तथा साधारण दृष्टि (३) है। अस्तु, साधारण बल पाया जाता है। अतः कहा गया यह स्त्री पूर्णरूप से तो पवित्र नहीं कुछ गन्दी है वायु का झोंका लग गया है। भविष्य जल का रूप ⁝ है, जो खाना १६ में मित्रगृही बलवान् है। अस्तु, भविष्य में उज्ज्वल चरित्र वाली होगी।

कायदा है कि सप्तम विन्दु मय अपने वर्तमान विन्दु के बली हो और पुन-

उक्त दोनों विन्दुओं में से किसी दूसरे, पाँचवें, आठवें, या ११ वें में हो तो वह स्त्री धर्म-परायण होती है अन्यथा नहीं। यहाँ पर केवल विन्दु खास के शत्रुक्षेत्री में पड़ने से शक डाल रहा है।

हमारे मतानुसार यह उत्तर होता है। चूँकि सातवाँ विन्दु ⁝ खाना १६ में है, यह गृह राजा माना जाता है। यह चन्द्रमा का रूप है तथा इसके चारों तत्त्व खुले हैं। अवदह रूप पंक्ति का १६ वाँ ☰ है, अस्तु ☰ से गुणा किया तो फिर रूप ⁝ रहा। अस्तु, स्त्री सर्वाङ्ग से पूर्ण सुन्दरी है। ⁝ युवा अवस्था का रूप है, तथा यह जिस गृह में है, वह ☰ भी युवा अवस्था का है, अस्तु वह स्त्री पूर्ण युवती है। ⁝ का रंग चन्द्रमा का रंग है, तथा बुध का रंग हरा है, चाँदनी में हरा रंग घोल देने से जो रंग बनता है वही रंग इस स्त्री का है। अस्तु वह स्त्री हल्के बसन्ती रंग की है। १६ में ⁝ है, आचार्य सुर्खाव का कथन है कि सातवाँ विन्दु यदि २, ३, १४, १५ या १६ गृहों में हो तो स्त्री उत्तम वंश की हो, अतः यह स्त्री उच्च वंश की है। ⁝ चन्द्रमा का रूप है। चन्द्रमा यद्यपि दिन में फीका लगता है, फिर भी अन्य दर्शनीय पदार्थों में उसकी सर्वश्रेष्ठता को कोई पा नहीं सकता है। अतः वह भी स्त्री सदा सर्वदा (चाहे जितनी विपत्ति या दुख में हो) मधुर स्वभाव की तथा मृदुभाषिणी है।

(५) इस स्त्री से सन्तान होगी या नहीं ?

लग्न विन्दु वायु का ⁘ तुलागृही है। यह खाना ८ और १५ में शत्रुगृही तथा समगृही है और गुप्तरूप से ११वें में समगृही है। इसका वर्तमान वायु विन्दु ⁘ प्रकट खाना ४ में शत्रुगृही और १४ में स्वगृही है। प्रकट तथा गुप्त कहीं नहीं है। दृष्टि ७, ५ शुभाशुभ है। बल ४० प्रतिशत रह जाता है। इसका पाँचवाँ विन्दु वायु का ⁘ है। यह खाना २ में स्वगृही है तथा आठवें गृह में गुप्त रूप से शत्रुगृही भी है। वर्तमान वायु का ⁘ है, जो खाना १२ में शत्रुगृही है और ११ वीं दृष्टि है बल ४५ प्रतिशत हो जाता है।

११ वाँ विन्दु जल का ⁘ है। यह खाना ४ में मित्रगृही है तथा १४ में उ. मि. गृही होता है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है जो खाना ९ में

शत्रुगृही होने से निर्बल हो रहा है तथा गुप्त रूप से खाना स्वगृही तथा खाना ५ में शत्रुगृही है अतः गुप्त विन्दु का वैलंस एक शुभ तथा एक अशुभ के नाते से बराबर हो रहा है। अतः मूल विन्दु बल पा रहा है अर्थात् बल में यह ३५ प्रतिशत है। अतः फल होता है कि सन्तान एकमात्र जीवित रहेगी।

(६) पति-पत्नी में परस्पर स्नेह रहेगा या कलह ?

प्रथक तथा सप्तम विन्दु अपने-अपने विन्दुओं के साथ स्वक्षेत्री हों तो अत्यन्त स्नेह हो अर्थात् एक का जीवन-मृत्यु दूसरे का जीवन-मृत्यु हो। यदि दोनों विन्दु मित्रक्षेत्री हों तो परस्पर मध्यम स्नेह हो अर्थात् एक का व्यबहार जैसा हो वैसा ही दूसरा भी व्यवहार करे। यदि दोनों विन्दु समक्षेत्री हों तो साधारण स्नेह रहे। यदि दोनों शत्रुगृही हुए तो सदैव आपस में कलह द्वेष रहेगा।

किसी-किसी आचार्य का मत है कि यदि दोनों युक्त विन्दु अग्निगृही हों तो स्नेह तो रहे परन्तु कभी-कभी तड़प-झड़प भी हो जाया करे। यदि दोनों वायु गृही हों तो कभी-कभी बतबढ़ाव हो जाया करे। यदि दोनों जल या पृथ्वीगृही हों तो "तू मेरी सह मैं तेरी सहूँ" बना रहे। प्रकृति का अनुभव दैवज्ञ को अपनी बुद्धि से लगा लेना चाहिये।

(७) एक स्त्री तो है ही दूसरी और करना चाहता हूँ, दोनों में कौन अच्छी है ?

१ और ४ विन्दु उपस्थित स्त्री का होता है तथा १ और ६ विन्दु आनेवाली स्त्री का होता है। जिसके विन्दु वर्तमान विन्दु के साथ बली हों वही प्रश्नकर्ता के हक में श्रेष्ठ है। इसी प्रकार दो स्त्रियों में किसको त्याग दूं, इस प्रकार के प्रश्न का उत्तर भी विचारना चाहिये।

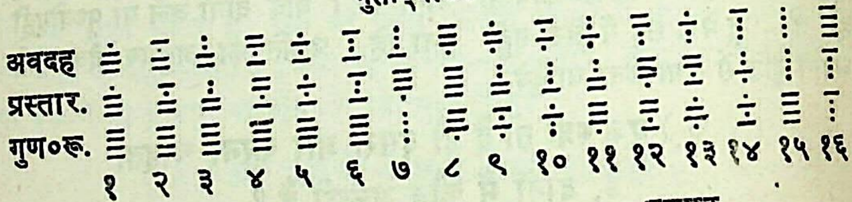
(८) मेरी स्त्री किसी अन्य व्यक्ति से सम्पर्क तो नहीं रखती है ?

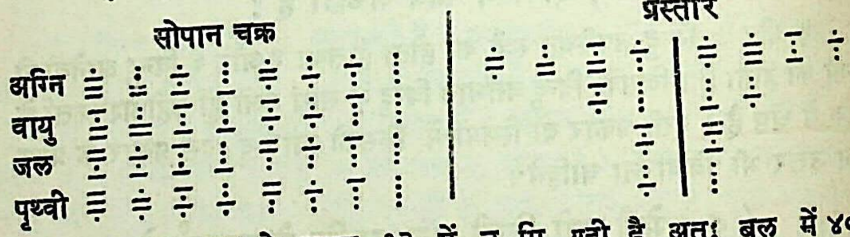
विचारणीय विन्दु १७ वां होता है—साधारणतया लग्न-विन्दु की गति १६ की ही होती है—सत्रहवें विन्दु का अर्थ यह है कि प्रश्न मान प्रतिष्ठा से

सम्बन्ध रखता है। इसका स्थान दशम है। दशम का शत्रु मान प्रतिष्ठा का शत्रु है। दशमेश से षष्ठ १५ वाँ हुआ। वह भी पृच्छक के समक्ष अज्ञात (गुप्त अतएव है या नहीं) इस सन्दिग्ध रूप को धारण किये हुए है। उसका (मान प्रतिष्ठा के शत्रु का) होना न होना पृच्छक के स्पर्धी साझीदार का होना न होना है। स्पर्धी (बराबरी का दम भरने वाला) साझीदार का स्थान मान प्रतिष्ठा के शत्रु १५ का विन्दु है। भ्राता-भगिनी का स्था है, वह जाकर लग्न विन्दु से १७वाँ पर गिरता है, इसलिए आचार्य का मत है कि इस प्रश्न में १७ वें विन्दु को गिरिफ्त में लो।

अब वायु विन्दु तुला से चलकर प्रस्तार के छठें विन्दु में रुका और वायु सोपान का ⋮ लग्न हो गया। इसका १७ विन्दु पृथ्वी सोपान का ⋮ होता है। यह प्रस्तार के ७ १२ में मित्रगृही तथा स्वगृही है। इसका वर्तमान विन्दु ⋮ है, जो प्रस्तार में है नहीं अतः गुप्तोद्घाटन किया—

गुप्तोद्घाटन





अतः गुप्त रूप से खाना १३ में उ. मि. गृही है अतः बल में ४० प्रतिशत है।

परिणाम—सम्पर्क तो एक व्यक्ति से है, परन्तु वह बहुत ही सूक्ष्म मात्र में वर्तमान काल में है। इसका भूतकाल पृथ्वी का रूप ⋮ है, जो कि प्रस्तार में

प्रकट खाना १५ में मित्रगृही तथा गुप्त रूप में ७ मित्रगृही है। अतः भूतकाल में यह सम्पर्क अधिक मात्रा में था। भविष्य विन्दु अग्नि का ⁞ है, जो प्रस्तार में प्रथम गृही स्वक्षेत्री है। अतः भविष्य में सम्पर्क बढ़ने की बहुत [illegible] है।

इस स्त्री के मित्र के सम्बन्ध में यदि विशेष ज्ञान प्राप्त [illegible]रना हो तो इस प्रकार से जाना जा सकता है—

१—स्वभाव तथा निवास स्थान

१७वाँ विन्दु पृथ्वी का ⁞ है। यह खाना ७, १२ में जल तथा पृथ्वी में है, जल दाखिल तथा पृथ्वी साबित है। सुख, सुविधा तथा स्थिरता इसे प्राप्त है। ⁞ शनि का रूप है तथा इसका वर्तमान ⁞ भी शनि का रूप है। यह दोनों क्रूर ग्रह के नाते कुकर्मी होते हैं अतः मित्र कुकर्मी है। इस स्त्री से परिचय होने के समय यह व्यक्ति किसी मसजिद या मकबरे के समीप रहता था। अब यह किसी किले के समीप या जेल के समीप या नानबाई की दूकान के समीप रहता है। यह सत्रहवें तथा उसके वर्तमान से ज्ञात हुआ है।

२—आयु और स्वरूप

शनि का रूप ⁞ वृद्ध है। गृह उसे ७ व वारहवाँ तथा गुरु का प्राप्त है। यह दोनों मध्य आयु के रूप हैं। अतः इसकी ४०–४५ वर्ष की आयु होती है। कारण, इसका वर्तमान ⁞ भी जवान तगड़ा ही होता है।

सत्रहवें विन्दु ⁞ का ग्रह काला है। प्रस्तार में यह सातवाँ है। सातवाँ गृह अवदह क्रम में ⁞ राहु का है। राहु ग्रह काला ही है। ⁞ बारहवें में पुनरुक्त है। वारहवाँ १ लग्न का गुप्त साक्षी है और लग्न (प्रश्न कर्ता) इसी को तलाश करता है। १२ वें गृह का अवदह क्रम में ⁞ का है। यह बृहस्पति का रूप है अतः गौर वर्ण है। अब लगे हाथों गौरवर्ण और कृष्ण वर्ण को मिला लीजिये तो गेहुँआ रंग बन जाता है। अतः वह व्यक्ति गेहुँवें रंग का है। राहु और बृहस्पति को मिलाकर एक बार स्वभाव फिर देख लीजिये, बातें करने में सुशील वाक्पटु विश्वसनीय जान पड़नेवाला (गुरु का प्रभाव) परन्तु कर्म में धूर्त, कुटिल, व्यभिचारी, निर्दय (राहु का प्रभाव) स्पष्ट हो जाता है।

३—यह व्यक्ति इस स्त्री से कैसे परिचित हुआ ?

लग्न वायु सोपान का ⁝ है। वायु सोपान में इसका सप्तम विन्दु ⁝ है।
यह विन्दु प्रश्नकर्ता के विषयभूत (जिसके सम्बन्ध में प्रश्न है) स्त्री का है। यह
प्रस्तार में दूसरे गृह में है और दूसरा गृह पड़ोसी का होता है, जो नर रूप है। यह
स्त्री पड़ोसी के पास थी, अतः पड़ोसी द्वारा परिचय हुआ। अब यह देखना है
कि यह प्रणय-लीला प्रारंभ किस ओर से हुई। तो यों देख लें सत्रहवाँ विन्दु
सातवें गृह ⁝ में प्रस्तार में है। इसकी ओर से छल-कपट पूर्ण मायाजाल
फैलाया गया।

४—इसका परिणाम क्या होगा ?

तो इस प्रकार निश्चय कर लेना चाहिये। लग्न विन्दु छठें ⁝ बली तथा
स्वक्षेत्री हैं। अस्तु, प्रस्तार के गुप्तोद्धार में देखिये। प्रस्तार पंक्ति इस प्रसङ्ग में व्यर्थ
है क्योंकि विचारणीय विन्दु १७ है। प्रस्तार के १६वें में गृह का उल्लंघन कर गया है
और दुबारा पाशक पातन की आवश्यकता नहीं है। अतः गुप्त रूपों की पंक्ति
से काम निकलेगा। गुप्त पंक्ति में छठे गृह तक बराबर ⁝ भरी पड़ी है। ७ वें से
प्रस्तार खुलता है। सातवें ⁝ है। इसके चारों तत्त्व खुले हैं अतः यह स्त्री भाग
जायेगी। भाग जानेवाले रूप ⁝ का भविष्य वायु सोपान ⁝ है। यह प्रस्तार
की गुप्त पंक्ति में कहीं नहीं है। अवदह के दूसरे रूप ⁝ से प्रस्तार की गुप्त पंक्ति
के दूसरे रूप ⁝ को गुणित करो तो गुप्त पंक्ति के दूसरे गृह में ⁝ बन जाता
है। इस स्त्री के द्वारा भविष्य में द्रव्योपार्जन कराया जायेगा। अब प्रश्न हो
सकता है कि किस प्रकार? इसे वेश्या बनाकर या इसे नृत्यगान इत्यादि कोई
कला सिखाकर, या इससे दासीकर्म करवाकर या इसे बेचकर इसका प्रेमी द्रव्यो
पार्जन करेगा। इसके लिये ऊपर कहे गये वायु सोपान के ⁝ से दशम विन्दु
को लेलीजिये तो जल सोपान का ⁝ ही पड़ता है। यह ग्रह पंक्ति में सातवें
है। अवदह का सातवाँ रूप ⁝ है। यह राहु का रूप है और राहु व्यभिचार का गृह
है। इसका प्रेमी इसे भविष्य में वेश्या बनाकर द्रव्योपार्जन करेगा, ऐसा इसका
भाग्य-योग है। प्रस्तार की गुप्त पंक्ति में ६ गृह बन्द होने का तात्पर्य यह है कि

यह स्त्री, पति, धन-ऐश्वर्य, कुटुम्ब-गृह, सम्मान, भय, अपमान इत्यादि क्रम से ६ गृहों को मोह अपने मन से छोड़ चुकी है। अवसर की प्रतिक्षा में तैयार बैठी है।

५—अब देखना है कि इसके बचाव का कोई मार्ग भी है ?

स्त्री का बचाव पति कर सकता है। यदि प्रश्नकर्ता स्वयं अपनी धर्मपत्नी के विषय में प्रश्न किया हो तो मूल प्रस्तार में लग्न विन्दु को ले लें, जो कि वायु का ⁝ है। यदि उसने अपनी प्रेमिका के लिये प्रश्न किया हो तो पञ्चम विन्दु ले लें जो कि वायु का ⁝ हुआ, यदि किसी अन्य के लिये प्रश्न किया हो तो लग्न से सप्तम विन्दु ले लें। जो कि वायु का ⁝ है। हम उसकी पत्नी की कल्पना करके विचार लिखते हैं। ऐसे अवसर पर दैवज्ञ को अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिये।

लग्न बिन्दु वायु का ⁝ मूल प्रस्तार में प्रकट छठे गृह में बली एवं स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁝ है, जो प्रस्तार में १० वें बली स्वगृही प्रकट ही है और पञ्चम मित्र-दृष्टि भी है, बल ७० प्रतिशत है। अब स्पर्धा (मुकाविले) में डटी हुई इनकी पत्नी का बल जानने के लिये सप्तम विन्दु जो कि वायु सोपान का ⁝ है, यह प्रस्तार में दूसरे में बली स्वगृही प्रकट ही है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁝ है। यह प्रस्तार में तीसरे समगृही मित्रगृही तथा ११ में समगृही प्रकट ही है। दृष्टि दूसरी अशुभ, ८ वीं अशुभ तथा १० वीं भी शुभाशुभ है (वह जानती है, जो मैं करना चाहती हूँ, वह अच्छा नहीं है तथा खतरे से खाली नहीं है)। बल इस विन्दु का २५ प्रतिशत ही है। उपाय का विन्दु चौथा होता है, सो लग्न का चौथा विन्दु वायु का ⁝ है, यह प्रस्तार में १४वें में स्वक्षेत्री बली डटा बैठा है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁝ है, जो प्रस्तार के १६ वें में शत्रुगृही है। खैर, यह तो वर्तमान का विन्दु है। वर्तमान काल में पृच्छक महाशय कोई उपाय तो कर नहीं रहे हैं जो बिन्दु मित्रगृही, स्वगृही या मरता-खपता समगृही होता है। इसका उपाय भविष्य विन्दु जल का ⁝ है, यह प्रस्तार में गुप्त रूप से १०वें समगृही है। बल में यह विन्दु ४० प्रतिशत है। भूत विन्दु देखें तो मालूम हो कि अब तक पृच्छक महाशय बीबी के कारनामों से कुछ ज्ञान भी पाये?

कुछ उपाय भी किया ? या आज ही दैवज्ञ के पास सिर खपाने आये हैं। चौथा विन्दु वायु के ÷ का भूत काल विन्दु ÷ होता है, यह प्रस्तार में गुप्त नवें मित्रगृही है। यह सूर्य का रूप है, सूर्य तीक्ष्ण होता है। पृच्छक महोदय को तीक्ष्णता ने इस स्त्री को इस प्रकार गन्दी नाली में डूबने को मजबूर कर दिया है। अतः अब फिर उपाय विन्दु को देखा वायु का चौथा ÷ है, यह शुक्र का रूप है, यह प्रस्तार के १४ वें गृह में बैठा है। चौदहवाँ गृह ⁝ यह भी अवरोह क्रम में शुक्र का है। यह दोनों रूप से (÷ और ⁝) से विलासी कोमल, मधुर-भाषी, सफेद वस्त्र, मोती, चाँदी, रेशम, सुगन्ध का प्रेमी है।

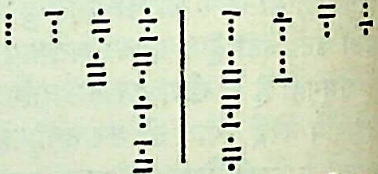
पृच्छक महोदय को उचित है कि अपने व्यवहार में कोमलता लावें, पत्नी के साथ मधुर-भाषी हो जायँ तथा उपर्युक्त सफेद वस्त्रादि वस्तुओं को प्रति शुक्रवार किसी पीर या पण्डित को शुक्र मंत्र से अभिमंत्रित कर उसे उपहार देवें तो उसका दोष शान्त हो जायेगा।

६—यदि कोई स्त्री अपने पति के प्रति शंकित होकर पूछे तो भी उपर्युक्त रीति के अनुसार ही दैवज्ञ को विचार करना चाहिये ?

(६) मेरा पति दूसरी स्त्री लाना चाहता है, लायेगा या नहीं ?

विचारणीय विन्दु दूसरा है।

प्रस्तार

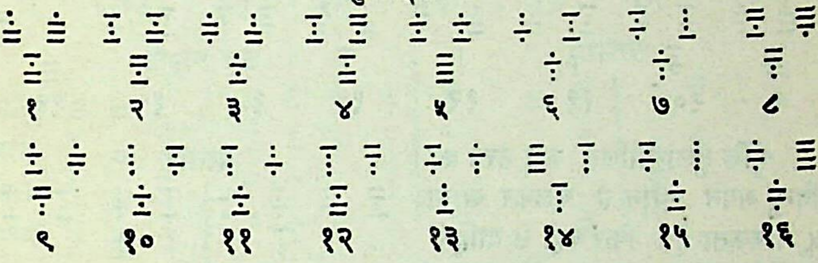


चूँकि तुला-गृही पृथ्वी का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ६ में विश्रान्ति पाता है। पुनः विन्दु आठवें गृह में रुकता है, छठा शत्रु गृह है, यही लग्न विन्दु है। ६ में शत्रुगृही तथा खाना १५ में मित्रगृही है। अतः सम है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो प्रस्तार में है नहीं अतः दूसरी स्त्री न ला सकेगा। यदि दूसरा विन्दु अपने वर्तमान के साथ पूर्ण बली हो तो ला सकता है।

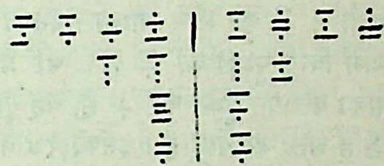
(१०) यदि स्त्री का प्रश्न हो कि मैं दूसरा पति करना चाहती हूँ वह अच्छा रहेगा या नहीं ?

लग्न से चौथा विन्दु होने वाले पति का है, तथा सातवाँ वर्तमान पति का। दोनों विन्दु तथा दोनों के वर्तमान विचार लें। जो बली हो जायगा वही ठीक होगा।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार

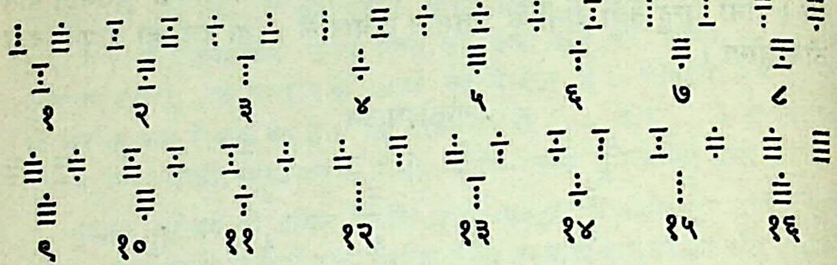


चूँकि खाना १९ से पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ३ में रुकता है। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है।

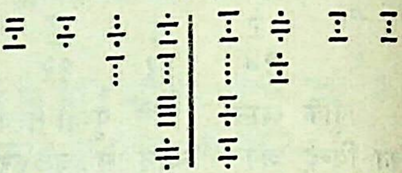
यह चौथा विन्दु गुप्त रूप से खाना ९ में मौजूद है। उत्कृष्ट मित्रगृही है, सम बल रखता है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है। अस्तु, साधारण बल ४० प्रतिशत मिल रहा है। यह विन्दु अपने स्थान और मौजूदा पति का है। इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी का ⋮ है, यह खाना १० में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ≡ है, यह प्रस्तार में है नहीं यही कमजोरी है। यह विन्दु दूसरे पति का है। पहले के मुकाबिले में दूसरा कमजोर है। कायदा यह है कि दोनों विन्दुओं में से जो बलवान् हो वही ठीक है। अस्तु स्त्री को फल कहें कि जो दूसरे पति को चाहती है वह परिणाम में अशुभ होगा। मौजूदा पति से जो कुछ भी आराम मिल रहा है उसी पर सन्तोष करे।

(११) गायब व्यक्ति जीवित है या मर गया ?

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार

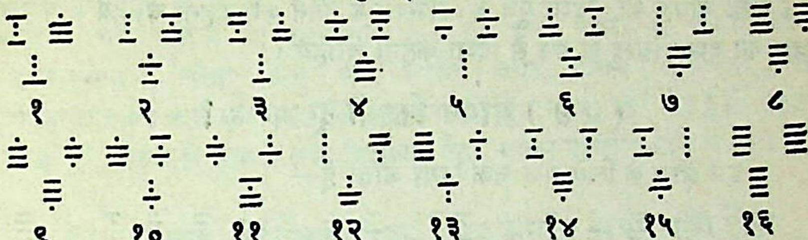


चूँकि तुला-चालित जल तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ५ में रुकता है। फिर वहाँ से दाहिनी तरफ जाकर खाना १ तक रुकता है। खाना २ को लग्न माना। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का है। जो प्रस्तार में प्रकट तथा गुप्त कहीं नहीं है। इसका वर्तमान पृथ्वी का है, यह गुप्त रूप से खाना ४ मे स्वक्षेत्री है और पंचम दृष्टि है अतः बलवान् है। इसका १४ वाँ विन्दु पृथ्वी का है, यह गुप्त रूप से खाना ३ में मित्रगृही है। इसका वर्तमान पृथ्वी है, जो खाना ३ व १४ में स्वक्षेत्री तथा शत्रुगृही है। सम बल पा रहा है। दशम विन्दु प्राण का है तथा १४ मृत्यु का है। अस्तु १० वाँ बली हो तो जीवित और यदि १४ वाँ बली हो तो मरा समझो। यहाँ १४ वाँ बलवान् है। अतः जीवन में भय है।

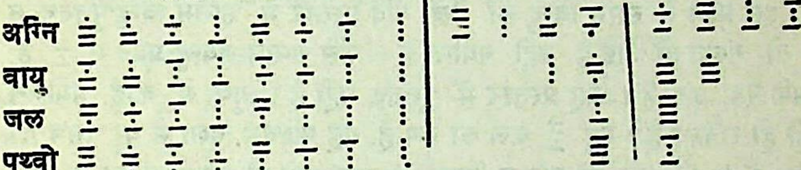
(१२) गायब व्यक्ति का विचार क्या है ?

विचारणीय विन्दु सातवाँ होता है यदि विन्दु दाखिल या साबित में हो तो शीघ्र वापस आयेगा। विपरीत से न लौटकर आगे बढ़ेगा।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूंकि तुला-चालित जल विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में रुकता है। इसका इतवार न कर खाना १५ रूप को लग्न माना। इसका सातवाँ विन्दु जल का है। यह प्रस्तार में तीसरे जल में है। अतः दाखिल गृह में होना शुभ है। गायब शीघ्र गृह वापस आयेगा। इसका वर्तमान विन्दु जल का रूप है. जो खाना ४ मित्रगृही साबित गृह में है। यही विचार उसका है, आगे न बढ़ेगा गृह वापस होगा। यदि सातवाँ विन्दु अग्नि तथा वायु का हो तो गायब आगे बढ़ जाता है।

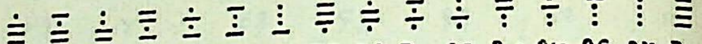
(१३) गायब किधर है ?

ऐसी दशा में दशम विन्दु को देखना चाहिये। यदि वह विन्दु अग्नि में हो तो पूर्व तरफ, यदि वायु विन्दु में हो तो उत्तर तरफ, यदि जल में हो तो पच्छिम तरफ, यदि दशम विन्दु पृथ्वी के गृह में हो तो दक्षिण दिशा में है। यह दिशाएँ तत्त्व-क्रम की हैं, अबदह पंक्ति में क्रमानुसार अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी चारों तत्त्वों की यह दिशाएँ कही गई हैं। इसी क्रम से अबदह के रूप इन दिशाओं के रूप हैं। अस्तु, प्रश्न में लग्न का दशम विन्दु पृथ्वी का है। यह रूप दक्षिण

दिशा का स्वामी है। प्रस्तार में यह पाँचवें में है, पाँचवाँ गृह अग्नि का होता है। अतः गायब की दिशा पूर्व व दक्खिन के कोने की कहनी चाहिये। केवल दैवज्ञ को दशम विन्दु के रूप से दिशा कहनी चाहिये।

(१४) गायब कितनी दूर पर है ?

इस ज्ञान के लिये एक चक्र दिया जाता है—

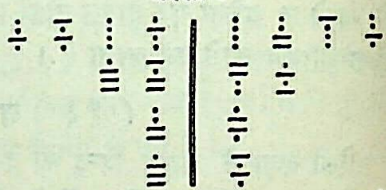
रूप 

प्रमा. को. २९ २८ २७ २६ २५ २४ २३ २२ २१ २० १९ १८ १७ १६ १५ ३०

इस प्रश्न में सप्तम विन्दु को देखें, यदि प्रस्तार में सप्तम विन्दु पुनरुक्त न हो तो संख्या दी गई है वही पर्याप्त है। जैसे सप्तम विन्दु प्रश्न में ≡ है, इसके २६ अंक हैं। यह प्रस्तार में पुनरुक्त नहीं है। गुप्त से कोई प्रयोजन नहीं हो सकता है। यह ≡ जल का रूप है, यह पश्चिम दिशा में या मित्र की दिशा में (पृथ्वी तत्त्व की दक्षिण दिशा में) पुनरुक्त हो तो संयुक्त संख्या के ऊपर एक विन्दु पुनरुक्त का लग जायगा। और २६ के स्थान में २६० कोस हो जायेंगे।

(१५) गायब पुरुष अकेला है या किसी के साथ है ?

प्रस्तार



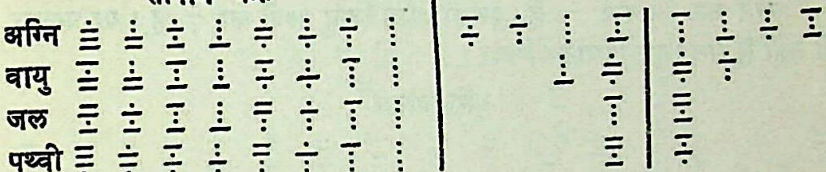
चूँकि तुला-गृह पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ४ में रुकता है। पुनः वहाँ से बाईं तरफ चलकर सीधे अष्टम भाव में रुकता है परन्तु केवल रूप ÷ को छोड़कर सभी विषम विन्दु तथा अप्रमाणित माने गये हैं। अस्तु, रूप ÷ को मित्र गृह के नाते लग्न माना। इसका आठवाँ विन्दु ≡ है, जो खाना १२ खारिज गृह में है। अस्तु, कहा कि गायब अकेला है कोई साथी नहीं। क्योंकि कायदा है यदि आठवाँ विन्दु दाखिल या साबित गृह में हो तो साथी उसके साथ हैं और यदि खारिज या मुनकलिब में हो तो अकेला है। इसी सूरत में यदि

विन्दु अग्नि या वायु का हो तो नर समझें और यदि जल या पृथ्वी का हो तो स्त्री समझें। संभव है प्रश्नकर्ता यह भी पूछ बैठे कि उसकी स्थिति क्या है? फांके मस्ती में चल रहा है या मालामाल है? तो इसी प्रकार के लग्न, धन (दूसरे स्थान), चौथा विन्दु (सुख स्थान) तथा पाँचवें (प्रसन्नता) के गृहों का बलाबल ज्ञात कर दैवज्ञ विचार कर लेते हैं। परन्तु शर्त यह है कि दैवज्ञ 'दैवज्ञ' हो, सड़क के किनारे टाट बिछाकर वैठने वाला रम्माल मात्र न हो।

(१६) गायब उसी मुकाम पर है या अन्यत्र चला गया है?

विचारणीय गृह—लग्न से दशम विन्दु उसी स्थान का है।

सोपान चक्र | प्रस्तार



चूंकि खाना १५ से पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ६ में होकर आठवें गृह में स्वगृही होकर रुका है। इसी को लग्न माना। इसका दशम विन्दु अग्नि का रूप पात ÷ है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ⋮ है, जो खाना ३ तथा १२ में दाखिल व साबित गृही में है। कायदा है जब असली विन्दु प्रस्तार में न हो तब वर्तमान को देखना चाहिये।

इसका १६ वाँ विन्दु अग्नि का ≐ है, यह भी प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ÷ है, यह गुप्त रूप से खाना ५ में मौजूद है। जैसे ५ में ⋮ है और अबदह का ५वाँ रूप ÷ है, अस्तु ⋮ ÷ को गुणा किया तो ≐ हुआ। यह खाना खारिज का हुआ। पर दशम विन्दु, जो प्रस्तार में नहीं है वर्तमान दाखिल में है और १६ वाँ अन्य स्थान से सम्बन्ध रखता है—अस्तु कहा गया कि वह उसी जगह मौजूद है बाहर नहीं गया है।

(१७) गायब व्यक्ति अपने गृह गया है या नहीं ?

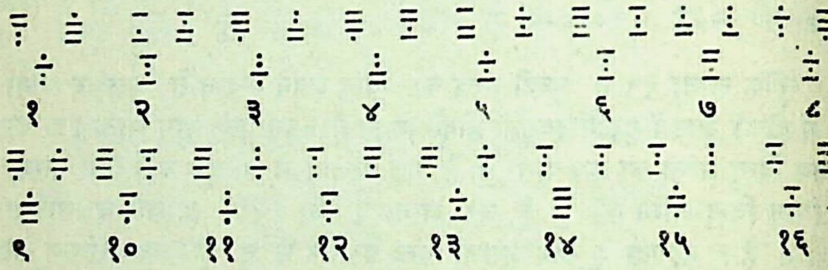
यदि लग्न से १६ वाँ विन्दु जल या पृथ्वी में हो तो अपने गृह गया अन्यथा नहीं। दोनों स्थानों में हो तो दो चार दिन में जाने वाला है। दोनों स्थानों से अभिप्राय जल पृथ्वी तथा अग्नि वायु से है।

(१८) गायब व्यक्ति वापस आयेगा या नहीं ?

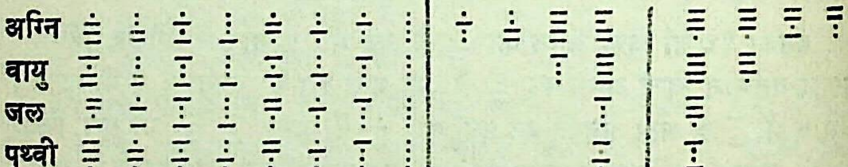
तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव में रुकता है। इस को लग्न माना। विचारणीय विन्दु १०, ११ है। यदि दोनों विन्दु दाखिल या साबित में हों और ७, ८, व ९ विन्दु खारिज व मुनकलिब में हों तो गायब वापस आयेगा। यदि विपरीत हो तो नहीं लौटेगा।

लग्न जल का रूप ÷ है। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह प्रस्तार में नहीं है अतः गुप्तोद्घाटन किया।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार
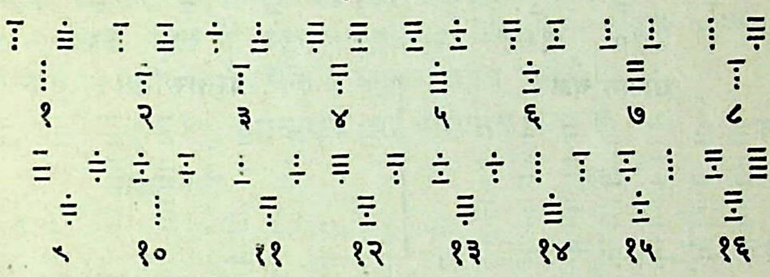


यह गुप्त रूप से खाना १ खारिज गृह में मौजूद है और ११ वाँ विन्दु पृथ्वी ÷ है। यह खाना ११ व १४ में साबित तथा मुनकलिब गृह में है और

खारिज विन्दु के अधिक है—इसका सातवां विन्दु जल का वक्र ÷ है। यह प्रस्तार में है नहीं। इसका वर्तमान विन्दु का ÷ है यह प्रकट रूप में खाना १ में है। खारिज गृह में विन्दु है। (जब विन्दु असली रमल में न हो उस समय वर्तमान को देखें, अन्यथा कुछ जरूरत नहीं। आठवां विन्दु जल का ÷ है, यह प्रकट खाना १ खारिज में। इसका नवां विन्दु पृथ्वी का ÷ है यह भी खारिज खाना में है। अस्तु, फल है वह वापस आयेगा।

(१९) अमुक व्यक्ति से साझे में लाभ होगा या हानि ?

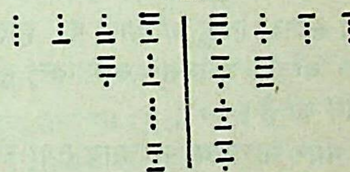
विचारणीय गृह—१, २, ७, ८ हैं।

गुप्तोद्घाटन



तुला गृह पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव में रुकता है। इसका प्रमाण न मानकर खाना १५ को लग्न माना। इसका सप्तम विन्दु पृथ्वी का ≡ है, जो कि प्रस्तार

प्रस्तार

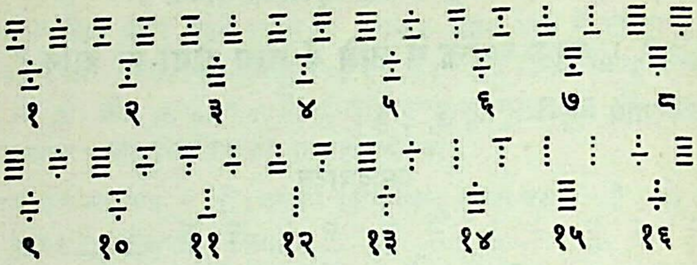


के ४ व १२ में स्वगृही है। इसका वर्तमान विन्दु ÷ है। यह प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ९ में बैठा है और उ० मि० गृही है। सम बल रखता है यह विन्दु बली है। दूसरा धन विन्दु ÷ है, जो न तो प्रकट न गुप्त रूप से पाया जाता है। आठवां हानि का विन्दु ÷ है। यह गुप्त रूप से नवें गृह में खारिज में है। अस्तु, यह साझा लाभकारी रहेगा। यही नियम है कि सातवां

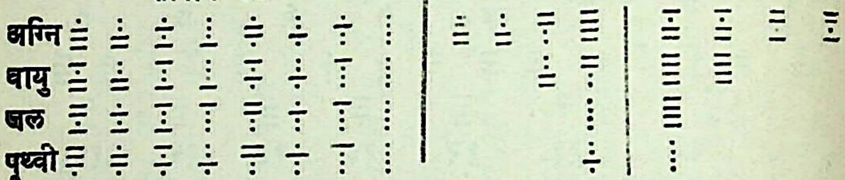
विन्दु वर्तमान के साथ बली हो तथा शेष विन्दुओं में से ८ वां खारिज में १-२ दाखिल में हो तो लाभकारी साझा होता है।

(१०) अमुक आदमी पर दावा करता हूँ विजय होगी या नहीं ?

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



प्रथम विन्दु तथा उसका वर्तमान, दावा दायर करनेवाले वादी का होता है तथा सातवां विन्दु प्रतिवादी का होता है— दोनों विन्दुओं तथा दोनों के वर्तमान विन्दुओं में जिसके बली विन्दु हों वही विजयी होता है। यह मत आचार्य सुर्खाव का है।

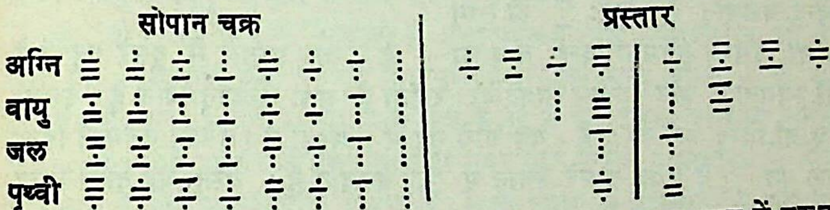
मगर भारतीय, पाश्चात्य तथा रोम के आचार्यों का मत है कि १,४,९,११ विन्दु वादी के हैं तथा २, ८, १२, १४ विन्दु प्रतिवादी के हैं। दोनों के बलाबल से देवज्ञ को फल कहना चाहिये।

चूँकि तुला-चालित-विन्दु शीतांशु ⁝ का वायु विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में विश्रान्ति पाता है—यह पुनरुक्त १२ वें गृह में शत्रुगृही बैठा है और चौथी तथा छठी दृष्टि से युक्त है। अस्तु, साधारण बल रह जाता है।

२५ प्रतिशत बल पा रहा है। इसका सातवाँ विन्दु वायु का शीतांशु ⋮ है, जो खाना १४मेंस्वगृही तथा खाना१५ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का लोहित ⩧ रूप है—जो प्रस्तार के तीसरे गृह में उ०मि० क्षेत्री है सम बल पा रहा है और ४ में शत्रुक्षेत्री हैं अस्तु बल ३५ प्रतिशत मिल रहा है। कारण, दृष्टि १४ पर आठवीं तथा १५ पर नवी रही है। दोनों विन्दु प्रथम तथा सातवाँ समान रूप में बल पा रहे हैं—इसका विधान यही हैं कि यदि प्रथम विन्दु बलवान् हो तो प्रश्नकर्त्ता विजय पावे। यदि सातवां विन्दु बलवान् हो तो विपक्षी विजयी हो। इस प्रस्तार में सातवाँ विन्दु किसी कदर बलवान् है। अस्तु कहा गया कि प्रश्नकर्ता की विजय न होगी।

अब दैवज्ञ का धर्म है कि भारतीय मतानुसार १, ४, ९, ११ वादी के विन्दुओं के तथा २, ८, १२, १४ इन प्रतिवादी के विन्दुओं का बलाबल देखकर अपनी बुद्धि के अनुसार अपना निर्णय दें। किसी मामले में हार-जीत का निर्णय उयुक्त रीति के अनुसार करना चाहिये।

(२१) इस झगड़े का परिणाम क्या है ?

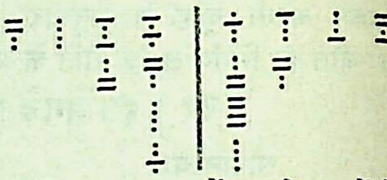


चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव में रुकता है अतः शत्रुगृही हो गया। इसका सातवाँ विन्दु वायु का ⋮ है। यह प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ३ में बैठा है। इस प्रकार प्रस्तार में ३ में रूप ⩧ हैं और अवदह क्रमानुसार तोसरे गृह का मालिक रूप ⩦ है। अत ⩧ और ⩦ का गुणा किया तो ⋮ आया। इसी से कहा गुप्त रूप से खाना ३ में बैठा है। विन्दु प्रथम वायु ÷ है। छठी दृष्टि अशुभ है। अतः कहा गया इसमें परस्पर मेल हो जायेगा। कारण, आचार्य सुखाव का कथन है कि यदि प्रथम और सातवें विन्दु के मध्य में दृष्टि अर्द्ध शत्रु दृष्टि यानी ४ या ८ की हो अथवा मित्रदृष्टि

५ या ९ को हो तो लड़ाई के पहले सुलह हो जायेगी। यदि कोई अन्य दृष्टि हो तो लड़ाई के बाद सुलह होगी। इसी प्रकार यदि प्रथम और दूसरा विन्दु बलवान् हो और चौथा तथा सातवाँ विन्दु निर्बल हो तो प्रश्नकर्ता विजयी होगा। यदि ४ व ६ विन्दु बलवान् हों और प्रथम तथा २ निर्बल हों तो विपक्षी विजयी होगा। यदि दोनों विन्दुओं का बल समान हो तो अन्त में सुलह होगी।

(२२) साझेदारी में फरीक लोग हमारे माफिक रहेंगे या खिलाफ हो जायेंगे ? अथवा हम से सुलह कर लेंगे ?

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु अपने स्थान से सप्तम भाव में रुकता है। फिर वहाँ से बाईं तरफ पञ्चम में जाकर रुकता है। चूँकि छठे में स्वगृही के नाते विन्दु बलवान् है, अतः ⁝ को लग्न माना इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁝ है। यह प्रस्तार में दूसरे गृह में है जो स्वगृही है और पञ्चम मित्रदृष्टि रखता है अतः बलवान् विन्दु है। इसका १३ वाँ विन्दु जल का ⁝ है। यह चौथे गृह में मित्रगृही है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है। यह तीसरे स्थान में पूर्ण बलवान् है। अस्तु, यह दोनों विन्दु प्रश्नकर्ता के बलवान हैं।

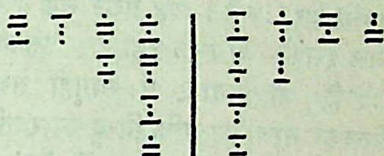
इसका सातवाँ विन्दु लग्न का वायु ⁝ है। यह प्रस्तार में है नहीं। इसका वर्तमान रूप वायु का ⁝ है। यह खाना ९ में मित्रगृही तथा खाना १२ में शत्रुगृही है, अतः कुछ बल कम मिल रहा है। इसका १४वाँ विन्दु जल का ⁝ है। यह तीसरे गृह में स्वगृही बलवान् है। इसका वर्तमान जल का ⁝ है। यह खाना ७, १४, १५ में मौजूद है। सम भाव तथा स्त्रक्षेत्री के नाते बलवान् है। दोनों विन्दु विपक्षी साझेदार के हैं। प्रथम की अपेक्षा यह कमजोर है अतः परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता की ओर से सुलह न होगी।

कायदा है कि प्रथम तथा उसका वर्तमान विन्दु और १३ एवं उसका वर्तमान विन्दु प्रश्नकर्ता का है तथा ७, १४ विन्दु वर्तमान विन्दुओं के साथ दूसरी पार्टी के विन्दु हैं। बली विन्दु यदि प्रश्नकर्ता के हों तो मुआफिक रहने का योग है। यदि विपक्ष के बली हों तो खिलाफ होने का योग होगा। यदि दोनों तुल्य हों तो सुलह रहेगी।

(२३) मुकाबिले में कौन बली है, मैं या मेरा शत्रु ?

विचारणीय गृह—प्रथम विन्दु तथा वर्तमान विन्दु प्रश्नकर्ता का है। और बारहवां विन्दु तथा वर्तमान शत्रु का है। जिसका विन्दु बली हो वह जीतता है।

प्रस्तार

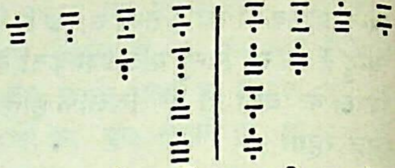


चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ३ मित्रक्षेत्री में आकर विश्रान्ति पाता है। चूंकि प्रथम विन्दु है इसी कारण इसको लग्न मानकर प्रथम विन्दु माना। यह मित्रगृह में होने के नाते बली है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⁝ है, जो सप्तम भाव में मित्रगृही है तथा पञ्चम दृष्टि—मित्रदृष्टि भी है, अतः यह विन्दु पूर्ण बल पा रहा है। इसका बारहवां विन्दु अग्नि ⁝ है, जो गुप्तरूप से खाना ६ में है। यह विन्दु मित्र के गृह में है। इसका वर्तमान अग्नि का ⁝ है। यह प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १० में मित्र के गृह में है और आठवीं दृष्टि से युक्त है। विन्दु प्रथम जो प्रश्नकर्ता से सम्बन्ध रखता है बलवान् है और बारहवाँ विन्दु शत्रु का है उससे बलवान् नहीं है। अतः परिणाम यही होता है कि विजय प्रश्नकर्ता की होगी। विधान ऊपर दिया जा चुका है। इसी प्रकार दैवज्ञ अन्य प्रश्नों को हल करें।

(२४) अमुक मामले में मैं शत्रु पर विजय पाऊँगा या नहीं ?

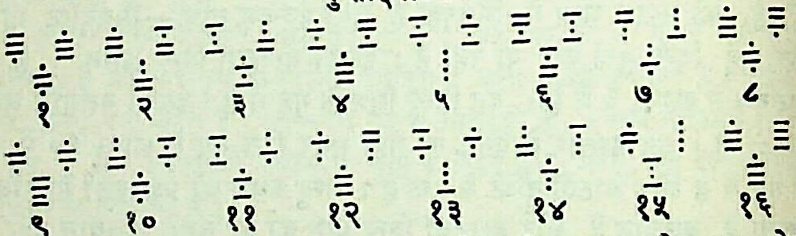
विचारणीय गृह—विन्दु प्रथम, मय वर्तमान के यदि बलवान् हो और ७ व १२ कमजोर हों तो प्रश्नकर्ता विजयी हो। यदि ७ व १२ बलवान् हों और प्रथम विन्दु कमजोर हो तो विपक्षी विजयी हो।

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना में रुकता है चूँकि प्रथम विन्दु देखना है—यद्यपि खाना १ में विषम रूप है, फिर भी इसी को लग्न विन्दु माना। प्रथम गृह उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का मंदग है। यह प्रस्तार में नवें तथा पन्द्रहवें उ.मि.क्षेत्री तथा मित्रगृही है और बलवान् है। शुभ दृष्टि युक्त है अतः यह विन्दु सम बल पा रहा है। इसका सप्तम विन्दु पृथ्वी का है। यह ११ वें गृह में मित्रगृही के नाते बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का है। यह प्रकट रूप में पञ्चम भाव में मौजूद है। अतः साधारण बल इसको भी मिल रहा है। इसका बारहवाँ विन्दु अग्नि का वर्तमान रूप है, जो खाना ९ में स्वगृही तथा १५ में शत्रुगृही है। अच्छा और बुरा मिलकर साधारण शक्ति विन्दु की रहती है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का है, जो प्रकट रूप में प्रस्तार में मौजूद नहीं है। अतः गुप्तोद्घाटन किया—

गुप्तोद्घाटन

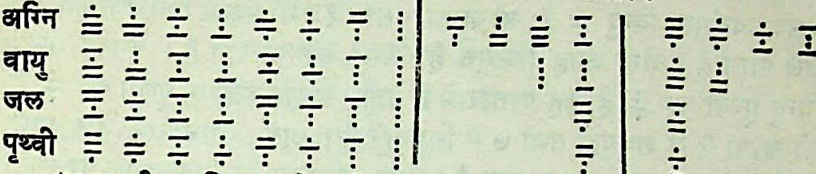


मगर गुप्त रूप से खाना १३ स्वगृही के नाते बलवान् है अतः दोनों विन्दुओं की समानता पायी जाती है। अस्तु, अन्त में दोनों में मेल होगा जिसमें पृच्छक का बल कुछ माफिक रहेगा।

(२५) अमुक अदालत से मेरी अपील या दावा बहाल होगा या नहीं ?

तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव में स्वगृही हो विश्रान्ति पाता है। यही लग्न विन्दु है।

सोपान चक्र | प्रस्तार



इसका चौथा विन्दु जो हाकिम का है, पृथ्वी रूप शीतांशु ⁝ है, जो खाना ८ और १६ में स्वगृही होकर बलवान् हो रहा है। दोनों विन्दु साबित गृहों में पड़े हैं। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ≡ है, जो खाना ४ में स्वगृही तथा खाना १४ में शत्रुगृही होकर हानि-लाभ का लेखा बराबर करता है। केवल चौथा विन्दु सानुकूल है और सप्तम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो खाना १५ मित्रगृही है। और दाखिल गृह में है। आचार्य सुर्खाव ने इसका विधान यही लिखा है कि यदि चौथा तथा सातवाँ विन्दु स्वगृही या मित्रगृही हो और दाखिल या साबित गृहों में हो तो अपील बहाल होगी, हाकिम सानुकूल होगा।

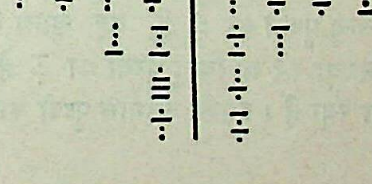
(२६) दो व्यक्ति लड़ रहे हैं, कौन विजयी होगा ?

यह प्रश्न पहलवानों की कुश्ती, बकरा, भैंसा, तीतर, बटेर की लड़ाई तथा दो विद्वानों के शास्त्रार्थ को छोडकर शेष समस्त स्पर्द्धाओं में काम करता है। प्रश्न अकसर दांव लगानेवालों की ओर से होता है। प्रस्तार बनाकर लग्न विन्दु निश्चित करके प्रश्नकर्ता से पूछे कि वह किस जिद्दी का पक्ष पाती है। तथा उसके कथनानुसार उसे जिद्दी नंबर १ माने तथा दूसरे को नंबर २ माने।

प्रथम का बल सातवें विन्दु से देखें तथा दूसरे जिद्दी को आठवें से। यदि प्रश्नकर्ता स्वयं जिद्दी हो तो लग्न विन्दु प्रश्नकर्ता का तथा सप्तम विन्दु विपक्षी का लेना चाहिये। जिसका विन्दु बली हो वही जीतेगा।

तुला-चालित पृथ्वी तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना २ में रुककर पुनः बाईं ओर खाना ८ में जाकर विश्रान्ति पाता है। इसमें ÷ को मित्रगृही के नाते बलवान् पाया।

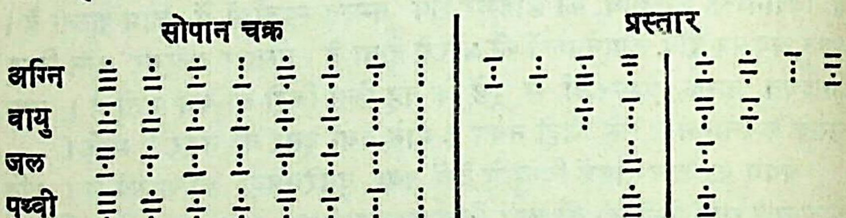
प्रस्तार



अस्तु, रूप ÷ को लग्न माना। यह खाना १५ में मित्रगृही है। बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु ÷ है, जो खाना ५ तथा १३ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। सम-बल पाता है। दोनों जगह दृष्टियुक्त है। अस्तु, बल पा रहा है। इसका सप्तम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह प्रस्तार में है नहीं। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, जो खाना २ में शत्रुगृही तथा ७ में मित्रगृही है। अतः, साधारण बल प्राप्त है और नं० १ तगड़ा बल पा रहा है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता की विजय है, दूसरे जिद्दी की पराजय होगी। आठवाँ विन्दु पृथ्वी का ÷ है, शत्रुगृही तथा मित्रगृही २, ७ में है। सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, यह तीसरे तथा १५ वें में मित्रगृही है। बलवान् है, यह जिद्दी से सम्बन्ध रखता है। बस, सायल जिद्दी के मुकाविले दूसरा कमजोर नहीं है। वरन् समान है। अतः कहा गया कि जिद्दी अव्वल पर सायल विजय पायेगा और जिद्दी २ पर नहीं।

(२७) हमने जो वकील किया है, वह कैसा है ?

विचारणीय गृह—१०, ११ बिन्दु तथा इनके वर्तमान बली हों तो जिताने वाला होगा अन्यथा हरानेवाला होगा।



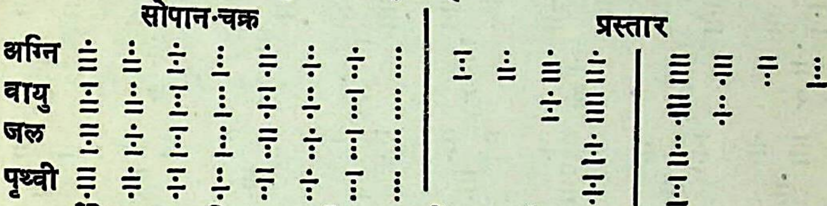
चूँकि खाना १५ से जल विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ४ में होकर पंचम भाव ÷ में विश्रान्ति पाता है। चूँकि खाना ४ पंचम गृह के मुकाबले में बलवान् है। अतः खाना ४ रूप पात ÷ को लग्न माना। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह खाना ३ मित्रगृही बलवान् है। इसका वर्तमान अथवा ११ वाँ विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो खाना ६ में उ. मित्रक्षेत्री है। सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप दैत्य गुरु ÷ है, जो खाना ३ में मित्र-

गृही बलवान् है। अस्तु, १० व ११ विन्दु बलवान् होते हैं। परिणाम यह होता है कि वकील काबिल है, विजयी होगा।

अष्टमगृही प्रश्नों का विवरण

(१) मुझे किसी ओर से भय ता नहीं है ?

इसमें विचारणीय विन्दु आठवां होता है।

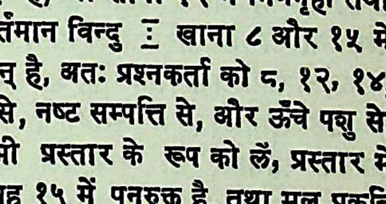


चूंकि तुला-चालित जल विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाग बोधन ⁝ में मित्रगृही होकर रुकता है, अतः ⁝ को ही लग्न माना।

इसका आठवाँ विन्दु जल का पात ⁝ है, जो खाना १२ में मित्रगृही तथा खाना १४ में उ. मित्रगृही है। इसका वर्तमान विन्दु ⁝ खाना ८ और १५ में मित्रगृही तथा स्वगृही दोनों जगह बलवान् है, अतः प्रश्नकर्ता को ८, १२, १४, १५ से भय है। ऋणदाता से, साझेदारी से, नष्ट सम्पत्ति से, और ऊँचे पशु से, पृच्छक को सतर्क रहना चाहिये। यों भी प्रस्तार के रूप को लें, प्रस्तार में आठवें ⁝ बोधन निर्बल है, भय है। थह १५ में पुनरुक्त है, तथा मूल प्रकृति में बोधन ⁝ १९ का ही होता है, अतः उच्च का है। अस्तु, ऋण से नष्ट सम्पत्ति की ओर से भय है, इससे सतर्क रहना चाहिये।

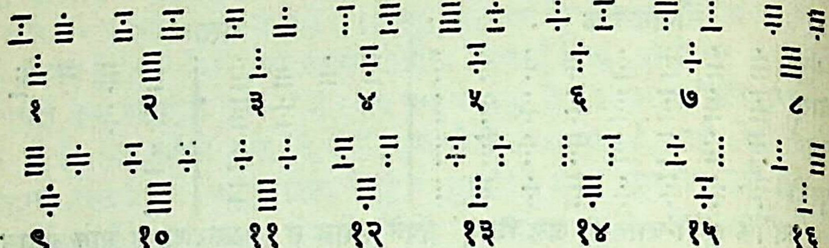
(२) इस मुकदमे या मामले में किस प्रकार का भय है ?

लग्न से अष्टम बिन्दु विचारणीय होता है। वह यदि प्रस्तार में स्वक्षेत्री हुआ तो प्रश्नकर्ता को शारीरिक भय है यानी मारपीट या जेल का योग है। यदि बन्दु मित्रगृही हो तो धन-हानि का



भय होता है। यदि शत्रुक्षेत्री हो तो कोई भय नहीं है। यदि समक्षेत्री हो तो शत्रु से बराबरी रहेगी। पुनरुक्त में बलाबल तथा परिणाम का निर्णय यथा अवसर करना चाहिये। अष्टम विन्दु का बल न्यून तथा लग्न का बल अधिक होना शुभ माना गया है।

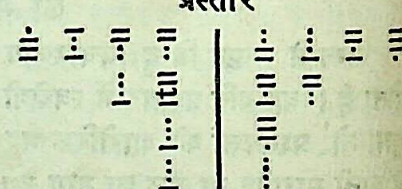
गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित विन्दु अपने स्थान से चल कर सप्तम भाव अपने गृह में रुकता है अतः यही लग्न-विन्दु है। लग्न-बिन्दु बलवान् है, अतः प्रश्नकर्ता को शारीरिक भय होगा। इसका आठवाँ विन्दु जल का ⁞ है। यह प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्तरूप से तीसरे गृह में है। जो बलवान् है और खाना १३ में अग्निगृही (शत्रुक्षेत्री) तथा १६ में मित्रगृही है। इस का वर्तमान जल ⁞ है, जो सप्तम भाव में बलवान् है और दृष्टि-युक्त है। अस्तु, बलवान् हो रहा है। इसका आठवाँ विन्दु बलवान् है, अतः परिणाम यह निकला कि इस मुकद्दमे अथवा मामले में भय माल का है।

(३) मुझको किस प्रकार की वस्तुओं से भय है ?

प्रस्तार



तुला-चालित वायु विन्दु सप्तम भाव बोधन ⁞ में विश्रान्ति पाता है। इसका अष्टम विन्दु वायु का रूप उष्णगु ⁞ है। यह खाना ४ में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान वायु बोधन ⁞ है। यह सातवें गृह में सम बल पा रहा है और चौथी दृष्टि (अर्द्ध शत्रु-दृष्टि) है

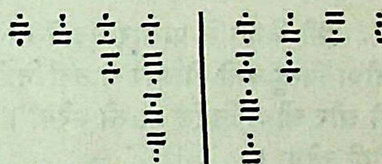
अस्तु, साधारण बल इसे मिल रहा है। अतः कहा गया कि किसी कदर भय जल और पृथ्वी के कीटाणु आदि का है। लेकिन विशेष भय नहीं है। कारण विन्दु तथा वर्तमान विन्दु पृथ्वी तथा जल में है। इस विषय में आचार्य सुखांव का सुझाव है कि यदि अष्टम विन्दु अग्नि गृह में बलवान् हो तो अग्नि की वस्तुओं तथा अग्नि से भय हो। यदि वायु में बलवान् हो तो ऊँचे कोठे पर से तथा वृक्ष आदि से भय हो। यदि जल में बलवान् हो तो जल से भय हो। यदि पृथ्वी में बलवान् हो तो पृथ्वी के कीटाणु आदि से भय हो। यदि विन्दु अष्टम निर्बल हो तो कोई भय न होगा।

(४) मृत्यु का कारण क्या होगा ?

इस प्रकार ध्यान देकर पाँसा डालकर प्रस्तार बनाया।

तुला-चालित विन्दु वायु का सप्तम भाव में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न माना। इसका आठवाँ विन्दु वायु का है, यह प्रस्तार में १४ में स्वगृही है, यह बलवान् है। १४ वाँ गृह मुल्क का तथा मंत्री का होता है। अतः ज्ञात हुआ कि मुल्क के कारण झगड़े में मृत्यु होगी। यही आचार्य सुखांव का मत है कि आठवाँ विन्दु बली होकर जहाँ बैठे उस गृह से सम्बन्धित मृत्यु का कारण होता है।

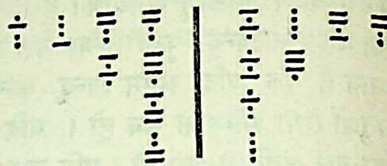
प्रस्तार



(५) मुझे शत्रु की ओर से कोई चिन्ता या भय तो नहीं है ?

इस प्रकार के प्रश्नोत्तर में छठा विन्दु तथा आठवाँ विन्दु विचारणीय गृह होता है। यदि यह दोनों विन्दु जल या पृथ्वी गृहों में हों तो शत्रु भय है, अन्यथा नहीं ?

प्रस्तार



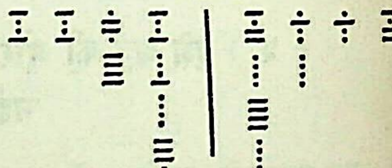
चूंकि तुला-चालित वायु विन्दु अपने स्थान से चलकर सप्तम भाव में रुकता है। यह विन्दु जल गृह में पड़ा है। अतः दाखिल गृह कहा गया। इसका दूसरा विन्दु ⁞ है, यह चौथे तथा १२ वें में सावित गृह में डटे बैठे हैं। इसका छठा विन्दु वायु ⁞ है। यह खाना १३ में विन्दु मुनकलिब में बैठा है। इसका आठवाँ विन्दु वायु का बोधन ⁞ है। यह प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना २ में बैठा है। (⁞ × ⁞) इसका बारहवाँ विन्दु जल का ⁞ है, यह आठवें गृह सावित में है। तथा खाना १३ में खारिज में है।

अस्तु, परिणाम यही निकला कि प्रश्नकर्ता को भय अन्य का साधारण कम होना चाहिये। क्योंकि सभी विन्दु करीब आधे के दाखिल गृह में तथा सावित गृहों में है। तथा आधे विन्दु खारिज व मुनकलिब में है।

(६) अमुक व्यक्ति जीवित रहेगा या मरेगा ?

इसी नियत से प्रस्तार बनावें। फिर देखें चौथा तथा आठवाँ विन्दु। यदि चौथा विन्दु बली हो और आठवाँ निर्बल हो तो जीवित रहेगा यदि आठवाँ बली हो और चौथा निर्बल हो तो मरेगा। यदि दोनों विन्दु समान बल रखते हों तो रोगी रहेगा।

प्रस्तार



चूँकि तुला चालित वायु विन्दु पंचम भाव ⁞ में विश्रान्ति पाता है, वहाँ से खाना ४ में रुकता है। चौथा गृह विषम रूप होने के नाते प्रमाणित नहीं माना गया है। इसी कारण ⁞ को लग्न माना। इसका चौथा विन्दु वायु का ⁞ है, यह प्रस्तार में मौजूद नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⁞ है, जो प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ३ व ८ में सम विन्दु तथा शत्रु गृह में पाया जाता है, कमजोर है।

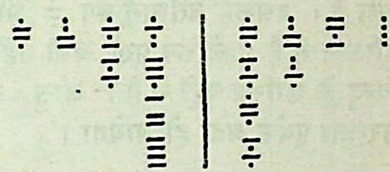
यह विन्दु जीवन से सम्बन्ध रखता है। आठवां विन्दु वायु ⁝ है, यह गुप्त रूप से खाना १ में पैदा होता है। इसका वर्तमान वायु ⁝ है, जो खाना ५, ७, ८, में मित्रगृही, स्वगृही तथा शत्रुगृही है। परिणाम में यह चौथे की अपेक्षा अधिक बलवान् है और मृत्यु से सम्बन्ध रखता है। अस्तु, जीवन की आशा नहीं है। भगवान् की इच्छा में मनुष्य का वश नहीं चलता है।

(७) अमुक व्यक्ति की मृत्यु किस प्रकार होगी ?

विचारणीय गृह—आठवाँ विन्दु जिस गृहमें बलवान् हो उस गृह से सम्बन्वित मृत्यु का कारण बने—

चूँकि तुला-चालित वायु तत्त्व का विन्दु अपने स्थान से चल कर सप्तम भाव में रुकता है। इसका आठवाँ विन्दु वायु का ⁝ है। यह १४वें गृह में स्वगृही बलवान् होकर बैठा है। यह खाना ४ से संबन्ध रखता है। चौथा गृह स्थान मुल्क जायदाद मकान आदि से सम्बन्ध रखता है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि पृच्छक की मृत्यु मकान जमीन आदि के झगड़े से होगी।

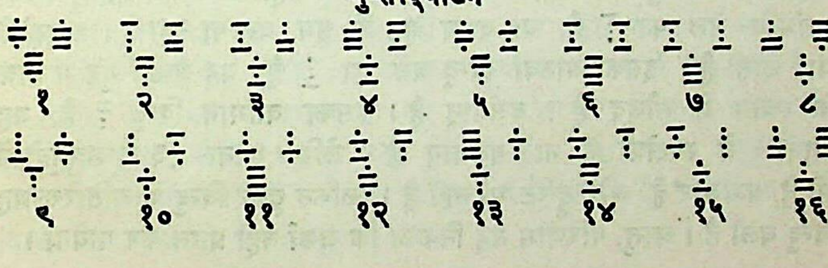
प्रस्तार

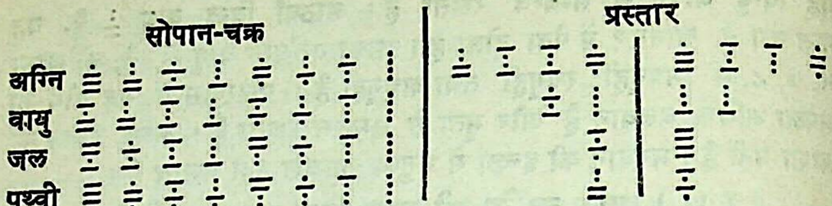


(८) मैं ऋण (कर्जा) चुकता कर पाऊँगा या नहीं ?

यदि अष्टम विन्दु निर्बल होकर अग्नि या पृथ्वी में हो तो सरलता से ऋण चुक जायेगा। यदि सम बली होकर जल या पृथ्वी में पुनरुक्त हो तो कठिनाई से अदा होगा। यदि बली होकर जल या पृथ्वी में हो तो ऋण नहीं अदा कर पायेगा।

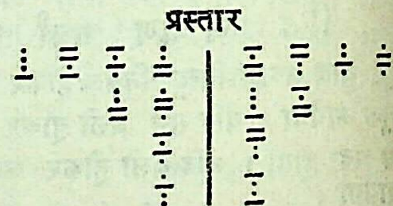
गुप्तोद्घाटन





चूँकि तुला-चालित पृथ्वी तत्व का विन्दु पंचम भाव में जाकर विश्रान्ति पाता है। इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी का सौरि ≡ है, यह प्रस्तर में मौजूद नहीं है। यह गुप्त रूप से खाना १ उ. मित्रक्षेत्री में पाया जाता है। सम बल प्राप्त हो रहा है। इसका वर्तमान रूप ≑ भी खाना १ व ५ में सम बल पा रहा है। दृष्टि ५ से है। लेकिन पूर्ण बली नहीं है, इसके अतिरिक्त विन्दु मय वर्तमान विन्दु के खारिज गृहों में है। अस्तु, उपर्युक्त लिखित विधान के अनुसार ऋण सरलता पूर्वक अदा हो जायेगा।

(६) ऋण लेना चाहता हूँ मिलेगा या नहीं ?

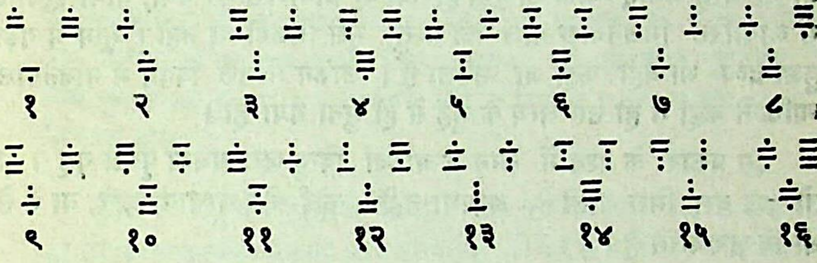


चूँकि खाना १५ से जल तत्व का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ३ ≑ स्वक्षेत्री में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना। इसका दूसरा विन्दु जल का ≑ है। यह प्रकट तथा गुप्त किसी प्रकार भी प्रस्तार में नहीं पाया जाता है। इसका वर्तमान जल का ⁝ है, यह दशम गृह में सम बल पा रहा है। कमजोरी पाई जाती है। इसका आठवाँ विन्दु जल का ⁝ है, यह आठवें गृह में मित्र के स्थान में मौजूद है। बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु ≑ है, यह खाना ३ में स्वक्षेत्री के नाते बलवान् है। लेकिन खाना १३ में शत्रुगृही में भी है, कमजोर है और दृष्टि भी नहीं है। लेकिन दूसरे विन्दु के अतिरिक्त यह विन्दु बली है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि जर्का नही प्राप्त कर पायेगा।

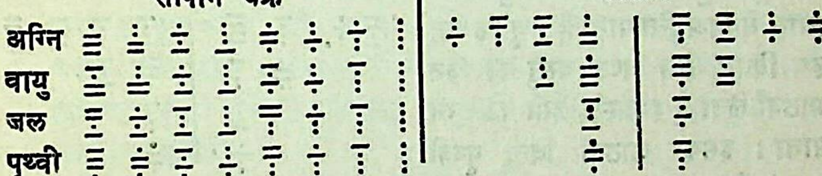
(१०) मैं ऋण देना चाहता हूँ, वापस मिलेगा या नहीं ?

यदि लग्न से दूसरा व तीसरा विन्दु अग्नि या वायु में हो तथा आठवाँ विन्दु जल या पृथ्वी में हो तो वापस मिलता है। विपरीत होने पर परिणाम भी बिपरीत होता है। यदि २ व ३ विन्दु प्रस्तार में न हो तो भी वापस मिलता है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र　　　　प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु खाना ४ ⁞ में विश्रान्ति पाता है। इसका दूसरा विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह गुप्त तथा प्रकट प्रस्तार में है नहीं। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁞ है, यह भी गुप्त तथा प्रकट प्रस्तार में नहीं है। तीसरा विन्दु पृथ्वी का ⁞ है, यह भी गुप्त तथा प्रकट रूप से कहीं नहो है। इस तीसरे विन्दु का बलवान् पृथ्वी का ⁞ है जो गुप्त व प्रकट प्रस्तार में नहीं है। इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह खाना शत्रुक्षेत्री में तथा खाना ८ स्वक्षेत्री में है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁞ है, जो खाना ४ में स्वगृही तथा ७ व १५ में मित्रगृही है।

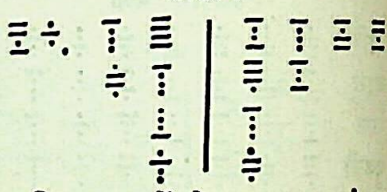
अस्तु, परिणाम यह निकला कि रुपया प्रश्नकर्ता का वसूल हो जायेगा। कारण, कायदा है कि यदि विन्दु २ व १३ निर्बल हों या प्रस्तार में न हों और आठवां बलवान् हो तो रुपया वापस हो जाता है।

(११) मेरी अमुक नष्ट वस्तु मिलेगी या नहीं ?

वस्तुनष्ट कई प्रकार की मानो गई है, जैसे—चुराई गई, खो गई, छीन ली गई, बलपूर्वक अधिकार में कर ली गई, या अपनी कजोरी से परहस्तगत हो गई। या नष्ट वस्तु अर्थात् व्यक्ति जो गुप्त हो गया या लावारिस मर गया, यात्रा इत्यादि में लावारिस मिलनेवाले माल की वस्तु, मुझे मिलेगी या नहीं। भूमि में गड़ा हुआ द्रव्य भी यही कहा जा सकता है। लेकिन जिसके विषय में गाड़नेवाले व्यक्ति ने कहा न हो उसे अन्य के मुँह से ही सुना गया हो।

इस प्रकार के प्रश्न में लग्न से आठवाँ विन्दु जल अथवा पृथ्वी गृह में हो तो नष्ट वस्तु मिल जाती है, अन्यथा नहीं। कोई-कोई आचार्य १, ९, या ८ से भी विचार करते हैं।

प्रस्तार



चूँकि तुला—चालित विन्दु तीसरे स्थान में विश्रान्ति पाता है। चूँकि यह रूप विषम है। नष्ट वस्तु का प्रश्न आठवाँ लेना है। अस्तु, इसी को लग्न माना। इसका आठवाँ विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह ७ व १६ दाखिल तथा सावित गृह में है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⁝ खाना ३ व ११ दाखिल गृहों में है तथा खाना ६ व १३ मुनकलिब तथा खारिज में पुनरुक्त हैं। लेकिन दाखिल सावित गृह में अधिक है। आचार्य सुर्खाव का मत है कि यदि हासिल या सावित में तो नष्ट वस्तु मिलेगी। इसे नाठिया का माला भी कहते हैं।

उपर्युक्त प्रश्न को केवल रूप के बलाबल से विचार करने का इस प्रकार विधान लिखा है—आठवें गृह को देखें, यदि शुभ दाखिल रूप हो तो माल मिलेगा अन्यथा नहीं। किसी-किसी आचार्य का मत है कि आठवाँ विन्दु शुभ दाखिल पुनरुक्त

दूसरे गृह में हो तो नष्ट वस्तु मिलेगी। इसी नियम से रोगी के निरोग होने तथा दीर्घायु का फल भी कहना चाहिये।

दूसरा तरीका—इसी नष्ट वस्तु या नठियाई जायदाद (जिसकी कोई वारिस न हो) की प्राप्ति के लिये प्रस्तार के खाना १ के रूप को चौथे गृह के रूप से गुणा करें, गुणनफल के रूप को आठवें गृह के रूप से गुणा करें। यदि हासिल शुभरूप ÷ या ≑ ⫶ हो तो सरलता पूर्वक माल मिलेगा। यदि ≐ हो तो परिश्रम से मिलेगा यदि ÷ या ⁝ हो तो कुछ मिलेगा, कुछ न मिलेगा। यदि दाखिल हासिल हो तो शीघ्र मिलेगा। यदि शुभ सावित हो तो देर में मिलेगा। यदि खारिज हो तो हाथ आकर निकल जायेगा, या प्रश्नकर्ता खुद छोड़ देगा। यदि मुनकलिब हो तो कुछ मिलेगा कुछ न मिलेगा। अशुभ रूप हो तो पूर्ण निराशा होगी।

तीसरा अनुभव (यूनानी आचार्यों का)—यदि खाना २ व ८ शुभ दाखिल हों तो सरलतापूर्वक मिलेगा और सावित हो तो देर से मिलेगा। यदि केवल पिता की जायदाद की बावत उपर्युक्त प्रश्न हो तो खाना ४ व ८ के रूप को गुणा करके हासिल को १२ वां गृह के रूप से गुणा करें। उपर्युक्त रीत्यनुसार फल कहें। यदि भाई अथवा पड़ोसियों की जायदाद हो तो खाना ३ व ८ के पुनः हासिल रूप को खाना १२ के रूप से गुणा करके उपर्युक्त रीत्यनुसार फलादेश कहना चाहिये।

यदि माता की नष्ट सम्पत्ति का प्रश्न हो तो केवल ८ व १० के रूप को गुणा करें। यदि हासिल रूप ÷, ⫶ या, ≑ हो तो मिलेगा। ≡ हो तो न मिलेगा, शुभ मुनकलिब से कुछ मिलेगा कुछ न मिलेगा। अशुभ खारिज, अशुभ मुनकलिब अथवा अशुभ सावित से भी न मिले।

यदि वह वस्तु किसी अज्ञात व्यक्ति की हो, खाना ८ शुभ दाखिल हो और पुनरुक्त खाना २, १३, १४, ११ या १५ अथवा खाना ५ में हो तो माल मिलेगा। यदि पुनरुक्त किसी गृह में रूप न हो तो न मिलेगा।

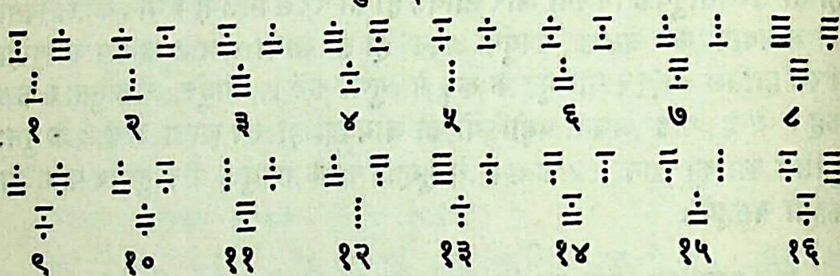
नवमगृही प्रश्नों का विवरण

(१) यात्रा होगी या नहीं ?

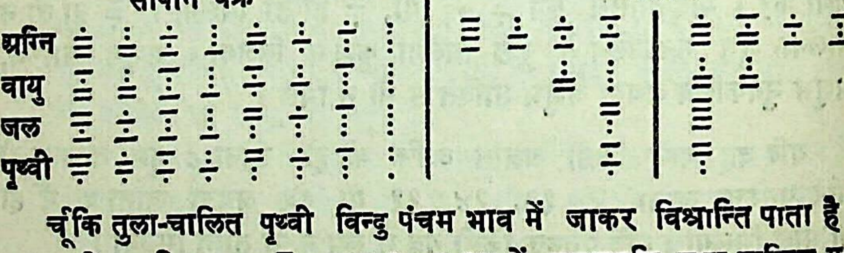
यात्रा के दो भेद हैं। यदि कोई ४० मील के भीतर किसी प्रकार मोटर अथवा रेल या अन्य वाहन से जाकर उसी दिन गृह वापस आता हो, तो केवल तीसरे गृह से फलादेश कहें। जैसा कि हम तृतीयगृही प्रश्नों को पीछे लिख चुके हैं। यदि ४० मील से ऊपर की यात्रा है तो तीसरा, सातवाँ, और नवाँ विन्दु विचारणीय हैं। यह यदि पुनरुक्त होकर जल या पृथ्वी में हो तो यात्रा न होगी और यदि अग्नि या वायु में हो तो यात्रा होगी।

अन्य आचार्य का मत है कि यदि चौथा, नवाँ, दसवाँ विन्दु दाखिल या साबित में हो तो यात्रा न होगी। यदि खारिज या मुनकलिब में हो तो यात्रा होगी।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु पंचम भाव में जाकर विश्रान्ति पाता है। इसका तीसरा विन्दु रूप ⸗ खाना १४ व १५ में मनकबलि तथा दाखिल गृह

में है। इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी ⚍ है। यह प्रस्तार में प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ८ में है। जो साबित गृह है। इसका नवम विन्दु अग्नि का ⚎ है, जो खाना ७ व १२ में दाखिल तथा साबित गृह में है। तथा खाना ९ व १० खारिज तथा मुनकलिब गृह में है। पुनरुक्त विन्दु खारिज तथा मुनकलिब के दाखिल व साबित में अधिक है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि पृच्छक की यात्रा होगी और शायद कुछ दूर चला भी जायेगा। लेकिन अपूर्ण यात्रा होगी। कारण, आचार्य सुर्खाव ने लिखा है कि यदि विन्दु दाखिल या साबित में हो तो न जायेगा। यदि खारिज या मुनकलिब में हो तो जायेगा। इसमें दोनों हैं इसी से ऐसा फलादेश कहा।

केवल प्रस्तार के रूप गृहों द्वारा हल—यदि खाना १ शुभ खारिज हो और पुनरुक्त १०, ११ या १५ में हो और खाना ३ व ९ भी खारिज हो (चाहे शुभ खारिज हो या अशुभ खारिज हो) तो यात्रा होगी। यदि पुनरुक्त ६, ८ व में हो तो अशुभ फल हो अर्थात् यात्रा हो भी तो महान् कष्ट हो। यदि चौथे गृह में पुनरुक्त हो तो कुछ कष्ट हो। १९ में हो तो भी कष्ट हो। फिर खाना १ व ११ को आपस में गुणा करें। यदि शुभ रूप हो तो यात्रा शुभ हो और रूप अशुभ हो तो यात्रा होगी मगर मार्ग में कष्ट भोगना पड़ेगा।

खाना ९ को देखें यदि यह शुभ खारिज और खाना १३ में पुरुनक्त हो तो यात्रा लाभदायक हो। यदि पुनरुक्त खाना ८ में हो तो यात्री मार्ग में किसी जगह ठहरा रहे। यदि ४ में पुनरुक्त हो तो यात्रा न हो। यदि ४, ८, या १२ अशुभ हो तो यात्री भूख-प्यास से व्याकुल रहे महान् कष्ट पावे।

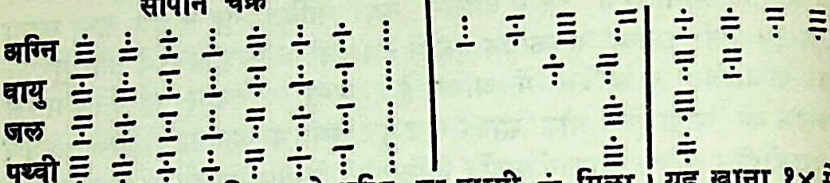
(२) मेरे लिये दूर की यात्रा शुभ है या निकट की ?

तीसरा रूप निकट की (४० मील से कम) यात्रा का है, मय वर्तमान विन्दु के शुभ हो तो यात्रा हो। नवें रूप का दूर यात्रा में बली रूप शुभ है, यदि निर्बल हो तो यात्रा न हो।

चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी के तीसरे गृह में विश्रान्ति पाकर खाना १ में रुकता है। इसमें तीसरा गृह मित्रगृही होने से बला है। अस्तु, ⚎ को लग्न माना। इसका तीसरा विन्दु पृथ्वी का दैत्यगुरु ⚏ है, यह प्रस्तार में है

नहीं। इसका वर्तमान विन्दु सूरि ⁝ है। यह २,५,१० तथा ११ में है। शत्रुक्षेत्री, समबली, मित्रगृही है। लेकिन पुनरुक्त की संख्या अधिक है, अतः निर्बल है।

सोपान चक्र — प्रस्तार



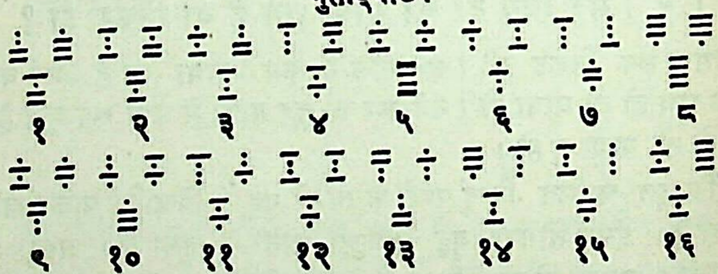
अब नवाँ विन्दु लिया तो अग्नि का वाग्मी ⁝ मिला। यह खाना १४ में मित्रगृह तथा १६ में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री के नाते समान (सम) बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का उष्णगु ⁝ है, यह भी प्रस्तार में नहीं है, अतः निर्बल है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि पृच्छक की दोनों यात्राएँ हानिकारक हैं। आचार्य सुर्खाब लिखते हैं कि यदि तीसरा विन्दु बली हो तो यात्रा निकट की शुभ फल दायक हो, यदि नवाँ विन्दु बली हो तो दूर का सफर लाभदायक हो और यदि दोनों निर्बल हो तो हानिकारक है।

(३) अमुक स्थान को जाता हूँ शुभ फल होगा या नहीं ? या इसी जगह लाभ होगा ?

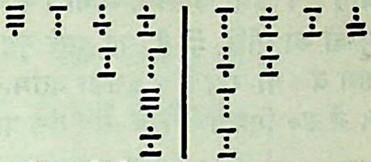
विचारणीय गृह—४ तथा १० वाँ विन्दु दाखिल अथवा साबित गृह में हो तथा दूसरा विन्दु खारिज या मुनकलिब गृह में हो तो लाभ होता है। इन्हीं में पुनरुक्त हो तो भी लाभ होता है।

गुप्तोद्घाटन



चूंकि तुला-चालित जल विन्दु तीसरे गृह में होकर पुनः बायें पंचम भाव में जाकर विश्रान्ति पाता है। इसमें तीसरे गृह पात ÷ का विन्दु बली है। इसको लग्न-विन्दु माना।

प्रस्तार

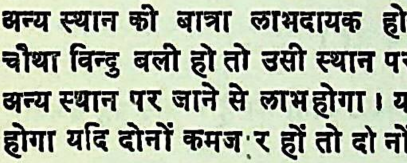


इसका चौथा विन्दु सूरि ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना ९ शत्रुगृही है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है। यह गुप्त रूप से छठे गृह में उ० मित्रक्षेत्री है, सम बल पा रहा है। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह भी प्रस्तार में नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना १५ में स्वक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है। यह भी प्रस्तार में नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना ४ में स्वक्षेत्री है। इसमें दोनों विन्दु कमजोर हैं, दशम विन्दु किसी कदर बली पाया जाता है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि अन्य स्थान की यात्रा लाभदायक होगी। आचार्य सुर्खाब ने लिखा है, यदि चौथा विन्दु बली हो तो उसी स्थान पर लाभ होगा। यदि दशम बली हो तो अन्य स्थान पर जाने से लाभ होगा। यदि दोनों बलवान् हो तो दोनों जगह लाभ होगा यदि दोनों कमजोर हों तो दोनों जगह खराब हैं।

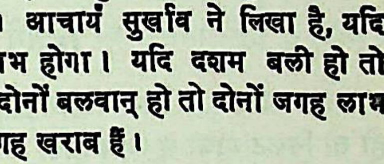
(४) व्यापार हेतु यात्रा करूँ तो लाभ होगा, या नहीं ?

विचारणीय गृह—यदि सातवां तथा नवां विन्दु बलवान् हो तो यात्रा से लाभ होगा। यदि कमजोर हो तो यात्रा न करें हानि उठानी पड़ेगी।

सोपान चक्र



प्रस्तार



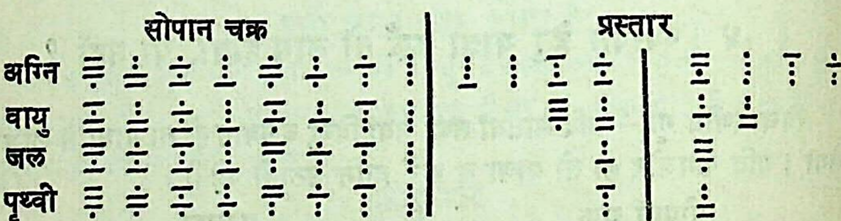
चूंकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु खाना २ में होकर फिर बाईं तरफ

अष्टम भाव में रुकता है। इस जगह पर तीसरे गृह का रूप तीक्ष्णांशु ⁝ बलवान् है। इसी को लग्न माना। कारण, तुला में भी है। इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी का सौरि ⁝ है, यह दूसरे गृह में शत्रुगृही निर्बल है, तथा खाना १३ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का मन्दग ⁝ है। यह खाना ५ में उ० मित्रक्षेत्री हैं। सम बल पा रहा है, कुछ बल यह विन्दु पा रहा है।

इसका नवम विन्दु अग्नि का उष्णगु ⁝ है, यह प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का पात ⁝ है, यह खाना १ में स्वगृही तथा खाना १० में मित्रगृही तथा खाना ११ में शत्रुगृही भी है। कुछ बल पाया जाता है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्नकर्ता को यह यात्रा लाभदायक नहीं है। कारण, दोनों बिन्दु निर्बल हैं।

(५) मैं निकट की यात्रा करूँ या दूर की जिसमें लाभ हो ?

इस प्रकार के प्रश्न में तीसरा गृह निकट यात्रा का है। यदि यह बलवान् हो तो निकट यात्रा से लाभ होगा।



चूंकि तुला-चालित विन्दु खाना ६ में ⁝ रुकता है, यद्यपि विन्दु बाईं तरफ भी अष्टम भाव तक जाता है। इसमें ⁝ को स्वगृही के नाते बलवान् पाया। अस्तु, ⁝ को लग्न-विन्दु माना। इसका तीसरा विन्दु वायु का तीक्ष्णांशु ⁝ है, यह प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान ⁝ है, यह खाना १० तथा १४ में स्वक्षेत्री है, अतः कुछ बल पा गया है। अस्तु, जाने से लाभ साधारण

होगा। इसका नवम विन्दु जल का पात ÷ है, जो खाना ५ अग्नि में शत्रु-गृही है अतः कमजोर है। अस्तु, दूर का जाना ठीक नहीं है।

(६) यात्रा स्थलीय (किसी शहर या देश की) करूँ या समुद्री यात्रा करूँ, जिससे लाभ हो ?

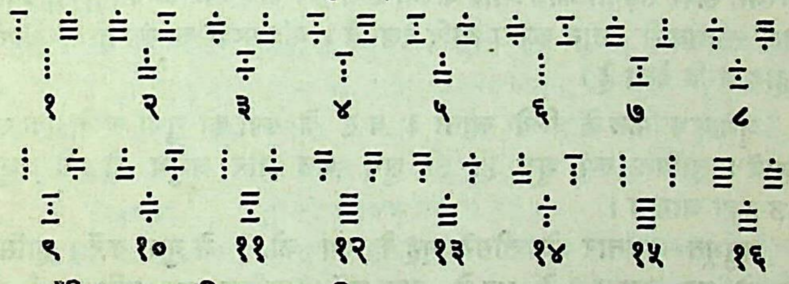
इसमें नवम विन्दु से फलादेश कहना चाहिये। यदि नवम विन्दु पृथ्वी या जल के गृह में हो तो समुद्री यात्रा लाभदायक होगी। यदि विन्दु नवम अग्नि या पृथ्वी विन्दु में हो तो स्थल की यात्रा करें। लाभ होगा।

यदि व्यापार की दृष्टि से यात्रा करते हैं तो १ व ११ रूप जल या पृथ्वी का हो अथवा जल या पृथ्वी में पुनरुक्त हो तथा दूसरा रूप अग्नि या वायु का हो या इन्हीं में पुनरुक्त हो तो लाभ होता है।

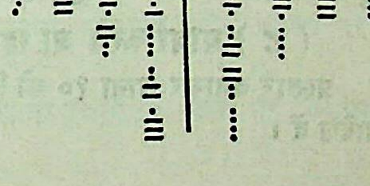
(७) रात्रि में जो स्वप्न देखा है वह शुभ है या अशुभ है ?

विचारणीय विन्दु—रात्रि के स्वप्न के लिये नवम तथा दिन के स्वप्न के लिये तीसरा होता है।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु खाना ५ में होकर चतुर्थ स्थान ∓ में कता है। रूप बोधन ⁝ को मित्रगृही के नाते बलवान् पाया। अस्तु, इसीको लग्न माना। प्रश्न में स्वप्न रात्रि का

मान लिया है। इसका नवाँ विन्दु वायु सोपान में जल का पात ⁝ होता है। यह प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं पाया जाता है। मगर गुप्त रूप से आठवें गृह में मौजूद है और शत्रुगृही है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है, जो प्रकट रूप में खाना ५ में मौजूद है। यह शत्रुगृही है। दृष्टि ४ से अर्द्धशत्रु दृष्टि है अतः साधारण बल प्राप्त है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि यह स्वप्न कुछ लाभदायक है, कुछ अशुभ भी है। कारण विन्दु बली कम है।

यदि दिन में स्वप्न देखा है—तो इसका तीसरा विन्दु वायु का तीक्ष्णांशु है, यह चौथे गृह में शत्रुगृही के नाते बलहीन है। इसका वर्तमान विन्दु वायु का दैत्य गुरु ⁝ है, यह प्रस्तार में नहीं है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि यह स्वप्न प्रश्नकर्ता को लाभदायक नहीं है। कारण, विन्दु निर्बल है। यही विधान आचार्य सुर्खाव ने लिखा है।

रूपों द्वारा फलादेश—नवम गृह को देखें, यदि उसमें शुभ रूप किसी रूप से हो तो शुभ फलदायक है, विपरीत से अशुभ फल कहें। यदि खाना ९ में अग्नि का रूप हो तो स्वप्न में प्रकाश, चाँद, सूर्य आदि को देखा है, या किसी प्रतापी तत्ववेत्ता महात्मा आदि को देखा है। यदि वायु का रूप हो तो यात्रा करना, ऊपर उड़ना, क्रोध आदि करना देखा है। यदि जल का रूप है तो बहता जल, तालाब में स्नान करना आदि देखा है। यदि पृथ्वी का रूप हो तो जंगल, पहाड़ आदि देखा है।

शुभाशुभ फल के लिये खाना ३ व ९ के रूपों को गुणा करके एक रूप बनावें। हासिल रूप शुभ हो तो शुभ फल और अशुभ हो तो अशुभ फल कहा जायगा।

अनुभूत—प्रस्तार के तीसरे गृह के रूप को ⁝ से गुणा करें। हासिल रूप को पुनः खाना १ के रूप से गुणा करें। हासिल रूप यदि शुभ है तो शुभ फल होगा और यदि अशुभ हो तो अशुभ फल होगा।

(८) यात्रा करने जा रहा हूँ, कितने समय में लौटूँगा ?

प्रस्तार बनाकर खाना १० को देखें। उसी के अनुसार लौटने के समय का आदेश दें।

अवधि चक्र यह है

नाम रूप	÷	≐	⫟	☰	÷	⋮	≑	≐
संख्या दिन	१ या ७	३ या ६	५ या ६	१० या ७०	२२	२७	३६	४५
संख्या मास	१	३	०	१०	२	४	०	०
संख्या वर्ष	०	०	१॥	०	०	२	५	२
नाम रूप	≑	⫟	≑	⋮	⋮	÷	÷	☰
संख्या दिन	५५	६०	१०	९९ या १२०		११०	१५	⋮३
संख्या मास	२	०	६	३	१	६	३	३
संख्या वर्ष	४	५	६	५	१॥	१	५	३

दशमगृही प्रश्नों का विवरण

(१) यह अधिकारी जो इस पद पर आया है, कैसा है ?

प्रथम प्रस्तार बनावें और प्रस्तार के केन्द्रों यानी १, ४, ७, १० गृहों को देखें। यदि इन चारों में शुभ दाखिल रूप हो तो हाकिम चिरकाल तक रहे और जनता भी प्रसन्न रहे। वह शासन भी शान्तिपूर्वक करे। यदि अशुभ दाखिल अथवा अशुभ साबित हो तो चिरकाल तक तो रहे, मगर प्रजा के प्रति दुर्व्यवहार करे।

यदि खाना १० किसी प्रकार से शुभ हो और रूप खाना ४ में शुभ हो यानी ⫟, ≑ या ≑ हो तो शासक को लाभ हो और जनता भी सुखी रहे। यदि खाना ४ में ≐ या ≐ हो अथवा ÷ या ⫟ हो तो हाकिम देर तक रहे, परन्तु उसे लाभ कम हो। यदि खाना १० में ≑, ⫟ या ☰ हो और खाना ४ में ≑, ≑, ⫟ अथवा ≐, ≐ हो तो शासक नफे में रहे।

रोम देश के आचार्यों का मत—यदि खाना १ व १० किसी प्रकार से शुभ हों और गृहों में पुनरुक्त हो तो शासक भी प्रसन्न रहे और जनता भी सुखी रहे। यदि खाना १ व १० के रूप शुभ हों और पुनरुक्त खाना ६, ८ या १२ में करें तो हाकिम तो प्रसन्न रहे, मगर जनता कष्ट पावे और शासक पर अप्रसन्न रहे।

यूनान के आचार्यों का मत—जो रूप खाना १० में हो, उसी का बिलोम

रूप खाना २ या ४ में हो तो शासक तथा प्रजा में अनबन रहे। यदि खाना १ व १० में अथवा हो और खाना ६, ८, १२ में पुनरुक्त हों तो शासक प्रसन्न रहे, मगर प्रजा दुखी रहे।

बर्बर देश के आचार्यों का मत—यदि खाना १ व १० में हो और खाना ६, ८, १२ में अशुभ रूप हों तो शासक कैद में हो अथवा अपने पद से गिराया जाय। यदि उपर्युक्त गृहों में या रूप हो तो शासक का कार्य बिगड़ता जायेगा और अन्त में बदनाम हो जायेगा।

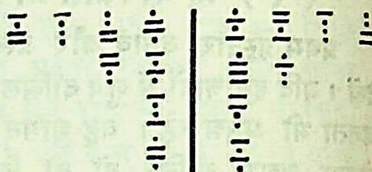
अब बिन्दु चाल द्वारा उपर्युक्त प्रश्न को हल करते हैं।

१—अधिकारी कैसा है ?

विचारणीय बिन्दु—१, ४, ७, १०

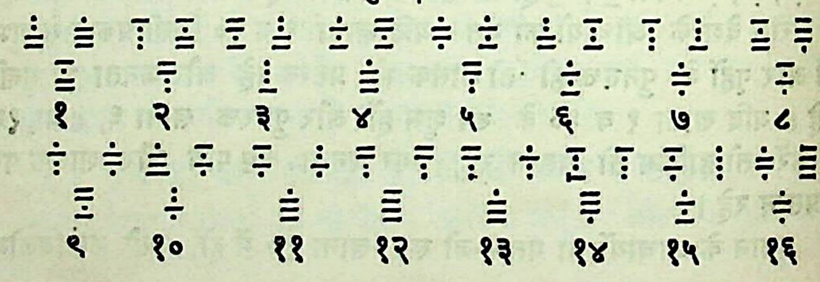
खाना १ लग्न का प्रश्नकर्ता से अभिप्राय है। ४ का वह स्थान, जहाँ का वह अधिकारी है। ७ का वह स्थान वहाँ है, अर्थात् जिस क्षेत्र का वह अधिकारी है, वह क्षेत्र यानी हाकिम का चौथा गृह, जो प्रस्तार का ७ वाँ गृह माना गया। १० का जिसके आश्रय में वह शासक है, उस स्थान की स्थिति। दसवें बिन्दु से अभिप्राय ७ के दस से है, अर्थात् शासित वर्ग ही अधिकारी का कुटुम्ब होता है। कुटुम्ब का स्थान तीसरा होता है।

प्रस्तार



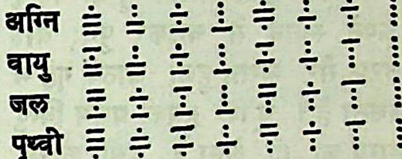
प्रथम उपर्युक्त प्रस्तार का गुप्तोद्घाटन किया अर्थात् प्रस्तार के रूप से अवदह क्रमानुसार उसी स्थान के रूप को गुणा किया। गुणनफल गुप्त रूप हुये इस प्रकार-

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का खाना २ में विश्रान्ति पाता है। चूँकि यह रूप विषम है और शत्रुगृह भी है, अतः तुला के रूप ÷ को लग्न माना। परन्तु हमको तो प्रथम उसी विन्दु से काम लेना है, जहाँ विन्दु रुका है, उसी विन्दु से ४, ७, १० विन्दु को देखकर हम अपना निर्णय दे सकेंगे।

सोपान चक्र



अस्तु, लग्न-विन्दु प्रथम खाना २ वाले को ही पकड़ा। यह रूप ÷ खाना ७ में पुनरुक्त भी है। जो प्रस्तार में गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। अस्तु, निर्बलता का चिह्न प्रथम गृह हुआ। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का रूप मन्दग ≡ है, यह १६ वें गृह में स्वक्षेत्री बलवान् होकर बैठा है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का तीक्ष्णांशु ÷ है, यह खाना ११ व १५ में मित्रगृही है। अस्तु, बलवान् चौथा विन्दु हुआ।

इसका सातवाँ विन्दु पृथ्वी का रूप सूरि ÷ है, यह खाना १२ व १३ में स्वक्षेत्री है तथा सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का रूप और ÷ है, यह खाना ९ में सम बल पा रहा है।

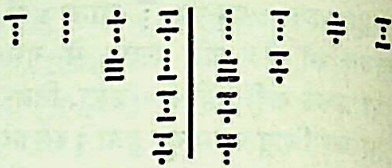
इसका दशम विन्दु अग्नि का रूप आर ÷ है, जो खाना ९ में स्वक्षेत्री बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का रूप शीतांशु ⁝ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है। अस्तु कुछ बल निर्बल हो रहा है। अस्तु, चारों विन्दुओं में से दो विन्दु बलवान् हैं और २ कमजोर हैं। अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रजा वर्ग कुछ तो प्रसन्न रहेगा और कुछ अप्रसन्न रहेगा। शासक मध्य श्रेणी में रहेगा। और लाभ भी मध्यम पायेगा। यदि चारों विन्दु तगड़े होते तो प्रजा भी सुखी रहती और शासक भी चिरकाल तक लाभयुक्त रहता।

इसी प्रकार देवज्ञ अपनी बुद्धि के अनुसार अन्य प्रश्नों का परिणाम निकालें।

(२) यह अधिकारी जो आजकल पदच्युत (तनज्जुल) है, पुनः पदारूढ़ (बहाल) होगा या नहीं ?

विचारणीय गृह—१ लग्न (भाग्य) ४ (स्थान) ११ (पद) है।

प्रस्तार



चूंकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु अपने स्थान से चलकर पुनः बाईं तरफ सैर करता हुआ आठवें गृह में रुकता है। चूंकि हमको प्रथम विन्दु भाग्य का ही लेना है, इसी कारण खाना २ के रूप आर ÷ को लग्न माना। यह दूसरे गृह में शत्रुक्षेत्री है, तथा ६ में भी शत्रुगृही है। अस्तु, भाग्य खोटा कहा गया। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है, यह खाना ३ में मित्रक्षेत्री तथा ८ में स्वक्षेत्री है। दृष्टि ७ है। अस्तु, साधारण बल पा रहा है।

इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का रूप सौरि ⁝ है, यह प्रकट तो प्रस्तार में है नहीं, मगर गुप्त रूप से खाना ७ में मौजूद है। इस प्रकार ⁝ × ⁝ = ⁝ कारण ७ में ⁝ है, और सातवें गृह का रूप ⁝ है, दोनों के गुणा से रूप सौरि ⁝ आया। अस्तु, यह रूप ⁝ गुप्त रूप से खाना ७ में मित्रगृही कहा गया। इसका वर्तमान रूप मन्दग ÷ है, यह भी प्रास्तार में नहीं है। अतः चौथा विन्दु निर्बल हो रहा है।

अब दशम विन्दु को लिया तो अग्नि तत्त्व का रूप दैत्य गुरु ÷ को पाया। यह खाना ९ में स्वक्षेत्री बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ÷ है, जो खाना २ व ६ में मित्रगृही बलवान् है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि अधिकारी बहाल होगा।

आचार्य सुर्खाब का कथन है कि यदि विन्दु १ व ४ बलवान् हो और दशम विन्दु दाखिल या साबित गृह में हो तो अधिकारी बहाल होगा।

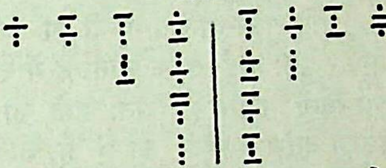
अन्य विधि—हमने तुला-चालित विन्दु को २ में से ८ तक पाया इसमें पंचम भाव को उ. मि क्षेत्री के नाते लग्न माना। यह खाना १३ में जो लग्न

का रूपान्तर है, उसमें पुनरुक्त है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, जो प्रस्तार के नवें गृह में उ. मि. क्षेत्री है। पंचम दृष्टि (मित्र दृष्टि) है। बल में यह ७० प्रतिशत है। कारण, लग्न का पुनरुक्त १६ में है। चौथा विन्दु ÷ है, जो खाना २ व ६ में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान ÷ तीसरे गृह में मित्रगृही है तथा ८ वें में स्वगृही है। दशम विन्दु अग्नि ÷ है, जो गुप्त तथा प्रकट कहीं नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ⋮ प्रस्तार के ११ में शत्रुगृही है। बल पूर्ण चीण होता है। अतः बहाल होने में सन्देह है। चूँकि लग्न विन्दु सन्तोष-जनक है। अतः दुबारा अपील करने पर बहाल हो सकेंगे।

(३) इस अधिकारी को मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी या नहीं ?

विचारणीय गृह—प्रथम तथा दशम विन्दु वर्तमान के सहित यदि बलवान् हो तो मान-प्रतिष्ठा बढ़े।

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित जल विन्दु अष्टम भाव ÷ में विश्रान्ति पाता है। यह मित्रगृही है, प्रथम बिन्दु लेना है। अतः लग्न बिन्दु यही ÷ हुआ। मित्रगृही होने से बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⁝ है, जो चौथे में मित्रगृह के नाते बलवान् है। तथा खाना ६ में उ० मित्रक्षेत्री है। सम बल पा रहा है। परिणाम में बलवान् है अर्थात् ५० प्रतिशत वल है।

इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो खाना ८ स्वक्षेत्री में बलवान् इसका वर्तमान विन्दु ÷ है, जो खाना ४ में स्वगृही तथा ६ में शत्रुगृही है। औसत बराबर है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

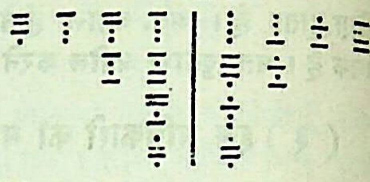
आचार्य सुर्खाव का कथन है कि यदि १ व १० बलवान् हों और पुनरुक्त हों तो मान-प्रतिष्ठा बढ़े। यदि पुनरुक्त ३, ५, ११, १३, या १५ में हो तो अधि-कारी की पूर्ण रूप से मान-प्रतिष्ठा बढ़े। प्रजा सुखी रहे।

(४) अधिकारी मुझ पर कृपा करेगा या नहीं ?

यदि खाना १ तथा १० का रूप शुभ दाखिल हो और खाना ५ तथा १४ का रूप शुभ हो तो कृपा करेगा। इसी प्रकार विन्दु चाल में प्रथम तथा दशम विन्दुओं के बलाबल से दैवज्ञ अपनी बुद्धि के अनुसार फल कहें।

इस प्रस्तार में प्रथम तथा १० गृह का रूप अशुभ है। पृथ्वी का रूप खाना २ में शत्रुगृही होकर निर्बल हो रहा है अतः १, १० कमजोर है। किन्तु ५, १४ शुभ हैं। अस्तु, परिणाम यही निकला कि साधारण कृपा करेगा।

प्रस्तार



विन्दु चाल द्वारा—

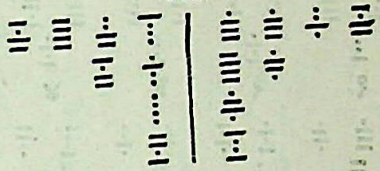
चूंकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना ४ में जाकर पुनः बाईं तरफ खाना ८ में रुकता है, इसमें केवल छठे गृह का रूप ÷ सम विन्दु रखता हैं, अतः इसी को लग्न माना। यह छठे गृह में शत्रुगृही है, इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ हैं, जो खाना १३ में उ० मित्रक्षेत्री है। साधारण बल पा रहा है। अष्टम दृष्टि (अर्द्ध शत्रु दृष्टि) है। अस्तु, प्रथम विन्दु निर्वल है।

इसका दशम विन्दु अग्नि का मन्दन ÷ है। यह खाना १५ में शत्रुगृही है, तथा खाना १६ में साधारण बल पा रहा है। उ० मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ÷ है, यह प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना ४ (÷ ⁝) में मोजूद है, सम बल पा रहा है, और ३ से साधारण दृष्टि भी रखता है। अस्तु, कहा गया कि अधिकारी साधारण कृपा करेगा। अधिक की आशा न करें। कारण, दोनों विन्दु निर्बल हैं।

इसी प्रकार दैवज्ञ अन्य प्रश्नों के उत्तर अपनी बुद्धि के अनुसार दें।

(५) इस अधिकारी द्वारा हमारी कामना पूरी होगी या नहीं ? अथवा प्रार्थना पत्र भेजा है स्वीकार करेगा या नहीं ?

प्रस्तार



विचारणीय गृह—इस प्रकार के प्रश्न में प्रथम, दशम और एकादश विन्दु को लेना चाहिये। यदि तीनों बली हों तो आशा पूरी होगी और काम मिलेगा। यदि ११ वाँ निर्बल हो तो कोई अन्य काम मिलेगा। यदि दशम भी निर्बल हो तो आशा छोड़ो। यदि लग्न भी निर्बल हो तो फिल हाल और नौकरी की आशा त्याग कर साधारण मजदूरी या खोमचा का सहारा ढूँढना चाहिये।

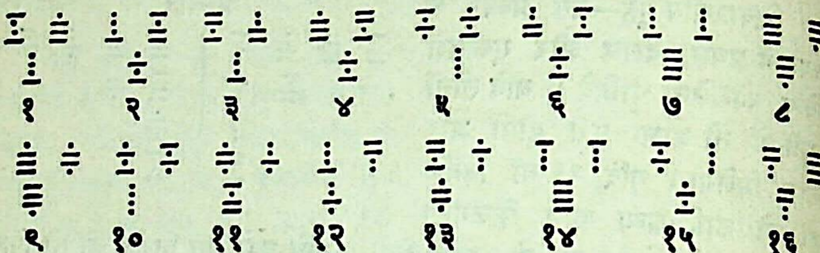
चूँकि तुला-चालित जल विन्दु अपने स्थान से चलकर पञ्चम भाव रूप कवि ⁝ पर विश्रान्ति पाता है। विन्दु शत्रुगृही (निर्बल) है। इसका वर्तमान जल का शीतांशु ⁝ है, जो खाना १४ में सम बल पा रहा है। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का कवि ⁝ है, जो खाना ५ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का शीतांशु ⁝ है, जो खाना १४ में शत्रुगृही होने से निर्बल है। इसका ११ वाँ विन्दु पृथ्वी का ⁝ है जो १४ में शत्रुगृही के नाते निर्बल है। इसमें करीब-करीब सभी विन्दु निर्बल हैं, केवल वर्तमानविन्दु सम बल के नाते कुछ आँसू पोछवा रहे हैं। अस्तु, परिणाम यही निकला कि साधारण कामना पूरी होगी।

(६) मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं ?

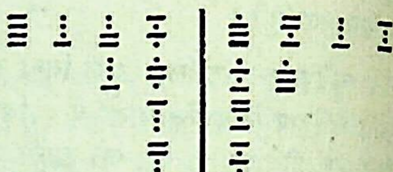
यदि लग्न-विन्दु खाना २ पर, कर्मविन्दु खाना ६ पर तथा स्वामी-विन्दु खाना १० पर हों यानी १, २, ६, १० सभी बली हों तो नौकरी मिलेगी।

यदि १ विन्दु खोटा हो तो भाग्य मन्द है। ६ निर्बल हो तो नौकरी मिले पर बरखास्त जल्दी होवें। यदि १० वाँ विन्दु निर्बल हो तो नौकरी न मिले।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



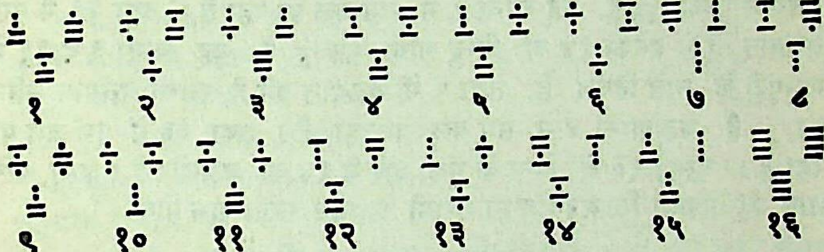
चूँकि तुला-चालित पृथ्वी विन्दु पंचम भाव में उ० मित्रक्षेत्री होकर विश्रान्ति पाता है, अतः इसी को लग्न माना।

(१) भाग्य साधारण बल पा रहा है। वर्तमान विन्दु पृथ्वी का है जो प्रकट रूप में तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १२ में स्वक्षेत्री है। इसका दूसरा विन्दु पृथ्वी का है, जो गुप्त रूप से खाना १२ में बलवान् है। इसका वर्तमान सूरि है, जो खाना १६ में बलवान् है। अस्तु, दोनों विन्दु खाना २ के बलवान् है। इसका छठा विन्दु पृथ्वी का रूप है, जो गुप्त रूप से खाना १० में शत्रुगृही के नाते कमजोर हो रहा है। तथा ५ में सम बल गुप्त रूप में पा रहा है। इसका वर्तमान पृथ्वी का है, जो खाना ८ और ९ में स्वक्षेत्री तथा समबल पा रहा है, कुछ बल है। इसका दशम विन्दु अग्नि का है, यह १० में मित्रगृही बलवान् है। इसका वर्तमान है, जो सप्तम में निर्बल है। तथा २ में मित्रगृही भी है, तथा १२ में सम बल पा रहा है। तीनों जगह बल पा रहा है। अस्तु, नौकरी मिलेगी।

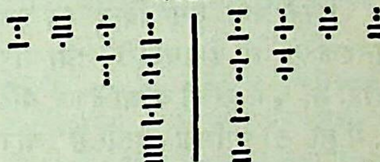
(७) मुझे किस कर्म से लाभ होगा ?

दशम विन्दु का बलाबल देखकर फल कहें। यदि वह विन्दु जल या पृथ्वी में हो तो खेती-पाती से (कृषि द्वारा) लाभ हो। यदि वायु में हो तो व्यापार लाभकारी रहेगा। यदि अग्नि में हो तो परकर्म (नौकरी) से लाभ होगा।

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार

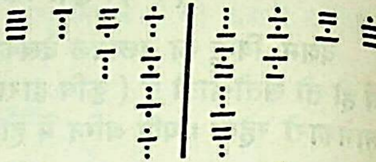


चूँकि तुला-चालित वायु तत्त्व का विन्दु खाना १ मित्रक्षेत्री में जाकर विश्रान्ति पाता है। इसका दशम विन्दु जल का रूप पात ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है। न गुप्त ही पाया जाता है। इसका वर्तमान जल का बोधन ⁝ है, यह खाना ४ व ८ में बलवान् है। (जब असली विन्दु न मिले तब वर्तमान को लेना चाहिये। अन्यथा कोई जरूरत नहीं) अस्तु, परिणाम में कहा गया कि प्रश्नकर्ता को कृषिकार्य से लाभ होगा।

(८) हमको इसी मालिक के पास लाभ होगा या दूसरे के पास, जो नौकरी के लिये बुलाता है ?

इसमें १० वां विन्दु वर्तमान स्वामी का विन्दु है। तथा १४ वां विन्दु बुलानेवाले का। जो विन्दु वर्तमान सहित बलवान् होगा, उसी स्थान पर लाभ होगा।

प्रस्तार



चूंकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु सप्तम भाव में होकर पंचम भाव में विश्रान्ति पाता है। इसमें सप्तम ही मित्रक्षेत्री के नाते बलवान् है। इसी को लग्न माना। इसका सप्तम विन्दु पृथ्वी का रूप सूरि ⁚ है, यह खामा १५ में मित्रगृही है, बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी ⁝ है, यह खाना ५ में सम बल पा रहा है। तथा १६ में पूर्ण बलवान् है। इसका १४ वाँ विन्दु अग्नि का ⁝ है, यह खाना ३ व ११ में शत्रुगृही के नाते निर्बल है, तथा ९ में बलवान् भी है, इसका वर्तमान अग्नि का ⁝ है, यह खाना ४ में सम बल पा रहा है। तथा १३ में पूर्ण बल पा रहा है। अस्तु, १० वें विन्दु के मुकाबिले में १४ वाँ कमजोर है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि अपने प्रथम स्वामी के पास रहना शुभ होगा।

(९) किस प्रकार लाभ होगा ?

इसके लिये दूसरे विन्दु का पुनरुक्त रूप देखते हैं। यदि दशम गृह में पुनरुक्त हो तो ईमानदारी तथा परिश्रम से, यदि सप्तम गृह में पुनरुक्त हो तो चोरी से, ६ में हो तो धोखा देकर, यदि ५ में हो तो विलासिता में सहायक होकर ९ में हो तो धार्मिक कृत्यों से और यदि १२ में पुनरुक्त हो तो स्वामी के शत्रु पक्ष से लाभ होता है।

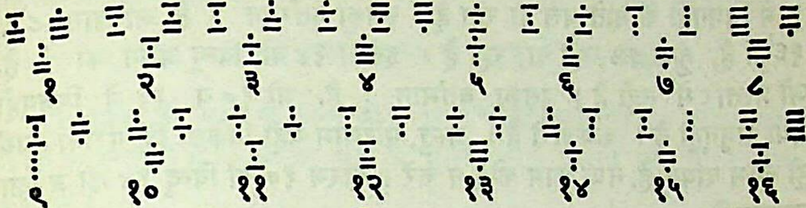
(१०) अमुक स्वामी ने हमको किस लिये नौकर रक्खा है ?

यदि यह जानना हो तो दशम विन्दु का पुनरुक्त से ऊपर लिखी प्रणाली से विचार लें। स्वल्प कार्य के निमित अधिक योग्य व्यक्ति जब रख लिया जाता है। तभी यह प्रश्न होता है।

(११) मुझे इस कार्य में (जो आजीविका के लिये आरम्भ किया है) सफलता मिलेगी या नहीं ?

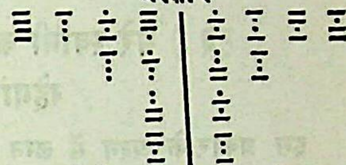
विचारणीय विन्दु प्रथम तथा दशम होता है। वह यदि जल या पृथ्वी के गृह में हो तो सफलता मिलेगी। अन्यथा कार्य असफल रहेगा।

गुप्तोद्घाटन



चूँकि तुला-चालित जल का विन्दु अपने स्थान से चलकर खाना २ में होकर अन्त में खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। मगर खाना ३ वाला रूप ⁝ स्वगृही के नाते बलवान् है। इसी को लग्न माना। यह खाना ३ तथा १५ में स्वगृही के नाते बलवान् है। साथ ही खाना ९ में शत्रुगृही भी है। इसका वर्तमान रूप ⁝ है, जो प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं है और न गुप्त रूप से ही पाया जाता है। अस्तु, यह कमजोरी पायी जाती है।

प्रस्तार



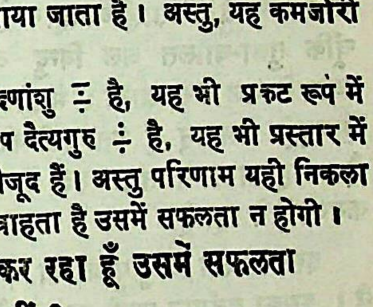
इसका दशम विन्दु पृथ्वी का रूप तीक्ष्णांशु ⁝ है, यह भी प्रकट रूप में नहीं है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी रूप दैत्यगुरु ⁝ है, यह भी प्रस्तार में मौजूद नहीं है। न गुप्त रूप ही में दोनों मौजूद हैं। अस्तु परिणाम यही निकला कि पृच्छक जिस कार्य को आरम्भ करना चाहता है उसमें सफलता न होगी।

(१२) इस समय जो कार्य कर रहा हूँ उसमें सफलता होगी या नहीं ?

विचारणीय गृह—१, १०, १४ इन्हीं के बलाबल से उत्तर देना चाहिये।

चूँकि तुला-चालित विन्दु खाना ३ में रुकता है, इसी को लग्न माना। पुनरुक्त खाना ५ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁝ है, यह गुप्त रूप से खाना २ में मौजूद है,

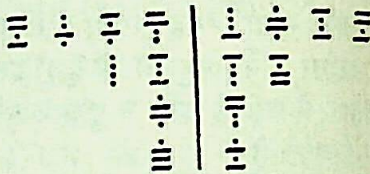
प्रस्तार



शत्रुगृही होने से निर्बल है। इसका दशम विन्दु अग्नि का ⁝ है, यह खाना ४ व ६ में मित्रगृही के नाते बल पा रहा है। इसका वर्तमान ⁝ है, जो खाना ८,९, १६ में है, कुछ बल नहीं पा रहा है। इसका १४ वाँ विन्दु अग्नि का ⁝ है, जो प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान ⁝ है, जो १० व ११ में मित्रगृही तथा शत्रुगृही है। कमजोरी है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि पुराना कार्य ही लाभ दायक है, नया काम कोई न करें। कारण १० वाँ विन्दु १४ की अपेक्षा बलवान् है।

(१३) मेरे स्वामी का मेरे प्रति व्यवहार स्नेहपूर्ण रहेगा या कठोर ?

प्रस्तार



इस प्रकार के प्रश्न में लग्न का रूप तथा दशम गृह का रूप, दोनों में से कोई पुनरुक्त होकर परस्पर जैसा दृष्टि सम्बन्ध रखते हों वैसा ही व्यवहार रहेगा। चूंकि तुला-चालित जल विन्दु अपने स्थान से चल कर खाना ४ में होकर खाना ५ में विश्रान्ति पाता है। ⁝ विन्दु मित्रगृही बलवान् है अतः इसी को लग्न माना। इसका वर्तमान जल का ⁝ है। यह खाना ५ तथा १३ में शत्रुगृही है दृष्टि भी साधारण है अतः कमजोरी दे रहा है।

इसका दशम विन्दु पृथ्वी का ⁝ है। यह सप्तम भाव में मित्रगृही बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁝ है। जो खाना ५ व १३ में सम बल पा रहा है अतः बलवान् है। इसके अतिरिक्त दशम विन्दु का वर्तमान पाँच में है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि स्वामी का व्यवहार सन्तोषजनक प्रेम का रहेगा, लेकिन कुछ कम। कारण, प्रथम विन्दु का वर्तमान निर्बल हो रहा है।

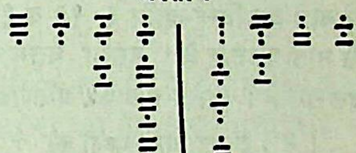
अन्य विधि—मान लो तुला-चालित विन्दु खाना ५ में रुका, यही लग्न माना। खाना १ शत्रुगृही के नाते कमजोर हो रहा है। इसका वर्तमान जल ⁝ है, जो प्रस्तार में नहीं है। अस्तु, कमजोर प्रथम विन्दु है। दशम विन्दु

पृथ्वी का ⫶ हुआ, जो खाना ५ व १३ में सम बल पा रहा है। अस्तु, उपर्युक्त रीति के अनुसार वही जवाब दिया कि स्वामी का व्यवहार अच्छा रहेगा।

(१४) अमुक कार्य करने में लाभ है या नहीं ?

इस प्रकार के प्रश्न में लग्न और दशम दोनों विन्दु वर्तमान सहित बली हों तो लाभ होता है। निर्बल होने से हानि और समान होने से न लाभ न हानि।

प्रस्तार



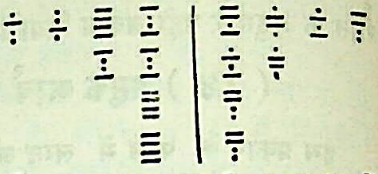
चूंकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु अपने स्थान से चलकर चतुर्थ भाव में होकर अन्त में खाना ८ में विश्रान्ति पाता है। इनमें सिवा खाना ६ में स्थित रूप ÷ के शेष सब अप्रमाणित हैं। अस्तु, लग्न विन्दु ÷ लिया शत्रुक्षेत्री विन्दु है अतः निर्बल है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो खाना ५ में उ० मित्रक्षेत्री है। सम बल है। तथा खाना १० में शत्रुगृही होने से निर्बल है। अस्तु, बल केवल २० प्रतिशत है। इसका चौथा विन्दु पृथ्वी का ÷ है, जो खाना ७ में मित्रक्षेत्री है तथा १३ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ⫶ है, जो प्रस्तार में मौजूद नहीं है, मगर गुप्त रूप से खाना १५ उ० मित्रक्षेत्री है। सम बल पा रहा है। इसका बल ४० प्रतिशत है। अब दशम बिन्दु अग्नि का ÷ है, जो खाना १ स्वक्षेत्री तथा खाना १२ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान विन्दु अग्नि का ⫶ है, जो वर्तमान में नहीं है। अस्तु बल ५० प्रतिशत रहता है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि लाभ साधारण ही होगा। कारण, सभी विन्दु साधारण बल पा रहे हैं।

(१५) मेरा यह कार्य चलता रहेगा या ठप हो जावेगा ?

विचारणीय गृह—१, १० प्रथम तथा दशम विन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये।

प्रस्तार



अन्य विधि-खाना १, २ और १० में शुभ रूप हों तो कार्य चलता रहेगा। यदि खाना ४ शुभ हो तो बहुत लाभ रहे। यदि दशम गृह या दशम बिन्दु कमजोर हो और दूसरा खाना अथवा दूसरा बिन्दु शुभ दाखिल या बलवान् हो और पुनरुक्त खाना ६, ८ या १२ में हों तो हानि होगी और कार्य ठप हो जायेगा।

चूंकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी का खाना १ में रुकता है, इसी को लग्न माना। यह विन्दु खाना १, १३ व १५ में मौजूद है। समबल तथा मित्र गृही के नाते बलवान् है। इसका वर्तमान विन्दु पृथ्वी का ÷ है जो खाना ८ में बलवान् है। इस को बल ७५ प्रतिशत मिल रहा है।

(२) दूसरा विन्दु पृथ्वी का ÷ है जो खाना ८ में स्वक्षेत्री बलवान् है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ⁝ है। यह प्रकट रूप से प्रस्तार में है नहीं, मगर गुप्त रूप से खाना १४ शत्रुक्षेत्र में निर्बल है। ÷ से पूर्ण दृष्टि रखता है अतः कुछ बल प्राप्त हो रहा है।

इसका दशम विन्दु अग्नि का ÷ है। यह खाना ९ में स्वक्षेत्री बलवान् है, मगर खाना ३ शत्रुक्षेत्र में कमकोर भी है। इसका वर्तमान अग्नि का ÷ है। जो सप्तम भाव में शत्रुगृही (कमजोर) है लेकिन तीसरी दृष्टि शुभ है। अस्तु कुछ बल इस विन्दु को मिल रहा है। अस्तु यही परिणाम निकला कार्य विशेष रूप से तो नहीं चलेगा मगर लस्टम पस्टम चलता रहेगा।

(१६) मेरे सेवाकाल में मेरे स्वामी की स्थिति कैसी रहेगी?

इस प्रकार के प्रश्न में प्रथम तथा दशम रूप बली होकर ५, ११, या १५ में पुनरुक्त हो तो स्थिति अच्छी रहेगी।

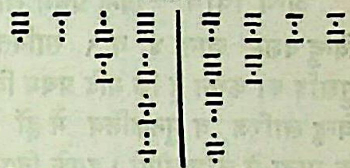
(१७) अपने स्वामी को दरख्वास्त दूँ या नहीं? वह जवाब देगा या नहीं?

इस प्रकार के प्रश्न में प्रस्तार के दशम गृह को देखें। यदि उसमें ⁝, ⁝,

≡, ≟ ÷ या ⁝ हों तो प्रार्थनापत्र स्वीकार होगा। यदि जबानी कुछ कहेंगे तो स्वीकार होगा। यदि ≡ हो तो टाल देगा, दुबारा कहना चाहिये। यदि ÷ ≡ हो तो वार्तालाप की नौबत न आयेगी क्योंकि प्रार्थना पत्र स्वामी के पास पहुँचेगा ही नहीं। यदि ≟ या ⁝ हों तो बातचीत न करें कोई सुनवाई न होगी। यदि ÷ ÷ या ⁝ हों तो कुछ कार्य बने।

चूँकि खाना १५ का पृथ्वी विन्दु खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। इसका दूसरा विन्दु पृथ्वी का ÷ है यह गुप्त रूप से नवें गृह में बैठा है। वर्तमान इसका पृथ्वी का ⁝ है। जो खाना ७ में मित्रगृही बलवान् है और तीसरी दृष्टि (बलवान्) है। विन्दु ११ वाँ अग्नि का ÷ है। यह खाना १६ में सम बल पा रहा है। इसका वर्तमान अग्नि का ÷ है, जो गुप्त रूप से खाना ९ में मौजूद है। शत्रुक्षेत्री है और साधारण दृष्टि (३) है। परिणाम में बल मिल रहा है। इसका १५ वाँ विन्दु अग्नि का ≟ है यह खाना ६ में मित्रगृही बलवान् है तथा खाना ११ में कमजोर है। इसका वर्तमान अग्नि का ≟ है जो १४ में मित्रगृही है और ९ वीं दृष्टि शुभ है। तीनों विन्दु बलवान् है। अस्तु, कार्य बनेगा प्रार्थना पत्र दें। इसमें १, २, १०, १२ विन्दु के बलाबल से फल कहना चाहिये।

प्रस्तार

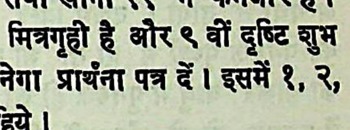


(१८) मुझे माता से लाभ है या नहीं।

इसमें लग्न बली हो, दशम रूप अग्नि या वायु का हो अथवा अग्नि या वायु में पुनरुक्त हो और खाना १५, १६ के रूप बली हों यानी शुभ हों, तो लाभ है अन्यथा नहीं ?

चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु खाना १ में रुकता है। इसका एतवार न करके खाना १५ को लिया। इसका दशम विन्दु अग्नि का मन्दग (÷) है यह खाना ४ साबित गृह

प्रस्तार



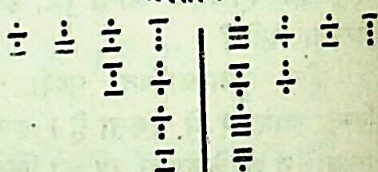
में है और खाना ५ में खारिज गृह में है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि कुछ लाभ होगा और कुछ दिखावे की सूरत बनेगी। आशा होकर निराशा होगी। कारण, विन्दु दाखिल व खारिज दोनों जगह है। कायदा यह है कि यदि दाखिल या सावित में विन्दु हों तो लाभ होता है यदि खारिज या मुनकलिव में हो तो हानि है।

अन्य विधि—विन्दु प्रथम खाना ३ व १५ में है। यह दाखिल गृह है और विन्दु दशम खाना ४ व ५ सावित तथा खारिज दोनों जगह है। आचार्य सुर्खाब का कथन है कि यदि प्रथम विन्दु दाखिल व सावित गृह में हों और दशम विन्दु खारिज व मुनकलिव में हों तो लाभ हो। अस्तु, परिणाम यह निकला कि माता से लाभ होगा। इसके विपरीत से हानि उठानी पड़ेगी।

(१९) वर्षा होगी या नहीं ?

विन्दु १० पानी बरसाता है, यदि खाना १० में पृथ्वी का रूप हो और वायु और अग्नि के रूप प्रस्तार में निर्बल हों, जल और पृथ्वी के बली हों तो वृष्टि होगी। अन्यथा न होगी। दशम विन्दु पानी का आकाश से गिरना है। दशम बिन्दु का पुनरुक्त पृथ्वी में हो तो भी वृष्टियोग होता है। बादल उठे हों, १० अग्नि का होकर वायु में पुनरुक्त हो तो बादल उड़ जायें। यदि वायु का होकर अग्नि में पुनरुक्त हो तो बूँद नहीं गिरेगी। यदि वायु का होकर जल में पुनरुक्त हो तो जरा सी बूँदा-बांदी होवे पर वर्षा न हो। दशम बिन्दु चाहे जिस तत्त्व गृह में हो, परन्तु उसका पुनरुक्त पृथ्वी तत्त्व में हो तो वर्षा अवश्य होगी।

प्रस्तार



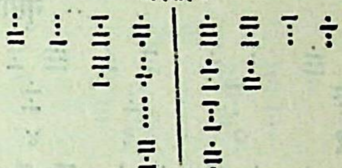
चूँकि पृथ्वी का विन्दु खाना १५ से चलकर खाना ५ में रुकता है। इसी को लग्न माना। विन्दु चौथा पृथ्वी ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, यह खाना १० में शत्रुगृही है। असली विन्दु नहीं है, इसी कारण वर्तमान देखा। इसका दशम विन्दु अग्नि का ÷ है, यह खाना १४ में वायु में है। अतः कहा गया वर्षा न

होगी, वायु तेज चलेगा। आचार्य सुर्खाव का कथन है कि जिस तत्त्व में बिन्दु पुनरुक्त हो उसी के अनुसार देवज्ञ परिणाम बतलावे। यदि २ या ३ जगहों में पुनरुक्त हो तो सबके आधार से बुद्धि के अनुसार ज्ञान लगावें।

एकादशगृही प्रश्नों का विवरण

(१) मित्रों से आशा पूरी होगी या नहीं ?

प्रस्तार



प्रस्तार के ग्यारहवें गृह का रूप देखें यदि उसमें शुभ दाखल रूप हो तो मित्रों द्वारा आशा पूरी होगी। यदि ११ वें का रूप शकुन क्रम से खाना १ में आवे और ३, ५ तथा ९ में पुनरुक्त हो तो मित्रों द्वारा आशा पूरी हो। इसी सूरत में यदि खाना ७, ८ या १२ में अशुभ रूप हो तो मित्रों में द्वेष बढ़े। अन्य रूप हो तो विश्वसनीय नहीं है। यदि प्रथम गृह का रूप शुभ दाखिल हो और पुनरुक्त १५ में हो तो उत्तम वर्ताव हो।

अन्य विधि—खाना ११ के रूप को ≐ से गुणा करें। यदि हासिल रूप किसी प्रकार से शुभ हो और अशुभ गृहों में पुनरुक्त हों तो आशा पूर्ण हो, विपरीत से नहीं।

अन्य विधि—यदि १ व ११ में शुभ दाखिल रूप हो और खाना ३, ५, या ९ में पुनरुक्त हों तो सरलतापूर्वक आशा पूरी हो, विपरीत से निराशा हो। यदि सप्तम भी शुभ हो तो आशा पूरी हो।

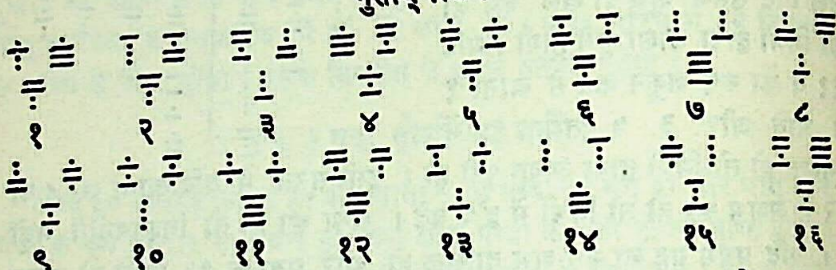
यूनान के आचार्यों का मत—खाना १ को १० से गुणा करें। फिर गुणनफल को खाना ११ से गुणा करें। यदि हासिल रूप शुभ दाखिल हो तो आशा पूरी हो विपरीत से नहीं।

उपर्युक्त प्रस्तार में प्रथम गृह में रूप ÷ है, जल का रूप अग्नि में निर्बल है। अस्तु, मित्रों के बिषय में स्वयं अपना दिल साफ नहीं है। पाँचवा गृह मित्र का है। उसमें मन्दग ≑ शनि का रूप है। यह भी काइयाँ हैं। ११ में देखा

गुरु ÷ है, यह द्विस्वभाव (मुनकलिब) रूप है। आशा भी जाल फरेब है पूरी हो १५ व १६ में ÷ और बिधु ÷ है। अस्तु, जैसा करोगे वैसा ही भोगोगे।

बिन्दुचाल द्वारा उदाहरण—चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु पंचम खाने में रुकता है। यह खाना १५ मित्रगृही में बल पा रहा है। इसका वर्तमान बिन्दु का रूप तीक्ष्णांशु ÷ है, यह खाना ९ में गुप्त रूप रूप से बैठा है।

गुप्तोद्घाटन



पाँचवीं दृष्टि भी मित्र दृष्टि है। अस्तु, विन्दु प्रथम बलवान् है। इसका ११ वाँ विन्दु अग्नि का रूप पात ÷ है, यह खाना १० में मित्रगृही है। इसका वर्तमान अग्नि का ⋮ सप्तम भाव में शत्रुगृही निर्बल होता है। चौथी दृष्टि भी है। अस्तु, साधारण बल है। चूंकि प्रथम विन्दु बलवान् है। आचार्य सुर्खाव का कथन है, यदि विन्दु १ व १० बलवान् हो और पुनरुक्त इनमें से किसी की ३ या ५,९ में हो तो मित्रों द्वारा पूर्ण होवें। विपरीत से निराशा हो। उपर्युक्त प्रस्तार में प्रच्छक जितनी आशा कर सकता है, उससे कुछ कम ही पूर्ति रहेगी। इसी प्रकार दैवज्ञ अपनी बुद्धि के अनुसार १ व ११ के बलाबल से फल कहें।

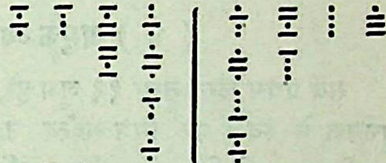
(२) अमुक व्यक्ति मुझसे मित्रता रखता है या दिखावा है ?

इस प्रकार के प्रश्न में लग्न विन्दु तथा एकादश (११) विन्दु की जैसी दृष्टि हो वैसा निर्णय दें विन्दु चाल में भी १ व ११ विन्दुओं के बलाबल तथा दृष्टि के अनुसार निर्णय दें।

अन्य विधि —यदि खाना का रूप सप्तम में विलोम हो तो मित्र भाव है। यदि विलोम किसी अन्य गृह में हो तो शत्रुभाव समझें। अथवा मतलबी यार समझें।

विलोम का उदाहरण जैसे ÷ का ÷ अथवा ≡ का विलोम ≡ है, इसी प्रकार अन्य रूप समझें। पुनः खाना १ व ७ के रूप का परस्पर गुणा करें। हासिल रूप यदि किसी शुभ गृह में पुनरुक्त हो तो मित्र भाव रहेगा। यदि ६, ८, १२ में पुनरुक्त हो तो बुरी भावना समझें।

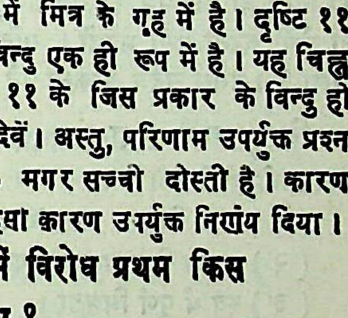
प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित विन्दु पंचम भाव में होकर चतुर्थ भाव में रुकता है, चतुर्थ गृह स्वगृही के नाते बलवान् है। इसका लग्न माना। इसका ११ वाँ विन्दु अग्नि का रूप और ÷ है, यह खाना ४ में उ० मित्रक्षेत्री है। तथा १२ में मित्र के गृह में है। दृष्टि ११ वीं साधारण है। चूँकि लग्न तथा ११ वाँ विन्दु एक ही रूप में है। यह चिह्न शुभ है। आचार्य सुग्रीव ने लिखा है, १ व ११ के जिस प्रकार के विन्दु हों उसीके अनुसार मित्रता या शत्रुता का निर्णय देवें। अस्तु, परिणाम उपर्युक्त प्रश्न में यही निकला कि दोनों में अर्द्ध मित्रता है, मगर सच्ची दोस्ती है। कारण दोनों विन्दु एकही ग्रह से सम्बन्ध रखते हैं। इसी कारण उपर्युक्त निर्णय दिया।

(३) मेरी और उसकी मैत्री में विरोध प्रथम किस ओर से होगा ?

प्रस्तार



इस प्रकार के प्रश्न हल करने में १, ११ को लें। रूप के क्रम से प्रथम खाना १ को देखें यदि १ में शुभ दाखिल हो और सातवाँ गृह खारिज किसी प्रकार से हो तो प्रथम-प्रश्नकर्ता की तरफ से द्वेष बढ़े। यदि विपरीत हो तो बुद्धि अनुसार विपरीत निर्णय दें।

तुला-चालित जल विन्दु चलकर खाना ८ में विश्रान्ति पाता है। यह खाना ४ व ८ में स्वगृही है। इसी को लग्न माना। इसका वर्तमान जल का ⁝ है, जो खाना २ और १२ में उ० मित्रक्षेत्री है। सम बल मिल रहा है। दोनों स्थानों से दृष्टि ३ व ७ से है। इसका ११ वाँ विन्दु पृथ्वी का सूरि ⁝ है. यह खाना २ व १२ में शत्रुगृही है, इसका वर्तमान पृथ्वी ⁝ है, जो खाना १२ में बलवान् है। दोनों जगहों से दृष्टि ३ व ११ साधारण दृष्टि है। अस्तु, ११ वां विन्दु प्रथम की अपेक्षा निर्बल हैं। अस्तु, उपर्युक्त रीत्यनुसार ११ वां निर्बल होने से दूसरी ओर से विरोध पैदा होगा।

(४) अमुक व्यक्ति मेरा कैसा है ?

सर्व प्रथम लग्न तथा ११ शुभ हो, फिर सातवाँ रूप अग्नि का हो तो केवल पृच्छक के स्वार्थ पर मित्र सर्वस्व उत्सर्ग करने को तत्पर है। यदि ७ वां वायु का विन्दु हो तो मित्र का सर्वथा शुभचिन्तक हो। यदि सातवाँ जल का विन्दु हो तो जैसी करनी वैसी भरनी। यदि सातवाँ रूप पृथ्वी का हो तो गलाकाटू मित्र मिला है। इससे सदैव चौकन्ने रहैं।

विन्दु चाल द्वारा—प्रथम देवज्ञ को जान लेना चाहिये कि मित्रता ४ प्रकार की होती है।

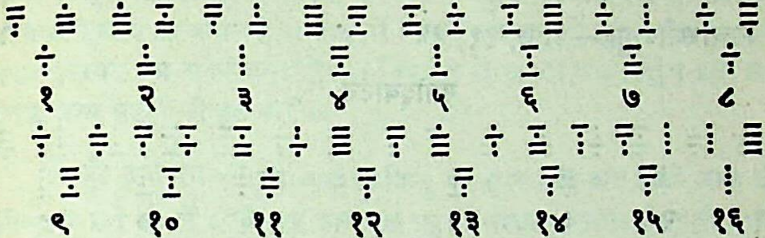
(१) सत्य मित्रता अन्तरंग और बहिरंग एक।
(२) उत्तम मित्रता अन्तरंग को अपेक्षा बहिरंग से अधिक हों।
(३) स्वार्थ पूर्ण मित्रता।
(४) केवल स्वार्थ, मित्रता का नाम मात्र।

लग्न से सप्तम विन्दु विचार का विषय होता है। विचार यह करना है। उस सप्तम विन्दु के रूप में कौन तत्त्व खुला विन्दु रूप तथा कौन तत्त्व बन्द रेखा रूप है। ऊपर लिखे मित्रता के चारों प्रकार अग्नि, वायु, जल तथा पृथ्वी के सरूप हैं। यदि प्रस्तार में यह रूप पृथ्वी विन्दु का खुला हो जैसे ⁝ तो विशुद्ध स्वार्थी मित्र जान लें।

यही रूप प्रस्तार के खाना ४, ८, १२, १६ पृथ्वी गृहों में स्थित तथा पुन

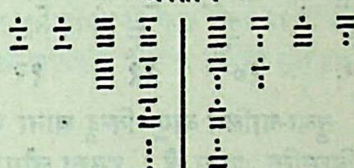
स्वत हो तब तो स्वार्थ के साथ हो वह मित्र भयजनक भी है। इसी प्रकार ⩧ केवल अग्नि विन्दु रूप १, ५, ९, १३ में हो या पुनरुक्त हो तो मित्र नहीं बल्कि वह अपना दूसरा शरीर समझना चाहिये।

गुप्तोद्घाटन



चूंकि तुला-चालित वायु विन्दु अपने स्थान से चलकर पंचम भाव में रुकता है, यही लग्न माना। इसका सातवाँ विन्दु वायु का ⁝ है, यह प्रकट रूप में प्रस्तार में नहीं है। न गुप्त रूप ही में पाया जाता है। इसमें तीन विन्दु वायु, जल और पृथ्वी के खुले हैं (⁝)। अस्तु, परिणाम यह निकला कि वह व्यक्ति आप को लाभदायक न होगा। मतलबी मित्र है।

प्रस्तार



(५) किसी कामना से अमुक मित्र के पास जाता हूँ, काम बनेगा या नहीं ?

इसमें १ व १३ विन्दु प्रश्नकर्ता का है, ११ मित्र का है तथा १४ आशापूर्ति का है। अस्तु यदि ११ या १४ बली हो और १, १३ की दृष्टि शुभ हो तो कामना पूरी होगी।

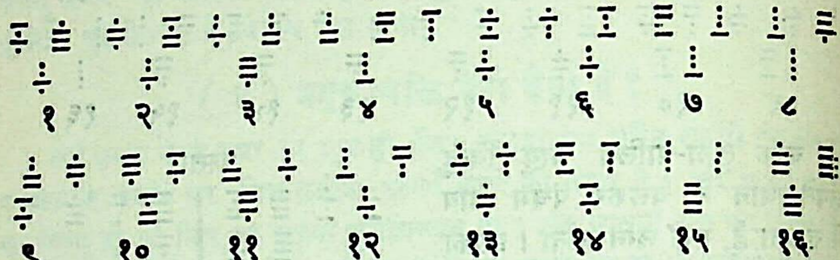
किसी आचार्य का मत है कि खाना १३ प्रश्नकर्ता है, खाना १४ मित्र के पास जाना है। यदि दोनों शुभ हों और खाना ८ व १० भी शुभ हो तो काम बनेगा। विपरीत से नहीं।

(६) अमुक व्यक्ति और मेरे बीच में विरोध जन्य वियोग होगा या नहीं ?

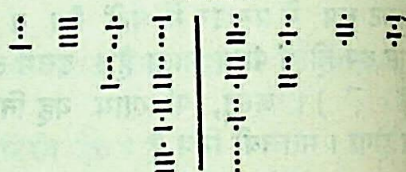
इस प्रश्न का तात्पर्य यह है कि मेरा उस व्यक्ति के साथ झगड़ा होकर वियोग होगा कि नहीं ?

विचारणीय गृह—४, ७, ११, १६

गुप्तोद्घाटन



प्रस्तार



तुला-चालित वायु विन्दु खाना १ में विश्रान्ति पाता है। इसका चौथा विन्दु वायु का ⋮ है, यह खाना १९ में उ० मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान वायु का लोहित ⋮̲ है. यह प्रकट तो नहीं मगर गुप्त रूप से खाना १० में बैठा है और दृष्टि ६ की है। अर्द्ध शत्रु दृष्टि है। अतः साधारण बल इसको मिल रहा है।

इसका सप्तम विन्दु वायु का ⋮̲ है, यह गुप्त रूप से खाना १३ में बैठा है, मित्रगृही वलवान् है।

इसका वर्तमान विन्दु वायु का ⋮̲ है. यह खाना ८ और १२ में शत्रुगृही होने से कमजोर है। साधारण बल प्राप्त है, इसका ११ वाँ विन्दु जल का ÷ है, यह खाना ६ में उ० मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान जल का ⸗ है, यह खाना ५ में शत्रुगृही निर्बल है, और २ से सम दृष्टि है। साधारण वल पा रहा है।

इसका १६ वाँ विन्दु जल का ⫶̲̅ है, यह गुप्त रूप से खाना १३ में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान जल का ⁝̲ है, जो खाना ८ और १२ में मित्रगृही बलवान् है। साधारण बल इसका भी है। अस्तु, परिणाम यही निकला कि सभी विन्दु साधारण बल पा रहे हैं। इसलिये प्रश्नकर्ता का साथ दूसरे से पूर्ण तो न रहेगा। कुछ खटपट होगी, दोनों के मन में कुछ विचार पैदा हो जायेगा। आचार्य सुर्खाव का कथन है, यदि चारों विन्दु बलवान् हों तो वियोग न होगा। वरन् परस्पर प्रेम सदैव बना रहेगा। विपरीत से उलटा फल कहें। इसी प्रकार देवज्ञ अन्य प्रश्नों को हल करें।

निजी अनुभव—तुला-चालित विन्दु को लग्न मान कर उससे आगे तीसरे विन्दु के रूप को लें। यदि वह रूप शुक्र ग्रह से सम्बन्ध रखता होगा तो आगे का संग चिरस्थाई रहेगा। यदि चन्द्रमा तथा गुरु का ग्रह रहेगा तो मध्य श्रेणी का प्रेम रहेगा। यदि सूर्य तथा बुध का ग्रह होगा तो कुछ दिन बाद वियोग होगा। यदि मंगल तथा शनि का ग्रह होगा तो शीघ्र ही परस्पर विरोध होगा और थुक्काफजीहत की नौबत पहुँचेगी।

(७) अमुक व्यक्ति से आशा पूर्ण होगी या नहीं ?

यदि खाना १, ९, १०, ११ गृहों के रूप शुभ हों तथा ११ का पुनरुक्त खाना २, ४, ५, ९, १२ या १५ में हों तो आशा पूर्ण होती है। अथवा खाना ११ का रूप शुभ हो और पुनरुक्त १, ५ में हो तो आशा पूरी होगी। यदि खाना १० में पुनरुक्त हो तो पूरी न हो, यदि खाना १५ में मन्दग ⫶̵ हो, तो भी आशा पूरी न होगी। वरन् द्वेष पैदा होगा।

इसी प्रश्न का किस व्यक्ति से आशा पूर्ण होगी ? ऐसा रूप होने पर खाना १ के रूप से जिससे वह आशा करता है, गुणा करके एक रूप पैदा करे, जैसे यदि पड़ोसी है तो खाना १ को २ से गुणा करे। दूसरा गृह पड़ोसी का है, तीसरा गृह इष्ट-मित्र, भाई बन्धु आदि। चौथा गृह माता या अपने से बड़े का, पाचवाँ पुत्र-मित्र का छठा शत्रु आदि का है। इसी प्रकार हासिल रूप को खाना ११ से गुणा

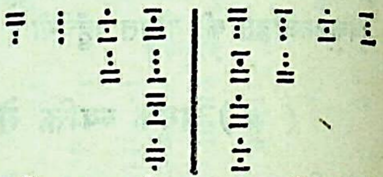
करें। यदि हासिल रूप शुभ दाखिल हो तो आशा पूरी होगी और पुनरुक्त १, ४, ७, १० में हो तो विशेष रूप से पूरी होगी विपरीत से निराशा होगी।

अथवा खाना १० या ११ के रूपों को आपस में गुणा करें। यदि हासिल शुभ दाखिल हो तो आशा पूरी हो, यदि खारिज रूप हो तो नहीं पूरी होगी। एक आचार्य लिखते हैं, खाना १ व ११ से गुणा करें। पुनः ५ या ११ के रूप को गुणा करें। फिर आपस में दोनों गुणनफलों का गुणा करें। यदि हासिल रूप शुभ दाखिल हो तो आशा पूरी हो, यदि शुभ खारिज हो तो कुछ आशा पूरी हो कुछ नहीं अन्य से आशा पूर्ति न हो। यदि खाना ११ में ≡ × ÷ हो तो शीघ्र काम बनेगा। यदि ≡ ÷ ÷ ÷ ⁝ ≡ हो तो कतई निराशा हो, यदि ÷ या ÷ हो तो शीघ्र आशा पूरी हो यदि ÷ या ÷ हो तो कोई मध्यस्थ बने तब आशा पूरी हो, यदि ⁝ या ÷ हो तो निराशा हो।

अब विधान विन्दु चाल के उदाहरण से उपर्युक्त प्रश्न को हल करते हैं।

तुला-चालित जल का विन्दु अपने स्थान से चलकर पंचम भाव में होकर अष्टम भाव में विश्रान्ति पाता है। लेकिन इस प्रकार के प्रश्न में प्रथम विन्दु ही लिया जाता है। अस्तु, ÷ को लग्न विन्दु माना। इसका नवां विन्दु पृथ्वी का ≡ है. यह प्रकट में नहीं है मगर गुप्त रूप से चौथे गृह में ÷ × ÷ = ≡ में पाया जाता है। स्वक्षेत्री है। तथा सप्तम भाव में ⁝ × ⁝ = ≡ में पैदा होता है, जो मित्रगृही है। तथा खाना १० (÷ × ÷ = ≡) में शत्रुगृही है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, यह भी प्रकट रूप में नहीं। अस्तु, साधारण बल प्राप्त होता है। इसका दशम विन्दु पृथ्वी का [illegible] है, यह प्रकट रूप में नहीं है। इसका वर्तमान पृथ्वी का ÷ है, जो गुप्त रूप से खाना ९ व १४ में मौजूद है। सम बल तथा शत्रुगृही है। अस्तु, थोड़ी ताकत मिल रही है। ११ वां विन्दु ÷ है, यह ९ या १४ में सम बल तथा शत्रु बल पा रहा है। इसका वर्तमान पृथ्वी का रूप ÷ है, यह भी प्रकट नहीं है, निर्बल है। चूंकि नवां विन्दु चौथे में और १० या ११

प्रस्तार



विन्दु ÷ खाना ९ में है। अस्तु, आशा पूरी तो होगी लेकिन देर से और परिश्रम करके। कारण, सभी अन्य विन्दु प्रकट नहीं है, कमजोर भी हैं।

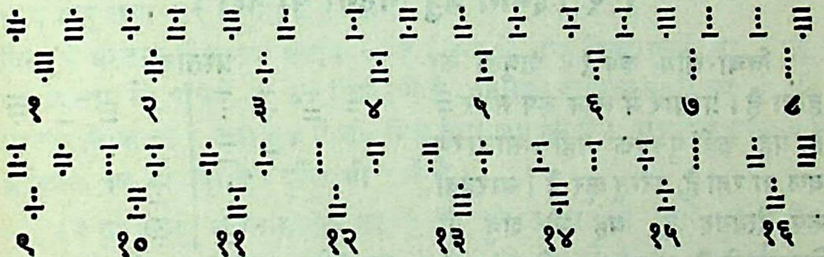
इस प्रकार के प्रश्न पर १, ९, १०, ११ विन्दु यदि बली हो तथा इनका पुनरुक्त प्रस्तार के ३, ४, ५, ९, ११, १५ में से किसी भी गृह में हो और विन्दु का पुनरुक्त न हो तो विन्दु वर्तमान के पुनरुक्त पर आधी आशा पूर्ति मानी जाती हैं।

द्वादशगृही प्रश्नों का विवरण

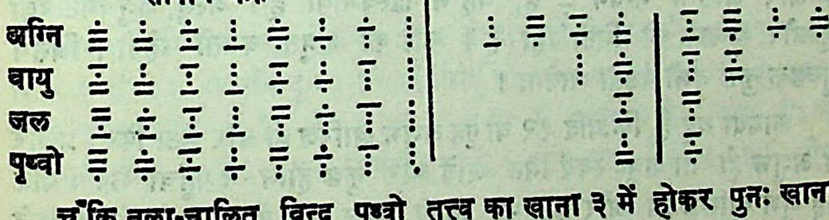
(१) मेरे कितने शत्रु हैं ?

इस प्रकार के प्रश्न में प्रस्तार में १२ वें रूप के पुनरुक्त से शत्रुसंख्या का निश्चय होता है। बारहवें रूप का विपरीत (जैसे ÷ का ⋮) गुप्तशत्रु-बोधक है। इन रूपों के बलाबल पर शत्रु का बलाबल निर्भर है।

गुप्तोद्घाटन



सोपान चक्र | प्रस्तार



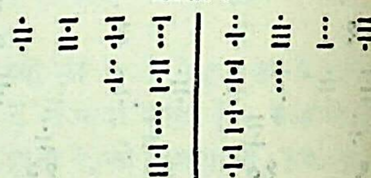
चूँकि तुला-चालित विन्दु पृथ्वी तत्त्व का खाना ३ में होकर पुनः खाना

१ में विश्रान्ति पाता है। लेकिन खाना ३ का रूप विषम है। अस्तु, लग्न विन्दु ≑ लिया। इसका बारहवाँ विन्दु अग्नि का ⋮ है, जो प्रस्तार में अष्टम भाव में उत्कृष्ट मित्रक्षेत्री है। समान बल पा रहा है। अस्तु, मालूम हुआ कि शत्रु साधारण १३ वाँ विन्दु है। आचार्य सुर्खाव ने लिखा है, प्रस्तार में लग्नविन्दु निश्चित करके उससे बारहवें विन्दु का विचार करें कि वह गुप्त है या प्रकट। यदि गुप्त हो तो गुप्त शत्रु और प्रकट हो तो प्रकट शत्रु होते हैं। यदि दोनों प्रकार से हो तो शत्रु भी दोनों प्रकार के होते हैं।

यदि किसी प्रकार से १२ वाँ विन्दु प्रस्तार में न हो तो प्रश्नकर्ता अजात-शत्रु ही होता है। शत्रु की संख्या जानने का क्रम यह है, कि यदि १२ वें विन्दु में ≡ हो तो २ शत्रु होते हैं, ÷ से १५, ÷ से ६, ≡ से १६, ÷ से १, ≑ से १०, ≡ से ८, ≡ से ७, ≡ से ४, ≐ से ९, ≑ से १२, ⋮ से १३, ÷ से १४, ⋮ से ३, ⋮ से ११, ⋮ से ५, शत्रु की संख्या कहनी चाहिये।

(२) हमारा शत्रु मिटेगा या नहीं ?

प्रस्तार



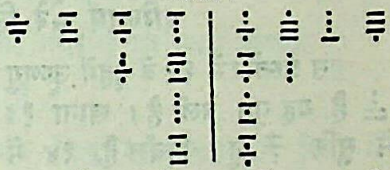
विचारणीय रूप १२ शत्रुता का होता है। प्रस्तार में लग्न रूप सौरि ≡ है, यह कहीं पुनरुक्त नहीं। साधारण बल पा रहा है, परन्तु क्रूर है। बारहवाँ रूप दैत्यगुरु है, यह भी शत्रु ही द्विस्वभावी है, छठा रूप तीक्ष्णांशु है। यह भी शत्रुगृही है, सभी रूप निर्बल है और आठ में मन्दग ≑ है, यह भी द्विस्वभावी है। अस्तु, शत्रु मिट रहा है और पृच्छक को मिटा रहा है। काँटे की शत्रुता चलती रहेगी। जिसमें पृच्छक कुछ बली पड़ता जायेगा।

कायदा यह है, कि यदि १२ वाँ गृह अशुभ खारिज हो और छठा किसी प्रकार से अशुभ हो तो शत्रु स्वयं मिट जावे और कुछ हानि न पहुँचा सके। यदि यह शुभ दाखिल हो और छठा गृह किसी प्रकार शुभ हो तो शत्रुता जोर पकड़े

और हानि हो। यदि [चिह्न] या [चिह्न] द्वादश भाव में अथवा खाना ६ में आवे तो शत्रु स्वयं मिट जावे। अथवा खाना १ व १० किसी प्रकार से अशुभ हो या खाना १ का रूप खाना ६ या १२ में पुनरुक्त हो अथवा तुला (खाना १५) में [चिह्न] आवे और पुनरुक्त १ व १० में हो तो प्रश्नकर्ता को कष्ट मिले और शत्रु का बल बढ़कर प्रसन्नता हो। एक आचार्य का मत है, यदि खाना १ का रूप सातवें गृह में विलोम (उलटा) हो जाय तो परस्पर विरोध बढ़ता जायेगा। यदि रूप [चिह्न] या [चिह्न] अथवा खाना १, ३, ५, ७ ९ या ११ में हो तो शत्रु को बल मिलता जायेगा। यदि २, ४, ६, ८ या १० अर्थात् सम गृहों में हो तो शत्रु मिटता जायेगा। यदि संयोगवश दोनों रूप प्रस्तार में न हों तो खाना १२ के पुनरुक्त से विचारकर दैवज्ञ अपनी बुद्धि से परिणाम निकाले।

उदाहरण बिन्दु चाल द्वारा—
चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु चलकर खाना ८ में विश्रान्ति पाता है। यह लग्नविन्दु है, विचारणीय छठा शत्रु तथा १२ शत्रुता है। लग्न

प्रस्तार



विन्दु से प्रस्तार में आठवाँ मन्दग [चिह्न] है। लग्न से छठा विन्दु पृथ्वी का [चिह्न] है, यह प्रस्तार में पाँचवें में उ० मित्रक्षेत्री है। इसका वर्तमान पृथ्वी का [चिह्न] भी प्रस्तार के खाना ९ तथा १४ में उ० मित्र तथा शत्रुगृही है। शत्रु इस समय ७५ प्रतिशत बल पा रहा है। दृष्टि भी ५ में है।

१२ वाँ विन्दु अग्नि सोपान का [चिह्न] है, जो प्रस्तार में दूसरे गृह में है। तथा इसका वर्तमान बिन्दु अग्नि का [चिह्न] है, जो आठवें में उ० मित्रक्षेत्री है। पृथ्वी सप्तम निर्बल है।

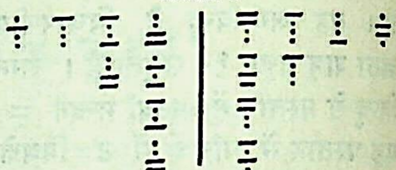
अस्तु, परिणाम यह निकला कि न तो शत्रु ही मिटेगा और न शत्रुता हो शिथिल पड़ेगी। लग्नविन्दु का १२ वाँ विन्दु भी अग्नि का मन्दग [चिह्न] है, तथा लग्न का वर्तमान [चिह्न] है, जो खाना ६ व १० में शत्रुगृही है। तथा १५ में मित्रगृही भी है। दृष्टि तीसरी मित्रगृही भी है। अस्तु, शत्रु मिटेगा नहीं और न कतई शत्रुता त्यागेगा।

आचार्य सुर्खाव का कथन है, यदि विन्दु ६ व १२ निर्बल हो तो शत्रु मिट जायेगा। यदि बलवान् हो तो न मिटेगा। इसके विपरीत से विपरीत ही फल कहें। भविष्य काल में शत्रु के नष्ट हो जाने का भय है।

अब देखना है – कि शत्रु किस कारण से शत्रुता कर रहा है। इसके लिये उक्त १२ वें बिन्दु में रूप अग्नि का ⁝ है, तथा इसका वर्तमान ÷ विचारना चाहिये कि किस गृह में है, तथा उसके विचारणीय विषय क्या हैं? रूप ⁝ प्रस्तार में दूसरे गृह में है। अस्तु, धन के कारण शत्रुता है, ÷ आठवें है, यह नष्ट सम्पत्ति तथा ऋण का है। अस्तु, किसी लावारिस जायदाद अथवा ऋण का रुपया न देने के कारण शत्रुता चल रही है।

(३) मेरे शत्रुओं का तथा इनकी की हुई शत्रुता का परिणाम मेरे लिए कैसा रहेगा ?

प्रस्तार



इस प्रस्तार में १२ वें गृहमें उष्णगु ≐ है, यह गुप्त बली है। खाना १३ में सूरि ÷ शुभ निर्बल है, १४ में बोधन ⁝ द्विस्वभावी है, १५ में तीक्ष्णांशु ÷ मित्रगृही बली है। १६ में ≐ सम बल पा रहा है। तीक्ष्णांशु उष्णगु एकही है। अस्तु, प्रश्नकर्ता के लिये परिणाम शुभ है। क्योंकि १५ और लग्न का गुणनफल ≐ बनता है। कोई गुप्त शत्रु बेड़ा मार कर अवसर से लाभ उठा रहा है और सफलता पृच्छक को मिल रही है।

एक आचार्य का कथन है कि खाना १३, १४, १५, १६ को देखें यदि इनमें शुभ दाखिल हों तो शत्रु पृच्छक से शत्रुता कायम रक्खेगा। लेकिन कुछ हानि न पहुँचा सकेगा। यदि शुभ खारिज हों तो शत्रुता छोड़ देगा और मेल करने पर उतारू होगा। मगर पृच्छक सुलह नहीं करेगा। यदि अशुभ दाखिल हो तो शत्रुता कायम रक्खेगा, कुछ हानि भी पहुँचायेगा। यदि अशुभ खारिज हो तो स्वयं शत्रुता वह छोड़ देगा। साबित रूप का वह फल न कहें जो दाखिल रूप

का । है यदि मुनकलिब हो तो उपर्युक्त रीत्यनुसार खारिज रूप की तरह हो फल कहें ।

विन्दु चाल द्वारा—विचारणीय विन्दु १३, १४, १५, १६ हैं ।

चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का बिन्दु खाना १ में रुकता है। अस्तु, लग्न ÷ है। इसका तेरहवां विन्दु अग्नि का ÷ है, यह खाना १ में स्वगृही है। और खारिज है।

१४ वाँ विन्दु अग्नि का ÷ है, यह प्रस्तार में नहीं है। १५ वाँ विन्दु अग्नि का ÷ है, यह प्रस्तार में ८ वें साबित गृह में है। १६ वाँ विन्दु अग्नि का ⁝ है, यह प्रस्तार में नहीं है। परिणाम यह निकला कि पृच्छक के लिये अच्छा है। क्योंकि दो विन्दु हैं हो नहीं और एक खारिज में है, एक साबित में है। इससे शत्रुता को अस्तित्वभावना रहेगी।

अब देखना है कि शत्रु भड़काया गया है या स्वयं शत्रुता कर रहा है ?

यह जानने के लिये प्रस्तार का दशम विन्दु ११, १२, ६ में किसी में हो या पुनरुक्त हो तो भड़काया गया है। अन्यथा स्वयं शत्रुता करता है।

(४) अमुक अपराधी पकड़ा जायेगा या नहीं ?

यदि खाना १२ बलवान् हो और १३ निर्बल हो तो पकड़ में आकर छूट जायेगा। यदि खाना १२ निर्बल हो तो अपराधी बली है, पकड़ में न आयेगा। यदि १२ निर्बल के साथ लग्न भी निर्बल हो तो पकड़ने वाले को भय है।

अन्य विधि—यदि प्रथम गृह में ÷ ☰ ⁝ ⩧ इन रूपों में से कोई भी रूप हो तो पकड़ा जायेगा और सजा भी पायेगा। यदि लग्न में उपर्युक्त रूप के अतिरिक्त ☰ हो और खाना १२ में पुनरुक्त हो तथा खाना २ व ९ किसी प्रकार से अशुभ हो तो इस दशा में भी अपराधी पकड़ा जाकर वह दण्ड का भागी बने।

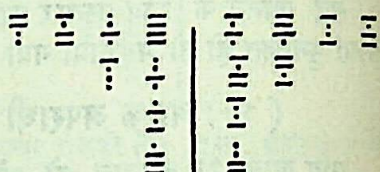
यूनान के आचार्यों का मत है—कि यदि खाना ४ व ७ किसी सूरत में अशुभ रूप हों और खाना १ का रूप खाना १२ में पुनरुक्त हो और खाना १५

का रूप दो अशुभ रूपों से बना हो यानी १३, १४ भी अशुभ हो तो ऐसी दशा में कड़ी सजा भोगनो पड़ती है। यदि खाना १ में ≡ आवे और पुनरुक्त तुला (१५) में हो तथा खाना १३ व १४ भी अशुभ हो तो शारीरिक सजा दो जाय। अथवा कोई अंग काटा जाये। यदि ⋮ ÷ ÷ ⋮ ≡ ≡ इनमें से कोई रूप लग्न (१) में हो और खाना ८ व १२ के रूप अशुभ हों तो कोड़े लगें, सजा भोगे।

अन्य विधि—यदि खाना १ अशुभ हो अथवा ÷ ÷ या ≡ ⋮ लग्न में हो तो अपराधी को सजा तो हो जायेगो लेकिन हलको। यदि खाना २ में शुभ दाखिल या साबित हो या ÷ हो तो भी अपराधी सजा पा जायेगा।

विन्दुचाल द्वारा—लग्न का १२ वाँ विन्दु वर्तमान सहित बलवान् हो तो सरलता से गिरफ्तार होगा। यदि मध्यबली हो तो कठिनता से पकड़ा जायेगा। यदि निर्बल हो तो अपराधी फसेगा नहीं, छूट जायेगा।

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु का विन्दु खाना ४ में विश्रान्ति पाता है। यही लग्न बिन्दु है। इसका १२ वाँ विन्दु जल का ⋮ है, यह प्रस्तार में १२ वें गृह में मित्रक्षेत्री होकर बैठा है। बलवान् है। इसका वर्तमान जल का रूप शीतांशु ⋮ है, जो प्रस्तार में नहीं है। अतः निर्बल है। अस्तु परिणाम यह निकला कि अपराधी बड़ी कठिनता से फँसेगा या फँस कर भाग जायेगा।

(५) अमुक व्यक्ति को कैद से छुटकारा मिलेगा या फँस जायगा ?

यदि लग्न से ११ वाँ विन्दु बली हो तथा १२ वाँ खारिज या मुनकलिब हो तो छूट जायेगा। यदि दाखिल या साबित में हो तो सजा पा जायेगा। या जेल ही में मर जायेगा। यह सुर्खाब का मत है।

भारतीय रमलज्ञ ऊपर की प्रणाली में ६, ११, १६ विन्दु मानते हैं और पश्चिमी रमलज्ञ १, ४, ६, ८, १२ को मानते हैं।

प्रस्तार के रूप द्वारा हल—यदि खाना १२ शुभ खारिज हो और खाना ६, १५, १६ किसी प्रकार से खारिज हों तो कैदी शीघ्र छूटेगा। विपरीत से नहीं।

अन्य विधि—प्रस्तार के ६ व १२ रूप को आपस में गुणा करें। हासिल रूप शुभ खारिज या शुभ मुनकलिब हो तो फौरन छूट जायेगा। कोई भय नहीं, अथवा खाना १, २, ५, ११ शुभ दाखिल हो और खाना ६, ८, ३, ९, १२ किसी प्रकार से खारिज हों तो कैदो छूट जायेगा। विपरोत में न छूटेगा।

अन्य विधि (अनुभूत)—प्रस्तार के ४ व ८ से एक रूप बनायें। तथा ७ व १० से दूसरा रूप बनायें। इन दोनों के गुणा से एक रूप बनायें। फिर हासिल रूप का खाना ६ के रूप से गुणा करें। हासिल रूप देखें कि वह खारिज है या दाखिल। यदि खारिज शुभ ≡̇ या ⩧ हो तो कैदी छूट जायेगा। यदि शुभ दाखिल हो तो देर से छूटे।

यदि अशुभ दाखिल हो (≡̣) तो कैद में मृत्यु दंड हो या काला पानी हो।

यदि हासिल रूप ⁝ हो तो कदाचित् किसो की सिफारिश से छूट जावे।

यदि ≡ हा और पुनरुक्त खाना ४ में हो तो छूटने में सन्देह है।

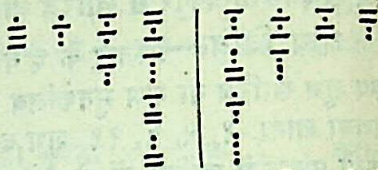
यदि खाना १० मे ≡ हो तो भय फांसी का हो, यदि खाना १० में ≡̣ या ÷ हो तो कैदो को हल्को सजा मिले यदि ⩧ हो तो कठिनाई से छूटे।

अन्य विधि—खाना १ व ८ को गुणा करें। हासिल रूप यदि शुभ खारिज हो तो शीघ्र छुटकारा पायेगा। यदि अशुभ खारिज हो तो बड़ो कठिनाई से छूटेगा। दाखिल व सावित का भो उपयुक्त रीत्यनुसार फल कहें। यदि खाना ८ या ११ में ≡ हो तो फांसी की सजा हो।

अथवा — खाना ४ व ८ को गुणा करें, और ७ को १० से गुणा करें। फिर उन दो को गुणा करके एक करें। अस्तु, यदि हासिल रूप खारिज हो तो फौरन छूट जायेगा। शुभ खारिज हो तो सरलतापूर्वक और अशुभ खारिज हो तो कठिनाई से छूटेगा। यदि हासिल या सावित हो तो विपरीत फल कहें।

कोई आचार्य १, ८ और ६, १२ के गुणनफल से उपर्युक्त रीत्या ा
कहते हैं। विन्दु चाल की रीति से—

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित वायु विन्दु छठे गह में विश्रान्ति पाता है इसका १२ वाँ विन्दु जल का ⁝ है, यह खाना ९ खारिज में है। तथा खाना ११ दाखिल में है। अस्तु कहा गया थोड़े दिनों बाद कैदो छूटेगा। कारण १२ वाँ विन्दु खारिज व दाखिल दोनों जगह है। आचार्य सुर्खाब का कथन है, कि १२ वाँ विन्दु दाखिल व सावित में हो तो न छूटेगा। यदि खारिज या मुनकलिब में हो तो छूट जायेगा। मगर भारतवासी विद्वान् ६, ११, १६ विन्दु को देखकर उपर्युक्त रीत्यनुसार फल कहते हैं। तथा पश्चिम देशवाले १, ४, ६, १२ विन्दुओं द्वारा उपर्युक्त रीत्या फल लगाते हैं।

(६) वड़े पशु (गधे से बड़े) का क्रय-विक्रय मेरे लिये कैसा रहेगा ?

यदि खाना १ या लग्न बली हो और खाना (२ जो धन का स्थान है)। तथा १२ जल या पृथ्वी का हो तो क्रय-विक्रय लाभकारी जानें। परन्तु विक्रय खाना २ का रूप आगमी (दाखिल) तथा क्रय में निर्गमी (खारिज) होना अत्यावश्यक है।

पुनः खाना १२ को देखें यदि उसमें रूप शुभ दाखिल हो तो खरीदना शुभ होगा। यदि निर्गमी यानी खारिज हो तो विक्रय (बेचना) शुभ होगा। अन्य रूप अप्रमाणित हैं। और साथ ही खाना १ भाग्य का देखना आवश्यक होता है। प्रथमगृह भी शुभ होना जरूरी है।

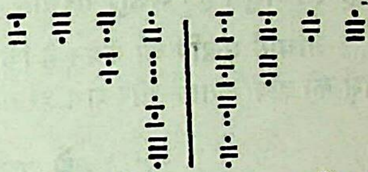
यदि १२ व १ के रूप खाना ५ व १० में पुनरुक्त हों तो इस पशु से लाभ होगा। मगर बहुत दिन न रहेगा। यदि खाना १ में किसी प्रकार से शुभ रूप होगा

पुनरुक्त ३, ६, १२ या ९ में हो तो हानि होगी। यदि रूप सौरि ≑ १ या १२ में हो तो पशु रोगी अथवा ऐबदार होगा।

बिन्दु चाल द्वारा उदाहरण—

लग्न से १२ वाँ विन्दु आगम (दाखिल) या साबित में हो तो क्रय (खरीदना) शुभ होता है तथा निर्गम (खारिज) या मुनकलिब में हों तो विक्रय लाभदायी होता है।

प्रस्तार



चूँकि तुला-चालित पृथ्वी का विन्दु खाना २ ≑ में विश्रान्ति पाता है। इसी को लग्न माना इसका १२वाँ बिन्दु अग्नि का ⋮ है यह प्रस्तार में है नहीं। इसका वर्तमान अग्नि का ≑ दूसरे गृह खारिज में है और खाना १५ दाखिल में है। अस्तु, क्रय-विक्रय दोनों लाभकारी हैं।

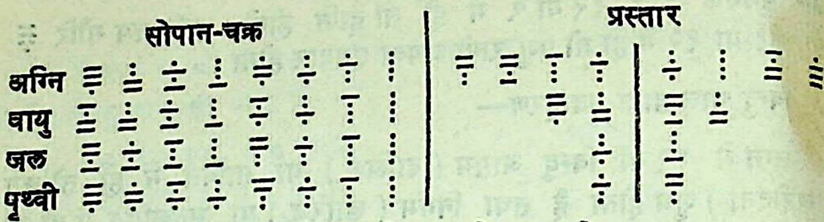
जब असली विन्दु न हो तो इसके वर्तमान विन्दु से लेना चाहिये।

(७) यह पशु गुण वाला है या दोषी ?

इस प्रकार के प्रश्न में पशु खरीदा हुआ था या खरीदा जानेवाला—बेचा हुआ था या बेचा जानेवाला इसकी निसबत मालूम करना है गुणी है या दोषी। अस्तु, बारहवें गृह का रूप जैसा हो उसी के अनुसार फल कहें।

यदि खाना १२ में शुभ दाखिल हो या शुभ साबित हो और पुनरुक्त खाना १, ५, ११ या १५ में हो तो गुणवाला है लाभ रहेगा। यदि अशुभ रूप हों और पुनरुक्त खाना ६, ८ या १० में हों तो अशुभ है।

अथवा खाना ६ व १२ के रूप को गुणा करें। यदि हासिल रूप ☰, ⋮ या ≑ हों तो दोषी होगा या मरेगा। यदि ≐ या ⋮ हों तो भी दोषी जाने यदि शुभ दाखिल हों गुणवाला होगा।



चूँकि तुला चालित पृथ्वी का विन्दु अपने स्थान से चलकर अष्टम भाव में विश्रान्ति पाता है इसी को लग्न माना। इसका बारहवाँ विन्दु अग्नि का ÷ है यह रूप अशुभ है। अस्तु, परिणाम यह निकला कि यह पशु ऐबदार है।

आचार्य सुर्खाव का कथन है कि यदि १२ वें विन्दु का रूप अशुभ हो तो पशु को दोषी बतायें और शुभ हों तो गुणवाला कहें।

(८) मुझे पशु मिलेगा या नहीं ?

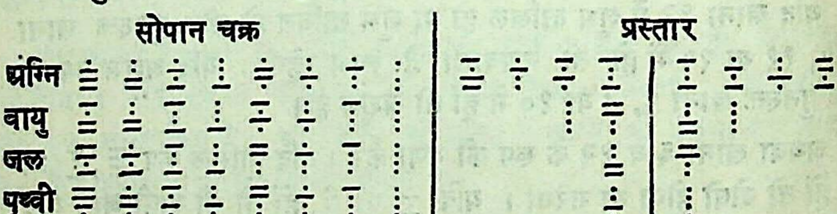
लग्न से ६, १२ विन्दु बली हों तो मिलेगा, यदि निर्बल हो तो नहीं मिलेगा।

(९) मुझको पशु से लाभ होगा या नहीं ?

यहाँ भावार्थ यह है कि क्रय-विक्रय द्वारा लाभ होगा या नहीं।

प्रस्तार का रूप २ व ६ को आपस में गुणा करें यदि हासिल रूप शुभ दाखिल हो तो लाभ होगा। यदि अशुभ दाखिल हों तो थोड़ा लाभ होगा।

विन्दु चाल द्वारा उदाहरण—



चूँकि तुला चालित विन्दु वायु का अष्टम भाव में रुकता है। इसमें रूप

⁝ है इसी को लग्न माना। इसका १२ वां विन्दु जल का ⁝ है यह खाना ४में मित्रगृही है तथा खाना ९ में शत्रुगृही भी है। इसका वर्तमान विन्दु जल का ⁝ है। यह खाना ११ में गुप्त रूप से स्वक्षेत्री है विन्दु बलवान् है। (⁝ ⁝) दोनों स्थानों से शुभ तथा अशुभ दृष्टि से युक्त है। शुभ है। इसके अतिरिक्त मुख्य विन्दु ५ में इसके वर्तमान ११ में पुनरुक्त है अतः शुभ है।

अस्तु, परिणाम यह निकला कि प्रश्न कर्ता को पशु से लाभ होगा। कारण आचार्य सुर्खाव का कथन है यदि १२ वां विन्दु बली हो और पुनरुक्त ५ या ९ या ११ में हो तो पशु को रखने से लाभ होगा। यदि खाना २ में पुनरुक्त हो तो क्रय-विक्रय से लाभ होगा। यदि विन्दु निर्बल हो और पुनरुक्त ६ व ८ में हों तो हानि उठानी पड़ेगी।

(१०) मेरा पशु गाय, भैंस, ऊँट आदि चोरी गया है या खो गया है, मिलेगा या नहीं ?

प्रस्तार बनावें खाना १२ का देखें यदि उसमें रूप निर्गम (खारिज) हों तो पशु स्वयं चला गया है या आवारा (छुट्टा) घूम रहा है—यदि अशुभ निर्गम हो तो चोरी जाना कहें और मिलना भी कठिन है। यदि शुभ आगम (दाखिल) हो तो कहो कि चोर नहीं ले गये हैं मिल जायेगा। यदि अशुभ दाखिल हो तो चोरी जाना कहें।

अब देखना है कि किस तरफ गया है ऐसी दशा में खाना १२ का रूप देखें कि वह किस दिशा में सम्बन्ध रखता है। उसी तरफ तलाश करायें। यदि ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ हो तो पूर्व तरफ, तथा ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ हो तो पश्चिम तरफ तथा ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ उत्तर तरफ तथा ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ यह दक्खन दिशा से सम्बन्ध रखता है। यदि हासिल रूप शुभ साबित या शुभ खारिज हो तो निकट है मिल जायेगा। यदि ⁝ रूप हो तो पशु बंधा हुआ समझें यदि शुभ मुनकलिब हो तो पशु बँधा हुआ न समझें। खुलकर चला गया है तलाश से मिल जायेगा। यदि मुनकलिब हो तो चोरी जाना कहें। यदि १२ में रूप पूर्व तरफ वाले हों और पुनरुक्त अग्नि गृहों यानी १, ५, ९ या १३ में हों तो पूर्व तरफ गया है यदि ⁝ खाना ६ में हो तो कोई पकड़ कर पहुँचा जायेगा।

मूकप्रश्न-विचार की सरल रीतियाँ

मूकप्रश्न अर्थात् दिल की बात बतलाने के बहुत तरीके आचार्यों ने लिखे हैं; परन्तु ९० प्रतिशत जो अपने अनुभव में शुद्ध निकला करता है वेही रीतियां हम अपने रमलज्ञ भाइयों के हितार्थ नीचे लिख रहे हैं।

यदि कोई कहे मैं अपने दिल की बात पूँछना चाहता हूँ बतलाओ क्या प्रश्न है तथा उसका सन्तोषजनक उत्तर क्या है ?

ऐसी दशा में प्रश्नकर्ता को पवित्र होकर स्वयं पाँसा छोड़ना चाहिये। अथवा रमलज्ञ प्रश्नकर्ता से कहे कि वह अपने प्रश्न को हृदय मन्दिर में रखकर प्रभु का ध्यान करे और एकान्तचित्त होकर रमलज्ञ के हाथ में जो पाँसा हो उस पर श्रद्धापूर्वक अपनी हथेली सहित उँगलियां रक्खे। पश्चात् रमलज्ञ शान्त चित्त होकर अपने इष्टदेव का आह्वान कर पासा फेंक दे और प्रस्तार बनावे। फिर मातृपंक्ति अर्थात् खाना १, २, ३, ४ के अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी के गृहों में जो क्रमशः विन्दु या रेखा मिले उनसे एक रूप बना लें।

मान लिया प्रस्तार की मातृपंक्ति में यह चार रूप आये तो खाना १ के अग्नितत्त्व में विन्दु (·), खाना २ के वायु तत्त्व में पाई (–), खाना ३ के जल तत्त्व में पुनः विन्दु (·) तथा, खाना ४ में पृथ्वी तत्त्व की लाइन में पाई (–) को पाया। इस प्रकार से चारों गृहों के चारों तत्त्वों के विन्दु, पाई लेकर यह रूप ($\dot{-}$) बन गया।

१	२	३	४
·	–	·	·
·	–	·	–
–	–	·	·
–	–	·	–

तत्पश्चात् दुहितृपंक्ति अर्थात् खाना ५, ६, ७ व ८ के अग्नि, वायु, जल पृथ्वी के विन्दु पाई लेकर एक रूप अलग बना लो।

अब खाना ५ के पृथ्वी तत्त्व की लाइन में विन्दु (·) है।

तथा खाना ६ के जल तत्त्व की लाइन में विन्दु (·) है।

तथा खाना ७ की वायु तत्त्व की लाइन में पाई (–) है।
तथा खाना ८ की अग्नि तत्त्व की लाइन में विन्दु (·) है।
अतः खाना ५ से ८ तक के गृहों से यह रूप बनाया (÷)।

अब प्रथम पंक्ति का हासिल रूप (पात) ≐ है। इसे यवनाचार्य रूप कन्जुल खारिज भी कहते हैं और दुहितृ पंक्ति से यह रूप दैत्यगुरु (÷) पाया। दोनों को परस्पर गुणा किया तो लब्धि यह कवि (⋮) रूप प्राप्त हुआ। आचार्यों ने इस रूप को वायु तत्त्व का माना है। वायु तत्त्व के चार रूप हैं (÷ ≡ ⋮ ÷) अब उपर्युक्त मातृपंक्ति तथा दुहितृपंक्ति से पूरा प्रस्तार बनाया तो यह प्रस्तार बन गया।

(दुहितृपंक्ति)				(मातृपंक्ति)			
५	६	७	८				
÷	≡	÷	÷	≐	⋮	≡	÷

अब हमने पूरे प्रस्तार में देखा कि जो रूप मातृपंक्ति तथा दुहितृ पंक्ति के परस्पर गुणा से प्राप्त हुआ है वह प्रस्तार में किस घर में पड़ा है? तथा यह भी देखा कि वह रूप प्रस्तार के अग्नि गृह में पड़ा है या वायु में या जल में अथवा पृथ्वी के गृह में वह रूप पड़ा है।

प्रस्तार

÷	≡	÷	÷	≐	⋮	≡	÷
		≐	≡	⋮	÷		
			÷	÷			
			⋮	⋮			

हम रमल दिवाकर के तीसरे पृष्ठ पर इसकी व्याख्या कर चुके हैं कि अग्नि, वायु, जल और पृथ्वो इन चारों तत्वों में प्रत्येक के चार-चार रूप हैं। जो इस प्रकार हैं :—

अग्नि तत्त्व	वायु तत्त्व	जल तत्त्व	पृथ्वी तत्त्व
⋮ ≐ ÷ ≡	≡ ≡ ⋮ ÷	⋮ ≡ ≡ ÷	≡ ÷ ÷ ≡

अस्तु; मातृपंक्ति तथा दुहितृपंक्ति से प्राप्त किये हुए रूप को देखें कि किस तत्त्व का है और प्रस्तार के किस गृह में बैठा है। प्रस्तार में १, ५, ९, १३ अग्नि

मूक प्रश्न की तालिका

गृह	अग्नि गृह	वायु गृह	जल गृह	पृथ्वी गृह
१	भाग्य तथा तन भाव ज्ञान	अज्ञात व्यक्ति से कार्यनिर्णय	प्रेमी से मिलन	वियोग तथा निर्गम प्रश्न
२	धन प्राप्ति का प्रश्न	इष्ट-मित्र के सहयोग से लाभ	जीविका व निर्णय कार्य के प्रति	विदेशी आगमन
३	गुण तथा विद्या	भाइयों के प्रति	बहिन तथापड़ोसीसे स्नेहभाव	बुरे स्वप्न का फल
४	पिता की बावत	मुल्क तथा सम्पत्ति की बाबत	गुप्त कार्य का ज्ञान	गड़े धन की बाबत
५	प्रेमी के मिलने की चाह	पारतोषिक प्राप्ति प्रश्न	सन्तान भाव के प्रति	आशा उन्नति या यश प्राप्ति
६	बीमारी	नौकर चाकर	युवा तथा बालक की बाबत	भय व सन्ताप
७	स्त्री	शत्रु (विपक्षी)	चोर	गायब खोये हुये
८	मृत्यु भय	निर्धनता से छुटकारा	नठियाई माल प्राप्ति	धन हानि, व्याकुलता
९	यात्रा	कामियाई विद्या का ज्ञान	उच्च पदाधिकारीसे आशा	धर्म ईमान की दृढ़ता
१०	बादशाह	व्यापार (नौकरी)	माता के प्रति	कारीगरी अतिकला में निपुण
११	प्रतिष्ठा, स्वास्थ्य,	मित्रों द्वारा लाभ	आशा	प्रेमी प्राप्ति का प्रश्न
१२	शत्रु	हत भाग्य 'दावा आदि'	बड़ा पशु का विचार	कैद की बावत
१३	प्रेम अश्लील	इच्छा पूर्ति	चिन्ता व व्यथा की बाबत	लड़ाई झगड़ा
१४	प्रेमी मिलन	मुलाकात के लिये	इन्तजारी के प्रति	गुप्त कार्य में सफलता
१५	यात्रा	किसी पर आक्रमण	खून खच्चड़	क्लेश रंज दुख
१६	अन्तिम परिणाम	क्रय-विक्रय	नवीन इमारत बनाना	नष्ट वस्तु

के गृह; २, ६, १०, १४ वायु के गृह; ३, ७, ११, १५ जल के गृह तथा ४, ८, १२, १६ पृथ्वी के गृह कहे गये हैं। इन गृहों में अपने-अपने वर्ण रूप यदि अपने गृहों में पड़ जायँ तो बली हो जाते हैं। जैसे नमूना के तौर पर मान लिया कि हासिल रूप ÷ आया और प्रस्तार के १, ५, ९ या १३ गृह में यह रूप बैठा है तो शक्तिशाली बन जाता है। इसी प्रकार और गृहों पर अपनी बुद्धि के अनुसार जानना चाहिये।

अब इस प्रस्तार में मातृपंक्ति तथा दुहितृपंक्ति के परस्पर गुणा से यह रूप ⋮ पैदा हुआ और यह प्रस्तार के दसवें गृह में है, जो कि वायु का गृह है तथा स्वयं वायु तत्त्व का रूप भी है। अतः खाना १० में रूप ⋮ बलवान् हो गया है।

यदि वह रूप अग्नि तत्त्व का है तो निम्न चक्र के अनुसार अग्नि के गृह में, यदि वायु तत्त्व का है तो वायु के गृह में, जल का है तो जल के गृह मे, और पृथ्वी का रूप है तो पृथ्वी के गृह में अपना मूक प्रश्न तलाश कर लें। यदि लब्धिवाला रूप आप के बनाये हुए प्रस्तार में न आवे तो जान लें कि प्रश्नकर्ता अज्ञात व्यक्ति की खोज, चोरी या नष्ट वस्तु का प्रश्न कर रहा है। अब हमको देखना है कि हमारा हासिल रूप ⋮ आया है। वह वायु तत्त्व का रूप है और प्रस्तार में भी वायु तत्त्व खाना १० में बलवान् है। अतः उपर्युक्त मूक प्रश्न तालिका में दसवें गृह के वायु तत्त्व में देखा तो लिखा पाया—(व्यापार नौकरी) अतः प्रश्नकर्ता से कहें कि आपने व्यापार अथवा जीविका सम्बन्धी नौकरी के प्रति प्रश्न पूछा है।

इसी प्रकार अन्य प्रश्नों का भी अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर दें।

मूक प्रश्न निकालने की दूसरी रीति

परमात्मा का ध्यान करके एकाग्र चित्त होकर पृच्छक से पाँसा का स्पर्श कराके रमलज्ञ स्वयं प्रस्तार बनावे; फिर प्रस्तार के १ से १६ गृहों के कुल अग्नि बिन्दु गिने। योग में १ अङ्क कम करके १३५ संख्या और मिलावे; फिर जो जोड़ आवे उसमें १५ का भाग दें, जो शेष रहे उसको प्रस्तार के खानों पर बांट दें जहाँ समाप्त हो उसी गृह का मूक प्रश्न समझें। [पृ० २५८ में टे० दे०]

जैसे—हमने उपर्युक्त प्रस्तार बनाया उसमें अग्नि तत्त्व में ११ बिन्दु पा॰ उसमें १ कम किया १० रहे, उसमें १३५ और मिलाया तो १४५ संख्या ब॰ अब १६ का भाग दिया तो शेष १ रहा। अब खाना १ को देखा रूप पाया। यह प्रस्तार में २ जगह खाना १ व ९ में पाया, इनको जोड़ा तो १ हुए। रूप ⁝ वायु का है अतः खाना १० के वायु तत्त्व में देखा तो (व्यापा नौकरी) लिखा पाया। इसी प्रकार रमलज्ञ को पूर्ण बुद्धिमता से उत्त निकालना चाहिये।

॥ इति शिवम् ॥

स्वतन्त्र भारत प्रेस, वाराणसी।